श्रीः ।

मूल गुजराती ग्रंथकारकी प्रस्तावना.

स्वर्गके विमानको प्रस्तावना क्या ? विना जाने और विना समझे भी सब लोग स्वर्गके विमानकी इच्छा करते हैं. इससे स्वर्गके विमानको प्रस्तावनाकी आवश्यकता नहीं है, परंतु पुस्तकके संबंधमें कुछ सूचनाएं जताना आवश्यक है इससे यह प्रस्तावना लिखनी पडी है.

स्वर्ग और विमान इन दोनों शब्दोंमें कुछ ऐसा अलौकिक बल है कि जबसे सृष्टि उत्पन्न हुई तबसे लेकर जबतक सृष्टि रहैगी तबतक स्वर्गके विमानकी भावना लोगोंके हृदयमेंसे कभी जानेकी नहीं, जो धर्मको नहीं मानते उनको भी स्वर्गके विमानकी भावनाको तो किसी न किसी रूपमें माननाही पडता है, फिर वे चाहे स्वर्गका अर्थ सुख मानते हों और विमानका अर्थ जल्दीसे सुखी होनेका उपाय मानते हों तब भी कुछ अडचन नहीं. इतना व्यावहारिक अर्थही बहुत बडे हेतु और उत्तम भावनावाला है. जिस तरह विमान सरररररर करता हुआ एक साथ आकाशमें उड जाता है उसी तरहसे सुखके मार्गमें सपाटेके साथ आगे बढते चले जानेके सुगमसे सुगम उपाय बतानेवाला जो कोई पुस्तक हो और उसका नाम स्वर्गका विमान हो तो उसमें कोई अत्युक्ति नहीं है. इस स्वर्गके विमानमें सांसारिक सुख और ईश्वरीय आनंद लूटनेके ऐसे सुगम उपाय हैं या नहीं सो निश्चय करनेका काम पाठकोंका है. मेरी तो इस स्वर्गके विमानमें दी हुई उदाहरणरूप शिक्षाओंके लिये बहुत बडी पूज्य बुद्धि है, क्योंकि इन सवातीनसौ शिक्षाओंमेंसे मेरी ओरसे लिखी हुई तो बहुतही थोडी हैं बाकी सब शिक्षाएं भिन्न २ साधु महात्माओं और पंडित विद्वानोंके मुखसे निकले हुए वचन हैं और मुझको ये प्राप्त भी एक बडे अनुभवी भक्तसे हुए हैं. इतनाही नहीं किंतु ये वचन एक बडे समु-

दायके समक्ष नित्य कहे और पढकर सुनाये जाते थे और लोग इनको बडे चावके साथ सुनते और अंतःकरणसे चाहतेथे कि फिर फिरकर हमको येही वचन सुनाये जायँ तो बडा अच्छा हो. यहांतक कि जब यह पुस्तक छपने लगा तब इसके विशेष फार्म छपाने पडते थे और वे ऐसे हाथोंहाथ उडजाते थे कि उनकी और उनके आगेके विना छपे फार्मोंकी माँग वाचकवृंदकी ओरसे बनीही रहती थी. कारण इसका यह कि स्वर्गके विमानकी ३२५ उदाहरणरूप शिक्षाओंमेंसे एकभी शिक्षा ऐसी नहीं है जिसमें धर्मका ज्ञान अथवा प्रभुका नाम न हो.

इस पुस्तकमें जो कोई त्रुटी हो तो वह मेरा दोष है और जो गुण और खूबी हो वह इसको लिखानेवाले भक्तराजकी विशाल बुद्धि और दृढ भक्तिका प्रसाद है. मैं उन भक्तराजका पवित्र नाम इस पुस्तकमें देना चाहताथा. आपका नाम देनेसे मुझको बडा आनंद होता और लोगोंको भी लाभ होता परंतु महाराजकी आज्ञा नहीं हुई इसीसे मुझे विवश हो अपना मन मारकर रह जाना पडा.

उक्त भक्तराजकी ओरसे मुझे जो शिक्षाएं मिली हैं वे बिलकुल सरल, सादा, सुगम, और हिंदूधर्मके अनुकूल तथा देवमंदिरोंमें स्वतंत्रतापूर्वक कही जाने योग्य हैं, परंतु मैंने उनमें समयके अनुसार स्वतंत्र विचार भी सम्मिलित करदिये हैं. इससे जो इन शिक्षाओंमेंसे किसीसे कुछ अधिक जोरका चाबुक लगता हो तो वह मेरी ओरका ही मेरी आंतरिक सच्ची वृत्तिका कडवा घूंट समझना चाहिये.

इस पुस्तकमें जो कविता और पद भजन आदि हैं वे भक्तमंडलीमें प्रसंगोपात्त स्त्रीपुरुष गाया करते थे उनमेंसे लिये गये हैं और इसीलिये संभव है कि उनमें कहीं कुछ भूलें रहगयी हों उनके मूलकर्त्ता, प्रकटकर्त्ता तथा जिन २ ने वे मुझको लिखवाये हैं उन उन सज्जनोंका मैं कृतज्ञ हूं.

इस पुस्तकमेंकी शिक्षाएं जिन भक्तराजने मुझे लिखाई हैं उन महाराजके पास ऐसी ऐसी हजारों शिक्षाओंका भंडार भरा पडा है, जो आप महाराजकी कृपा हुई तो मैं ऐसी एक हजार शिक्षाएं लिखकर छपानेकी इच्छा रखता हूँ. इससे धर्मके पुराने विचार नये रूपमें प्रकाशित हो सकेंगे और लोगोंकी धर्मभावना जागृत होगी.

अंतमें वाचक भाई वहनोंसे यही प्रार्थना है कि जो आप इस पुस्तकको वारवार पैढेंगे तो धर्मके रहस्यको सुगमतासे समझ सकेंगे, दूसरोंको सुगमतासे समझा सकेंगे और दिन प्रतिदिन आपके हृदयमें प्रभुका प्रेम वढता जायगा तथा विकार कम हो जायगा जिससे आप संसारमें सुखपूर्वक रह सकेंगे और मरनेके समय आत्माको शांति प्राप्त होगी. ऐसा यत्न करो कि इन सव वातोंके होनेके लिये यह स्वर्गका विमान आपका सदा मित्र वना रहै. याद रखना! आपके हृदयमें शुभेच्छा होगी तो इस स्वर्गके विमानकी मित्रता आपको ठीक स्वर्ग तक काम आवेगी. इसीसे मैं आप लोगोंसे वारवार इस पुस्तकको पढनेकी प्रार्थना करता हूँ.

वंवई—गणेशवाडी	वैद्य अमृतलाल सुंदरजी
सेठ लक्ष्मीदास खीमजीका घर	
ता. ८।८।१९०२.	पढियार चोरवाडकर.

श्रीपरमात्मने नमः ।

भूमिका ।
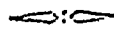
पृथ्वीपर एक स्थानसे दूसरे स्थानको जानेके लिये गाडी, घोडा, ऊँट, रेल, मोटर, जहाज आदि अनेक साधन हैं परंतु स्वर्गको जानेके लिये केवल एक विमानही साधन है. जिसके हाथमें वह विमान आगया उसके लिये स्वर्गमें पहुँच जानेमें कुछ भी संदेह नहीं. सवारियोंमें जैसे स्वर्गका पहुँचानेवाला साधन विमान है वैसीही पुस्तकोंमें स्वर्ग पहुँचानेवाला साधन यह स्वर्गका विमान है. इसमें क्या है सो जतानेके लिये केवल इतनाही लिखना बस है कि इसमें महात्मालोगोंके मुखसे निकले हुए उदाहरणोंके स्वरूपमें अमृत वचन हैं और वे स्मरण रखनेके योग्य हैं. जो इस पुस्तकको पढेगा वारवार पढता रहेगा, समझेगा, ध्यानपूर्वक मनन करता रहेगा और सच्चे अंतःकरणके विचार करके इसमें लिखे वचनोंके अनुसार चलनेका प्रयत्न करैगा उसके चित्तके विकार, मनके मैल और अंतःकरणके दोष शनैः २ घटने लगेंगे, साफ होते जायँगे और किसी दिन विलकुल दूर हो जायँगे यहाँतक कि अंतमें शुद्ध, निर्मल और सात्त्विकीय मन वृत्ति होकर स्वर्ग प्राप्त हो जायगा इसमें कुछ भी संदेह नहीं है.

मूल गुजराती पुस्तकके लेखक श्रीयुत वैद्य अमृतलाल सुंदरजी पढियार चोरवाडकरने अपनी भूमिकामें जो लिखा है उससे मालूम होता है कि ता० ८।८।१९०२ से २२।६।१९०८ तकके छःही वर्षके भीतर गुजराती भाषामें इस पुस्तककी तीन आवृत्ति हो चुकी हैं जिनमें ६००० प्रतियाँ छपी हैं, बस इसीपरसे इस पुस्तककी उपयोगिता सिद्ध होती है. उस तृतीयावृत्तिकी प्रतिका ही भाषांतर आज यह पाठकोंके आगे प्रस्तुत है.

मैं लेखक नहीं हूँ और इसीसे यह भाषांतर यथातथ्य हुआ है या नहीं सो नहीं जान सकता. इसके निर्णय करनेका भार तो पाठकोंके ऊपर है; परंतु पुस्तककी उपयोगितापरसे ही मुझको पूर्ण विश्वास है कि सर्वसाधारण इसका आदर अवश्य करेंगे.

श्रीवेंकटेश्वर यंत्रालयके स्वामी श्रीमान् सेठ खेमराजजी श्रीकृष्णदासजीकी आज्ञासे उक्त पढियार महाशयकी लिखी हुई स्वर्गका विमान, स्वर्गकी कुंजी और स्वर्गका खजाना नामक तीन पुस्तकोंका मैं भाषांतर कर चुका हूँ जिनमेंसे यह स्वर्गका विमान पुस्तकाकारमें प्रकाशित किया इसके लिये मैं उक्त श्रीमान् सेठसाहबका पूर्ण कृतज्ञ हूँ. शेष दोमेंसे स्वर्गकी कुंजी दैनिक "वेंकटेश्वर" में निकल चुकी है और तीसरी अभी बंदकी बंदही रक्खी है. यदि इस पुस्तकका पाठकोंने आदर किया तो सेठसाहब उन दोनोंको भी जल्दी ही पुस्तकाकारमें छापेंगे.

मूल पुस्तकमें जो पद थे उनमेंसे कितनेहीका भाषांतर और कितनेहीका प्रत्ययांतर करनेसे काम चलगया परंतु कितनेही ऐसे निकले जिनके स्थानमें नये बनाकरही रखने पडे. ग्राम बेरी, जिला रोहतक (पंजाब) निवासी पं० नंदलालजीने वे नये पद बनाये और मेरे नामसे इसमें रखदिये. इस कृपा और परिश्रमके लिये मैं उक्त पंडितजी महाराजको धन्यवाद देता हूँ.

अंतमें एकही बात लिखना और बाकी है वह यह कि जो इस पुस्तकके पढनेवाले पाठकोंमेंसे प्रति सैकडा पाँच सज्जनभी इसमें लिखी शिक्षाओंपर ध्यान देकर अपनी मनोवृत्तिको सुधारनेका यत्न करेंगे तो मैं अपनेको कृतकृत्य समझूँगा.

बूंदी–राजपूताना, आश्विनकृष्ण ८ सं० १९७३ | हिंदीका एक लघु सेवक रामजीवन नागर.

श्रीः ।

अथ स्वर्गके विमानकी विषयानुक्रमणिका ।

विषय. पृष्ठांक.

विषय. पृष्ठांक.

विषय. पृष्ठांक.

विषय. पृष्ठांक.

विषय. पृष्ठांक.

विषय. पृष्ठांक.

विषय. पृष्ठांक.

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,

कल्याण–मुंबई.

श्रीपरमात्मने नमः ।

अथ स्वर्गका विमान ।
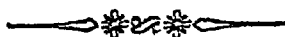
मैंने जो भोगा वह मैंने कमाया, जो बचाया वह मैंने खोया और जो मैंने दान किया वह मेरे पास है.

" संसारमें स्वर्गमेंसे "

१ जो दूसरोंको नमकहराम समझता है वह स्वयंही प्रभुका बडा नमकहराम है.

एक सेठ गाडीमें बैठकर सैर करनेको जारहाथा, मार्गमें उसको उसकी जान पहँचानका एक साधु मिला. साधुने पूँछा " सेठ ! कैसे हो " ?

सेठने उत्तर दिया-" इस घोडेकी झंझटमें पडा हूं इसपर मैंने बहुतसे रुपये खर्च करदिये, परंतु यह सुधरता नहीं. इसको मैं बहुत खिलाताहूं, बहुत फिराताहूं, और सिखानेके लियेभी मैंने एक अच्छा चाबुकसवार रख छोडा है तबभी उसकी चाल सुधरती नहीं है, यह तो अब शिरपर पडा. "

साधु बोला-" सेठ ! भगवान्‌कोभी तुमजैसाही दुःख है. "

सेठने पूँछा-" भगवान्‌को मुझजैसा क्या दुःख है ? "

साधुने उत्तर दिया-" जैसे तुम घोडेको बहुत खिलाते पिलाते हो तबभी वह बराबर नहीं चलता, वैसेही भगवान् तुमको बहुत ज्ञान देता है, बहुत वैभव देता है बहुत सुख देता है, और तुमको सुधरनेके बहुत साधन देता है, तथा भक्तोंके शिक्षकस्वरूप अच्छे २ महात्माओंको सत्संग करनेके लिये तुम्हारे पास भेजता है, तबभी

तुम अपनी चाल नहीं सुधारते इसी बातका भगवान्‌को बडा दुःख है. सेठ ! तुम्हारा घोडा नहीं सुधरेगा तबभी चलेगा, परंतु तुम नहीं सुधरोगे तो काम नहीं चलनेका. इसलिये अपने घोडेको सीधा चलानेके लिये तुम जितना परिश्रम और द्रव्य लगातेहो उतना परिश्रम और द्रव्य अपनी चाल सुधारनेके लियेभी तो लगाओ. "

२ भक्त होनेके लिये अधिक जाननेकी आवश्यकता नहीं है, परंतु कुछ करनेकी आवश्यकता है.

किसी मनुष्यके घरमें रातको चोर आया तो उसकी स्त्री बोली " सुनते हो ! घरमें कुछ खडखडाहट होती है ! "

पतिने उत्तर दिया " हां मैं सुनताहूं.

थोडी देरमें फिर स्त्री बोली " किंवाड खुला ! "

पतिने कहा " हां ! मैं देखताहूं. "

फिर स्त्री बोली " अब संदूकका ताला खुला ! "

पतिने कहा " हां ! मैं जानताहूं. "

उसने कहा " माल निकला ! "

पतिने उत्तर दिया " हां हां ! मैं जानताहूं. "

फिर उसने कहा " वह देखो ! चोर बाहर निकलगया ! "

पतिने कहा " हां ! मैं देखताहूं. "

इतनेहीमें वह फिर बोली " देखो ! चोर भागता है ! "

पतिने जवाब दिया " हां हां मैं जानताहूं. "

अब तो स्त्रीसे न रहागया. वह बोली " धूल पडी तुम्हारे जाननेमें ! यह जानना किस कामका ? जानबूझकरभी चोरको माल ले जाने दिया ! यह जानना कैसा ? ऐसे जाननेसे तो न जाननाही अच्छा है ! मनुष्यमें होशियारी हो और चतुराई हो फिरभी उनसे काम न लिया जाय तो वे किस कामकी ? ".

भाइयो! जो वहुत वातें करै वहुत शास्त्र पढै, वहुत दौडधूप करै, वहुत तीर्थ करै, और वहुतसी छुआछूत रक्खै परंतु जो अंतःकरणके विकार दूर न करै तो वह ज्ञान किस कामका? यों तो चूहाभी एकांतमें रहता है, वंदर फलफूल खाकर रहता है, मछली सदा पानीमेंही नहाती रहती है, गधा राखमें लौटा करता है और साँप विना घर वनाये रहता है परंतु मोक्षको प्राप्त थोडाही होताहै. ज्ञान तो जव उपयोगमें आवै तवही कामका है जवतक उपयोगमें न आवै तवतकका ज्ञान अंधा ज्ञान है और तवतकका विश्वास अंधा विश्वास है. इसलिये भाइयो! ऐसे अंधे विश्वासमें मत पडे रहो.

३ वाहरी ढोंगसे परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता, परंतु अंतःकरणकी शुद्धिसे परमेश्वर प्रसन्न होता है.

जो सैनिक (फौजी) कपडे पहनकर फिरैं, नरम विस्तरमें सोवैं मित्रोंको दावत दिया करैं और स्त्रियोंके समाजमें वैठकर गप्पें मारा करैं परंतु वंदूककी कभी आवाजभी न सुनैं, सीधी तलवारभी पकडना न जानै, और लडाईका मैदान कभी स्वप्नमेंभी न देखैं वैसे फौजी नौकरोंके नाम संसारके इतिहासमें थोडेही होते हैं? जिन्होंने सच्ची वहादुरी की हो, जिन्होंने शत्रुओंके शस्त्र अपने शरीरपर सहे हों जिनके घावोंकी शत्रुभी प्रशंसा करतेहों, लडाईका मैदानही जिनके आनंदका स्थान हो, शत्रुओंका रुधिरही जिनकी समशेरका शराव हो, शत्रुओंके शिरकी खोपडीही जिनका प्याला हो, और जिन्होंने अपने शिर देशके कामके लिये अर्पण किये हो उनकेही नाम इतिहासमें होते हैं. वैसेही याद रक्खे! कि प्रभुके दरवारमें केवल तिलक छापेसे रंगेहुए माथेवालोंके नाम नहीं होते,. सोनेमें मढीहुई सुंदर मालाएँ, तिलक छापे, वारीक यज्ञोपवीत, मनमोहक प्रसाद, लोभ-लालचके दर्शन, वारंवार स्नान, छींटा लगनेसे छूत, और

ऊपरसे लंबे लंबे जय गोपाल, जय श्रीकृष्ण, जय सीताराम करना तो बहुतसे लोगोंको आता है परंतु इन वातोंसे उनके ईश्वरके दरबारमें थोडेही लिखेजाते हैं. ये सब बातें तो बाहरी फौजी पोशाकके समान है, जैसे बाहरी पोशाक कुछ औरही वस्तु है, और दिली बाहादुरी कुछ औरही वस्तु है, वैसेही तिलक छापा लगाना कुछ औरही वस्तु है. और अंतःकरणकी भक्ति कुछ औरही वस्तु है. इसलिये भाइयो! इस बाहरी ढोंग और दंभमेंही न फँसजाओ और भीतरसे खाली न रहजाओ इसकी पूरी पूरी सँभाल रक्खो!

४ हरिके शरणागत सदा निर्भय रहते हैं.

एक पाँच छः बरसका अंधा बालक अपने पिताकी गोदमें बैठाथा उसको किसी दूसरे अजाने मनुष्यने अपने पास लेलिया इसपर वह कुछभी न बोला. तब पासवाले एक मनुष्यने उस लडकेसे पूँछा कि "क्या तू इस आदमीको जानता है ?"

उसने उत्तर दिया "नहीं."

तब उसीने फिर पूँछा कि "तो तू अजाने आदमीके पास कैसे चलागया यह तुझे कहीं लेजाय या मार डालैगा तब ?"

बालकने उत्तर दिया "मुझे इस बातकी कुछ चिंता नहीं. कारण मैं अपने पिताकी गोदमें बैठा हूं, वहांसे इसने मुझे लिया है इससे मैं इसे नहीं पहँचानता तो क्या हुआ मेरा पिता तो इसको पहँचानता है."

इसी प्रकार हमभी उस अंधे बालककी तरह अपने पिता परमेश्वरकी गोदमें बैठजाय तो हमकोभी किसी प्रकारका भय न रहे. इसलिये सब भावसे, सब मनसे, और सब हृदयसे प्रभुके आधीन होनेका यत्न करो. उसके चरणोंमें गिरनेसे भय भागजाता है, और हम अंधे अर्थात् अज्ञानी होनेपरभी अपने पिताकी गोदमें बैठनेसे निर्भय होजाते हैं. इसलिये पूर्ण प्रेमसे प्रभुकी शरण गहो! प्रभुकी शरण गहो!!

५ प्रत्येक मनुष्यको सदा सत्संगमें रहना जरूरी है.

दैवी नियम है कि, जो सफाई न रक्खे जाय तो कब चीजें अपने आप मैली हो जाती हैं. बरतन न घिसे जाय तो उनपर जंग चढजाता है. पुस्तकें और कपडे न सँभाले जाय तो उनमें जंतु लग जातेहैं. घरमें झाडू न लगायाजाय तो कूडा कर्कट और कचडा इकट्ठा होजाताहै. कुएमेंसे पानी न निकाला जाय तो बदबू आने लगती है. गाय बहुत दिनतक न दुहीजाय तो दूध सूखजाता है. घोडा बहुत दिनतक न फिराया जाय तो अडने और मस्ती करने लगता है. फल समयपर नहीं तोडलिया जाय तो अपने आप गिरपडता और सडने लगता है वैसेही अपना मनभी जो न सँभाला जाय तो वह स्वभावसेही बिगडने लगता है. इसलिये उसको प्रभुके नामस्मरणरूपी लगाम चढाना और भगवत्सेवारूपी मट्टीसे मलना घिसना चाहिये. दूसरे हलके विषयोंमें लगनेसे मनको खराब न होने देनेके लिये उसको भक्तिरसमें लेजाकर प्रभुके नामस्मरणरूपी रस्सीमें पिरोदेना चाहिये, जो हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारा मन हमहीको नीच दशामें लेजायगा और हमारी अधोगति होगी. ऐसा न होनेदेनेके लिये मनको भक्तिमें जोडदो ! सत्संगमें मिलादो !!

६ पापका तुरंतही नाश करडालो.

एक खेतमें कितनेही आदमी काम करतेथे; उनमेंसे दो मनुष्योंको सांपने काटा, उन दोनोंमेंसे एकने अपनी वह अंगुली काटडाली जिसपर सांप काटाथा और दूसरेने साँपका काटाहुआ अंग वैसाही रहनेदिया परिणाम यह निकला कि काटाहुआ अंग काटकर फेंक देनेवाला तो बचगया और दूसरा विष चढकर मरगया. इसी तरह मनमें पापका विचार उत्पन्न होना है सो साँपके काटने समान है जो उस विचारको दबादिया जाय और वह

पाप काटडाला जाय तो मनुष्य बचसकताहै परंतु जो वह वैसेका वैसेही रहनेदिया जाय तो उसका विष फैलजाताहै और मनुष्य मरजाताहै. इसलिये भाइयो ! पापरूपी दुष्ट विचारोंको तो जड़सेही काटडालो. तबही तुम बचसकोगे नहीं तो बचनेकी आशा नहीं है, क्योंकि काले नागसेभी पापका विष हजारगुना अधिक बुरा है इसलिये पापके विषसे बचे रहो ! बचे रहो ! ! इस विषको बढने न दो ! ! ! याद रक्खो ! इस विषको उतारनेका प्रभुका नामस्मरण करनेके सिवाय दूसरा कोईभी मंत्र नहीं है.

७ दूकानदार बाहरसे किंवाड बंद करके भीतर अपना काम काज करते हैं वैसे मंदिरमें और भक्तिमें न करो !

ग्यारस, अमावस, इतवार आदि दिनोंमें कितनेही आदमी अपनी दूकानें बंद रखते हैं परंतु उनमेंसे बहुतसे ऐसे होते हैं जो बाहरसे तो किंवाड बंद करलेतेहैं और भीतर बैठे काम करते रहते हैं, रिवाजसे अथवा जबरदस्तीसे लोगोंको दिखानेके लियेही वे लोग बाहरसे किंवाड बंद करलेतेहैं परंतु भीतर सब कामकाज चलाकरता है. कोई कपडोंकी तह कियाकरतेहैं कोई थान गिनते हैं, और बहीखाता साधते हैं, और कोई मालकी व्यवस्था करते हैं. इस तरह भीतर काम चला करताहै और बाहरसे किंवाड बन्द रहते हैं. इस तरहका काम दूकानदारीमें चाहे चलसकै परन्तु परमेश्वरके घरमें नहीं चलसकता. मन्दिरमें दर्शन करने जांय या घरमें भजन करने बैठें तब ऐसा नहीं करना चाहिये. बाहरका ढोंग तो भक्ति करनेका रक्खे और दर्शन तथा भजनके समयभी मनमें विचार दूसरेही रक्खें तो वह ईश्वरको धोखा देना है परन्तु ईश्वर इस तरह धोखेमें थोडाही आसकताहै ? बाहरसे किंवाड बन्द करके भीतर अपना काम चलाना दूकानोंमें चलसकताहै परन्तु मन्दिरोंमें प्रभुके आगे चलसकै नहीं. एकाग्रता

विना भक्ति नहीं होती. बाहरसे भक्तिका ढोंग बताकर भीतरसे दूसरे विचार रखना भक्ति नहीं दंभ कहलाताहै. व्यवहारमें ऐसी गडवड चाहे चलजाय परन्तु प्रभुके पास नहीं चलसकती. सब भाइयोंको यह वात अच्छी तरह समझरखना चाहिये.

१ पद।

झूठी धारै जो जगतमैं माला अरे माला माला माला॥ टेक॥
देखत जनके मनके छोडै, होठ बजाय जग छाला॥ १॥
जगत माहि इमि भगतसो बनिकै,करे करम बहु काला॥ २॥
रामजीवन अमी नाम पविनकों,यांको कुसँग दो टाला॥ ३॥

८ विश्वासही लंगर है, विना लंगर जहाज नहीं ठहरसकता.

हम देखते हैं कि, जिसका लंगर डालाहुआ होता है वही जहाज अपनी जगहपर ठहरसकताहै अर्थात् न तो उसको हवासे हिलना पडताहै न समुद्रके चढनेमें उतरनेमें उसे आगे पीछे होना पडताहै. वैसेंही जो मनुष्य ईश्वरपर सहारा रखता है, जो मनुष्य ईश्वरका विश्वासरूपी लंगर डालता है, उसको भिन्न २ मनुष्योंके भिन्न २ विचारोंमें पडकर भटकना नहीं पडता, उसको कल्पनाके जालमें नहीं पडना पडता, उसकी बुद्धि उसको ठगती नहीं और उसका मन उसको बहकाता नहीं, कारण यह कि उसने विश्वासका लंगर डाल रक्खाहै. परन्तु जो आस्ता (विश्वास) विनाके हैं प्रभुपर प्रेम विनाके हैं, वे विना लंगरके जहाज जैसे हैं. वे जन्ममरणके चक्रमें पडते हैं, और ऊंच नीच योनिमें पडकर आगे पीछे तनाकरतेहैं. ऐसा न होनेके लिये भाइयो! भगवान्के आसरे विश्वासका लंगर डालो.

९ सब विना काम चलैगा परंतु विश्वास विना नहीं चलेगा.

तुम गरीब हो और दान नहीं करसकते तो काम चलसकैगा.

तुम बीमार हो और तप नहीं करसकते तो चलेगा. तुम संसारी जालमें बहुत फंसेहुए हो और योग नहीं साधसकते तो चलेगा. तुमको अच्छे २ गुरु और अवसर न मिलनेसे गहरा ज्ञान न मिला हो तो चलेगा. तुमने पाप किये हों तबभी शायद चलसकेगा उनकीभी भक्तिसे माफी मिलसकेगी परंतु जो तुममें विश्वास नहीं है तो उसके विना नहीं चलसकता. तुम्हारा जहाज बहुत अच्छी २ चीजोंसे भराहो परंतु जो उसके पेंदेमें सूराख होगा तो वह अवश्य डूबजायगा. वैसेही तुम चाहे जैसे अच्छे हो परंतु जो तुममें विश्वास नहीं है तो जहाजके छिद्रसमानही है और यह अविश्वासरूपी छिद्र इतना बडा है कि, उसमें पेवंद (जोड) भी लगानेसे काम नहीं चलनेका विश्वास विना काम करना वैसाही निर्जीव है जैसा ऊपरसे तो मकानको बहुत बडा और भपकेदार बनाना और उसमें अच्छे २ सामान सजाना परंतु नीव उसकी वायुसे उडजानेवाली रेतसे लगाना है कारण यह है कि, विश्वासही धर्मका पाया है. इसलिये जो करो सो पूर्ण प्रेम और विश्वाससे करो. श्रद्धा और विश्वास विना ईश्वरको जानने ओर प्रसन्न करनेका और कोईभी मार्ग नहीं है ! नहीं है ! ! नहीं है ! ! ! इससे ईश्वरी श्रद्धाको अपने जीवनका तत्त्व बनाओ तबही संतोष मिलेगा और तबही संसारसागर पार होसकेगा. यह अटल सिद्धांत है.

१० हरिजनको शोक नहीं करना, शोक करना प्रभुसे तकरार करनेके बराबर है.

एक मनुष्यने अपने किसी मित्रसे पूँछा " आजकल तुम दिखाई नहीं देते ? "

उसने उत्तर दिया " आजतक मुझे शोक है, इससे घरसे बाहर नहीं निकलता. "

वह बोला " तुम तो बडे लडाकू जानपडते हो ? अबतक लडाई नहीं छोडते ! "

यह सुनकर उस शोकवालेने कहा " क्या कहते हो ? मैंने किससे लडाई की ? "

उसने उत्तर दिया " प्रभुसे ! प्रभुने तुम्हारा आदमी ले लिया इससे तुम प्रभुके साथ द्वेष रखते हो ! तुमही बताओ इतना शोक करना प्रभुसे लडना नहीं तो और क्या है ? जो प्रभुका था वह प्रभुने लेलिया इसमें शोकका क्या काम ? सच्चा शोक तो वह है कि जैसे वह मरनेवाला मरगया वैसेंही एक दिन हमकोभी मरना है. इससे अपनी मृत्युको सुधारलेना चाहिये. सच्चा कर्तव्य तो हमारा यह कि, मरनेवालेके पीछे हमको अपने स्नेह और अपनी स्थितिक अनुसार अच्छे २ काम करना चाहिये जिससे उसको भगवान्के पास पहुँचनेमें सहायता मिलै और हमको अपना कर्तव्य पूरा करनेका संतोष हो. घरमें बैठरहना और देवदर्शन तथा भगवत्सेवा जैसे अच्छे कामोंसे दूर रहना शोक नहीं कहलाता. यह तो प्रभुसे वैर करना. " सब लोगोंको यह बात अच्छी तरह याद रखनी चाहिये.

११ प्रभुको दया पसंद है कोरा ठाठबाट नहीं.

साधुजन कहते हैं कि, प्रभुको दया पसंद है ठाठबाट नहीं हम तो हाथमें, पैरमें, कमरमें, गलेमें, नाकमें, कानमें, आवश्यकतासेभी अधिक जेवर पहनें, कष्ट हो तबभी पहनें, न उठ सकें तोभी पहनें, कान टूटने लगै तबभी पहनें, पैरोंमें पट्टी बांधनी पडै तबभी पहनें, गर्दन झुकजाय तबभी पहनें, हाथ छिल जाय तबभी पहनें, रुपया पास न हो तो उधार लेकरभी पहनें, घरकोंसे लडाई झगडा मचाकरभी पहनें, तथा हीरे मोतीसे लदकर मलकते चलैं, और हमारे भाई बंधु रोटीके टुकडे बिना भूखे मरैं कपडे

विना ठंडसे मरें, दवा विना रोगसे मरें और पशुओंकीसी बुरी दशामें रहें, तवभी हम उनको सुधारने और बचानेका यत्न न करें और केवल अपने गहने गांठेहीमें लीन रहें इसका नाम क्या राक्षसीपन नहीं है ? ऐसी २ बातें देखकरभी हमारे हृदयमें दया न आवे तो मनुष्यों और राक्षसोंमें अंतरही क्या ? इस तरह जेवर पहनकर मटकमटकसे फिरना तो फिसलेपर लात मारना, जलेको जलाना, दुखियापर डाह देना, मरेको मारना और रोतेहुएके सामने बैठकर हँसनेके समान है इनसे भगवान् राजी नहीं होता क्योंकि दया विनाका भडकीला दृश्य कठोर होता है. इसलिये प्रभुको प्रसन्न करना है तो हीरे मोतीके नहीं दयाके जेवर पहनो ।

१२ धायेहुएको हम जवरदस्तीसे मिठाई खिलाते हैं, परंतु भूखेको टुकडा रोटीकाभी नहीं देते.

अपने सगे संबंधियोंको, अपने मित्रोंको और अपने समधियोंको हम जवरदस्तीसे मिठाई खिलाते हैं, उनका पेट भरगया हो तवभी उनसे और खानेका आग्रह करते हैं, उनको भूख न हो तवभी जवरदस्ती जिमाते हैं, रुचि न हो तवभी उनको बादामका हलवा और मोहनभोग खिलाते हैं, उनको न पचै तवभी कचौडी पकौडी खिलाते हैं और वे आनेसे साफ इनकार करें तवभी वारंवार न्यौता बुलावा करके जोर देके, क्रोध करके दवाके तथा लज्जित करकेभी बुलालाते हैं और विना बुलाये आये हुए, पेट कूटतेहुए, भूखसे रोतेहुए, अन्न विना दुर्बल बनेहुए, हमारे घरके नीचे खडेहुए तथा पाखाने मोरीके पास पडीहुई जूंठी पत्तलोंमेंसे चावलके दाने वीन वीनकर खाते हुए अनाथ बालकोंको, दीनता भरीहुई आवाजें सुनके तथा घरमें बनी हुई रसोई वची रहनेपरभी नहीं देते. यह क्या मनुष्यत्व है ? खुले दिलसे अपने गरीब भाई बंधुओंकी अच्छी तरह सहायता कर-

नाही परमेश्वरको प्रसन्न करनेका एक मार्ग है. सब प्राणियोंपर उदारता दिखानेके सिवाय दूसरा कोईभी परमेश्वरको प्रसन्न करनेका सुगम मार्ग नहीं है. इसलिये दान देनाही हमारा एकमात्र महामंत्र होना चाहिये तबही कल्याण हो.

१३ ईश्वरका ज्ञान होता है तब माया छूटजाती है.

एक छोटे लडकेके लिये एक धाय रक्खी गई थी उसीको बच्चा अपनी माता जानता था इससे वह उसीका कहा मानताथा, उसके पास दौडजाता था, उसको न देखनेसे रो पडताथा और उसीपर पूरा प्रेम रखताथा, उसकी सच्ची माता बडे प्रेमसे हाथ बढाबढाकर बुलाती तब भी वह उसके पास नहीं जाता क्योंकि वह नहीं जानताथा कि यही मेरी माता है, वही लडका जब बडा हुआ और जानने लगा कि, यह तो मेरी धाय है और सच्ची माता दूसरी ही है तब उसने बिना काम उसके पास जाना छोडदिया यहांतक कि वह उसे अधिक बुलाती तो वह जवाब देता कि " तू तो मेरे पिताकी दासी है, मेरी माता थोडी ही है. अब मैं तेरे पास नहीं आता तू मुझसे दूर रहे ? "

इसी तरह माया प्रभुकी दासी है, परंतु हम उस बालककी तरह अज्ञानी हैं, इससे मायाकोही अपनी माता समझ बैठे हैं, अपने सच्चे पिता समर्थ परमेश्वरको हम भूलरहे हैं, परंतु जब ईश्वरका स्वरूप समझमें आता है, तब माया हमारी दासी बन जाती है और फिर हमको हरिके चरणकी शरण छोडकर सच्चे मातापिताको छोडकर दासीके पास जानेको मन नहीं होता यही भक्तका लक्षण है.

१४ जो प्रभुको सर्वव्यापी समझतेहैं वे किसीसे नहीं डरते.

ईश्वरको सर्वव्यापक समझनेसे जैसे मनुष्य पापसे बचसकताहैं वैसेही वैसे अनुभवसे हम निर्भय होसकते हैं कहते हैं कि, एक

मनुष्य किसी बालकके केवल हँसीके लिये विनाही कारण ' हाऊ आया ! ' ' हाऊ आया ! ! ' कहकर डराया करताथा. जिससे वह बालक अकेला होता तब हाऊका नाम सुनकर डराकरताथा. एक दिन वह बालक अपने पिताका हाथ पकडे किसी अँधेरे मार्गमें होकर जारहाथा कि सामनसे आकर उस आदमीने कहा " हाऊ आया ! "

बालक तुरन्त बोल उठा " इस समय मैंने अपने पिताका हाथ पकड रक्खा है इससे मैं तुम्हारे हाऊसे नहीं डरता. हां ! जब अकेला होताहूं तब हाऊका डर लगताहै. "

इसी तरह ईश्वरको साथ रखकर चलनेसे ईश्वरको सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान् समझकर काम करनेसे हमभी उस बालककी तरह निर्भय होजातेहैं. इसलिये सदा मनमें ऐसीही भावना रखना चाहिये कि:—

सवैया ।

दूरहु राम समीपहु रामही, देशहु राम विदेशहु रामे ।
पूरव रामही पश्चिम रामही, दक्षिण रामही उत्तर धामे ॥
आगेहु रामही पीछेहु रामही, व्यापक रामही है वन ग्रामे ।
सुंदर राम दशोंदिश पूरण, स्वर्गहु राम पतालहु तामें ॥

१५ गरीबोंके विना स्वर्गतक हमारा बोझा कौन उठावैगा ?

एक ज्ञानी भक्तका कथन है कि, गरीबोंको धिक्कारो मत ! कारण वे हमारे पक्के मित्र और साथी हैं और वेही हमारा बोझा उठानेवाले हैं तुम विचारके तो देखो कि, हमारे धर्मका बोझा स्वर्गतक उठाकर लेजानेवाले भिखारियोंके सिवाय और कौन हैं ? हमको अपनी एक गठरी उठाकर स्टेशनतक लेजाना होता है तो उसको लेजानेके लियेभी कुली कितने पैसे माँगते हैं ? जरा विचार तो करो कि, जो कुलीको एक मीलका एक आना भी दिया

जाय तो स्वर्गतकके लिये कितना देना पडेगा ? प्रथम तो वहां-तककी मजदूरी देनेके लिये किसीके पास इतना पैसाही नहीं है और जो कोई देनेवाला खडा भी हो जाय तो स्वर्गतक बोझा उठाकर लेजाना स्वीकार करनेवाले भिखारियोंके सिवाय दूसरे हैं भी तो कौन ? यहांपर हमको नोंचनोंचकर सर्वस्व खाजानेपरभी हमारी स्त्री, पुत्र, मालिक, नौकर, दोस्त या खुशामदी टट्टुओंमेंसे कोईभी हमारे धर्मका बोझा शिरपर धरके स्वर्गतक नहीं पहुँचा सकते केवल भिक्षुकही हमारा बोझा पहुँचावेंगे और वहभी मुफ्तमें, केवल मुफ्तही नहीं परंतु एकका हजारगुना देनेकी शर्त्तपर. ऐसे स्वर्गमें सहायता देनेवाले ईश्वरके आगे हमारे धर्मकी गवाही देनेवाले भिखारियोंके सिवाय दूसरे सच्चे मित्र हमको कौन मिलैंगे ? इस-लिये भाइयो ! भिक्षुकोंपर दयाही रक्खो और जो कुछ बनै सो देतेही रहो.

१६ भगवान्‌की इच्छाके अधीन रहनाही अच्छा है.

जो कपडे अच्छे होते हैं उनकोही कूट २ कर धोयाजाताहै, कपडोंको फाड डालनेके लिये नहीं कूटा जाता परंतु मैल दूर करनेके लिये कूटा जाता है इसी तरह जो प्रभुके प्यारे भक्त हैं वेही दुःख पातेहैं, कारण दुःखकी मार खानेसे वे पवित्र होजाते हैं,

जो कपडे मैले कुचैले या फटेटूटे होते हैं, वे बात्तियों और मशालोंमें जला दियेजातेहैं, ऐसे जलाने योग्य कपडोंको धोनेकी कोई मेहनत नहीं करता परंतु अच्छेकोंही धोनेकी मेहनत करते हैं. इसी तरह जो परमेश्वरके प्यारे हैं उनकोही दुःख होता है. इससे दुःखसे मत डरो परंतु उसको खुशीके साथ सहन करो. इसमें विशेषता इतनीही है कि, चित्तको दुःखित करके भोगोगे तो दुःखमेंही डूबेरहोगे और भगवान्‌की इच्छाके आधीन होकर शां-तिके साथ भोगोगे तो तरजाओगे.

१७ ईश्वरकी इच्छासे आयेहुए दुःख नहीं परंतु ईश्वकी दया है.

किसी कुएमें गिरकर डूबतेहुए मनुष्यको यदि कोई दूसरा आदमी चुटिया पकडकर निकालले तो उसपर इस बातकी नालिश नहीं होसकती कि, इसने बाल क्यों खींचे ? मरतेको बचानेके लिये बाल पकडकर खींचना अपराध नहीं कहलासकता, क्योंकि बाल पकडना उसका स्वार्थके लिये नहीं वरन् परमार्थके लिये है. इसी तरह हम इस संसाररूपी समुद्रमें डूबेहुए और पापके कीचडमें फँसेहुए हैं इसमेंसे बचानेके लिये ईश्वर हमको कभी २ थोडा बहुत दुःख देता है परंतु बचानेके उपकारको भूलकर हम दुःख देनेकी शिकायत करते हैं यह हमारी कैसी नीचता और ईश्वरकी कैसी उत्तमता है ? इस नीचतामेंसे बचनेका उपाय यही है कि, प्रभुका स्मरण करते २ शांतिके साथ दुःखोंको भोगलियाजाय,

१८ चाहे जैसा ज्ञान क्यों न हो परंतु भक्ति विना पार नहीं पडता.

कोई एक सेठ नावमें बैठकर कहीं जाताथा. उसके साथ एक बडी घडी थी, नाव चलदेनेबाद थोडी देरमें मल्लाहने घडीके पास खडे होकर पूँछा " सेठ कितने बजे हैं ? "

सेठने उत्तर दिया " अरे तुझको घडी देखनाही नहीं आता, कुछ पढा लिखा है या नहीं ? "

मल्लाहने उत्तर दिया " नहीं माता पिता ! हमको कौन पढावे ? "

सेठने कहा " अरे भले आदमी ! तब तो तेरी चौथाई जिंदगी ालीही निकल गई ! यह तो कह कि तू व्याहा है या नहीं ? "

मल्लाहने उत्तर दिया " नहीं साहव ! पेट तो भरताही नहीं तब विवाहकी झंझट कौन करै ? "

सेठने कहा " लडके वच्चे और स्त्री विना सुख कहां ? तब तो तेरी आधी जिंदगी रद्द हुई. यह तो वता कुछ व्यापार धंधा करनाभी आता है ? "

मल्लाह कहनेलगा " मुझको तो एक नाव खेना आता है और कुछभी नहीं आता ! "

सेठ वोला " अरे मूर्ख ! व्यापार धंधाभी नहीं आता ! तव तो पौन जिंदगी योंही गई. "

इनमें इस तरहकी वातें होरही थीं इतनेहीमें एक तूफानी लहर आई और ऐसा मालूम हुआ कि अभी पासवाले चट्टानसे टकराकर नावके टुकडे २ हुए जाते हैं. यह देख मल्लाह वोला " सेठ साहव ! पैरनाभी जानते हो ? "

सेठने उत्तर दिया " नहीं भाई ! और तो सव सीखा परंतु पैरना नहीं सीखा. "

तव मल्लाह वोला " सेठ ! मेरी तो पौन जिंदगी खराव गई परंतु तुम्हारी सारीही जिंदगी खराव गई. "

इतना कहकर मल्लाह तो पानीमें कूदकर पार होगया और सव सीखने और केवल पैरना न सीखनेवाला सेठ डूवकर मरगया.

हम तो अपने मनसे सर्वगुणसंपन्न वने फिरते हैं और औरोंके आगे अपनी डींगें हाँकते हैं. परंतु भाइयो ! याद रक्खो ! अभी हम परमेश्वरका नाम नहीं जानते. जबतक रामका नाम नहीं जानते तवतक पैरना नहीं जानते और पैरना न आया तबतक और सव वातें जानना किस कामका ? कारण संसारसागरमें कालरूपी तूफान तो आवैहीगा. इससे भाइयो ! पैरना सीखो ! पैरना सीखो ! ! परमेश्वरका नाम लेना सीखो ! ! !

१९ सत्संगकी महिमामें श्रीकृष्णका उपदेश.

श्रीमद्भागवतके एकादशस्कंधके बारहवें अध्यायमें सत्संगकी महिमामें श्रीभगवान्‌ने उद्धवजीसे उपदेश करते कहा कि " दैत्य, राक्षस, पशु, गंधर्व, अप्सरा, नागलोक, सिद्धलोग, चारण, यक्ष, विद्याधर और मनुष्यमंभी वैश्य, शूद्र, स्त्री तथा चांडाल कि जो रजोगुणी और तमोगुणी थे वेभी उस उस युगमें हे उद्धव ! केवल सत्संगसेही मुझको प्राप्त हुए है. फिर देखो ! वृत्रासुर, वृषपर्वा, बलीराजा, बाणासुर, मयदानव, बिभीषण, सुग्रीव, हनुमान्, जाम्बवान्, गजेंद्र, जटायु, तुलाधार वनिया, धर्मव्याध, कुब्जा, व्रजकी गोपियां, यज्ञ करनेवाले ब्राह्मणोंकी स्त्रियां, तथा औरभी बहुतसे वैसेही जन सत्संगसे मुझे प्राप्त हुए हैं ये लोग वेद नहीं पढे थे, पढनेके लिये उन्होंने महात्माओंकी सेवा नहीं की थी. तपभी नहीं किया था, तबभी केवल सत्संग करनेहीसे मुझे प्राप्त होगयेथे. इसलिय हे उद्धव ! तुमभी विधिनिषेधको छोडकर सत्संगद्वारा सर्वात्मभावसे मेरी शरणमें आओ और मुझको प्राप्त कर संसारके सब भयमेंसे छूटो ! " ।

सवैया ।

जो कोइ जाय मिलै उनसों नर, होत पवित्र लगै हरि रंगा ।
दोष कलंक सबै मिटिजाय सु, नीचहु जाय जु होत उतंगा ॥
ज्यों जल और मलीन महा अति, गंग मिल्यो हुई जात है गंगा।
सुंदर शुद्ध करे तत्कालजु, है जगमाहिं बडो सतसंगा ॥

२० इस मिठाईका स्वाद खानेवालेको मिलता है, बात करनेवालेको नहीं.

एक मनुष्यने किसी बच्चेको बहुत बढिया मिठाई खिलाई. उसे खाकर बच्चा बहुत प्रसन्न हुआ और घर जाकर पितासे बोला

" पडोसीने मुझे वहुतही बढिया मिठाई खिलाई. वैसी मिठाई मैंने पहले कभी नहीं खाई मुझे वैसीही मिठाई ला दो. "

बाप मनमें विचारने लगा कि ऐसी बढिया मिठाई वह कौनसी थी खैर! बालकको साथ लेकर वह उस मिठाई देनेवाले पडोसीके यहां गया और बोला " भाई! यह बालक आपकी दीहुई मिठाईकी वडी प्रशंसा करता है. यह तो बताओ कि उसका स्वाद कैसा है. ? "

उसने उत्तर दिया " उसका स्वाद तो खानेवालेकोही मालूम होता है, न तो कहनेसे स्वाद आसकता है न सुननेसे. व्रजकी प्रेममें पागल गोपियां जिस स्वादमें मस्त रहतीथीं उसका स्वाद वैष्णवही जानसकते हैं, और नहीं. "

धर्मका आनंद भक्तिका सुख और सत्संगका मजा तो वेही जानते हैं जो उसका अनुभव लेते हैं, उसका वर्णन नहीं होसकता, हमने कोई नये प्रकारका फल या पदार्थ खाया हो उसकाही स्वाद हम दूसरोंको नहीं समझा सकते तव अपने हृदयमें भरा हुआ ईश्वरीय आनंद दूसरोंको क्योंकर समझाया जासकताहै, उस आनंदका स्वाद तो वाणीसे बाहर है. थोथे पोथेमें वह आनंद नहीं है और न किसी दूसरेके समझानेसे वह आनंद समझमें आसकता है. इसलिये भाइयो! जो ऐसा अलौकिक आनंद लूटना है तो सत्संगमें लगजाओ और तन, मन, धनसे प्रभुमें लीन होजाओ.

२१ जो बुरी वस्तुएं मायासे ऊंची दीखती हैं, वेही वस्तुएं सत्संगसे नीची पड जाती हैं.

दो मनुष्य बंबईकी चौपाटीसे वालकेश्वरकी टेकरी (पहाडी) पर चढने लगे, चढते २ दोनों थकगये तो उनमेंसे एक पीछा नीचे उतर आया और दूसरा बीच २ में विश्राम लेताहुआ

शनैः २ ऊपर जा पहुँचा नीचेसे जो जो चीजें बहुत बडी दीखतीथीं वेही ऊपर चढजानेसे उस आदमीको छोटी २ दीखने लगीं. कोलावाका लाइटहौस (दीपकगृह), राजावाईटावर, बोरीवंदर, सेक्रेटरियट, म्युनिसिपाल ऑफिस और मिलों (पुतलीघरों) के ऊंचे २ धुआंकशभी उससे नीचे होगये. परंतु जो मनुष्य नीचे उतरगयाथा उसको वे सब ऊंचेके ऊंचेही दीखते रहे.

इसी तरह सत्संग और भक्तिके आगे सब कुछ नीचे होजाते हैं और विना सत्संग या भक्तिके वेही सब ऊंचे होजाते हैं. माया अर्थात् व्यवहारकी जाल चौपाटी अर्थात् नीचा गढा है जहांसे सब चीजें ऊँचीही ऊँची दिखाई देती हैं और भक्ति वालकेश्वरकी ऊंची पहाडी है जहांसे सब चीजें नीचीही नीची दीखती हैं. भक्ति सत्संग और माया व्यवहारमें इतनाही अन्तर है. यही एक वडा रहस्य है. इस रहस्यको समझकर उसका आनन्द लेनाही बुद्धिमानी है, उसीका नाम भक्ति है और उसीसे जीवनकी सफलता है. परंतु ये सब सत्संगहीसे होते हैं. इसलिये सब भाइयोंको सत्संगसे भक्तिकी शांत पहाडीपर चढनेकी हिम्मत रखना चाहिये, परंतु सत्संगके मार्गमेंसे हारकर पीछा नहीं लौटना चाहिये, क्योंकि लौटनेसे पीछा गढेमेंही गिरना पडता है. इसलिये भाइयो ! सत्संगके मार्गमें आगेही आगे वढते जानेकी इच्छा रक्खो ! प्रवल इच्छा रक्खो ! ! हार्दिक इच्छा रक्खो ! ! !

२२. सत्संगमें पडे रहने विना पार नहीं गया जासकता.

एक मनुष्य किसी बडे आदमीके पास कामके लिये गया. द्वार बन्द था इससे उसने खटखटाया परंतु किंवाड खुलनेमें कुछ देर होनेसे वह पीछा चलदिया. थोडे दिन पीछे वह फिर उसके यहां गया परंतु सेठ किंवाड खोलने आया इतनेहीमें वह लौटगया. इस तरह कई बार वह आदमी उसके यहां गया परन्तु

द्वार खुलनेसे पहलेही पहले लौट आया. इस तरह जल्दबाजी करनेसे वह उस सेठसे न मिलसका और काम उसका पार न पडा.

हमभी उसी मनुष्यकी तरह जल्दबाज हैं. हम सत्संगमें जाते हैं और भक्ति करने लगते हैं परंतु उसका फल प्राप्त होनेका समय आता है उससे पूर्वही भक्ति और सत्संगको छोड देते हैं. फिर पीछेभी जब कोई प्रसंग आपडताहै तब अथवा दिवाली, होली, अथवा ग्यारस, मावस आदि दिनोंमें करते हैं परन्तु उससे सत्संगका कोई लाभ नहीं होता क्योंकि सत्संग करनेके लाभस्वरूप ईश्वरकी कृपा प्राप्त होनेका समय आनेसे पहलेही हम उसे छोड बैठते हैं. इससे पूर्ण प्रेम और धैर्यके साथ सत्संगमें लगे रहना चाहिये और एकाग्रचित्तसे पूर्ण विश्वासके साथ भक्ति करना चाहिये तबही ईश्वरकी कृपा संपादन होसकतीहै, जराजरासी स्वार्थकी वातोंके लिये वीचवीचमें भक्ति छोडदेना नहीं किंतु लगातार अधिक २ विश्वाससे करतेही रहना चाहिये तबहीं संसारसागर पैरनेमें आसकताहै. याद रक्खो कि, संसारसागरको पैरनेके लिये सत्संगसे वढकर सुगम मार्ग दूसरा नहीं है ! नहीं है ! ! नहीं है ! ! !

२३ हम सत्संगमें नहीं जाते इसका कारण क्या:

कारण यही है कि, हम सत्संगके गुणोंको नहीं जानते. जैसे किसी बच्चेके हाथमें एक वताशा और एक रुपया साथ २ रक्खा जाय तो वह वताशेको तो रहने देता है, क्योंकि वह मीठा लगता है और रुपयेको फेंक देता है क्योंकि अज्ञानसे उसे रुपयेकी कीमत नहीं मालूम है.

यह उदाहरण हमको लगता तो अच्छा है परंतु हम यह नहीं जानते कि यह हम परही घटित होताहै. वताशे रूपी मीठी लगनेवाली मायामें अर्थात् नाटकशाला, नाचरंग, महमानदारी, तमाशे,

श्रृंगाररसकी पुस्तकें और रूखे भोगविलासकी निर्जीव वस्तु-ओंमें हम लगे रहतेहैं और सत्संगरूपी रुपयेको जिससे ईश्वररूपी हीरा प्राप्त होसकता है हम फेंक देते हैं, परंतु यह नहीं विचारते कि जैसे एक रुपयेमें बहुतसे बताशे आसकते हैं वैसेही इस संसा-रके थोडेसे समयके मौज शौक केवल मायाकीही जाल है इसमें फँसकर ईश्वरको भूलजानाही अज्ञान है सत्संगरूपी रुपयेके न हानेसे ऐसा होता है. इसलिये भाइयो ! अनंत ब्रह्मांडके नायक ईश्वरको भूलजाय ऐसा मत करो ! मत करो ! ! मत करो !!! ऐसी भूलसे बचनेके लिये सदा सत्संगमें लगे रहो !

२४ जिसको सत्संगका रंग लगता है उसकी माया छूट जाती है.

एक छोटी लडकी जब अपने पिताके घर थी तो अपनी बराबर-वाली छोटी २ लडकियोंके साथ हँसती, बोलती और खेला करतीथी, थोडे दिन बाद जब उसका विवाह होगया तो वह कुछ लज्जावती होगई और घरके काम धंधे करनेमें लगी. अब तो वे लडकियां उसे खेलनेको बुलाने आतीं तो वह जवाब देती " मेरा विवाह होगया. अब मुझसे खेलते नहीं बनता. "

इसी तरह हम जब सत्संगमें लगजाते हैं तो हमारा ईश्वरके साथ विवाह होजाताहै. फिर उस विवाहिता लडकीकी तरह हमकोभी सत्संग छोडकर पराये घरोंमें जाना अच्छा नहीं लगता और प्रभुके नामका रस छोडकर लोगोंकी तेरी मेरी करनेकी इच्छा नहीं होती ऐसी हलकी इच्छाएं तो तबहींतक होती हैं जबतक हम सत्संगमें नहीं लगते. ईश्वरके साथ विवाह होजाने बाद प्रभु जैसे आनंदस्वरूप पतिको छोडकर औरोंकी निरर्थक बातें करने सुननेको कौन जाय ? याद रक्खो कि ऐसे सुखस्वरूप पतिके साथ सत्संगसेही विवाह होताहै सत्संग विना ऐसा सुंदर

स्वरूपवान्, ऐसा छैलछबीला और ऐसा कन्हैयाकुँवर जैसा वर मिलनेकाही नहीं यह निश्चय है.

२५ सत्संगमें जानेसे हमको अपनी भूलें मालूम होजाती हैं, और तबही हम ईश्वरके मार्गमें लगसकते हैं.

किसी नगरमें चोरियां वहुत होतीथीं. इससे दुःखित होकर वहांके राजाने नगरके द्वार तो बंद करादिये और दरवाजोंपर तथा किलेपर मजबूत पहरे रखदिये. वहुत दिनतक ऐसाही हाल रहा तबभी चोरी होना बंद न हुआ कारण इसका यह था कि चोर उसी नगरके रहनेवाले थे वाहरके नहीं अंतमें जब नगरके भीतरी चोरोंको पकडना जारी हुआ तब चोरी होना बंद हुआ.

इसी तरह हम जो पाप करते हैं वे सब अंदरहीके विकारोंसे हैं. इन पापोंको दूर करनेके लिये जो हम वाहरके दरवाजे बंद करें, अर्थात् वहुतसे उपवास करें, वहुतसा स्नान करें, वहुतसा छुआछूतका विचार रक्खें, वहुतसे तिलक छापे लगावें, वहुतसी माला कंठियें बांधें, और वहुत बडी २ वातें करें तो इनसे भीतरके पाप थोडेही मिलसकते हैं ? हां ! भीतरी चोरोंको पकडनेके लिये सत्संगकी आवश्यकता है. हमारे मनमें जितनी २ बुरी इच्छाएं छिपीहुई होती हैं वे सब सत्संग करनेसे मालूम होजाती हैं. हममें द्वेषबुद्धि हो, निंदा करनेका स्वभाव हो, लोभकी इच्छा हो, बडप्पनका अभिमान हो, धन, रूप या जवानीका मद हो, व्यभिचारकी इच्छा हो, धूल जैसी हलकी वातमेंभी जी जलानेकी आदत हो, अथवा औरभी इसी प्रकारकी अन्य बुरी २ आदतें हों तो उनको भीतरी चोर समझना चाहिये ये चोर सत्संगसेही पकडे जासकते हैं, वाहरके दरवाजे बंद करनेसे वे पकडनेमें नहीं आते. इसलिये भीतरके विकार और दुर्गुणोंको छोडनेके लिये और पापसे बच-नेके लिये तथा समर्थ ईश्वरको जाननेके लिये दृढताके साथ सदा सत्संगमेंही लगे रहो !

२६ मायावादी संसारियोंको सत्संग अच्छा नहीं लगता.

किसी नगरमें एक वार अकस्मात् पागलखानेमें आग लगगई और चारों ओरसे वडी २ ज्वालाएं उठने लगीं यह देखकर नगर-निवासी लोग तथा आग बुझानेके सरकारी एंजिनवाले दौडकर वहां जापहुँचे वहां जानेपर लोगोंने नीचेसे क्या देखा कि ऊपर वे पागल लोग खूब नाचते कूदते और वडी खुशीमें आकर गाते हैं. यह देख वे लोग चिल्लाकर उन लोगोंसे कहने लगे " भाइयों ! जल्दी नीचे आओ जल्दी ! तुम्हारे मकानमें आग लगी है आग ! जल्दी करो ! देर मत करो ! "

तव तो उन्होंने उत्तर दिया " जाओ ! जाओ मूर्खो ! ! भागो यहांसे ! ! ! तुमको किसने सयाना वनाया है ? हमारे मकानमें कभी एक चिरागभी नहीं जलता. आज वडी कठिनाईसे जुविलीजलसे-कीसी रोशनी हुई है तव तुम कहतेहो कि जलदी नीचे आओ ! हम ऐसे मूर्ख नहीं हैं जो तुम्हारे कहनेसे ऐसी वढिया रोशनीका मजा छोडकर नीचे आजांय. "

इतना कहकर वे फिर नाचने कूदने लगे और आपसमें कहने लगे " ये मूर्ख लोग चाहे जितना कहैं परंतु हमको नीचे नहीं जाना चाहिये हो ! क्या हम इन मूर्खोंके कहनेसे अपना मजा खोदें ? "

उन लोगोंके वहुत कुछ कहने समझानेपरभी उन पागलोंने एक न मानी और इस तरहपर नीचे उतर आनेवाले दो चारको छोडकर सबके सव जलकर मरगये.

इस वातका सार यह है कि सरकारी एंजिनवाले रूपी संतजन मायामें जलतेहुए संसारी लोगोंको वहुत २ समझाकर कहते हैं कि मायाकी आगसे बचनेके लिये संत्संग करो ! सत्संग करो ! ! परंतु वे उलटे जवावमें यह कहते हैं कि " आज जव हमको धन मिला है, आज जव हमको घर, महल, हवेलियां और वाग वगीचे मिले हैं, आज जव

हमको गाडी घोडे मिले हैं, आज जब हमको अच्छी स्त्री और अनेक प्रकारके कारखाने मिले हैं, आज जब हमारी बडी २ दूकानें चलती हैं, आज जब हमारा नगरमें बडा नाम हो रहा है, आज जब नाटकशालाएं, सरकस और दूसरे दिल बहलानेके साधन मिले हैं आज जब हमको पराये पैसेसे मौज शौक करके दिवाला निकाल अदालत दीवाला या गरीबी कोर्ट (Insolvent Court) में जानेका मौका मिला है, आज जब हमारे नाम अखबारोंमें छपने लगे हैं, आज जब हमारी जगह २ प्रशंसा होती है और आज जब हमको खिताब मिले हैं और मिलनेवाले हैं तब ऐसी खुशीके दिन तुम कहने लगे हो कि, बाबा 'बैरागियोंमें मिलकर सत्संग करो !' जाओ जाओ ! ! एक ओर हटो ! ! ! ऐसे मजेको छोडकर क्यों हम तुम बैरागियोंमें मिलें ? ऐसे सुखका छोडकर क्यों हम विरक्तोंमें मिलें ? अपनी इतनी प्रतिष्ठाको छोडकर हम हरिजनोंमें मिलें ? और अपने ऐसे वैभवको त्यागकर वैष्णव बनें ? जाओ ! जाओ ! ! तुम तो मूर्ख हो ! तुम कहनेवाले तो पागल हो परंतु हम सुननेवाले पागल नहीं हैं. हमारे ऐसे आनंदके आगे तुम्हारे सत्संग वत्संगकी कुछ नहीं चलैगी ! अपने सत्संगको तुमही अपने पास रक्खो ! हम तो इसी तरह मौज उडावेंगे. देखो तो ये बुद्धिमान् बनकर हमको समझाने आये हैं ! बडी कठिनाईसे तो ये आनंद मिला है और अब ये कहते हैं कि इसे छोडकर सत्संगमें मिलो ! देखो इन मूर्खोंकी बातें ! जाओ ! जाओ ! हमारे यहां तुम्हारी कुछ नहीं चलैगी.'

भाइयो ! इनमें मूर्ख कौन ? मायावादी या हरिजन ? हमभी इस पागलखानेके पागलोंकी तरह मायाकी आगको दीवालीकी रोशनी मानते हैं, और इसीसे उसमें पडे रहते हैं परंतु सत्संगका लाभ नहीं लेते इस उदाहरणसे हमको समझाना चाहिये कि ईश्व-

रके पवित्र नाम विना ये सब मायाकी आगके समान हैं. इससे इस बातकी पूरी सँभाल रखना चाहिये कि उन पागलोंकी तरह हमभी जलकर न मरजाँय.

सवैया ।

तात मिलै पुनि मात मिलै, सुत भ्रात मिलै युवती सुखदाई ।
राज मिलै गज बाजि मिलै, सब साज मिलै मनवांछित पाई ॥
लोक मिलै सुरलोक मिलै, विधिलोक मिलै वैकुंठहु जाई ।
सुंदर और मिलै सबही सुख, संत समागम दुर्लभ भाई ॥

२७ सत्संगसे हम और हमारे कुटुंब दोनोंको लाभ होता है.

सत्संग करनेवालेको तो लाभ होताही है परंतु उसके कुटुंब और वंशभरको लाभ होता है. प्रमाण विना आजकलके सुधरे हुए लोग इस बातको नहीं मानेंगे इससे साधुओंका प्रमाण यहांपर दिया जाताहै:—

एक बहरा आदमी किसी भक्तमंडलीमें नित्य कथा सुनने जायाकरताथा. किसी आदमीने उससे एक दिन पूँछा " बाबा! तुम कानसे सुनते तो होही नहीं फिर वृथा धक्के खाने क्यों जातेहो ? "

उसने उत्तर दिया' " भाई ! मैं अपने लिये नहीं, अपने बालबच्चोंके फायदेके लिये जाताहूं.'

पहले आदमीने पूँछा " तुम खुद तो सुनही नहीं सकते फिर तुम्हारे बच्चोंका फायदा क्या होगा ? "

उसने उत्तर दिया " यह तो सच है कि, मैं नहीं सुनता परंतु मुझे सत्संगमें जाते मेरे लडके नित्य देखते हैं इससे उनके हृदयमें इसका संस्कार जमता जाताहै. इस समय तो यह बीज बोनेके समान है, परंतु काल पाकर वह बीज ऊग ऊठैगा और तब मेरे लडकेभी मेरी तरह सत्संगमें जाने लगैंगे यह लाभ कुछ

ऐसा वैसा नहीं है. लडकों बच्चोंमें नकल करनेकी बडी आदत होती है और जिसमेंभी माता पिताकी तो वे जैसीकी तैसी नकल करसकते हैं. इसलिये अपने लडके बच्चोंके आगे अपना उदाहरण रखने और उनके मनमें सत्संगकी छाप लगानेके लियेही मैं सुन न सकनेपरभी नित्य सत्संगमें जाताहूं. "

सब भाइयोंको यह बात अच्छी तरह ध्यानमें रखनी चाहिये. इसमेंसे यह बात सीखने योग्य है कि सत्संग कैसी बडी चीज है. सत्संगसे तो फायदा तुरंतही होता है, परंतु जो कदाचित् हमको लाभ न हो तवभी हमारे लडके बच्चोंके फायदेके लिये तो हमको अवश्यही सत्संग करना चाहिये.

२८ सत्संगसे जो मोक्ष न हो तवभी अंतःकरणकी शुद्धि हुए विना तो रहतीही नहीं.

एक चेलेने अपने गुरुसे कहा " महाराज ! मैं नित्य सत्संगमें जाताहूं परंतु कुछ लाभ नहीं हुआ मैं तो जानताथा कि, सत्संगमें जानेसे ईश्वर साक्षात्कार होजायंगे और स्वर्गके सुख मेरे घरमें आजायँगे। परंतु आजतक वैसा नहीं हुआ तब सत्संगमें जानेसे क्या लाभ ?

गुरुने उत्तर दिया " बेटा ! एक काम कर ! तो तुझको अपने सवालका जवाब अपने आप मिलजायगा " इतना कहकर गुरुने चेलेको एक बांसकी टोकरी दी और कहा कि इसमें नदीमेंसे पानी भरला ! चेला टोकरी लेकर नदीपर गया और उसमें पानी भरनेलगा परंतु जबतक टोकरी पानीमें रही तबतक तो उसमें पानी भरा रहा और बाहर निकालतेही सारा पानी बहगया ! दसबीस वार इसी तरह करनेपरभी जब उसमें पानी न ठहरा तो वह गुरुके पास पीछा आया और बोला " महाराज ! क्या कभी टोकरीमेंभी पानी आया है !

गुरुने उत्तर दिया " बेटा! देख तो सही! धीरज रक्खैगा तो इसमेंसेभी कुछ मिलैहीगा. "

दूसरे दिन फिरभी गुरुने वही टोकरी लेकर चेलेको पानी लानेको भेजा. पांच सात दिनतक इसी तरह चलता रहा परंतु उसमें पानी आया नहीं. तब एकदिन चेला घबराकर बोला " गुरुमहाराज! वृथाही क्यों श्रम देतेहो? टोकरीमेंभी कभी पानी आया है? "

गुरुने कहा " बेटा! यह तो ठीक है कि, टोकरीमें पानी नहीं आता परंतु यह तो देख कि नित्य पानीमें डुबकनेसे टोकरीमें कुछ अंतरभी पडा है या नहीं? "

चेलेने उत्तर दिया " महाराज! पहले यह बहुत मैली थी परंतु अब साफ होगई और पहले बहुत कडीथी सो अब नरम और ढीली पडगई. "

गुरुने कहा " तो इतना अंतर पडना कुछ कम है क्या टोकरीमें पानी न आया तो न सही परंतु साफ तो होगई! "

हमारे मनकीभी ठीक उस बाँसकी टोकरीकीसीहो स्थिति है. अर्थात् मायाका मोटा कचरा तो उसमें ठहरजाता है परंतु पानी जैसी पतली, नहीं नहीं, पानीसेभी पतली ईश्वरकी भक्ति उसमें नहीं ठहर सकती? इससे ईश्वरका स्वरूप समझमें न आवै तबभी उस टोकरीका जैसे नित्यप्रति पानीमें डुबानेसे मैल साफ होगया वैसेही नित्यप्रति सत्संगमें जानेसे हमारे मनपरसेभी पापका मैल हटता जाता है, और संसारके दुःखोंके घावसे तथा सुखोंके अभिमानसे हमारे मन जो कठोर होरहे हैं वे सत्संगसे नरम अवश्य पडजाते हैं. यह लाभ क्या कम है! जो पाप धुलजाय और अंतःकरणकी भीतरसे शुद्धि होजाय तो शनैः २ प्रभुका आनंदभी किसी दिन आपोआप आने-लगैगा इसलिये भाइयो! प्रारंभमें प्रत्यक्ष रूपपर लाभ न दीखै तबभी सत्संगमें लगेही रहो! लगेही रहो!!

२ पद।

सतसंगतिसुख गाढो साधो २ रे, रोम रोम ह्वै बाढो ॥टेक॥
अठसठ तीरथ बहैं ताहिमैं, अँगमंजन करि काढो रे ॥
तृष्णा ताप आप चलिजावै, शांति शीतता चाढो रे ॥१॥
या सुख तुलिवे स्वर्गलोकसुख, मोक्ष सुखहु ना चाढो रे ॥
वेद पुराण गाय इमि थाके, योह सब ऊपरि माढो रे ॥२॥
रामजीवनको जीवन योह सुख, रोम रोम रंग चाढो रे ॥
कोटि कुसंगभंगकरि हारे, सो तो कढो न काढो रे ॥ ३ ॥

२९ सत्संगका मजा दूर खडे होकर देखनेसे नहीं आता, सच्चा मजा तो उसमें घुस पडनेसेही आताहै.

जाडेके दिनमें जब हम तालाव या नदीमें नहानेके लिये उतर-तेहैं तव पानी वडा ठंडा लगताहै. थोडे २ पैर भीगजाते हैं तबभी नहानेको मन नहीं चाहता. कमर भर पानीमें घुसजानेतकभी ठंड लगती रहती है परंतु डुवकी मारतेही ठंड भाग जाती है और खूव मल २ कर नहानेकी इच्छा होती है तथा पैरनेको मन होता है. वैसेही, आरंभमें सत्संग करना या धर्म पालना कठिन जानपडताहै परंतु जव उसमें मन गहरा घुसजाताहै तव कठिनाइयां भागजाती हैं, और फिर, आनंदही आनंद आने लगताहै. सत्संगकी कमीसे हम-लोगोंमें धर्मकी प्रवृत्तिके जागृत नहीं हुई है यही हमारा जाडेका मौसम है, और इसीसे धर्मका शांत पानी हमको ठंडा लगताहै, परंतु यह ठंड तवहींतकके लिये है जवतक हम उससे वाहर हैं, जहां भीतर घुसे कि फिर तो पैरनेमें मजा आनेलगताहै. धर्म और सत्सं-गकोभी इसी तरह समझना चाहिये. हम जवतक हरिजन नहीं हुए हैं तवतकही हमको धर्म पालना कठिन जान पडताहै, परंतु जव कडा मन करके उसमें कूद पडते हैं तव वे सारी कठिनाइयां आपो-

आप भागजाती हैं. इसलिये भाइयो ! निर्जीव अडचनोंसे न डरकर सत्संगकी पाल (पार) परसे धर्मके झरनेमें कूद पडो. उसमें ठंड नहीं है वरन् आनंद है, ठंड तो बाहर खडे लोगोंके लिये है, भीतर कूदजानेवालोंके लिये तो आनंदही आनंद है ! इसे खूब याद रक्खो !

३० बाहरी अडचनोंसे सत्संगका मजा मत खो ! सच्चा मजा तो भीतरही है.

एक मालीने किसीसे कहा " सेठ साहब ! मेरे बागमें बेर बडे मीठे हैं. वे आपकेही खाने योग्य हैं. "

उसने उत्तर दिया " अच्छा किसी दिन देखेंगे ! फुरसत मिलेगी उस दिन आऊंगा.

इसके बाद वह एक दिन उस बागके पास होकर निकला तो मार्गमें पडेहुए कुछ बेर उठाकर उसने चक्खे परंतु वे खट्टे निकले. कुछ दिनके पीछे एक दिन फिर वह माली मिला तब सेठने उससे कहा " तुम तो अपने बागके बेरोंकी बडी प्रशंसा करते थे परंतु मैंने एक दिन उनको चक्खा तो वे खट्टे निकले.

मालीने पूछा " सेठसाहेब ! वे बेर आपने कहांसे खाये. ? "

सेठने उत्तर दिया " एक दिन तुम्हारे बागके पास होकर जाता था तब वहांपर पडे हुए बेर मैंने चक्खे थे सो खट्टे निकले. "

मालीने कहा " वे खट्टे बेर तो दूरसे मँगवाकर वहांपर जानबूझकर लगाये गये हैं परंतु मीठे बेर बागके बीचोंबीच लगे हैं.: "

सेठने पूँछा " इसका कारण क्या ? खट्टे बेर जानबूझकर कौन लगावैगा. ? "

मालीने उत्तर दिया. " मीठे बेरोंकी रक्षा करनेके लिये खट्टे बेर लगाये गये हैं. खट्टे बेर जानबूझकर दरवाजेपर और बाहरकी

ओरवाले हिस्सेपर इसलिये लगाये गये हैं कि बदमाश लडके उन्हें खट्टे समझकर बाहरसेही चले जाँय और मीठे बेरोंका नुकसान न करें."

इस तरह बातें होचुकनेपर वह सेठ मालीके साथ उसके बागमें गया और मीठे बेरोंको खाकर बहुत प्रसन्न हुआ. इसी तरह व्रत, उपवास, तीर्थ, स्नान, दान, दर्शन, यम, नियम आदि धर्मके प्रारंभकी प्रथम सीढीका ज्ञान हमको सत्संगमें मिलता है और वह हमको कठिन जान पडता है परंतु भीतरके आत्मिक आनंदका रहस्य कुछ औरही है. इसलिये दरवाजेपरके खट्टे बेरोंसे निराश न होकर भीतर घुसो! जो मजा है वह तो भीतरही है. धर्मके मार्गमें आनेवाले स्नान, दान, व्रत और उपवास तो धर्मकी बाड हैं. सच्चे फल तो सत्संगसे उत्पन्न होनेवाली भक्तिकेही अंदर हैं. इसलिये भाइयो! कांटेवाली बाडसे डरकर फलके मजेको मत छोडो!

३१ पापीजन सत्संगमें नहीं जाते उसका क्या कारण?

किसी भक्तने एक महात्मासे पूँछा कि "पापीजन सत्संगमें नहीं जाते इसका कारण क्या है?"

महात्माने उत्तर दिया "सत्संग एक प्रकारकी तोप है और उसमें होनेवाले उपदेश हैं वे तोपके गोले हैं. वे गोले पापियोंकी छातीको फाडडालते हैं इससे पापीजन उन गोलोंके आगे ठहर नहीं सकते अर्थात् वे सत्संगमें नहीं आ सकते."

जो सत्संगमें न जाते हों उनको निश्चय पापी समझना चाहिये वे अभागे हैं! उनको धर्मज्ञानकी और ईश्वरज्ञानकी प्रबल इच्छा नहीं हुई है इससे वे दयाके पात्र हैं अभी वे अपने कल्याणको नहीं समझने लगे इसीसे सत्संगकी तोपके उपदेशरूप गोलोंको वे सहन नहीं कर सकते. हे परमेश्वर! ऐसे अभागोंपर दया कर और उनको सत्संगमें शामिल होनेकी बुद्धि दे!

३२ समय मिलने और बहुतसी सुविधाएँ होनेपरभी जो सत्संगका लाभ नहीं उठाते वे अंतमें पछताते हैं.

बरसात शुरू होनेसे पहले जो किसान अपना खेत हँककर तैयार नहीं कररखता उसके बारह महीने योंही जाते हैं. वैसेही जो मनुष्य अपने इस अमूल्य जीवनमें सत्संग करके ईश्वरकी पहँचान नहीं करलेताहै उसका सारा जन्मही खराब जाता है. यह जीवन है सोही हमारे लिये मौसम है और मनुष्यका अवतार है वह ईश्वरकी कृपाका फल है. इस मौसम अर्थात् ईश्वरीय कृपाका लाभ जो हम सतसंग करके नहीं लेसकें तो वह ऐसी निकम्मी वस्तु नहा है कि जो बारबारही हमको मिलजाय. संसारकी और २ वस्तुए तो हमको दुबाराभी मिल सकती हैं परंतु जिंदगी ऐसी वस्तु नहीं है जो क्षणभरके लियेभी हमको दुबारा मिलसके. ऐसा अमूल्य जीवन, सत्संगका लाभ लिये विना, ईश्वरको याद किये विना, ईश्वरका स्वरूप समझे विना, और ईश्वरकी आज्ञा पालन किये विना चलाजाय तो क्या थोडे दुःखकी बात है ? ऐसा न होनेदेनेके लिये भाइयो ! सचेत हो ! सचेत हो ! ! और सदा सत्संगमें लगे रहो ! ! !

२ पद ।

ता सम कौन अधम अज्ञानी,जौने सतसंग बुद्धि न ठानी॥ टेक॥
सींग पूँछ बिन पशुसम सो नर, नरतनु रह्यो दिखानी ॥
कहा भयो तन भूषण पहिरे,हस्ती तुरग चढानी ॥ ता० ॥ १ ॥
हम घर संपत हमरो नौ जोबना, यों लघू जगत दिखानी ॥
खान पान मैथुन नींदरिया, विषयनसों न अघानी॥ ता० ॥ २ ॥
चेतन नाहिं चातुरी मांही, कालकी चाल न जानी ॥
जीवन रामजीवन बहु थोरो,जिमि घन बिज्जु दिखानी॥ ता० ३

३३ कोईभी मनुष्य हमारा बुरा करै तो उससे द्वेष न मानना वरन् उसे ईश्वरकी इच्छा मानकर शांत रहना.

किसीने कुत्तेपर पत्थर फेंका. पत्थर कुत्तेको लगा परंतु कुत्ता पत्थरके साथ न लडा, किंतु पत्थर फेंकनेवालेकी ओर भोंकने लगा. कुत्तेकोभी इतना ज्ञान होता है कि, फेंकेहुए पत्थरसे लडाई करनेमें लाभ नहीं है किंतु उसके फेंकनेवालेको ढूँढकर उससे लडना चाहिये. खेद है कि, हमको कुत्ते जितना ज्ञानभी नहीं है. जो हम इतना ज्ञान रक्खें तो हमको दुःखसे लडना न पडे और दुःखसे दुःखित न होना पडे क्योंकि वे दुःखभी तो फेंकेहुए पत्थरकी तरहही है. उनके सामने हाथापाई और लात घूंसे करनेसे लाभही क्या ? उन दुःखोंको भेजनेवालेकी ओर देखना जरूरी है, क्योंकि दुःख अपनेआप तो आतेही नहीं है वे तो ईश्वरके भेजनेसे आते हैं. इससे हमको दुःखोंकी ओर न देखकर अर्थात् दुःखोंस दुःखित न होकर उनके भेजनेवाले परमेश्वरकी ओर देखना चाहिये, अर्थात् दुःखोंसे वचनेके लिये परमेश्वरसे प्रार्थना करना चाहिये, और आगे दुःख न पडै वैसे काम करना चाहिये. यही वचनेका उपाय है. दुःखसे हारकर निराश हो बैठना बचनेका उपाय नहीं है, उलटा वह तो डूबनेका उपाय है.

३४ हरिजन दुःखमें निराश नहीं होते.

तुमने देखा होगा कि, प्रायः पक्षियोंको पालनेवाले पहले उनके पंख काट डालते हैं. पंख इसलिये नहीं काटेजाते हैं कि, पक्षियोंको उनका बोझा लगता हो परन्तु काटे इसीलिये जाते हैं कि जिससे वे उडकर घरमेंसे चले न जायँ. पंख काटना उन पक्षियोंको दुःख देनेके लिये नहीं है परन्तु वे मालिकको प्रिय होते हैं इसीसे उनको आंखोंके आगेसे दूर न होनेदेनेके लिये है. इसी तरह खूब याद रखना चाहिये कि; जो भक्त ईश्वरको प्यारे

होते हैं उनकोही दुःख होताहै. मालिकका प्रेम होतेहुएभी जैसे पक्षी घरमेंसे उडजाना चाहते हैं वैसेही हमभी ईश्वरकी अपार कृपा होतेहुएभी उसमेंसे निकल भागना चाहतेहैं. दयालु परमेश्वर हमको अपनेही घरमें अर्थात् स्वर्ग और मोक्षमें रखना चाहताहै परन्तु तबभी हम अभागे हैं कि, संसारके तुच्छ सुखोंके लिये स्वर्ग छोडदेनेको तैयार होते हैं. तब विवश होकर परमेश्वर हमको दुःख देताहै जिससे पंख कटा हुआ पक्षी जैसे घर छोडकर बाहर नहीं जा सकता वैसेही हमभी दुःखके मारे परमेश्वरके मार्गसे बाहर नहीं निकलसकते. इसलिये भाइयो! आजसे समझ रक्खो कि, दुःख है, सो दुःख नहीं है वरन् ईश्वरकी कृपा है. दुःख पापसे बचनेका उपाय है, दुःख संसारसागरको पारकरनेकी बडी नाव है.

३५ पशुपक्षीही अपने मालिककी आज्ञा मानते हैं तब हम परमेश्वरकी आज्ञा न मानें तो कितनी बुरी बात है.

हमको परमेश्वरकी इच्छाके अधीन होना चाहिये, क्योंकि वह हमारा स्वामी है, उसकी हमपर अनंत दया है और उसने हमको सब प्रकारके सुख देरक्खेहैं. जो परमेश्वरकी आज्ञा नहीं पालता और जो परमेश्वरका स्वरूप पहँचाननेकी इच्छा नहीं करता वह पशुओंसेभी नीच है क्योंकि हम देखते हैं कि, एक टुकडा रोटीके लिये कुत्ता अपने स्वामीका कैसा नमकहलाल रहता है, बंदर अपने मदारीकी कैसी आज्ञा पालताहै और गाय अपने ग्वालपर कितना प्रेम रखतीहै? जब जरासे फायदेके लिये पशुही अपने स्वामीके लिये बहुत २ काम करते हैं तब विचार तो करो कि हम तो पशुओंसे हजार दर्जे बढकर हैं और पशुओंके स्वामी (मनुष्य) से हमारा स्वामी (परमेश्वर) अनंत गुना अधिक समर्थ है तबभी हम उस दयालु परमेश्वरको जाननेकी

अंतःकरणसे इच्छा नहीं करते और उसकी सुगमसे सुगम आज्ञा-काभी पालन नहीं करते सो क्या पशुओंसेभी वढकर हलकापन नहीं है? विषैला सर्पभी जव अपने पालनेवालेके अधीन रहता है तव हम क्यां साँपसेभी बुरे हैं कि अपने पालनेवाले परमेश्वरके अधीन न रहें! देखो, तुम्हारा मन अपनी भूल स्वीकार करता है और तुम्हारा अंतःकरण कहता है कि, आजसेही प्रभुके अधीन रहनेका पक्का ठहरांव करलो! अपने इस ठहरावको दृढ और वलवान् करनेके लिये शुद्धचित्तसे परमेश्वरकी प्रार्थना करो और प्रेमपूर्वक माँगो कि, तेरी इच्छाके अधीन होनेको हमें वल दो! कृपाभिलाषियो! देखो तो सही, थोडेही दिनमें क्यां चमत्कार जानपडता है! देखो तो सही कि, तुमपर ईश्वरकी कैसी कृपा होती है और थोड़ेही समयमें तुम कैसे वदल जातेहो! इस स्वादको तो चखो! इसके आगे संसारके सब विषयसुखोंका आनंद तुच्छ है.

३६ पतिका माल खाकर व्यभिचारिणी होनेवाली स्त्री जितनी बुरी है उससेभी अधिक बुरा वह है जो ईश्वरका नमकहराम होता है.

जो स्त्री अपने पतिसे सौभाग्य प्राप्त करती है, पतिके पैसेहीसे मौज उडाती है, पतिकेही जेवर और कपडे पहनती है, ईश्वरकी शपथ खाकर पतिके साथ पवित्र आचरण करनेको विवाहके समय बँधजाती है, और जिसको पतिने अपने सुखका साझी बनाया है, जिसपर पतिने विश्वास रख छोडा है, जिसको पतिने अपना दिल देरक्खा है. और जिसके सुखके लिये पति हजारों आपं-दाएं तथा कष्ट उठाता है वह स्त्री जो अपने पतिको छोडकर दूस-रोंसे व्यभिचार करै तो उसको कैसी नीच समझनी चाहिये? और उसको कैसा कडा दंड मिलना चाहिये? शास्त्र कहते हैं कि

ऐसी स्त्रीको बीच बाजारके या चौहट्टेके नंगी खडी करके सब लोगोंके देखतेहुए शिकारी कुत्तोंसे फडाडालना चाहिये. अपने मनुष्य पतिसे विमुख होनेवाली स्त्रीको जब ऐसा दंड देना लिखा है तब इस बातका तो विचार करो कि अपने महापति परमेश्वरसे विमुख होनेवाले हम लोगोंको कैसी बडी सजा होगी ? उस समय अपने बचावके लिये हमारे पास क्या उपाय है ? भाइयो ! प्रभुका नाम स्मरण करने सिवाय उस समय कोईभी वस्तु काम न आवेगी. इससे पूर्ण प्रेमके साथ परमेश्वरका भजन करो ! भक्ति करो ! ! स्मरण करो ! ! !

३७ स्वामीसे वेतन लेनेपरभी नमकहरामी करनेवाला नौकर जितना धिक्कारने योग्यहै उससे अधिक धिक्कारने योग्य वह है जो परमेश्वरके गुणोंको न मानै.

जो कोई मनुष्य वेतन पानेपरभी अपने स्वामीके शत्रुसे जा मिलै तो वह कैसा बुरा ? लोगोंमें उसकी कैसी मानहानि हो ? और सरकारी कानूनके अनुसार वह कितना दोषी हो ? वैसे आदमीको हमभी धिक्कारते हैं, परंतु अपने अंतःकरणसे तो पूँछे कि स्वयं हमही अपने स्वामी परमेश्वरके साथ कैसा वर्ताव रखते और उसकी आज्ञाको कहाँतक पालते हैं ? क्या यह पाप जबतक तुम्हारे अंतःकरणको नहीं डसता ? इतनेपरभी इस पापके लिये क्या कभी ईश्वरपर प्रेम लाकर तुमने सच्चा पश्चात्ताप किया है ? भाइयो ! जो पाप होचुके हैं उनसे छूटने और दूसरे न होनेके लिये शुद्धान्तःकरणसे सच्चे मनसे पश्चात्ताप करो. ईश्वर दयालु है. जो तुम्हारा पश्चात्ताप सच्चे दिलसे होगा तो पापोंके कटनेमें देर नहीं लगेगी, कारण पाप करनेवाले तो हम अल्पज्ञ मनुष्य हैं परंतु कृपा करनेवाला सर्वज्ञ परमेश्वर है तब प्रभुकी

कृपाके आगे पाप विचारा किस गिनतीमें ? परंतु मुख्य बात यह है कि, करना चाहिये. विना किये कुछ नहीं होता. करनाभी कुछ अधिक नहीं केवल इतनाही कि, जहाँतक बनसकै वहाँतक किसी न किसी सूरतसे अपने भाई बंधुओंको सहायता पहुँचाना और परमेश्वरका स्मरण करना बस यही सब साधनोंका एक साधन है. इसलिये सोते, उठते, बैठते, चलते, फिरते, खाते, पीते और कामकाज करतेभी परमेश्वरका स्मरण करो ! परमेश्वरका नाम आग है, और पाप है लकडी; अग्नि थोडी हो तबभी लकडीको जलादेना उसके लिये कठिन नहीं। है. इससे भाइयो ! प्रभुका नाम स्मरण करो !

३८ जो बच्चे मातापिताका सामना करते हैं उनको तो हम नालायक बतातेहैं परंतु हम अपने परमेश्वरके साथ कैसा वर्ताव करतेहैं इसकाभी तो विचार करो.

जिन लडकोंने मातापितासे जन्म पाया, मातापितासे पोषण पाया, मातापितासे विद्या पायी, मातापितासे धन दौलत पाया, मातापितासे इज्जत पायी और मातापिताकीही सहायतासे जो स्त्री पुत्रवाले हुए वे लडके मातापिताके अनंतगुणोंको भूलकर मातापिताके विरुद्ध चलैं तो वह कैसा बुरा ? ऐसे बुरे चलनके लिये लोग उनको कैसा धिक्कारैं ? मातापिताके निःश्वास उनका कितना विगाड करैं ? मातापिताके लाखों उपकारोंका क्या ऐसा बदला होनाचाहिये ? यह कितना बडा पाप दुनियाभरके धर्मशास्त्र एकवचन होकर कहते हैं कि ' ऐसे नालायक लडकोंके लिये नर्क है ' परंतु तब हमारे लिये क्या है ? क्योंकि हम अपने पिता परमेश्वरपर प्रेम कहाँ रखते हैं ? उसकी इच्छाके अधीन होनेके लिये हमने क्या क्या किया है ? उसका महत्त्व और स्वरूप

समझनेके लिये हमने कब ध्यान दियाहै ? हमको केवल औरोंको बुरा कहनाही आताहै परंतु अपनी पहाड जेसी बडी २ भूलोंको हम कब देखसकतेहैं ? मातापिताकी आज्ञा न पालनेवाले लड-कोंको हम नालायक कहते हैं परंतु अपना घरभी तो हमको देखना चाहिये ! हम अपने पिता, परमेश्वरमें कैसा भाव रखतेहैं सोभी तो देखें ! ईश्वर हमसे और कुछ नहीं चाहता केवल एकही वस्तु सदाचार चाहता है. संसार और स्वर्गके सारे सुख और वैभव तो वह हमको देता है और हमसे एक सदाचार माँगता है सो तो हमकोभी देना चाहियें ! सदाचार सैकडों प्रकारका होता है. जो एक २ सदाचारको पकडने जाँय तब तो अनेक जन्म पूरे हो जानेपरभी सारे सदाचार हाथ नहीं आ सकते. इसके लिये तो सस्तेसे सस्ता और सुगमसे सुगम केवल एकही उपाय है और वह उपाय परमेश्वरका नामस्मरण करना है. नामस्मरण करनेमेंही सब सदाचार आजाते हैं. नाममें अनंत गुण और बल हैं. भृगुजी भगवान्‌सेभी अधिक महिमा भगवान्‌के नामकी बताई हैं. वे कहते हैं कि.

"नामैव तव गोविंद नाम त्वत्तः शताधिकम् ।
ददात्युच्चारणान्मुक्तिं भवानष्टांगयोगतः ॥ "

अर्थात् हे गोविंद ! तुम्हारा नामही तुमसे सौगुना अधिक है, क्योंकि तुम्हारा नाम तो उच्चारण करनेहीसे मुक्ति देता है और तुम अष्टांगयोगसे मुक्ति देते हो. श्रीभगवान्‌नेही श्रीमद्गीतामें कहा है कि ' यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि ' अर्थात् ' सब यज्ञोंमें जप-यज्ञ मैं हूं. ' इससे सिद्ध होता है कि, परमेश्वरको नामस्मरण बहुत प्रिय है. इसलिये भाइयो ! ईश्वरका नामस्मरण करो ! नाम जपो ! ! नाम रटो ! ! !

३९ छाँछसे जैसे मक्खन अलग है वैसेही जगत्से भक्त अलग हैं.

भाइयो ! भक्त कुछ जगत्से अलग नहीं हैं. भक्तभी जगत्मेंही होते हैं परंतु तवभी वे जगत्से न्यारेही रहते हैं. जैसे दूधमें दही, दहीसे छाँछ और छाँछसेही मक्खन निकलता है परंतु मक्खन हो जाने बाद पीछा छाँछमें नहीं मिलसकता. इतनाही नहीं वरन् छाँछमें डाल-दियेजानेपरभी मक्खन छाँछमें मिलता नहीं है. वैसेही भक्त जगत्में रहते हुएभी छाँछमक्खनकी तरह मायासे जुदेही रहते हैं. गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने कहा है कि " ज्ञानियों और अज्ञानियोंमें अंतर इतनाही है कि, अज्ञानी तो सारे काम अपनेही लिये अति आसक्ति और अहंकारके साथ करते हैं और ज्ञानी अहंभाव छोडकर प्रत्येक काम संसारके हितके लिये और ईश्वरके निमित्त करते हैं. भक्तों और व्यवहारी लोगोंमें यही अंतर है. "

४० स्वर्गमें कौन कौन हैं ? सब हैं ! परंतु आलसी लोग नहीं हैं.

एक मनुष्यने किसी महात्मासे पूँछा कि, स्वर्गमें कैसे आदमी रहते हैं. महात्माने उत्तर दिया ' स्वर्गमें भले आदमी हैं और बुरेभी हैं, चोरभी हैं, लुच्चे हैं, लफंगे हैं, व्यभिचारी हैं, क्रोधी हैं, लोभी हैं, निंदक हैं, लुटेरे हैं, रिशवतखोर हैं, हत्यारे हैं, झूंठ बोलनेवाले हैं औरभी बहुत प्रकारके अपराधी हैं. "

उसने पूँछा " महाराज ! वे लोग स्वर्गमें कैसे पहुँचगये ? "

महात्माने उत्तर दिया " परमेश्वरकी शरणमें जानेसे उनके पाप छूटगये. इसीसे वे स्वर्गमें पहुँचगये. "

उसने पूँछा "महाराज ! ऐसे २ पापीही स्वर्गमें पहुँचजाते हैं तब ऐसे कौन मनुष्य हैं जो वहाँ न पहुँचसकते हैं ?"

महात्माने उत्तर दिया "स्वर्गमें सब पहुँचसकते हैं केवल आलसी मनुष्य नहीं पहुँचसकते. आलसी मनुष्य भले हो तबभी स्वर्गमें जानेके अधिकारी नहीं हैं क्योंकि वे नित्यप्रति सुनते हैं सब कुछ तबभी करते कुछ नहीं हैं और दूसरे लोग पूर्वावस्थामें पाप कियेहों तबभी हरिके चरणकी शरणमें आनेसे पापमुक्त होकर स्वर्गमें जाते हैं. इसलिये भाइयो ! आलस्य छोडकर ईश्वरका भजन करो ! भजन करो ! ! भजन करो ! ! !

४१ चनेकी मुट्ठी बंधी रखनेसे जैसे बंदरका हाथ घडेमें अटकजाताहै वैसेही माया हमको नहीं पकडती परंतु हम मायाको पकडरखते हैं.

एक तंगमुँहके घडेमें चने भरेथे. बंदरने उसमें हाथ डालकर चनेकी मुट्ठी भरी परंतु; जब वह निकालने लगा तो हाथ न निकला. उसने बहुतही हाथको खैंचा ताना परन्तु मुट्ठी बडी और घडेका मुँह छोटा होनेसे हाथ निकलसका नहीं. इसपरसे बंदरने मनमें समझा कि, 'घडेके भीतरसे किसीने मेरा हाथ पकडलिया है' और इससे वह रोरोकर अपने सजातिबंदरोंसे कहने लगा कि, मुझे बचाओ रे बचाओ परंतु वे उसकी कुछभी सहायता नहीं करसके. इतनेहीमें उसके उस्ताद मदारीने आकर उसे समझाया कि, मुट्ठी खोलदे तो तेरा हाथ निकल जायगा. बंदरने मुट्ठी खोलदी और उसी समय उसका हाथ निकलआया.

इसी तरह माया हमको नहीं पकडती परंतु हम झूंठी मायाको पकडे रहते हैं जिससे हैरान् हुआ करते हैं. इसलिये हरतरह मायासे बचना चाहिये. मायाको छोडनेका प्रयोजन यह नहीं है कि

घरबार छोडकर वनमें चलेजाना परंतु उसे छोडनेका अर्थ यही है कि:-

> संसारमेंही रहताहै, पर मन है मेरे पास।
> संसारमें लिपटै नहीं, तो जानो मेरा दास॥
> अर्जुन सुनो गीता सार, पांडव मानना निर्धार॥

४२ कलके दिनका भरोसा नहीं है इससे कल खानेकी मिठाई आजही खालेना इस तरहकी माया बढानेवाली बात न करो किंतु धर्ममें जलदी करो.

एक भट्टजी किसी मंदिरमें कथा सुनारहेथे! कथामें आया कि माया मिथ्या है, देह क्षणभंगुर है, और कालचक्र सदा फिराही करता है इससे जो काम करनाहो सो आजही करलो, कलपर मत छोडो, क्योंकि कलका क्या भरोसा ?

वहांपर एक बच्चाभी बैठाथा. उसनेभी यह बात सुनी. उसका पिता उसके लिये बाजारसे अच्छी २ चीजें लाया करता था और उनमेंसे आवश्यकताके अनुसार उसको देकर बाकी दूसरे दिनके लिये रख छोडताथा. उस दिनभी वह कुछ नई वस्तु खानेको लाया और उसमेंसे थोडीसी उस बच्चेको देकर शेष दूसरे दिनके लिये रख छोडने लगा. तब वह बोला " पिताजी! आज तो मुझको सारीकी सारी वस्तु देदो!"

पिताने पूँछा " क्यों? आज क्या है?"

लडकेने उत्तर दिया " आज कथामें आयाथा कि माया मिथ्या है और कलका भरोसा नहीं इससे कल करनेका काम आजही

करलो ! इसपरसे मैंनेभी यही विचार कियाहै कि, जो वस्तु कल खानेकी है उसे आजही खालेना अच्छा है, कलकी किसे खबर है?"

भाइयो ! हमभी कईवार अपने शास्त्रोंका अर्थ उस बालककीही तरह लगाते हैं. कथा कहनेवालेका अर्थ तो यह था कि माया मिथ्या है इसलिये जहाँतक बनसके वहाँतक उससे बचना और अच्छे २ काम करनेमें उतावली करनी चाहिये इसी वचनका मायावादी उलटा अर्थ करते हैं और कहते हैं कि, कलका कुछ भरोसा नहीं इससे जो कुछ मौज करना है सो आजही करलेना चाहिये जगत्के मिथ्यापनका ऐसी बातोंमें उपयोग करना अच्छा नहीं है ईश्वरको जाननेकी प्रबल इच्छा तबही होसकती है जब मायाको मिथ्या माना जावे जबतक हम मायामें अधिक २ लीन होते जाँयगे तबतक परमेश्वरका स्वरूप कदापि नहीं समझ सकते इसलिये ईश्वरको जाननेके लियेही मायाको मिथ्या बताया गयाहै स्वार्थ और मलिनविकारोंको बढानेवाला ऐसा अर्थ कभी नहीं करना चाहिये कि, कलका भरोसा नहीं है इससे मायाको आजही भोगलें !

४२ कोई भिखारी अपने दान देनेवालेहीको लूटले वैसेही ईश्वरकी दीहुई शक्तियोंका हमही विरुद्ध उपयोग करते हैं.

एक गरीब भिक्षुकने किसी भले आदमीसे भिक्षा माँगी तो उसने दया करके उसको एक रुपया देदिया, रुपया लेकर वह अपने साथी दूसरे लुच्चे लफंगे भिखारियोंके पास गया और बोला "अमुक मनुष्यके पास बहुत पैसा है. चलो हम उसे लूटलावें."

भाइयो ! देखो तो उसकी कैसी नीचता है ! जिससे उसे एक रुपया दिया उसीको लूटनेको वह तैयार होगया !

वह भिखारी और कोई नहीं हम आपही हैं. हमने जब बहुत २ प्रार्थना की है, और हजारों वार ईश्वरसे विनयपूर्वक भीख माँगी है तब कृपाकरके उसने हमको यह मनुष्यावतार दियाहै, परंतु हम उसको सार्थक नहीं करसकते, उलटे ईश्वरीय शक्तिका दुरुपयोग करते हैं. ईश्वरने कृपाकरके जिसे रूप दियाहै वह व्यभिचार करता है, जिसको वल दियाहै वह औरोंपर अत्याचार करताहै, जिनको ज्ञान दिया है वे दूसरोंको मालही नहीं गिनते, जिनको अधिकार दियाहै वे अभिमान करते हैं, जिनको पैसा दिया है वे अपनी नीच इच्छाओंको पूरा करनेहीमें मौज मानते हैं जिनको त्यागी किया है वे क्रोधी होते हैं और जिनको प्रभुने अपने मंदिरके द्वारपाल (गुरु) बनाया है वे प्रभुका द्वारही बंद करते हैं. इस तरह हमभी उस भिखारीकी तरह अपने दाता परमेश्वरको लूटनेकाही काम करते हैं. इसका नाम पाप है और ईश्वरीय वखशीशोंका अच्छेसे अच्छा उपयोग करना पुण्य है.

४४ जिन पत्तोंकी आडमें हिरन छिपाथा उन्हींको वह खागया इससे मारागया इसी तरह जो परमेश्वर हमको सब तरहका सुख देता है उसीकी आज्ञाको हम मानते नहीं हैं, तब विचार तो करो कि, हमारी क्या दशा होगी ?

एक शिकारीने हिरनका वहुत पीछा किया तब हिरन दौडकर एक झाडीमें छिपगया. शिकारीभी उसके पीछे घुसा परंतु झाडी घनी और दुर्गम होनेसे हिरन उसको न दीखसका. तब वह बाहरही बैठगया और हिरनके लौटनेकी राह देखने लगा. उधर हिरन जिन पत्तोंके पीछे छिपाथा उन्हींको खानेलगा. खाते २ जब पत्ते पूरे होगये तो हिरनकी ओट मिट गई और वह दीखनेलगा. उसे

खुला हुआ देखतेही शिकारी लपककर उसके पास पहुँचा और कहने लगा " बोल ! अब भागकर कहाँ जायगा ? "

हिरनने जवाब दिया " अब तू मुझे मारले ! मैं मरने योग्य होगयाहूं, क्योंकि जिस झाडीने मुझे शरण दी और मुझे बचाया उसी झाडीको मैं ने खाडाला तब तो मैं मारनेही योग्य हुआ. "

हमारीभी यही दशा है. परमेश्वर हमारी सहायता करता है और हमको बचाता है, इतनेपरभी हम उसका सामना करते हैं, और उसकी आज्ञा नहीं मानते तब उस हिरनकीसीही दशा हमारीभी हो तो क्या आश्चर्य है ! इसलिये भाइयो ! चेतो ! ! चेतो ! ! !.

४५ बहुत पानी पिलाने और राह देखनेपरभी जब वृक्षमें फल न लगा तब मालीने उसे उखाड फैंका इसी तरह हमभी ईश्वरकी इच्छाके अधीन न होंगे तो हमारीभी वही दशा होगी.

बागमें बहुतसे पेड होते हैं. उन सबको माली फल पानेकी आशासे पानी पिलाताहै, खाद देताहै, उनका रस चूंसजानेवाले घास फूसको उनकी जडमेंसे खोद फैंकताहै और सब तरहसे उनकी रक्षा करताहै, बहुत बरसतक इस तरह रक्षा करते २ समय निकलजाने परभी जो पेड नहीं फलता उसको माली काट डालताहै. काटनेमें उसके चित्तको दुःख होताहै परंतु जब दूसरा कोई उपाय नहीं चलता तबही उसे उसको काटना पडताहै. खाद पानी देनेमें और फलके लिये धैर्यसे राह देखनेमें माली कसर नहीं रखता परंतु अंतमें जब पेड नहीं ही फलता तब वह उसे काटता और जलादेताहै.

हमभी जो न समझें तो अंतमें यही दशा हमारीभी हो. ईश्वर हमारा माली है. वह हमारा भरण पोषण करताहै. हमको दुःख

दरदोंसे बचाता है और हमसे भक्तिरूप फल पानेकी आशा करता है. इतनाही नहीं वरन् उसके लिये धैर्यके साथ राह देखताहै परंतु जो हम परमेश्वरके नामको याद करेंगे नहीं, परमेश्वरकी दयाको समझेंगे नहीं, परमेश्वरके नियमको पालेंगे नहीं और परमेश्वरकी इच्छाको मानेंगे नहीं तो उस पेडकी तरह हमाराभी नाश होजायगा.

४६ नदी, पवन, वायु, पर्वत आदि सबही वस्तुएँ परमेश्वरकी आज्ञा पालती हैं परन्तु मनुष्य नहीं पालते.

ईश्वर कहता है कि, मैंने नदीसे कहा कि तू वहाकर, समुद्रसे कहा कि, तू सदा जुआर और भाटेमें चढा उतराकर तथा मर्यादामें रहा कर, सूर्यसे कहा कि, तुम प्रकाश किया करो, वृक्षोंसे कहा कि तुम छाया दियाकरो, फूलोंसे कहा कि, तुम सुंदरता बढाया करो और सुगंधि फैलाया करो, तारोंसे कहा कि तुम आकाशमें फिरा करो, वर्षासे कहा कि तू मेरी आज्ञासे बरसाकर, पर्वतोंसे कहा कि, तुम स्थिर रहाकरो, पवनसे कहा कि तू फैलता रहाकर, और अग्निसे कहा कि, तू गरमी दियाकर. इन सबने मेरा कहना माना और वे मेरी आज्ञाके अनुसारही चलते हैं परंतु मनुष्य मेरा कहा नहीं मानते. मैंने मनुष्यसे कहा कि मेरी ओर देख परंतु उसने उत्तर दिया कि मैं तेरी आज्ञा नहीं मानूंगा. जैसे एक नया मस्त बैल अपने कंधेपर जुआ नहीं रखनेदेता और वारंवार वलपूर्वक जुएके नीचेसे खिसकजाता है वैसेही मनुष्यभी ईश्वरकी आज्ञा पालनेमें खिसकजाता है, परंतु उस बैलकी तरह यह नहीं जानता कि वारंवार बदमाशी करके जुआ न उठानेसे मेरीही हानि होगी और जुआ उठानेसे मेरा लाभ होगा तथा दाना खानेको मिलैगा. ईश्वरकी आज्ञा पालनेमें दुःख नहीं है किं आनंद है. यह सदा याद रखनेकी बात है.

मनुष्य अपने तई संसारभरकी सब वस्तुओंसे उत्तम मानता है परंतु यह नहीं समझता कि मैं उत्तम तबही हूं जब ईश्वरीय मार्गमें रहकर ईश्वरको जानूं, नहीं तो संसारकी सब वस्तुओंमें हलका हूं कारण सब वस्तुएं ईश्वरकी आज्ञाका पालन करती और उसकी महिमा दिखाती हैं. परंतु मनुष्य अपनी निर्जीव वासना और स्वार्थके लिये परमेश्वरकी आज्ञाका भंग करता है, और ईश्वरकी कृपापूर्वक दी हुई अमूल्य ज्ञानशक्ति, जीवन तथा अवसरोंका दुरुपयोग करता है. यही मनुष्यकी सबसे बढकर नीचता है. इसलिये ऐसी नीचतासे बचनेके लिये भाइयो ! प्रार्थना करो कि 'हे परमेश्वर ! हमको तेरी भक्ति करने और तेरी इच्छाके अधीन होकर चलनेकी शक्ति दो !'

४७ जिस स्थानको हम एकांत समझते हैं उस स्थानमेंभी परमेश्वर तो हैही. इस तरह ईश्वरकी सर्वव्यापकता समझनेसे बुरे काम नहीं होनेपाते.

एक शिक्षकने अपने विद्यार्थियोंसे कहा " ईश्वर सर्वव्यापक है. वह सर्वत्र है, आकाशमें है, पातालमें है, ऊपर है, नीचे है, समुद्रमें है, पर्वतमें है, पृथ्वीमें है, पेडमें है, पत्तेमें है, पानीमें है, पवनमें है और हमारे मनतकमें है. जहाँ कोई न हो वहाँभी वह है. उससे कोईभी स्थान या वस्तु खाली नहीं है. "

इसे सुननेवालोंमें एक किसानका लडकाभी था, उसने इसको बडे ध्यानसे सुना. एक दिन जब वह अपने घर आया तो उसका पिता उसे अपने साथ लेकर किसी दूसरे किसानके खेतपर पहुँचा और बोला " बेटा ! मैं इस खेतमेंसे थोडा घास काटलेता हूं. तू देखता रहना कोई आदमी न आजाय. "

लडका बिचारा बैठगया और पिता घासकी चोरी करने लगा,

थोडी देरमें पिताने पूँछा " बेटा ! कोई आता तो नहीं है ? "

उसने उत्तर दिया " पिताजी ! तुम्हारे और मेरे सिवाय यहां और कोई तीसरा आदमी तो दीखता नहीं है परंतु मेरे गुरुनें मुझे पढाया है किः-

४ कुंडलिया ।

आस पास ऊरध अधे भू दिश विदिश अकाश ।
मशक मतंग रु तृण तरू विश्वपतीको बास ॥
विश्वपतीको बास खासकर निजजनमाहीं ।
राईसम थल नाहिं जाहिं प्रभु पूरन नाहीं ॥
सोई दशरथसुत रामजीवन वन निजजन ताहीं ।
लीला करि धरि देह नीक भवतरन लखाहीं ॥ १ ॥

लडकेके मुँहसे ये शब्द सुनतेही किसानके हाथसे हँसिया छूट-पडी. उसी दिनसे उसने चोरी करना छोडदिया. जो ईश्वरकी सर्वव्यापकताको यथार्थरूपसे जानते समझते हैं वे एकांतमेंभी बुरा काम नहीं करते. इस बातको कभी भूलना नहीं चाहिये कि, हम जिस स्थानको एकांत समझते हैं उस स्नाथमेंभी परमेश्वर तो मौजूदही है.

४८ ईश्वरकी सर्वव्यापकता. राजाके आगे नौकर बुरा काम नहीं करसकते.

जो ईश्वरको सर्वव्यापी समझते हैं वे एकांतमेंभी बुरा काम नहीं करसकते, कारण एकांतमेंभी ईश्वर तो हमारे पास, हमारे सामने, हमारे आसपास, हमारे साथ और हममेंही होता है. इससे जैसे लडका गुरुके आगे, पुत्र मातापिताके आगे, स्त्री पतिके आगे, सेवक स्वामीके आगे और सिपाही राजाके आगे बुरा काम नहीं

करसकता वैसेही जो ईश्वरको सर्वव्यापी समझते हैं वे भक्तभी ईश्वरके आगे बुरे काम वा बुरे विचार नहीं करसकते क्योंकि वैसे भक्त केवल वचनसेही नहीं परंतु मनसेभी इस बातको जानते हैं कि ईश्वर सब जगह है. इसलिये पापसे छूटनेके लिये हम सब भाइयोंको ईश्वरको सर्वव्यापी माननेका अभ्यास बढाना चाहिये.

४९ गुरुने पूँछा कि ईश्वर कहाँ है ? शिष्यने कहा कि; ईश्वर कहाँ नहीं है.

ईश्वरकी सर्वव्यापकता समझाते २ परीक्षा लेनेके लिये गुरुने शिष्योंसे पूँछा " ईश्वर कहाँ है ? जो इसका उत्तर देगा उसको मैं एक नारंगी दूंगा. "

एक शिष्यने उत्तर दिया " ईश्वर कहाँ नहीं है ? इसका उत्तर देनेवालेको मैं दो नारंगी दूंगा. "

तात्पर्य यह कि, ईश्वर सर्वत्र है. इसलिये कहींभी एकांतमेंभी कभी पाप नहीं करना चाहिये. ईश्वरको सर्वव्यापी समझना पापसे बचनेके लिये है केवल मुँहसे कहनेके लिये नहीं है. सर्वव्यापकता समझनेसे यह बात समझमें आजाती है कि, मछलियाँ जैसे पानीमें रहती हैं, पक्षी जैसे हवासे घिरे रहते हैं और फूल जैसे मालामें पिरोये रहते हैं वैसेही हम ईश्वरमें और ईश्वर हममें समाया रहता है. श्रीकृष्णने गीतामें कहा है:—

" मत्तः परतरं नान्यत् किंचिदस्ति धनंजय ।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥ "

अ० ७. श्लो० ७.

अर्थ—हे अर्जुन ! मेरे सिवाय और कुछभी सत्य नहीं है. जैसे एक धागेमें कई दाने पिरोये रहते हैं वैसे मुझमें यह सारा जगत् पिरोया हुआ है.

भगवान्‌ने औरभी कहा है किः—

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥"

अ० ६. श्लो ३.

अर्थ–जो सवमें मुझे देखता है, और सबको मुझमें देखता है उससे मैं दूर नहीं हूं और वह मुझसे दूर नहीं है.

५० भक्तका ईश्वरभी बुरा नहीं करसकता तब निंदा करनेवाले तो करही क्या सकते हैं.

कबीरजीसे किसी भक्तने पूँछा "तुम्हारा ईश्वर कैसा है ? कबीरजीने उत्तर दिया "मेरा ईश्वर सर्वशक्तिमान् है. वह चाहे सो करसकता है."

भक्तने कहा "यह वात झूंठी है एक वात ऐसी है कि, जो तेरे ईश्वरसेभी नहीं हो सकती."

कबीरजीने उत्तर दिया "संसारमें ऐसी कोई वात हैही नहीं जो मेरे ईश्वरसे न हो सकती हो."

भक्तने कहा "अपने भक्तका बुरा करना ईश्वरसेभी नहीं हो सकता."

यह सुनकर कबीरजी हार मानगये. उन्होंने कहा "तुम्हारा कहना ठीक है. ईश्वर सर्वशक्तिमान् है परंतु वह अपने भक्तका बुरा करनेको समर्थ नहीं है."

इन दोनों वडे २ भक्तोंका यह संवाद क्या कम शिक्षा देनेवाला है ? भक्तपर ईश्वरकी कैसी अटूट दया होती है. भक्तिमान् भाइयो ! लोग चाहे तुम्हारी दिल्लगी करैं परंतु तुम निराश न हो ! स्वयं ईश्वरही जब तुम्हारा बुरा नहीं करसकता तब दूसरे तुम्हारी निंदाकरके क्या फल पासकते हैं इससे सदा भक्तिमें लगेरहो ! भक्तिमें

लगे रहो ! ! यहांपर लोगोंकी दृष्टिमें तुम्हारी कीमत चाहे कम हो परंतु परमेश्वरके दरबारमें तुम्हारा हक पहला है और दरजा बडा है. जो तुम्हारी निंदा करते हैं वे तुम्हारी ऊंचे दरजेको देखकर जलते हैं ऐसी निंदासे डरकर भक्ति मत छोड देना ! तुम्हारे विपक्षमें तो थोडेसे खराब आदमीही होंगे परंतु तुम्हारे पक्षमें तो स्वयं परमेश्वर है. भगवान्‌ने कहा है कि:-

"अनन्याश्चिंतयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥"

अ० ९. श्लो० २२.

अर्थ-जो आदमी अनंतभावसे मेरा चिंतवन करता है और मेरीही भक्ति करता है उस समान चित्तवालेके योगक्षेमकी मैं रक्षा करता हूं.

९ पद ।

दिलसों मत विसरो ना कबऊँ बसे क्युं ना कोश करोर॥ टेक॥
गगनमंडलमैं बसत चंद्रमा धरनीपै बसत चकोर ॥ १ ॥
गगनमंडलमैं घन गरजत हैं, धरनीपै कूकत मोर ॥ २ ॥
रामशरणं मन बसत सांवरो, लगरही प्रेमकी डोर ॥ ३ ॥

५१ भाइयो ! कैसे आश्चर्यकी बात है कि, यहाके कोर्टके केसके लिये तो इतनी खटपट और इतना खर्च करतेहैं और मुक्तिके केसके लिये कुछभी नहीं !

हाईकोर्टमें हमारा कोई भारी मामला चलता हो तो उसके लिये कितनी बडी २ तजवीजें करनी पडती हैं, कैसे बडे २ वकील बेरिस्टर करने पडतेहैं, कितना भारी खर्च करना पडताहै, और

कितनी चिंता रहती है ? यह सब क्यों करना पडता है ? केवल मुकद्दमा जीतनेको ! कारण हारजानेसे खर्च उठाना पडताहै, मान मर्यादा कम होजाती है और वडी हानि सहनी पडती है. जब एक ऐसे साधारण मामलेके लियेही हमको इतना करना पडता है, और उसमें हारजानेसेही इतनी बडी हानि होती है तब विचार करके तो देखो कि हमारा मुक्ति पानेका मामला कितना बडा है ? उसमें हारजानेसे कितनी वडी हानि होती है कि सारा जीवनही रद्द होजाता है ? इतनेपरभी इस मामलेको जीतनेके लिये हम कुछभी तजवीज या शोच नहीं करते. इस भयंकर बेपरवाहीका हम अपने मालिक परमेश्वरके आगे क्या उत्तर देंगे ?

५२ जिसके बाहरसे तो तूफानकी फटकार लगे और भीतर तलेमें होजाय छिद्र, वह जहाज कहांतक बचसकताहै ? इसी तरह दुनिया तो बिगडीहुई हैही और हमारा मन भी बिगडजाय तब काम कैसे चले ?

जिस जहाजको बाहरसे तो तूफानका धक्का लगे और भीतर तलेमें छिद्र हो जाय उस जहाजके, बचनेकी क्या आशा ? वैसे जहाजमें बैठेहुए यात्रियोंका तो नाशही होता है. वैसेही जहाजके बाहरके तूफानकी तरह तो हमारे आसपासकी दुनिया बिगडी हुई है और भीतरी छिद्रकी तरह जो हमारा मनभी बिगडाहुआ हो तो फिर बचनेकी क्या आशा ? जो जहाजके भीतर छिद्र न हो तो बाहरी तूफानके आगे वह टिकभी जा सकता है, वैसेही हमारा मन दृढ और भक्तिमान् हो तो बाहरी दुनियाके आगे टिकाव हो सकता है, परंतु जो मनही बिगडा हुआ हो तो फिर बचनेकी कोई आशा नहीं. इससे भाइयो ! अपने मनको सुधारो ! मनको सुधारनाही सबसे कठिन काम है और वही सबसे जरूरी है. महात्माओंने कहा है.

"मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः ।"

अर्थात् मनुष्यका मनही बंधन और मोक्षका कारण है. भगवान्‌नेभी गीतामें कहा है.

"बंधुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्त्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥"

अ० ६. श्लो० ६.

अर्थ—जिसने अपने मन (आत्मा) से मनको जीता है उसका मनही उसका मित्र है और जिसने मनसे मनको नहीं जीता उसका मनही शत्रु बनकर शत्रुका काम करता है.

इसलिये भाइयो ! मनको वशमें करना सीखो ! और संसारकी बिगडीहुई वस्तुओंसे बचनेका यत्न करो !

५३ घरमें आग लगी, सब बच गया परंतु बच्चा भीतर रहगया.

किसी घरमें आग लगगई घरवाला सब सामान बाहर निकालने लगा, उसने अलमारी, कुरसी, संदूक, कपडोंकी गठरी, पुस्तकें, चित्र, खजाना आदि बहुतसी वस्तुएं बाहर निकालीं इतनेहीमें आग बढनिकली और भीतर जासकने योग्य न रहा. तब किसीने उससे पूँछा " भाई ! सब बाहर निकलआया या कुछ भीतरभी रहगया ?"

उसने इधर उधर देखकर कहा " और तो सब सामान निकल आया परंतु मेरा एक छोटा बच्चा भीतरका भीतरही रहगया. "

यह सुनकर सब लोग उसे फटकारने और कहने लगे " अरे मूर्ख ! कपडे लत्ते और धनदौलत तो बाहर निकाल लाया और बच्चेको भीतर भूल आया ! हाय ! हाय ! अफसोस ! बच्चा जलगया ! "

भाइयो ! हमभी इसी तरह करते हैं. अपने आत्मारूप निर्दोष बालकको हमभी भूलजाते हैं. उसको तो हम मायारूपी आगमें छोडदेते हैं और जिन चीजोंकी वास्तवमें कुछ कीमत नहीं है वैसी

मोहक वस्तुओंको इकठा करनेमें हम रातदिन लगे रहते हैं. इसलिये भाइयो ! आग तो लगी हुई हैही परंतु अभी वह वढी नहीं है तव- तक कुरसी, मेज आदिको छोडकर अपने वचेको वचालो ! अपने आत्माको वचालो ! वचालो ! ! वचालो ! ! ! उसकी अधोगति न करो ! उसका नाश मत करो ! याद रक्खो कि, तुम्हारी कुरसी, मेज और माल खजानेकी कीमत उसके करोडवें हिस्सेके वरावरभी नहीं है, अवभी समय है चेतो ! चेतो ! समय निकलजानेपर कुछभी नहीं वनसकैगा !

७४ नालायकी करके लडका वापके घरमेंसे निकलगया अंतमें दुःखित होकर जव उसने क्षमा माँगी तव पिताने कहदिया कि वेटा ! घरमें जो कुछ है सव सव तेराही है ! वैसेही ईश्वर कहताहै कि, मेरे मार्गमें मेरे घरमें आओ तो सव तुम्हाराही है.

एक लडका, अपने भले मातापिताकी आज्ञाको उलंघन करने लगा और पितामाताको छोडकर घरसे चलागया. पिताके मित्रोंने उसे वहुत २ समझाया परंतु उस नालायक लडकेने एकभी न मानी. थोडेही दिनमें उसकी वहुत बुरी दशा होगई. झूंठी मायाके झूंठे भोगविलाससे वह लडका वडा भोगी रोगी होगया और यहांतक तंग हुआ कि पहननेको चिथरेतक न रहे. अंतमें लाचार हो वह अपने पिताके पास गया और दीनतासे अपने अपराधोंकी क्षमा मांगने लगा तव पिताने कहा " वेटा ! मुझे तुझसे द्वेष तो हैही नहीं ! मैंने तुझे निकाला नहीं है तूही आपोआप निकलगयाहै. तू अपनी चाल सुधार तो मेरे धनदौलतका मालिक है. तू पापको छोडदे तो फिर तू मेरा है और मैं तेरा हू. "

इसी तरह हमारा समर्थ पिता ईश्वर वडा दयालु है परंतु हमही उसकी परवाह नहीं करते और उसे छोडदेते हैं तव दुःख पाते हैं

इससे सुख पानेका सच्चा उपाय यही है कि सर्वात्मभावसे ईश्वरकी शरणमें जाना और खुले दिलसे दीनतापूर्वक प्रेमसे क्षमाप्रार्थी होना, ऐसा करनेसे ईश्वर हमाराही है. भगवान्ने गीतामें कहा है:—

"समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेषोऽस्ति न प्रियः।
ये भजंति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥"
अ० ९. श्लो० २९.

अर्थ—मैं सर्वभूतोंमें समान हूं. मुझे किसीसे द्वेष नहीं है और किसीसे स्नेह नहीं है, परंतु तबभी जो भक्तिपूर्वक मुझे भजता है वह मुझमें है और मैं उसमें हूं.

६ पद।

भक्तिपदारथ नीको, साधो भक्तिपदारथ नीको हो ॥ टेक ॥
याके आगे स्वर्गलोक पुनि, ब्रह्मलोकहू फीको हो।
पुण्य भोगि पडबेके कारन, संशय जाय न जीको हो ॥१॥
हरिजन सकल त्यागि निशदिनहू, पावैं नाम अमीको हो।
धन्य धन्य ताके जीवनको, डर नहिं कालबलीको हो ॥ २ ॥
नंदलालगोपाललालकी, रति बिन सुख नहिं जीको हो।
सकल सुकृतमधि हरिभक्तिहु तिमि, जिमि माथेपर टीको हो ॥

५५ पापियोंको चिंताग्रस्त नहीं होना चाहिये कारण रोगी वैद्यके पास जाय तो वैद्यको असाध्य रोगीकी चिंता अधिक रहतीहै. इसी तरह हमभी परमेश्वरके पास चले जाँय तो हमारी चिंता उसको करनी पडती है.

हमसे चलते फिरते, सोते बैठते, खाते पीते, हँसते बोलते और कामधंधा करते किसी न किसी प्रकारका मन, वाणी या कर्मसे

छोटा मोटा पाप बनही जाताहै. ऐसे पापसे कोईभी नहीं बचसकता भगवान्नेभी कहाहै:-

"सहजं कर्म कौंतेय सदोषमपि न त्यजेत् ।
सर्वारंभा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥"

अ० १८. श्लो० ४८.

अर्थ-हे अर्जुन ! सब कर्म दोषवाले हैं, जैसे धुआं विना आग नहीं हो सकती वैसेही दोष विना कर्म नहीं होसकते. इसलिये कर्म दोषवाले होनेपरभी स्वभावसे प्राप्त होनेवाले सहज कर्म करना चाहिये. कर्म दोषवाले हैं तबभी उनको किये विना काम नहीं चलसकता इसीसे पुराने ऋषियोंने कहा है.

"पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसंभवः ।
त्राहि मां पुंडरीकाक्ष सर्वपापहरो मम ॥"

[प्राचीन ऋषियोंकी प्रार्थना.]

इस तरह हम पापमें पडेहुए हैं परंतु वे पाप हरिकी शरणमें जानेसे हर जाते हैं. इसलिये पापीभी जो प्रभुकी शरणमें चलेजांय तो उनको कुछ चिंताकी बात नहीं है. क्योंकि ईश्वर दयालु है, वह इतना दयालु है कि, उसकी दयाका हमको ख्या-लतक नहीं आसक्ता जैसे २ हमारे पाप बढते जाते हैं वैसे २ उसकी दयालुताभी बढती जाती है, इससे पापियोंकोभी निराश नहीं होना चाहिये क्योंकि उनके लिये तो औरभी अच्छा अव-सर है. जैसे माली सूखते हुए नये निर्बल पौधेको वारंवार पानी पिलाता है, जैसे मातापिता अपने अंधे, लूले, लँगडे, पागल या बीमार बच्चोंकी दूसरे बच्चोंसे अधिक सावधानी रखते हैं, जैसे गुरु मंदबुद्धि शिष्योंके साथ अधिक मगजपच्ची करता है, और जैसे डॉक्टर असाध्य रोगीकी अधिक खबरदारी रखता है वैसेही दयालु परमेश्वर पापियोंको अधिक संभाल लेता है, परंतु शर्त इसमें इतनीही है कि, उसकी शरणमें जाना और उसकी आज्ञा पालना

चाहिये. जो प्रभुकी शरण ली तो फिर पाप कूंचकर जाते हैं. स्वयं भगवान्ने गीतामें कहा है.

"सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥"

अ० १८. श्लो० ६६.

अर्थ—सब धर्मोंको छोडकर एक मेरी शरणमें आजा ! तू शोच मत कर ! मैं तुझको सब पापोंसे छुडादूंगा और मोक्ष दूंगा.

ईश्वरकी इतनी बडी दया है और उसने प्रण किया है इससे पापियोंको; चिंतामें न पडकर सच्चे मन और दीनतासे उसकी शरणमें जाना चाहिये. अबभी कुछ विगडा नहीं है यद्यपि देर होगई है तबभी अभी भगवान्की शरण लेकर क्षमा माँगने योग्य समय है. इससे भाइयो ! पापकी नींदमेंसे जागो ! जागो ! ! और अपने हितको समझो ! ! ! हरिकी शरण विना पाप नाश करनेका दूसरा उपाय नहीं है इससे जो पाप बन गये हैं उनसे न घबराकर ईश्वरकी शरण गहो ! और सच्चे मनसे क्षमा मांगो, तो तुम्हारे पाप कटजायँगे और तुमको अवश्य क्षमा मिलेगी.

५४ ईश्वरके दियेहुए वैभवोंको ईश्वरका स्मरण किये विना भोगना चोरी करने समान है.

एक साहूकारने अपने रहनेके लिये एक बहुत बडा सुंदर मकान बनाया और लाखों रुपये खर्च करके सब प्रकारके नये २ सामानसे सजाया. थोडे दिनबाद एक दिन वह किसी महात्माको अपना मकान दिखानेके लिये घर लेगया. सेठने उसको अपना सारा मकान दिखाया और वैभवभी दिखाया इस अरसेमें महात्माको थूँकनेकी जरूरत पडी परंतु वहां कहींभी थूकनेकी जगह न मिली. जहाँ देखो वहाँ सुंदर गलीचे, बडे २ कांच बडे २ खटछप्पर और मखमलसे मढी हुई कुरसिया तथा आरामकुर-

सियांही देखनेमें आई. सारा मकान देख चुकनेपर महात्माने पूँछा " बाबा इसमें मंदिर कहां है ? ईश्वर प्रार्थनाका स्थान कौनसा है ? "

सेठने उत्तर दिया " महाराज ! वह तो मैंने इसमें नहीं बनवाया "

इतना सुनतेही साधुने सेठके मुँहपर थूंक दिया. तब तो वह बडा नाराज हुआ और कहने लगा " महाराज ! यह क्या ? यहभी क्या रीति है ? "

साधुने कहा " तो क्या करूं ? तुम्हारे इस सुंदर घरमें तुमारे मुँहके सिवाय दूसरी मुझे थूंकनेकी कोई जगहही नहीं दीखती, क्योंकि अपने लिये तो तुमने इतना बडा और बढिया मकान बनाया परंतु जिसने तुमको इतना वैभव दिया उस परमेश्वरको स्मरण करनेके लिये इसमें कहीं एक छोटीसी कोठरीभी न बनवाई ! "

इतना सुनकर सेठ लज्जित होगया और क्रोध उसका जातारहा.

इस परसे हमको यह बात सीखनेकी है कि प्रत्येक काममें हमको ईश्वरको आगे रखना और प्रत्येक शुभ कर्म ईश्वरके अर्पण करना चाहिये, जो हम ऐसा करैं तो सारे ठाठबाठ और वैभवमेंभी हम निर्दोष रहसकते हैं, परंतु अपने उत्पन्न करनेवाले परमेश्वरको अपने दयालु पिताको भूल जांय और सब कुछ केवल अपनेही लिये करैं तो वही पाप है. भगवान्नेभी कहाहैः—

"इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यंते यज्ञभाविताः ।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः ॥"

अ० ३. श्लो० १२.

अर्थ—देवोंका दियाहुआ देवोंके अर्पण किये विना जो भोगता है उसको चोरही समझना चाहिये.

इससे पापोंसे बचनेके लिये हमको प्रत्येक काम महान् प्रभुके पवित्र नामसे प्रभुके अर्पण करना चाहिये.

५७ बडप्पनका अभिमान मत करो ! अपने गांवमें या अपनी जातिमें तुम बडे होगे परंतु जगतमें तुम किसी गिनतीमें नहीं हो.

किसी धनवान्ने एक ज्ञानी संन्यासीको भोजनके लिये अपने घर बुलाया. बातें करते २ उसने अपना वैभव दिखानेके लिये कहा कि, यह हवेली मेरी है, सामनेका बँगला मेरा है, अमुक पुतलीघर मेरा है, उसके पासका तालावभी मेरा है, पासवाला मकान लेनेकी इच्छा है, अमुक नगरमें मेरी कोठी है और अमुक स्थानमें मेरी हवेली है. इस तरह वह अपनी बडाई मारने लगा. संन्यासी त्यागी और ज्ञानी था. उसको ये बातें अच्छी न लगीं उसने समझलिया कि यह अभिमानी है, ईश्वरके अखूट वैभवमेंसे इसको अणुकाभी अणु जितना अंश मिला है उसेभी यह नहीं पचा सकता. उसने अपने मनमें विचारा कि इसके लिये इसको अवश्य समझानां चाहिये क्योंकि गृहस्थके घर साधु जाय तो उसका यही फल है. वह यहभी जानता था कि आजकलके धनवान् ऐसे नहीं होते जो साधुओंके उपदेशपूर्ण कटुवचनोंको सहन करसकें. इससे उसने मनमें एक तजवीज सोची. पासहीमें सेठका लडका पढ रहाथा, और नकशा देखना सीखताथा. उससे साधुने पूँछा " यह क्या है ? "

लडकेने उत्तर दिया " पृथ्वीका नकशा. "

संन्यासीने पूँछा ' इसमें हिंदुस्थान कहां है ? "

लडकेने उसपर अंगुली फेरकर कहा " यह है हिंदुस्थान "

संन्यासीने कहा " इतने बडे नकशेमें हिंदुस्थान इतनाहीसा है ? "

लडकेने कहा " हां महाराज ! सारी दुनियांके आगे हिंदुस्थान कितनासा ? "

साधुने पूँछा " इसमें बंबई कहांपर है ? "

लडकेने जवाब दिया " महाराज ! यह जरासी बिंदु है वही बंबई है ! "

साधुने पूँछा " इसमें तेरे पिताका पुतलीघर कहा है सो बता. "

लडका साधुके मुँहकी ओर देखनेलगा और बोला " महाराज ! इस नक्शेमें पुतलीघर नहीं है. "

साधुने पूँछा " इतना बडा कारखाना और इतनी बडी हवेली हैं, फिरभी वह इसमें क्यों नहीं ? "

लडकेने जवाब दिया " महाराज ! पृथ्वीके नक्शेमें हिंदुस्थान एक अमरूदके बराबर है और हिंदुस्थानमें बंबई एक बिंदुके समान है उसमें हमारा मकान कहाँसे हो ? दुनियाके आगे हमारा मकान किस गिनतीमें ? "

साधुने सेठकी ओर देखकर कहा " देखो सेठ ! यह तुम्हारा लडका क्या कहताहै ? दुनियाके एक बिंदुमेंसे तुम एक परमाणुभी नहीं हो परंतु तबभी तुमको कितना अभिमान है ? अपने मनमें तुम चाहो जितने बडे होजाओ परंतु जगत्‌के हिसाबमें और परमेश्वरके दरबारमें तुम किसीभी गिनतीमें नहीं हो ! इससे झूँठा अभिमान न करो ! जो जगत्‌में बडा होना हो और परमेश्वरके पास भला बनना हो तो दान परमार्थ करो ! अपना २ करनेसे काम नहीं चलैगा, अहंकारको प्रभुने आसुरीभाव कहा है. "

गीतामें लिखाहैः—

"दंभो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥"

अ० १६. श्लो० ४.

अर्थ—हे अर्जुन ! दंभ, दर्प, अहंकार, क्रोध, पारुष्य और अज्ञान ये आसुरी संपत्ति है. ऐसी आसुरी संपत्तिमें फँसजानेसे सची भक्ति नहीं होसकती. इससे किसीभी नाशवंत वस्तुका अभिमान नहीं करना चाहिये.

यह सुनकर वह सेठ लज्जित होगया. उसको अपनी भूल स्पष्टरूपसे मालूम होगई. उसी दिनसे उसने वैसी भूल फिर न करनेका पूरा २ विचार करलिया. हमकोभी ऐसी भूलोंसे ऐसे पापोंसे बचते रहनेका प्रयत्न करना चाहिये.

५८ राजा और विदूषक. ऊपर तलवार और नीचे आग.

किसी राजाके पास एक मसखरा रहता था. वह मसखरी करनेमें बडा प्रवीण था. चाहे जिस तरहसे विचित्र मसखरी निकालकर वह लोगोंको हँसाया करता था. एक दिन उसने राजाको हँसानेके लिये कई प्रकारकी हँसी दिल्लगी की, बहुतसे ढोंग बनाये और अनेक युक्तियां लडाई परंतु तबभी राजाको हँसी न आई. तब उसने राजासे पूँछा "महाराज ! आज किसीभी तरह आपको हँसी नहीं आती इसका क्या कारण है ?"

राजाने उत्तर दिया "इसका भेद किसी दिन खुलजायगा."

कई दिनोंके बाद एक दिन राजाने जानबूझकर किसी बहानेसे मसखरेपर बडा क्रोध किया और उसे एक टूटी कुरसीपर बैठाया, कुरसीके नीचे उसने एक जलती हुई आगकी अंगीठी रखवाई और शिरपर घडीभरमें टूटपडने योग्य एक पतली रस्सीमें बांधकर नंगी तलवार लटकवादी, अब तो मसखरा बहुत डरगया. प्रथम तो कुरसीही टूटी हुई थी. फिर नीचे आग दहकरही थी और सबसे बनकर शिरपर नंगी तलवार लटकती थी जिसके लिये यह नहीं मालूम था कि कब टूटकर गिरपडेगी. इसके मारे बिचारा विदूषक थर थर कांपता था. वैसेहीमें राजाने उसके हाथमें मिठाई दी और कहा कि इसे खुश होकर खा. तब

मसखरा बोला " महाराज ! इस समय मिठाई अच्छी नहीं लगती. यह तलवार और अँगीठी हटाईजाय तो मिठाई भावे ! इस कालके गालमें फँसेहुएको मौज कहाँ ? इस समय तो राम ! राम ! के सिवाय कुछभी नहीं सूझता. "

राजाने कहा " तू उस दिन मुझे फँसाना चाहता था परंतु मुझे हँसी कैसे आती ? कारण हमारे शिरपर तो सदा मौतकी तलवार लटका करती है, इस बातका कुछभी भरोसा नहीं है कि काल कब आ दबावैगा, चितारूपी अँगीठी नीचे मौजूदही है। यह हम जानतेही हैं कि, आगे या पीछे किसी न किसी दिन हमको इस अमरशय्या (चिता) में सोना है और राजगद्दी तथा अन्य अधिकाररूपी टूटी कुरसीपर हम बैठे हुए हैं. ऐसी दशामें हँसी कैसे आ सकती है ? इसीसे मुझे हँसना नहीं आता. मुझे तो प्रभुके भजनमें मस्त रहनाही अच्छा लगता है.

भाइयो ! हम सब लोगोंकी स्थिति ऐसीही है. इसलिये समय हैं तबतक हमको सचेत हो जाना चाहिये. सचेतोंके लियेभी तलवार और अँगीठी तो हैही परंतु अंतर इतना है कि, ईश्वरके पवित्रनामसे उनको कालका भय नहीं लगता, तलवार और अँगीठीके बीचमेंभी वे धैर्यवान् रहते हैं और उस टूटीहुई कुरसीपर बैठकरभी वे सार्थकता करलेते हैं परंतु विना चेते हुए उनसे डरते हैं, दुःखी होते हैं और नरकमें जाते हैं. इससे मृत्युको सुधारलेनाही अच्छा है. भगवान्‌नेभी कहा है—

"तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युद्धय च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥ "

गी० अ० ८. श्लो० ७.

अर्थ—इसलिये सदा मेरा स्मरण कर और युद्ध आदि स्वधर्माचरण कर, मुझको मन और बुद्धि अर्पण करनेसे तू मुझकोही प्राप्त होगा इसमें संदेह नहीं है.

इस तरहपर परमेश्वर हमारे साथ वचनबद्ध होता है, इससे तुच्छ भोग विलास और हँसी दिल्लगी तथा नाच तमाशे छोडकर ईश्वरभजनमें मस्त रहना चाहिये, यही जीवनका कर्तव्य और यही जीवनकी सार्थकता है.

५९ अपनी बुराई करनेवालेपरभी भलाईही करना सज्जनका स्वभाव है, बेरका वृक्ष पत्थर मारनेपरभी फलही देता है.

एक राजा शिकारके लिये वनमें गया और थककर एक बेरके वृक्षके नीचे लेटगया, उसी समय वहाँ होकर एक भिक्षुक निकला. भिक्षुक भूखसे पीडित हो रहा था, उस पेडपर बहुत पके बेर लगे देखकर उसने दूरहीसे उसपर एक कंकर फेंका, कंकर पेडमें लगकर नीचे सोतेहुए राजापर गिरा, तुरंत सिपाहियोंने उस भिक्षुकको पकडकर राजाके पास पहुँचाया, राजाने उससे पूँछा " तूने मुझपर पत्थर क्यों फेंका ? "

भिक्षुकने नम्रतासे उत्तर दिया " महाराज ! मैंने आपपर पत्थर नहीं फेंका, मैंने तो इस बेरके वृक्षपर इस आशासे पत्थर फेंका था कि, कुछ फल गिरैं तो मैं अपनी भूख मिटाऊं ! "

भिक्षुककी बात सुनकर राजाको उसपर दया आई और उसने अंजली भरके उसको मोहरैं देदीं, तब तो सेवक बोले " महाराज ! इसने तो आपको पत्थर मारा है फिर आप इसको मोहरैं क्यों देते हैं ? "

राजाने कहा " सुनो भाइयो ! बेरका वृक्ष जैसा जडपदार्थही अपने ऊपर पत्थर मारनेवालेको खाना देकर एक बारका पेट भर देता है तब मुझे मारनेवालेको मैं उसकी उमरभरका खाना देकर पेट न भरदूं तो मैं राजा काहेका ? "

बडे आदमियोंके मनभी ऐसे बडेही होते हैं. भलाई करनेवाले पर तो सबही भलाई करते हैं उसमें विशेषता क्या ? परंतु बुराई करनेवालेपर भलाई करनेमेंही बडाई है. सबपर क्षमा रखना,

सबकी भलाई चाहना और बुराई करनेवाले परभी भलाई करना महात्माओंका स्वभाव होताहै. हम जराजरासी बातोंमें बिगड बैठतेहैं और द्वेषबुद्धिसे वैरभाव बढाते जाते हैं, परंतु यह कितनी बुरी बात है सो इस ऊपरके उदाहरणसे समझना चाहिये. हम जो अपने मनको वशमें न रखसकें, और हमपर बुराई करनेवालेको क्षमा न करसकें तो हमसे जड पदार्थही अच्छे. चंदनको घिसनेपरभी वह सुगंधीही देताहै, अगरबत्तीको जलानेपरभी सुगंधिही मिलती है और गन्ना दबानेसेभी मीठा रसही देताहै. इसी तरह बुराई करनेवालेपरभी भलाईही करना सज्जनोंका सहज स्वभाव होताहै.

७ पद।

भक्तहृदय माखनसों कोमल, दुख देतेहु सुखदानी रे ॥ टेक ॥
त्रास दई अतिशय प्रह्लादहु, हिरनाकुश अज्ञानी रे।
नरहरितनु धरि चीरत पेटकों, गति मांगी ना छानी रे॥ १ ॥
पांच पुत्र पांचालीके हति, बालहत्या जिहि ठानी रे।
अश्वत्थामा सोऊ उबाऱ्यो, भीमसेन मति भानी रे ॥ २ ॥
दुर्वासानै जो दुख दीयो, अंबरीष नृप जानी रे।
तब अस्तुति करि चक्र हटाओ, दुर्वासा मन मानी रे ॥ ३ ॥
रामजीवनको हरिजन संगति, साची हृदय समानी रे।
नरतनु पाय न राज्यो सतसँग, तासों परै न हानी रे ॥ ४ ॥

६० पापियोंके सुखसे किसीको लोभमें नहीं पडना क्योंकि वह सुख उनका नाश करनेहीको दिया गयाहै. कसाईके मोटे बकरे और दुबले कुत्तेका उदाहरण.

बहुतसे आदमी कहते हैं, "ईश्वर न्यायी है तब पापि-

योंको सुख क्यों मिलताहै वहुतसी जगह ऐसा देखनेमें आताहै कि, "करता है पुण्य सो फोडता है करम और करता है पाप सो खाता है धाप' इसका कारण क्या ? "

इसका उत्तर बहुत सुगम है. देखिये:—

एक कसाईके पास एक तो था कुत्ता और एक था बकरा. बकरेको वह सदा बँधाहुआ रखताथा तबभी अच्छा २ खाना देता और उसके मोटे होनेकी इच्छा रखताथा, परंतु कुत्ता दिनभर उसकी सेवा करताथा तबभी सूखे रूखे बासी टुकडे पाताथा. इससे कुत्तेको बहुत बुरा लगताथा. वह अपने मनमें कहाकरता था कि, मैं इतनी सेवा करनेपरभी जूंठे टुकडे पाताहूं और बकरा काम करता न काजकरता तबभी अच्छा २ खाना पाताहै इसका कारण क्या है ? अंतमें एकदिन उसने देखा कि स्वामीकी सेवा चाकरी किये बिना अच्छा २ माल खानेवाला बकरा मारागया और टुकडे खानेवाला कुत्ता ज्योंका त्यों बनारहा.

इसी तरह पापियोंको बडा कियाजाताहै सो उनका नाश करनेहीके लिये. पापियोंका जलदी नाश करनेहीके लिये भगवान् उनके पूर्वजन्मोंके अच्छे कर्मोंका फल जलदी देदेताहै जिससे संसारकी नजरमें तो वे सुखी दीखतेहैं परंतु वे सुख उनके थोडीही देरके और उनका नाश करनेवाले होते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं, इसलिये किसी पापीको सुखी देखकर हमको अपने मनमें किसी तरहका बुरा विचार नहीं करना किंतु यही समझना चाहिये कि, वे उसका नाश करनेवाले हैं. पूर्वजन्मके अच्छे कर्मोंका फल ईश्वर उनको इसीलिये एकसाथ देदेताहै कि, जिसमें उनका फल एकसाथ भोग चुकनेपर उनका नाश जलदीही होजाय. इसलिये पापियोंके सुखको उनका भविष्यत्का दुःख मानकर उस सुखसे खुश न होना और न उनसे द्वेष मानना चाहिये. पापियोंके सुखका स्वरूप बतानेमें भगवान्ने कहाहै:—

"यदग्रे चानुबंधे च सुखं मोहनमात्मनः।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम्॥"

गी० अ० १८. श्लो० ३९.

अर्थ– जो सुख आरंभमें और परिणाममें अपनी बुद्धिको मोह उत्पन्न करनेवाला है तथा जो सुख निद्रा आलस्य और प्रमादसे उत्पन्न हुआ है वह सुख तामस कहलाताहै.

पापियोंके सुख ऐसेही तामसी होते हैं इससे उनमें किसीभी भक्त-जनको मोहित नहीं होनाचाहिये, क्योंकि वह सुख बकरेकी तरह नाश–नरकके लियेही है. भक्तोंके दुःख भी परिणाममें स्वर्गके सुख जैसे हैं, इसके लिये श्रीभगवान्ने गीतामें कहाहैः–

"यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्।
तत्सुखं सात्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्॥"

गी० अ० १८. श्लो० ३७.

अर्थ–जो सुख प्रारंभमें विषजैसा परंतु अंतमें अमृतजैसा है, और जो सुख आत्माको जतानेवाली बुद्धिके प्रसादसे उत्पन्न हुआ है उस सुखको योगियोंने सात्त्विक सुख कहाहै,

८ कवित्त।

मधुर आहारभोग नीको लागै खातमाहि, पर अंतमाहिं
सो तो रोग उपजातहै। अधम कुनारी व्याह चाह करै
सत्वराशि, पर परिणाम सो तो दुःखकों दिखातहै॥
खल मित्र नेह करि चाहै चित्तरंजनकों, पर वित्तभंज-
नसों शोक सो गहात है। तैसहू कुसंग पाय रंग राच्यो
नंदलाल, पर अंतमाहि रंगभंगहू लखातहै॥ १॥

६१ जिस तरह भारी २ लकडीके लट्ठोंको पानीमें खींचनेमें बोझा नहीं जान पडता, वैसेही हमारे पापोंकी हमको यहांपर खबर नहीं पडती, परंतु धर्मराजके यहां उनका फैसला होगा तब मालूम पडेगी.

ब्रह्मदेशसे और मलाबारसे लकडीके बडे २ लट्टे जहाजोंमें आते हैं. उतारते समय उनको समुद्रमें डालदेते हैं और ऐसे २ कई लट्ठोंको एक रस्सीसे बांधके छोटे २ लडके किनारेपर खींचलाते हैं परंतु जब उनको पानीमेंसे निकालकर जमीनपर लेजाना पडताहै तब एक २ लट्ठेको दो दो सौ मजदूरभी कठिनाईसे लेजासकते हैं तात्पर्य यह कि पानीमें बोझा नहीं जानपडता.

इसी तरह हमारे पापोंके लियेभी समझना. जैसे पानीमें लकडीका बोझा नहीं जानपडता, और एकही मनुष्य सैकडों लट्ठोंको खींच लेजासकताहै वैसेही हमारे इस वर्तमान जीवनमें हमको अपने पापोंका बोझा जान नहीं पडता जिससे हम हजारों पाप करते हैं परंतु मरनेपर ईश्वरके दरबारमें न्यायके समय वह बोझा उठाना बहुत कठिन होजायगा.

प्रभुका दरबार जमीनरूप समझो. जमीनपर लट्ठोंका बोझा उठाना बहुत कठिन पडता है. इसलिये भाइयो चेतो ! चेतो ! ! साधुलोग हमको बडे सुगम २ उपायोंसे समझाते हैं परंतु हम अभागे उनको सुनते नहीं और सुनते समझते हैं तबभी उनके अनुसार चलते नहीं. यह हमारी बहुत बडी भूल है. इसलिये भाइयो ! पापको कभी छोटा मत समझो ! उसका बोझा, उसकी भयंकरता और उसकी जोखिम हमको यहांपर नहीं मालुम होती, क्योंकि अभी वह बीजरूप है परंतु ईश्वरके दरबारमें पहुँचकर वह वृक्षरूप होजायगा. यहांपर हमको वे बडके बीजकी तरह खस-खसके दाने जैसे छोटे दीखतेहैं परंतु ईश्वरके दरबारमें पहुँचकर वे

बडे बडके पेड जैसे होजायँगे, उन एक २ पेडमें लाखों बुराईरूप फल लगजायँगे, एक २ फलमें लाखों कीडे उत्पन्न होजायँगे और तब वे सब हमकोही भोगने पडेंगे. इसको कभी भूलना नहीं चाहिये ! इससे अबभी समय है तो चेतो ! चेतो ! ! नहीं तो जानते बूझतेभी खराबी होगी. दिया लेकर कुएमें गिरने बराबर होगा. भाइयो ! अबभी कुछ सोचो ! कुछ तो विचार करो !

९ कवित्त ।

अरे अपराधी यह मति तोहि साधी काह, ठग ठग लोग
काम करत ठगाईको । वित्तमाहिं चित्त धार मोती जश
खोयो पार, भयो कभों नाहिं माता पिता गुरु भाईको ॥
पर यह बात जग जाहिर लखात मूढ, बोयके बबूर
चाखी आमकी खटाईको । पर छुप छुप कीने पाप यहँ
पूछे नाहिं, परलोकमाहीं ना राज पोपांबाईको ॥ १ ॥

६२ देखनेमें छोटासा पहलवान. ईश्वरके बलकी मरनेपर खबर पडती है.

एक बडा शूरवीर पहलवान था, लोगोंमें उसका बडा नाम था, उसकी बहुत प्रशंसा सुनकर राजाने उसे देखनेको अपने पास बुलाया, वह पहलवान देखनेमें छोटा और दुबला था, इससे राजाने कहा " तुम्हारे लिये तो लोग बडी २ बातें मारते हैं परंतु देखनेसे तो तुममें वैसा पराक्रम नहीं जानपडता. "

पहलवानने उत्तर दिया. " साहब ! मेरे बलकी खबर यहां नहीं पडसकती किंतु लडाईकी मैदानमें पडसकती है ! "

इसी तरह परमेश्वर कहता है कि, तुम अभी मुझे नहीं पहँचानते परंतु अपने न्यायके समय पहँचानोगे. अपना न्याय कराते समय ईश्वरको पहँचाननेसे पहलेही उस समर्थ ईश्वरकी सामर्थ्यको जानलेना और उसके अधीन होजाना अच्छा है. इसीमें हमारी शोभा है और यही बचनेका उपाय है. ईश्वरका बल मरेबाद जानने और नरकमें पडनेकी अपेक्षा उसकी कृपामें जीना और स्वर्गका ऐश्वर्य भोगना अच्छा है. इसीका नाम मनुष्यत्व है. इसीका नाम पुरुषार्थ है और यही इच्छा करने योग्य है.

६३ धर्मीको धक्के क्यों लगते हैं ? अच्छा देनेके लिये ईश्वर बुरा ले लेता है.

प्राचीनकालमें एक महात्मा थे. उनके लिये ऐसा प्रसिद्ध था कि, वे ईश्वरसे बातें करते थे. उनसे किसी गरीब भक्तने कहा " आप समझदार हैं, ईश्वरके भक्त हैं, मेरी एक बातका जवाब दीजिये. "

महात्माने कहा " कहो क्या बात है ? मुझसे बनेगा वैसा उत्तर देनेको मैं तैयार हूं. "

उसने कहा " मैं एक गरीब आदमी हूं और दिन प्रतिदिन गरीबही होता जाता हूं. मेरे पास कुछभी नहीं है, केवल एक घासकी टपरिया थी उसमेंभी कल आग लगगयी इसका कारण क्या है ? ईश्वर जिसके देता है उसके तो खूबही देदेताहै और जिसका लेता है उसका सबही ले लेता है. ' दुःखीपर डाम और फिसलेपर लात ' वाली मुझजैसी दशा संसारमें बहुतसे लोगोंकी होती है. इसका कारण क्या है ? "

गरीबकी यह बात सुनकर महात्मा बडे विचारमें पडे. वेभी ऐसे२ बीसियों उदाहरण देखचुके थे परंतु सबब कुछभी नहीं जानसके थे. इससे उन्होंने उत्तर दिया " मैं भगवान्से पूँछकर तुमको इसका जवाब दूंगा. "

फिर उस महात्माने ईश्वरसे कहा " ऐ भगवन् ! तू बडा दयालु है, तू सच्चा न्यायी है, तू गरीबोंको बेली (सहायक) है. और तू भक्तोंका योगक्षेम करनेवाला है. फिरभी तेरा नियम उलटा क्यों है ? तेरे भक्तही दुःखी क्यों होते हैं, फिसलेपर तू लात क्यों मारता है ? और जो गरीब है उसीको अधिक २ गरीब क्यों बनाताहै ? मुझसे एक भक्तने यह प्रश्न पूँछा है. अब तू कहै सो उत्तर दूं. "

भगवान्ने कहा " मुझे एक ईंट चाहिये सो लेआ ! फिर मैं तुझको इसका उत्तर दूंगा. "

महात्मा वहांसे चलकर नगरके किसी भपकेदार मकानवाले महोल्लेमें गया परंतु उन सुंदर मकानोंमेंसे ईंट निकालनेको उसकी इच्छा न हुई ! वहांसे वह गरीबोंके महोल्लेमें गया और एक टूटे हुए मकानमेंसे ईंट लेकर भगवान्के पास पहुँचा भगवान्ने पूँछा " यह ईंट तू कहांसे लाया ? "

महात्माने उत्तर दिया "किसी गरीबके घरकी एक दीवार टूटी पडीथी और औरभी अधिक टूटनेपर आरहीथी, उसीमेंसे मैं यह ईंट निकाल लाया. "

भगवान्ने कहा " अरे ! यह तो तूने बहुत बुरा किया ! बडे २ महल छोडकर एक गरीबकी टूटीहुई दीवारमेंसे क्यों लाया ? उस टूटीहुई दीवारको औरभी उसी टूटीहुई स्थितिमें रहनेदेता और उसके बदलेमें किसी महलमेंसे एक ईंट खेंच लाता तो क्या अडचन थी ? ऐसा क्यों नहीं किया ? "

महात्माने कहा " महाराज ! बडे महलमेंसे एक ईंट खेंचनेसे महलकी सुंदरता बिगडजाती परंतु टूटी दीवारमेंसे ईंट खेंचनेसे वह सारी दीवारही गिरगयी जिसके स्थानमें अब नयी दीवार बनजायगी."

भगवान्ने कहा " बस ! यही मेरा कायदा है और इसीमें दुनियाका फायदा है. उस भक्तसे जाकर कहना कि, तुझे अधिक देनेहीके लिये तेरा थोडा लेलिया जाताहै. तुझको अच्छा देनेके लिये तेरा बुरा लेलिया जाता है. तुझे निवृत्ति देनेके लिये तेरा प्रपंच हरलिया जाता है और तुझे स्वर्ग देनेके लिये तेरे पाससे माया खेंच ली जाती है. यह भक्तोंकी कसोटी है. जो भक्त ऐसी कसोटीमें मेरी इच्छाके अधीन बने रहते हैं वेही भक्त मुझे प्यारे हैं. "

यह सब लोगोंके याद रखने योग्य है कारण इससे हमको संतोष और धैर्य मिलता है और प्रभुकी इच्छाके अधीन होनेका हममें बल आता है. इसलिये कदाचित् कोई हानि हो तवभी वह भलेहीके लिये है. ऐसा समझकर भक्तजनोंको उसका शोक कभी न करना चाहिये. हलकी २ बातोंका शोक करनेसे बचें तोही हम शांतिमें रहसकते हैं. इसलिये गरीबीमें भक्तजनोंको उदास नहीं होना चाहिये.

६४ पक्षियोंके पानी पीजानेसे तालाब नहीं सूखता. यथाशक्ति दान देनेसे मनुष्य गरीब नहीं होता.

किसी बडे सरोवरमेंसे पक्षी पानी पीजायँ तो सरोवर कम नहीं होता इसी तरह धनवान् लोग यथाशक्ति गरीबोंकी सहायता करें तो निर्धन नहीं होजाते.

महात्मा कहते हैं कि धनकी तीनही गति हैं, (१) दान, (२) भोग, (३) नाश. जो दान नहीं देते और भोग नहीं भोगते उनके धनका नाशही होता है. दान देना बीज बोनेके समान है इसमें एकका सौगुना होजाता है, इसलिये जिनको ईश्वरने दिया हो उनको दान देनेमें संकोच नहीं करना चाहिये, जो यहाँ देनेमें संकोच करेंगे उनको परमेश्वरके पास खाली हाथ जाना पडेगा. जीवन तो

क्षणिक है परंतु वहांका रहना अनंत कालतक है. इससे क्षणिक काल तो भरेहुए रहना और अनंतकाल खाली रहना बुद्धिमानी नहीं है. यथाशक्ति दान देनेसे मनुष्य खाली नहीं होजाता भक्तराज तुलसीदासजीने कहाहैः—

दोहा—तुलसी पंछिनके पिये, घटै न सरिता नीर।
धर्म किये धन ना घटै, सहाय करै रघुवीर॥

६७ कुएमेंसे पानी ज्यों ज्यों निकलता है त्यों त्यों नया पानी आताजाता है वैसेही परोपकारसे धन बढता जाताहै.

जैसे कुएमेंसे पानी निकालाजाता है त्यों त्यों उसमें नया ताजा पानी आता जाताहै, वैसेही दान करनेसे धन घटता नहीं किंतु पवित्र होता और बढता है. कारण दान सदा गरीबोंको दिया जाता है और गरीबोंके अंतःकरणके आशीर्वाद एक ऐसी अलौकिक वस्तु है कि, पानीमें डूबती नहीं, आगमें जलती नहीं, हथियारसे कटती नहीं, चोरसे चुराई जाती नहीं, उठानेमें बोझा लगता नहीं, उसमें कोई हिस्सेदार खडा होता नहीं और हवासे सूखती नहीं ऐसे अलौकिक आशीर्वाद, कि जो कल्याणके सीधे साधन हैं दानसेही मिलते हैं इसलिये जो बनै सो पात्रहीको देना यही महात्माओंका सिद्धांत है और यही हमारे धर्मकी उत्तमता है. इसलिये जैसे बनै वैसे अपने गरीब भाई बंधुओंकी सहायता करो.

१० छप्पय।

अतिउदारता नाहिं, तऊ साधो परमारथ।
निष्फल आन व्योहार, यहै सांचो है स्वारथ॥
विश्वंभर जो दियो, तासों कुछ दान करीजै।
जिमि अंजलिको, नीर इमी तन छन छन छीजै॥

बूंद बूंद सरवर भरै, कंकर कंकर पाल ।
इमि संचित करि दानधन, लीजे सँग ततकाल ॥ १ ॥

६५ ईश्वर कहताहै कि सब बातोंसे मुझे दान देना अधिक प्रिय लगता है.

ईश्वर कहताहै कि, मुझे जितनी बातें प्रिय हैं उन सबमें दूसरोंको देना अधिक प्रिय लगता है. मेरा सब है, अनंत ब्रह्मांड मेरे हैं, और तबभी मैंने अपने पास कुछ नहीं रक्खा है; सब कुछ तुमको तुम्हारे सुखके लिये देडालाहै. वैसेही तुमभी यथाशक्ति अपने भाई बंधुओंको दो ! देनेमें जो मजा है वह और किसी दूसरी चीजमें नहीं है. देनेसे लेनेवालेका अंतःकरण जैसे प्रसन्न होताहै वैसेही देनेवालेकोभी एक उत्तमप्रकारका मानसिक आनंद और आत्मिक संतोष मिलता है. भगवान्‌ने कहा है कि:-

"यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥"

गी० अ० १८. श्लो० ५.

अर्थ-यज्ञ, दान और तप ये काम तो छोडनेही नहीं, क्योंकि ये मनुष्यको पवित्र करनेवाले हैं.

ईश्वर कहताहै कि, दान मनुष्यको पावन करनेवाला है. इससे बढकर विश्वास हमको और क्या चाहिये ? इससे बढकर हमको और चाहियेभी क्या, क्योंकि पावन शुद्ध होनेसेही हम ईश्वरके पास पहुँच सकते हैं, और दानसे शुद्धि होतीहै. इसलिये प्रत्येक मनुष्यको सदा यथाशक्ति मन, वचन और कर्मसे दान करना चाहिये.

६७ तोपका गोला तीन चार मील जासकताहै । अन्नका गोला स्वर्गतक पहुँचताहै.

जानतेहो ! दानका महत्त्व कितना बडा है ? एक साधुने किसीसे

पूँछा कि, " पत्थर कितनी दूरतक जासकता है. " उसने उत्तर दिया " हाथका फेंकाहुआ पत्थर १०० हाथसे अधिक नहीं जासकता और गोफनसे फेंकाहुआ ३०० हाथ जाताहै. "

साधुने पूँछा " ऐसीभी कोई वस्तु है जो इससे अधिक दूर पहुँचतीहो ? " उसने उत्तर दिया " बंदूककी गोली हजार हाथतक जासकतीहै और तोपका गोला ३–४ मील जाताहै. "

साधुने पूँछा " इससेभी दूर जानेका कोई साधन है ? " उसने उत्तर दिया " नहीं ! "

तब साधुने कहा " बेटा ! भूखे आदमीको खिलायेहुए अन्नका गोला स्वर्गतक पहुँचताहै ! "

दानका ऐसा महत्त्व है. इसलिये जिसे ईश्वरने दिया हो उसे देनेमें संकोच नहीं करना चाहिये. दीनोंकी सहायता करनेके लिये अपने पास धन होतेहुएभी जो सहायता नहीं करते वे अभागे हैं, भाग्यहीन हैं और परस्पर सहायता करनेके ईश्वरीय नियमके विरुद्ध चलनेवाले हैं. इस अपराधके लिये उनको जो कडी सजा मिलैगी उसका विचार करतेहुए हमको खेद होता है, ईश्वर ! वैसोंपर दया कर और उनको दान देनेकी सन्मति दे !

दोहा—दया धर्मको मूल है, पापमूल अभिमान ।
तुलसी दया न छाँडिये, जबलग घटमें प्रान ॥

६८ दान न देना ईश्वरका ऋणी रहना है, ईश्वरका ऋणी कैसे सुखी होसकताहै ?

संसारके सब धर्मोंकी यही आज्ञा है कि, किसीका ऋणी नहीं रहना चाहिये. जहाँतक बनै सबका ऋण चुकादेना चाहिये. सत्य महाराजा हरिश्चंद्रने अपनी रानीको बेंचकर तथा स्वयं " आपको भंगीके हाथ बेचकर ऋण चुकायाथा कहावत प्रसिद्ध है कि, "जो इस जन्ममें ऋण नहीं चुकावैंगे उनको दूसरे जन्ममें बैल बनकर चुकाना पडैगा. "

संसारके ऋणके लिये जब ऐसा है. पैसेके ऋणके लिये जब इतना है, तब हृदयके ऋणके लिये और परमेश्वरके ऋणके लिये कितना होना चाहिये? इसका विचार तो कर देखो! ईश्वरने हमको जो कुछ दिया है उसमेंसे थोडा बहुत तो ईश्वरके पवित्र नामपर ईश्वरके बालकोंको, नहीं नहीं, हमारेही भाई बंधुओंकोभी देना चाहिये. औरोंको देनेकी शर्तपरही परमेश्वरने हमपर कृपा करके इतना दिया है. अपने खजानेमें ईश्वरके ऐश्वर्यको कैद करनेके लिये यह ऐश्वर्य हमको नहीं दिया गया. ईश्वरीय ऐश्वर्य सार्वजनिक है. उसको कैद करनेका किसीको अधिकार नहीं है जो ईश्वरके ऐश्वर्यको अपना बनाकर कैद करते हैं वे ईश्वरके बडे अपराधी हैं, क्योंकि ईश्वरीय ऐश्वर्यको अपने खजानेमें कैद करना ईश्वरका सामना करने बराबर है यह ईश्वरका स्पष्ट अनादर है, यह ईश्वरके तेजको धुंधला करनेके समान है, और पैसा होतेहुएभी दूसरोंको रुलानेके लिये दिवाला निकाल देनेके समान है याद रखना चाहिये कि इस तरहका बदनीयत रखनेसे ईश्वरके ऋणमेंसे छुटकारा थोडाही होताहै? ऐसे पापियोंको यहांपर अपने हलकेसे स्वार्थमें मजा आता है अर्थात् वे इधर उधरके बहाने करके धर्म, व्यवहार और राज्यके कायदोंको तोड अपने और दूसरोंके मनको समझा देते हैं परंतु उनको याद रखना चाहिये कि उनके यहांके बहाने यमदूतोंके आगे काम नहीं आवेंगे, ईश्वरके दरबारमें पोपांबाईको राज्य नहीं है. इसलिये जैसे बने वैसे गरीबोंकी ओरका अपना कर्तव्य जल्दी पूरा करो! गरीबोंकी ओरका कर्तव्य पूरा करनाही ईश्वरके ऋणको चुकाना है.

६९ राजाका ऋण चुकाने बिना नहीं चलता तब ईश्वरका ऋण चुकाये बिना कैसे चलैगा.

एक मनुष्यपर राजाका ऋण था. यद्यपि ऋण चुकानेका

उसके पास साधन था परंतु इधर उधरके बहाने करके उसने ऋण न चुकाया और अंतमें ऋणीही मरगया. तब तो राजाने उसके पुत्रसे ऋण चुकानेका तकाजा किया, घरपर पहरा बिठादिया और सब घरबार खालसे करके सब जमीन जायदाद नष्ट भ्रष्ट करडाली. साधारण मनुष्यका रुपया चुकानेहीमें बहानेबाजी नहीं चलती तब राजाका ऋण चुकानेमें कैसे चलसकती है क्योंकि वह अधिकारवाला है. और जब राजाकेही आगे बहानेबाजी नहीं चलती तब परमेश्वरके आगे कैसे चलसकती है ? क्योंकि वह तो राजाओंका राजा और महाराजाओंका भी महाराजा ठहरा ! इसलिये हजार काम छोडकर पहले ईश्वरका ऋण चुकाना चाहिये, इसीमें इज्जत आबरू है, इसीमें मजा है और इसीसे ईश्वरकी कृपा संपादन हो सकती है ! यह ऋण चुकाना और कुछभी नहीं केवल अपने भाई बंधुओंका आवश्यकताके समय बनती सहायता देना है.

७० चक्कीमें खीलेकी शरणवाले दाने पिसनेसे बचजातेहैं, वैसेही ईश्वरकी शरणमें जानेवाले नरकसे बचजातेहैं.

दोहा—माया ऐसी डाकिनी, खायो सब संसार ।
एक न खायो कबीर जो, रह्यो राम आधार ॥

समर्थ ईश्वरकी शरण लिये विना नरकसे बचनेका कोई मार्ग नहीं है. मोक्ष पानेका एक मात्र उपाय परमेश्वरकी शरणमें जानाही है, उदाहरणके लिये देखो कि, चक्कीमें जो अनाज गिरता है वही पिसजाता है. परंतु जितनासा खीलेकी शरणमें रहता है अर्थात् खीलेके आसपास रहता है वह चक्कीके बीचमें होनेपरभी पिसनेसे बचजाता है. वैसेही संसारका चक्र है वही कालरूप चक्की है और उसमें ईश्वररूप खीला है, जो उस खीलेकी शरणमें

जाते हैं वे वचजाते हैं और जो खीलेको छोडदेते हैं वे पिसजाते हैं. हम जराजरासी और हलकी २ बातोंके लिये बडे आदमियोंका सहारा तकते हैं, क्योंकि बडोंकी सहायताहीसे काम पार पडता है, तब यह तो विचार करो कि, परमेश्वरके सिवाय दूसरा बडा कौन होगा ? हम जिन साधु संतों, पीर पेगंबरों और देव दानवोंकी शरण लेते हैं वेभी जब परमेश्वरहीकी शरण लेते हैं तब हमही सीधे सर्वशक्तिमान् परमेश्वरकी शरण क्यों न लें ? इसलिये हमको बडेसे बडे, दयालुसे दयालु और सब आश्रयकेभी आश्रय समर्थ ईश्वरकी सर्वात्मभावसे शरण लेनी चाहिये. यही दुःखसे, नरकसे और पापसे बचनेका और कल्याण मार्ग है. ईश्वरनेभी कहा है:—

"तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परां शांतिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥"

गी० अ० १८. श्लो० ६२.

अर्थ—हे अर्जुन ! सर्वभावसे प्रभुहीकी शरणमें जा ! उसकी कृपासे परमशांतिको और कभी नाश न होनेवाले अखंड स्थानको प्राप्त होगा.

ईश्वर हमसे इस तरह प्रण करता है इससे अनंतकालके मोक्षका आनंद भोगनेके लिये भाइयो ! तन मन धनसे ईश्वरकी शरणमें जाओ ! शरणमें जाओ !

पद ।

हरिसन्मुख हो रहना भूले प्रभु सन्मुख हो रहना रे ॥ टेक ॥
जो कोई कहै कहनदे वाकों, आप कछू ना कहना रे ।
जो कोई निंदा करत आपनी, सुन चुपका होरहना रे॥ हरि० १॥
बस बागड अथवा कंचनगिरि, मिलत आपनो लहना रे ।
तासों काटि आशकी फांसी, चिंताचिता न दहना रे॥ हरि० २॥

लाख पहारि पैसाख रतनमणि, कनकजडाऊ गहना रे ।
मानि कहूँ अभिमाननदीमें, रामशरण नहिं बहना रे॥ हरि० ३॥

७१ बडे भाईने कहा कि, मेरे आठ आने स्वर्गमें आना. छोठे भाईने उत्तर दिया कि यह कैसे बनसकता है ? बडे भाईने कहा कि तू पैसा खर्च नहीं करता तब अपने लाखों रुपयोंको वहां कैसे ले जासकैगा.

दो भाई थे, दोनों धनवान् थे परंतु बडा उदार था और छोटा मक्खीचूंस. बडा भाई अच्छे २ दान देता, गरीबोंकी खबर लेता, पडोसियोंको मदद देता, दुःखियोंको संतोष कराता, रोगियोंकी सेवा करता, विद्यार्थियोंको सहायता देता और अनाथोंको सँभाल लेता था, अच्छे कामोंमें वह खुले हाथसे खर्च करता था. परंतु छोटा भाई धर्ममें एक दमडीभी नहीं देता था. एक वार बडा भाई बहुत बीमार हो गया तो उसने सबके खाते चुकते करदिये. उसी समय छोटा भाई आया, उससेभी उसने कहा कि मेरी ओर तेरा जो कुछ लेना हो सो लेजा. छोटे भाईने उत्तर दिया " तुम्हारी ओर मेरा लेना कुछ नहीं है, किंतु मेरी ओर तुम्हारे आठ आने लेने हैं सो मैं दे जाऊंगा. "

बडे भाईने कहा " मैं तो अभी जाता हूं. तू आवै तब स्वर्गमें लेता आना. "

छोटे भाईने कहा " यह कैसे ? स्वर्गमें लेते आना कैसे बन सकता है ? "

बडे भाईने कहा " अपने लाखों रुपयोंको तो तू लेही जावैगा तब मेरे आठ आनेको नहीं ले जासकेगा ? उसमें तुझको क्या बोझा लगेगा ? "

छोटे भाईने कहा " वहां कैसे लेजाना बन सकता है ? "

बडे भाईने कहा " यहां तो हमको थोडे समयतक रहना है और वहांपर अनंतकालतक रहना है. थोडे रहनेके लिये तो इतनी धामधूम और इतना संग्रह और अनंतकालके लिये कुछभी नहीं ! जहांपर तुझे अधिक रहना है वहांपर जब तू कुछभी नहीं लेजासकता तब यहांपर इकट्ठा कियाहुआ तेरे किस काम आवैगा ? "

बडे भाईकी इन बातोंसे छोटे भाईकी समझमें अपनी भूल अच्छी तरह आगई वह लज्जित होगया उसी दिनसे उसने परमार्थ करना आरंभ करदिया.

सब भाइयोंको अच्छी तरह याद रखना चाहिये कि, यहांपर इकट्ठा किया हुआ धन वहाँपर काम नहीं आता परंतु यहाँपर खर्च कियाहुआ धनही वहांपर काम आता है. जिसको भगवान्‌ने दिया हो उसे परमार्थ करनेमें कभी पीछे न हटना चाहिये. ईश्वर कहता है कि, मेरे बालकोंकी सेवा करनाही मेरी सेवा करना है, इससे जो मुझे प्रसन्न करना चाहे वह तनसे, मनसे धनसे अथवा और किसी रीतिसे बनै वैसे मेरे बालकोंकी सेवा करै. सृष्टिकी सुंदरता बढावै, जगत्‌को पूर्णतापर पहुँचाने और मनुष्यको देवता बनानेके मेरे उद्देश्यमें सहायता दे, इसीमें जगत्‌का उद्धार है और इसीमें मैं हूं. इससे परमार्थकोही अपना मंत्र मानो !

१२ छप्पय ।

जिमि घांचीको बैल रात दिन फेरै घांची ।
जिमि कुम्हराके गधा भार बहने मति रांची ॥
नेक होत अवकाश आश विषयनकी जोवैं ।
जिमि कूकर खर श्वान तिमि मानुष तन खोवैं ॥
रामजिवन कह जिवन यो, अनुप अनोख अमोल ।
जीती बाजी हारिकै, लखचौरासी डोल ॥ १ ॥

७२ कुत्ता गाडीके नीचे चलाजाताहै और मनमें अभिमान करताहै कि मैंही गाडीको खींचताहूं ऐसा तुम मत करना !

परमार्थ करनेमें बहुतसे आदमी अपनी बडाई समझते हैं परंतु यह उनकी भूल है. महात्माओंका कथन है कि, परमार्थ करना तो हमारा कर्तव्य है इसमें अभिमान काहेका ? ज्ञानी गुरु नानकने कहाहैः-

तू कहैगा मैं दाता हूं माल कहांसे लाया है ?
दान करो गरीबको बाबा मगरूरीसे धोखा है.

हम दाता तो बनते हैं परंतु यह नहीं विचारते कि. हमको भी तो किसीने दियाही है. ईश्वरने हमें दिया है ! हम ईश्वरके पवित्र नामपर देकर ब्रह्मार्पण कर डालें. कुत्ता गाडीके नीचे चलाजाताहै और मनमें अभिमान करताहै कि मैं ही इस गाडीको खींचताहूं. ऐसा मिथ्या अभिमान हमको नहीं करना चाहिये. ईश्वरकी दीहुई वस्तुएँ ईश्वरके पवित्र नामपर ईश्वरके निमित्त ईश्वरके बालकोंको अपने भाई बंधुओंको देना चाहिये. संसारभरके सब धर्मोंमें इसीको मुख्यकर्तव्य मानाहै. यज्ञ, दान और तप करनेमें अभिमान न करनेके लिये ईश्वरने भी कहाहैः—

"एतान्यपि तु कर्माणि संगं त्यक्त्वा फलानि च।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ॥"

गी० अ० १८. श्लो० ६.

अर्थ—हे अर्जुन ! ये कर्मभी फलकी इच्छा छोडकर तथा अभिमान छोडकर करने चाहिये. यह मेरा उत्तम और पक्का मत है.

यज्ञ अर्थात् ईश्वरकी ओरका काम, दान अर्थात् मनुष्यजाति और प्राणीमात्रकी ओरका काम और तप अर्थात् मनको वशमें रखना ये तीनों मुख्य काम जो कर्तव्य कहलातेहैं, ईश्वरकेही लिये करनेके हैं. अभिमान करनेसे इन कामोंका महत्त्व घटजाता है इसके लिये भगवान्‌ने गीतामें कहाहैः—

"यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबंधनः ।
तदर्थं कर्म कौंतेय मुक्तसंगः समाचर ॥"

गी॰ अ० ३. श्लो० ९.

अर्थ—मेरे निमित्त करनेके जो कर्म हैं उनको छोडकर बाकी सब कर्म बंधन करनेवाले हैं इससे हे अर्जुन ! आसक्ति छोडकर तू ईश्वरके निमित्त कर्म कर !

ईश्वरकी ऐसी स्पष्ट आज्ञा होते हुएभी जो हम अपने अहंभावसे परमार्थ करै तो वह परमार्थभी वंधनकारकही होपडताहै. ऐसा न होनेके लिये हमारे दान धर्म आदि ईश्वरहीके अर्पण होने चाहिये, उसमें न तो किसी प्रकारकी विशेषता समझना और न अभिमान करना चाहिये, जो कुछभी अभिमानका अंश आया तो अच्छे कर्मभी वंधनकारक होजायँगे. इसलिये भाइयो ! रूखे मानपानके लिये अथवा घडी दो घडीके मान मर्तबेके लिये नहीं, परंतु ईश्वरके लिये अंतःकरणकी शुद्ध इच्छासे परमार्थ करो !

७३ अभिमान करनेसे शुभकर्मभी निर्बल और मलिन होजातेहैं.

व्यवहारमें हम देखते हैं कि निर्मल हृदयसे जो अनेक काम किये जाते हैं उनका मूल्य बडा होजाता है तब परमार्थके लिये कियेहुए और वेभी ब्रह्मार्पण कियेहुए कामोंका मूल्य ईश्वरके दरबारमें कितना बडा होजायगा और अहंकारवाले काम वहांपर कितने हलके होजांय इसका तो विचार करो ! हमारे अच्छे कामोंकी कीमत कम न होने देने किंतु और बढातेंही जानेके लिये ईश्वरने दया करके कहा है कि:—

"यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौंतेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥"

अ० ९. श्लो० २७.

अर्थ—जो करो, जो खाओ, जो हवन करो, जो दो, जो तप करो, वह सब हे अर्जुन! मेरे अर्पण करो!

ईश्वरकी यह बहुत स्पष्ट और बडी आज्ञा है. ऐसा करनेसे क्या होताहै सोभी ईश्वरने कहा है:—

"ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवांभसा॥"

अ० ५. श्लो० १०.

अर्थ—जैसे कमलका पत्ता पानीमें रहने परभी भीगता नहीं है वैसेही आसक्ति छोडकर कर्म ईश्वरके अर्पण करदेनेसे तुम कर्म करनेपर भी बंधनमें नहीं पडोगे!

ईश्वरके कर्म अर्पण करनेसे मनुष्य कर्मोंके स्वाभाविक दोषसे बच सकता है इससे परमार्थ करनेमें अभिमान कदापि नहीं करना, परंतु ईश्वरीय कर्तव्य समझकर, मनुष्यका मनुष्यत्व समझकर, आत्माकी उन्नति समझकर, जीवनकी सार्थकता समझकर, धर्मका तत्त्व समझकर, अपना कर्तव्य समझकर और ईश्वरकी आज्ञा समझकर शुद्ध अंतःकरणसे, खुले दिलसे, ईश्वरके पवित्र नामसे ईश्वरके निमित्त परमार्थ करना चाहिये. जो इसमें संकोच करें अथवा अहंकार करें तो हम अपनेही हाथसे उसकी कीमत कम कर देते हैं और फल घटा देते हैं. इससे परमार्थमें कभी अहंकार नहीं लाना चाहिये. यही मनुष्यकी उत्तमता है. यही महात्माओंका अंतिम उपदेश है और यही ईश्वरकी इच्छा है.

७४ दूसरोंकी बनाई चीजोंका हम उपयोग करते हैं तब हमकोभी तो दूसरोंके लिये कुछ करना चाहिये.

ईश्वरकी इच्छा है और शास्त्रोंकी आज्ञा है इसीसे दान करना आवश्यक नहीं है किंतु व्यावहारिक रीतिसेभी हम दान करनेको बँधे हुए हैं! कारण यह कि, दूसरोंके बोये हुए वृक्षोंके फल हम

खाते हैं, दूसरोंके लिखे हुए पुस्तक पढकर हम ज्ञान प्राप्त करते हैं, दूसरोंके खुदाये हुए कुएं तालावोंका पानी हम पीते हैं, दूसरोंके वनाये हुए कपडे हम पहनते हैं. दूसरोंके वोये हुए अनाजसे हम पेट भरते हैं, दूसरोंकी जमीनपर हम चलते फिरते हैं, दूसरोंकी गाडीमें हम बैठते हैं, दूसरोंकी निकाली हुई दवाइयोंका लाभ हम लेते हैं, दूसरोंके चुने हुए घरोंमें हम रहते हैं, दूसरोंके निकाले हुए यंत्रों और युक्तियोंसे फायदा हम उठाते हैं और दूसरोंकी सहायतासे हम उत्पन्न हुए हैं. तात्पर्य यह कि, हमारे जीवनका प्रत्येक श्वास ईश्वरकी कृपासे और दूसरोंकी सहायतासेही लिया जाता है. जाने और अजाने दूसरोंहीके उपकारोंसे हम दबे हुए हैं. इस लिये दूसरोंके लियेभी कोई न कोई अच्छा काम तो हमकोभी करनाही चाहिये, जो ऐसा नहीं करते वे कृतघ्न हैं. अपने ऊपर किये हुए उपकारोंका बदला न देनाही पाप है, और वही अधमता है. इससे ऐसी अधमतासे बचनेके लिये ईश्वरके पवित्र नामपर ईश्वरके निमित्त अपने गरीब भाइयोंको यथाशक्ति सहायता देना चाहिये.

७५ दान देना धरोहर जमा कराना है.

दोहा—करो भलाई कोइपर, यही धर्मका कर्म।
दुसरे कल्पित धर्म हैं, मनमें समझो मर्म॥

दान देनेका अर्थ क्या? तुम्हारे विचारे अनुसार दान देनेका अर्थ देडालना नहीं है. हम दान देनेका ठीक अर्थ नहीं समझते इसीसे खुले हाथोंसे दान नहीं देसकते. महात्माओंका कहना है कि, दान देनेका अर्थ देडालना नहीं है परंतु दान देनेका अर्थ है ईश्वरके यहां धरोहर जमा करना. दानरूप ईश्वरके यहां जमा कराईहुई धरोहर समय पडनेपर हमको व्याजसहित मिलजाती है. जब जाने और अजाने किये हुए बुरे कर्मोंसे

उत्पन्न हुए पापरूप शत्रु हमपर हमला करते हैं और हम आपत्तिमें आपडते हैं तब हमको उससे बचनेके लिये ईश्वरके यहां जमा कराई हुई धरोहर सूदसहित काम आती है. इसमें किसीकोभी संदेह न करना चाहिये, क्योंकि हम अपनी आंखोंसे देखते हैं कि, कोईभी भला मनुष्य दूसरोंकी धरोहरको नहीं खाजाता, तब सबसे अच्छेमें अच्छा परमेश्वर हमारी धरोहरको क्योंकर डुबादेगा ? इतना तो हमको अवश्यही विश्वास रखना चाहिये कि, दानरूप ईश्वरके यहाँ जमा कराईहुई हमारी छोटीसी रकमके लिये तो ईश्वर दिवाला निकालही नहीं देगा ? इस लिये भाइयो ! दान करो ! दान करो ! ! दान करो ! ! ! दान देना देडालना नहीं है परंतु अपनेही हितके लिये; अपनेही बचावके लिये अमानत जमा कराना है, यह अमानत रकम, यह रिजर्व्डफंड, यह सेविंग्स बैंकमें जमा कियाहुआ धन जितना अधिक होगा उतनाही अधिक लाभ होगा, उतनाही अधिक बचाव होगा इसलिये भाइयो ! अपने गरीब भाइयोंको देनेसे हाथ मत खींचो ! मत खींचो ! ! सहायता देनेका हाथ तो अधिक २ बढानेहीमें मजा है.

१३ पद ।

काहुको रिण न बकाया, गिरिधर व्याजसमेत चुकाया ॥ टेक ॥ विप्र सुदामा तंडुल पाया, भरि भरि मुष्टि स्वादसों खाया । कनकजडित जाके महल चुनाया, अरु संपतिसों कुबेर लखाया ॥ १ ॥ कुब्जा कुटिल कंसकी दासी, चंदन लेय चली बनि खासी । प्रभु ले चंदन माथ चढाया, कुब्जा रूप अधिक प्रगटाया ॥ २ ॥ द्रुपदसुता करि टेर पुकारी, द्वारावती सुनी गिरिधारी । आवतही प्रभु चीर

बढाया, दुःशासन खल पार न पाया ॥ ३ ॥ रामजिवन दीनन दुख टारी, प्रभुशरणोहू न आन निहारी । यह जग सब जंजाल लखाया, मायामय कथि हरिजन गाया ॥ ४ ॥

७६ दान देना बीज बोनेके समान है.

गरीबोंको दान देना फेंक देना नहीं परंतु बीज बोनेके समान है. यहाँ जमीनमें हम एक दानाभी अनाजका बोवे तो उसके हजारों दाने होजाते हैं और आमकी एक गुठली बोवै तो उसमेंसे हजारों फल सैकडों बरसतक लगते रहते हैं, तब स्वर्गकी भूमि तो पृथ्वीसे लाखों गुनी अच्छी है और अनाजके दाने तथा आमकी गुठलीसे दानका बीज हजारों गुना अच्छा है तब उसमें कैसे अच्छे और कितने फल लैंगे और वे कितने समयतक मिलते रहैंगे,. इसकाभी तो विचार करो ! शास्त्र कहते हैं कि, सात पीढीतक पुण्यका असर पहुँचताहै. इसी परसे हम लोगोंमें कहनेकी चाल है कि "बडोंके पुण्यसे हम सुखी हैं."

परमार्थका बीज बोनेमें इतना गुण और इतना मजा है. इस-परसे यह समझना चाहिये कि, दान करना केवल हमारेही लिये नहीं है किंतु अपने बच्चों और बच्चोंके बच्चोंके हितके लियेभी हमको दान देना चाहिये. पृथ्वीकी भूमि और अनाजका बीजही जब सैकडों गुना देसकता है तब स्वर्गजैसी भूमी और परमार्थजैसा बीज कितना अधिक देसकैगा सो विचार करनेसे बडा आनंद आताहै. भाइयो ! जैसे बने वैसे गरीबोंको मदद दो ! देनेहीमें मजा है ! क्योंकि दान देना फेंकदेना नहीं है परंतु ऋतुमें बीज बोनेके समान है. जो साधन होतेहुएभी बीज नहीं बोवेंगे वे विना फलके रहजायँगे और समयपर पछतावैंगे. अबभी समय है तो बीज बोओ ! धर्मके बीज

बोओ ! यही मनुष्यत्व है ! यही ईश्वरकी आज्ञा है ! और इसीमें कल्याण है !

७७ दान देनेसे आजतक कोईभी कंगाल नहीं हुआ, और कोई होभी गया हो तो वह उसीमें अच्छा लगता है.

दान देनेसे दुनियामें कोईभी गरीब नहीं हुआ और जो कोई हुआभी हो तो वह गरीबीहीमें अच्छा लगता है. दुनियामें माँगनेवालेही गरीब हैं, देनेवाले गरीब नहीं. जिसको परमेश्वरने कुछ दिया है उसका यथाशक्ति पात्रको दान करनेसे कुछभी कम नहीं होता.

कवियोंने कहा है कि:-

दोहा—कुंजरमुखतें गिर पड्यो, घट्यो न गज आहार ।
लाखों चींटी लें चलीं, पालनको परिवार ॥

इसी तरह राजा और धनवान् लोग हाथीके समान हैं और गरीब लोग चींटीके समान हैं अपने खानेके लिये जो न खर्च होने योग्य पदार्थ बने हैं उनमेंसे थोडासा गरीब लोगोंको देदियाजाय तो उन धनवानोंका तो कुछ कम नहीं होसकता परंतु गरीबोंका उसमें कुटुंबसहित पालन होसकताहै. मेले ठेलेमेंसे अमीर आदमी दो चार खिलौने कम खरीदें तो सहजमें दस बीस रुपये बच सकते हैं और उनही रुपयोंकी पुस्तकें खरीदकर गरीब विद्यार्थियोंको दीजायँ तो बहुत बडा उपकार हो सकता है. रेलसे यात्रा करनेमें पहले दरजेके बदले दूसरे दरजेकी गाडीमें यात्रा कीजाय और वे बचतके रुपये गरीबोंको तथा विधवाओंको दियेजायँ तो उसमें देनेवालेका कुछभी खर्च नहीं होता. बंबईजैसे नगरमें परेलसे कोलाबा जानेमें घोडा गाडीका एक रुपया खर्च न कर ट्राममें एक आना देकर काम

चलालियाजाय और बाकी बचे हुए पंद्रह आनेकी पूडियां खरीद-कर गरीबोंको खिलाई जायँ तो १०-१५ आदमियोंका एक वेर पेट भरसकताहै, जो स्त्रीके जेवरमें पचीस हजार रुपये लगाते हों वे दसही हजारके जेवरसे काम चलालें और शेष पंद्रह हजार रुपयोंका सूद प्रतिवर्ष धर्ममें लगाया करें तो क्या उनकी स्त्री वेडौल होजां-यगी ? कभी नहीं ! किंतु दानसे तो और उसका तेज वढैगा ! परंतु ऐसा होना बहुत कठिन है, कारण हम तो अपने अहंभावमें लगेहुए हैं तव ईश्वरके नामपर जो देना चाहिये सो देवै कौन ? यही वंधन है. यही पामरता है और यह न देनाही ईश्वरके मार्गमें आगे वढनेसे रोकनेवाला है. भाइयो जैसे बनै वैसे देनेका मार्ग साफ करो जिसमें स्वर्गका तंग मार्गभी चौडा होजाय !

७८ देनेमें मजा है लेनेमें नहीं, देनेवालेके घर हाथी घोडे हैं लेनेवालेके घर नहीं.

संसारमें देनेमेंही मजा है, लेनेमें नहीं. संसारमें जो सुंदर मकान हैं, बगीचे हैं, जवाहरात है, गाडी घोडे हैं, कारखाने हैं, दूकानें हैं, खजाने हैं और बडे २ वैभव हैं वे सब देनेवालेकेही यहां हैं, लेनेवा-लेके यहां उनमेंसे एकभी नहीं है, यह अच्छी तरह याद रखना चाहिये. एक बडे धर्मोपदेशकने अपने व्याख्यानमें कहा था " अव मैं बूढा हुआ हूं और बचपनसे आजतक हजारों आदमियोंसे कुछ न कुछ नित्य लेताही रहाहूं तवभी मैं तो गरीवका गरीवही बनारहा. कहावत है कि, भीखकी हंडिया छीके नहीं चढती. सो ठीकही है इस-लिये लेनेकी इच्छा न रक्खो ! सदा देनेहीकी इच्छा रक्खो ! संसारमें देनेहीमें मजा है. "

विद्वानोंका कथन है कि, हम अपनेही लिये नहीं किंतु जगत्-

भरके लिये उत्पन्न हुए हैं, इससे दो ! देनेमें सुख है क्योंकि देना ईश्वरको बडा प्रिय है. देनेसे ईश्वर बहुत प्रसन्न होता है, इसीसे उसने हमको बहुतसा दिया है और चाहता है कि, हमभी दूसरोंको बहुत कुछ दें. इसलिये जैसे बनै वैसे अपने भाई बंधुओंको मदद दो।

१४ कुंडलिया।

दया हृदयमधि राखिये कीजै पर उपकार।
यहै काम सबसों भलो सर्वधर्मको सार॥
सर्वधर्मको सार सुवेद पुराणन गायो।
याहीके आधार हरिजनन भव तरपायो॥
इमि कर जोरे कहै रामजीवन मनमांहीं।
प्रभु मम हृदय बिसारि दया कबहू नहिं जाहीं॥ १॥

७९ दानका महत्त्व.

पहलेके लोग दान देनेके लिये कैसी २ युक्तियां करते थे ? प्राचीन ऋषि मुनि कंद मूल फल खाकर रहते और जो कभी वेभी न मिलते तो उपवास कर जाते, परंतु दान माँगने नहीं जाते थे. मांगने जाना तो एक ओर रहा परंतु राजा और धनवान् लोग उनके पैरोंमें गिर गिरकर कोई वस्तु मांगनेकी प्रार्थना करते थे तबभी वे किसीसे कुछ नहीं लेते थे और अपने शरीरकी मेहनतसे तथा ईश्वरकी इच्छासे जो कुछ मिलजाता था उसीपर अपना निर्वाह करते थे. कारण दान लेनेसे पुण्य, तप, धर्म, यश, आयु और ईश्वरकृपाका क्षय होता है. इस बातको वे अच्छी तरह जानतेथे इसीसे वे आजकलके कलियुगी साधुओंकी तरह किसीपर बोझा नहीं डालतेथे. जो मांगना और दान

लेना अच्छा होता तो ऋषिमुनि उससे क्यों इनकार करते ? पुरानी बातों और पुराणोंसे हमको मालूम होता है कि, ब्राह्मणोंका अर्थात् विद्वानों तथा भलोंको दान देनेके लिये राजाओंको बडे २ यत्न करने पडतेथे, अर्थात् वे खानेके पानमें (बीडीमें) दानके गावोंका नाम लिख देतेथे फलोंमें मोहरें छिपाकर देते हैं तात्पर्य यह कि, उनको इस तरहपर छिपाकर दान देना पडताथा जिसमें ब्राह्मणोंको खबर न पडे, क्योंकि खबर पडजानेसे वे लेते नहीं थे. ऐसी २ युक्तियोंसे दान दिया जाताथा तबभी सच्चे भक्त लेनेसे इनकार करदेतेथे.

उत्तम पात्रोंको दान देनेसे क्या लाभ होता है और दान लेनेसे कैसी खराबी होती है सो समझनेके लिये हमको ऐसी बातें पढनी सुननी चाहिये और उनमेंसे यह शिक्षा लेनी चाहिये कि, जैसे बने वैसे अपने गरीब भाई बंधुओंको होनहार विद्वानोंको तथा भक्तोंको यथा-शक्ति सहायता देना यही ईश्वरको सबसे अधिक प्रिय है.

८० भगवान्का वचन है कि लेनेवाला तो हलका है, और देनेवालेका मैंभी दास हूं.

दान माँगना बहुत बुरा और लज्जाका काम है यहांतक कि, श्रीकृष्णभगवान्कोभी बलीराजासे दान माँगनेमें वामन अर्थात छोटासा बनना पडा था. बडोंको माँगना शोभा नहीं देता और माँगै वह बडा नहीं होसकता. माँगतेसमय वामनरूप धरके श्रीभगवान्ने दिखा दिया है कि, माँगना बहुत हलका काम है इतनाही नहीं परंतु दान देनेवाले बलीराजाके द्वारपर द्वारपाल बनके भगवान्ने प्रमाणित कर दिखायाहै कि देनेवालेका मैं दास हूं. इस-लिये दान देनेकी सदा इच्छा करो परंतु लेनेकी कभी मत करो क्योंकि जो लेता है उसे नहीं मिलता, परंतु जो देता है उसीको मिलता है. इससे जो लेना सोभी देनेहीके विचारसे लेना, तो बुरा नहीं है.

८१ हम सारी दुनियांके ऋणी हैं, ऋण न चुकानाही पाप है.

साधन होतेहुएभी दूसरोंको न देना अपनेको ऋणी बनाये रखनेके समान है. साधन होते हुएभी दूसरोंको न देना अपना कर्तव्य पूरा न करनेके बराबर है. साधन होतेहुएभी दूसरोंको उनके उचित स्वत्व न देना ईश्वरका सामना करनेके समान है और साधन होतेहुएभी दान न देना नरक है.

एक महात्माने ईश्वरकी प्रार्थना करनेमें कहा है कि, " हे प्रभु ! हमको अपना ऋण चुकानेका साधन दे जिससे हमको मरते समय उनको देखकर लज्जाके मारे जल्दी आंखें न मूँदनी पडें. "

हम सारी दुनियांके उपकारोंमें डूबेहुए हैं, सारी दुनियांके ऋणी हैं और ईश्वरके ऋणी हैं. ये सब ऋण दान देनेसे छूटसकते हैं दान लेनेसे नहीं. लेनेसे तो ऋण और बढता है. इससे प्रार्थना करो कि, हे भगवन् ! हमको ऋण चुकानेका साधन दे.

१५ छप्पय ।

स्नान दान जप होम सोमव्रत बहुविध कीने ।
तीर्थन पग पग जाय जाय बहु दान जु दीने ॥
जला रु अग्नि ढिग बैठि बहु ध्यान लगायो ।
अन्न रु जलको त्यागि नेह तजि देह सुकायो ॥
कह रामजीवन रामके जिन नाम मुख धारे नहीं ।
तजि स्वामिको संपतिजु चाही सो न मूढ लही कहीं ॥ १ ॥

८२ स्वामीने सेवकको धर्मशाला बनाने भेजा. सेवकने वह धन उडादिया मौज मारनेमें.

एक सेठने बहुतसा धन देकर नौकरको धर्मशाला बनाने और सदाव्रत बाँटनेके लिये काशी भेजा. नौकरने वहाँ जाकर न ते

धर्मशाला बनायी और न सदाव्रत बांटा परंतु उस पैसेसे खूब ऐश आराम करना जारी करदिया और थोडेही समयमें सारा धन उडादिया, सेठने उससे हिसाव माँगा तो वह सटपटाने लगा. अंतमें सेठने उसे पोलिसके सुपुर्द किया. वहांपर उसको खूब तो मार पडी और सपरिश्रम जेलकी सजा भोगनी पडी.

हमको क्या दंड मिलेगा सोभी तुम जानते हो ? सेठने तो उस नौकरको पुलिसके हाथमें दिया था परंतु हमारा ईश्वर हमको यम दूतोंके हाथमें देगा, क्योंकि हमभी परमेश्वरके नौकर हैं और अच्छे २ काम करनेकी प्रतिज्ञा करके यहां आये हैं. परंतु अपनी उस पुरानी प्रतिज्ञापर अब हमही पानी फेरते हैं. हमारी प्रतिज्ञाको हमही तोडते हैं सो क्या नीचता नहीं है ? क्या इसको ईश्वरका अपमान करना नहीं कहसकते ? ईश्वरकी इच्छा अपनी लीला फैलानेकी है. ईश्वरकी इच्छा सृष्टिकी सुंदरता बढानेकी है. ईश्वरकी इच्छा अपने वालकोंको हमारे भाई वंधुओंको प्रसन्न रखनेकी है और हमारा ईश्वरके साथ ठहरावभी यही है, तब विचार तो करो कि, हम उस ठहरावको तोड दें तो कैसे दंड पाये विना बचसकते हैं ? दंडसे बचनेका केवल एकही उपाय है और वह यह है कि ईश्वरकी मायाका सदुपयोग करें अर्थात् मनको शुद्ध रक्खें और दान दें. इस लिये भाइयो ! जो ईश्वरका है उसे ईश्वरके निमित्त खर्च करनेमें हाथ पीछा मत खींचो.

१६ साखी ।

नरतनू पाय खर मत बनै बावरे तूं,सोचिले जीयमाहिं
बुद्धिधारी । गर्भके कौल इकरार सब भूलिगयो,बाहिरें
जातही बुद्धि मारी ॥ रामजीवन कहै जीवनो खोय
मत, लख चौरासी भ्रमत आई बारी । पीछे पछतायगो
खाली, चलिजायगो हतै जमदूत जब दंड मारी ॥ १ ॥

८३ ईमानदारको ईश्वर हरतरह मदद देता है.

पिताने मरतेसमय अपने पुत्रको बुलाकर पूँछा " अपने पैसेका मैं क्या करूं ? "

लडकेने उत्तर दिया " आपकी इच्छा हो सो करो ! "

पिताने पूँछा " वह पैसा तुझे दूं या ईश्वरको दूं "

लडकेने उत्तर दिया " आपका और मेरा भला हो सो करो ! "

यह सुनकर पिताने सारा द्रव्य परमार्थमें देदिया और शांत चित्तसे देह त्याग किया इसके वाद वह लडका गरीबीसे किसी मंदिरमें रहने लगा ईश्वरकी कृपा हुई किसी सेठने उसको अपनी इकलौती कन्या व्याह दी और वहुतसा धन दौलत दहेजमें दिया. इस तरह उस गरीबको थोडेही समयमें पितासेभी अधिक धन प्राप्त होगया.

हमको विश्वास नहीं है, वाकी पूरा भरोसा रखना चाहिये कि ईश्वर अपने भक्तको कभी नहीं छोडता, परमार्थीको किसी न किसी तरहसे मदद देताही है इसलिये ईश्वरके नामपर गरीबोंको देनेमें हिम्मत नहीं हारना.

१७ पद।

हरिजनको हरि नाम बडो धन, हरिजनको हरिनाम।

बिन रखवाले चोर न लूटै, सोवत है सुखधाम॥ बडो धन० १॥

दिनदिन होत सवायो दूनो, घटत न एक छदाम॥ बडो धन० २॥

सूरदास प्रभु सेवा जाको, पारससे कहा काम॥ बडो धन० ३॥

८४ लडकोंको सेठ बनानेके लिये तुम नरकमें मत पडो.

हम एक बडी भूल कर रहे हैं उसेभी जानते हो ? वह भूल यह है कि, अपने लडकोंको सेठ बनानेके लिये हम आप नरकमें पड-नेका काम करते हैं. वह भूल यह है कि, अपने लडकोंको भराहुआ

रखनेके लिये हम खाली हाथ जाते हैं. अपने लडकोंको थोडी देर मौज मारकर पापमें गिरानेके लिये हम अपने पिताके पास धर्म-रहित होकर जाते हैं. अपने लडकोंको मिहनतसे बचानेके लिये हम स्वर्ग छोड देते हैं और अपने लडकोंको थोडी देर भरेहुए रख-नेके लिये हम सदाके लिये खाली रह जाते हैं यह भूल कुछ कम नहीं है. इसका कारण इतनाही है कि, हम ईश्वर पर भरोसा नहीं रखसकते. अपने लडकोंको सेठ बनानेके लिये हम नरकमें जाते हैं इसका कारण इतनाही है कि ईश्वरकी अनंत दया और उसकी सर्वज्ञताको हम नहीं जानते. परंतु हमको समझना चाहिये कि, अपने लडकेवालीभी ईश्वरकीही दयाका फल है और उनका भाग्य उनके साथ रहता है. इतना अवश्य है कि लडकेवालीको रख-डते छोड जानेके लिये हम नहीं कहते हैं, क्योंकि वैसा करना पाप है. संसारके सबही धर्मशास्त्र और महात्मा लोग कहते हैं कि, बच्चोंको पढाओ लिखाओ और सुखी रक्खो परंतु यह कोई नहीं कहते कि, उनको सेठ बनानेके लिये तुम नरकमें पडो ! यह फाँसी तो हमही अपने गलेमें, डालते हैं. इस लिये भाइयो ! लड-कोंको सेठ बनानेके लिये स्वयं तुमको नरकमें न पडना पडे इसका विचार रखना ।

८५ तुम तालाव नहीं खुदवासकते परंतु प्यासेको पानी तो पिलासकते हो.

सच है कि, प्रत्येक मनुष्य कुएं या तालाब नहीं खुदवासकता परंतु विचार करले तो घरपर आये हुए प्यासे मनुष्यको लोटाभर पानी तो पिला सकता है ! हम सडकें और रास्ते नहीं बँधवासकते परंतु किसी भटके हुएको अंगुली उठाकर मार्ग तो बतासकते हैं तथा मार्गमें पडे हुए कंकर पत्थर और कांटे खोबडे तो सरका सकते हैं ! हम सदाव्रत नहीं बांटसकते परंतु किसी भूखेको टुकडा रोटी तो

देसकते हैं! हम धर्मार्थ दवाखाना नहीं खोल सकते परंतु पडोसीको जरूरत पडनेपर सोंठ, मिर्च तो देसकते हैं! हम पाठशालाएं नहीं खोल सकते परंतु उनमें अपने बच्चोंको तो भेजसकते हैं! तथा गरीब विद्यार्थियोंको पुस्तक तथा नकदसे सहायता तो देसकते हैं! हम सदा बीमारोंकी सेवा चाकरी नहीं करसकते परंतु कभी किसी बीमार बुढियाके लिये दवाखानेसे दवा लाकर तो देसकते हैं! हम बडी २ यात्राएं नहीं करसकते परंतु प्रार्थना और दर्शनके लिये देवमंदिरोंमें तो जासकते हैं! हम गाँवभरका अँधेरा दूर नहीं करसकते परंतु औरोंको प्रकाश बतानेके लिये अपने घरके पास दिया तो लगासकते हैं! हम नई पुस्तकोंकी रचना नहीं करसकते परंतु पुरानीको पढ और औरोंको पढा तो सकते हैं! हम दुनियाँको नहीं सुधार सकते परंतु स्वयं हम तो सुधर सकते हैं! हम नई वस्तुका शोध नहीं करसकते परंतु उनका शोध करनेवालोंको किसी न किसी तरहसे मदद तो देसकते हैं! और कुछ नहीं तबभी मनमें अच्छे विचार रखकर हँसी खुशीसे दूसरोंके साथ मीठी जीभसे तो बोल सकते हैं.

ऐसा २ कुछ २ भी बने तो अच्छा है. ईश्वरीय ज्ञानमें आगे बढनेकी येही सीढियां हैं और गरीबसे गरीब आदमीभी इन मार्गोंपर चलसकता है. इसलिये कैसाही छोटा हो परंतु भला काम करो! अच्छे कामोंको कभी छोटा मत समझो! महात्मा लोग कहते हैं कि, छोटे बीजकी ओर नहीं परंतु बडे फलकी ओर दृष्टि देकर ईश्वरके निमित्त भले काम करो! इसका असर वृथा नहीं जाता! भगवान्‌नेभी कहा है:—

> "पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
> न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति॥"
>
> गी० अ० ६. श्लो० ४०.

अर्थ–हे अर्जुन ! अच्छा काम कभी व्यर्थ नहीं जाता. इतनाही नहीं परंतु भला करनेवालोंकी कभी दुर्गति नहीं होती.

इस तरह भगवान् प्रतिज्ञा करता है तब भाइयो ! अच्छे काम करनेमें पीछे मत रहो !

८६ करनी करै सो पिता हमारा.

साधु कहते हैं कि,

करनी करै सो पिता हमारा, कथनी कथै सो नाती ।
रहनी रखै सो गुरु हमारा, हम रहनीके साथी ॥
भैया हम रहनीके साथी ॥

अर्थ–कर्म करै सो हमारा बाप है, निंदा करै सो हमारा नाती है, अर्थात् उसके और हमारे तीन पीढीका अंतर है, और जो रहनी रक्खे अर्थात् कहै वैसेही करै यानी जिसका मन, वचन और कर्म एक हो वह हमारा गुरु है और हम उसीके साथी हैं.

कितनेही मनुष्य अच्छे काम करते हैं परंतु मान, बडाई अथवा कोई दूसरी इच्छासे करते हैं इससे उनका नहीं परंतु जो अंतर्वृत्तिकी प्रेरणा अनुसार आत्माकी शांतिके लिये ब्रह्मार्पण कर्म करते हैं उनकाही कहना और करना एक है और वेही हमारे गुरु हैं, इस वर्तमान समयमें हमारी जीभ तो लंबी होगयी है और हाथ छोटे होगये हैं अर्थात् हमारी जीभ जितनी चलती है हाथ उतने नहीं चलते. बातें तो हम आकाश और पातालकी करते हैं परंतु काम भलाईके नहीं करते. पवित्र होनेके लिये, सृष्टिके नियमानुसार चलनेके लिये और ईश्वरको प्रसन्न करनेके लिये हमको केवल बातें नहीं बनाना परंतु भले २ काम करना चाहिये. पहलेके साधु मौनव्रत लिया करते थें क्योंकि वे जानते थे कि, हमारा कल्याण बातें करनेसे नहीं होगा किंतु भली करणी करनेसे होगा. इसलिये भाइयो ! ‘ साँपके साँप पाहुना (महमान) और

जीभोंकी लपालप ' वाली कहावतके अनुसार केवल जीभ न चलाओ परंतु अपनी जाति और अपना मन सुधारो ? अपने आचरण सुधारो ! और अपने भाई बंधुओंको सुधारने और संसारकी उन्नति करनेका यत्न करो ! इसीका नाम धर्म है और इसीसे परमेश्वर प्रसन्न होताहै. याद रक्खो कि, केवल बडी २ बातें मारना धर्म नहीं है किन्तु प्रपंच है. इसलिये भाइयो ! वातेंही मारनेमें न लगे रहो परंतु कुछ करणी करनाभी सीखो ! सीखो ! ! सीखो ! ! !

पद ।

राम सुमरले सुकृत करले, को जाने कलकी ।
को जाने कलकी रे, खबर नहीं या जुगमें पलकी ॥ टेक ॥
कौडी कौडी माया जोडी, कर बातें छलकी ।
शिरपर तेरे पाप गठडियां, किसविध होय हलकी ॥
किसविध होय हलकी रे, खबर नहीं० ॥ राम सुम० ॥ १ ॥
तारामंडल और रवि चंदा, और चराचरकी ।
चार दिनोंकी चमक तारमां, विजलियां चमकी ॥
बीजलियां चमकी रे, खबर नहीं० ॥ राम सुमर० ॥ २ ॥
भाईबंध अरु कुटुम कबीला, महोबत मतलबकी ।
दया धरम कर साहब सुमरो, बिनती नानककी ॥
विनती नानककी रे, खबर नहीं० ॥ राम सुम० ॥ ३ ॥

८७ जिन्दगी विजलीकीसी चमक है उसमें मोती पिरोलेनाही सचेत होना है.

भाइयो ! हम कहते हैं कि, ' फिर करेंगे ' ' आगे देखा जायगा ' ' अभी क्या समय निकल गया है ? ' ' आज नहीं कल करलेंगे. ' परंतु नहीं नहीं, ऐसा मत करो ! अच्छा काम करनेमें,

परमेश्वरका स्मरण करनेमें और भगवान्की सेवा करनेमें ऐसा मत करो ! हम लोग कहते हैं कि, ' अजी ! अभी तो हम बालक हैं ' ' अभी तो हम जवान हैं ' तथा ' अभी तो हमको बहुत बरस निकालने हैं, ' परंतु नहीं नहीं, ऐसा मत समझो ! शास्त्र कहते हैं कि, देह क्षणभंगुर है. महात्मा कहते हैं कि जिंदगी बिजलीकी चमककी तरह अस्थिर और क्षणिक है. इसमें ईश्वरको पहँचानलेना बिजलीकी चमकमें मोती पिरोलेनेके समान है. बिजलीकी चमकको बंद होते देर नहीं लगती उतनेसे समयमें जो मोती न पिरोये गये तो योंही रहजाते हैं. इसी तरह जिंदगी खतम होनेमेंभी देर नहीं लगती. जबतक जिंदगी है तबतक सार्थकता करलो, मरे पीछे कुछभी नहीं हो सकैगा, इसीलिये धर्मगुरु वारंवार कहते हैं कि; समय थोडा है और करना बहुत है. जल्दी चेतो ! जल्दी चेतो !! नहीं तो पछताओगे ! ! !

चेतनेसे पृथ्वीको हिलाडालनेका प्रयोजन नहीं है, चेतनेसे आकाशमेंसे तारे पकडलानेका प्रयोजन नहीं है, चेतनेसे समुद्रमें चढाव उतार न होने देनेका प्रयोजन नहीं है, चेतनेसे बरसातकी बूँदें गिननेका प्रयोजन नहीं है, चेतनेसे तोपके गोलोंके सामने जानेका प्रयोजन नहीं है और चेतनेसे घरबार स्त्री पुत्रादिकको छोडकर जंगलमें जा डेरा जमानेका प्रयोजन नहीं है. किंतु चेतनेका अर्थ है कि, परमेश्वरके शरण जाओ ! परमेश्वरके नामपर सत्कर्म करो ! परमेश्वरके नामपर मनको वशमें करना सीखकर अंतःकरणके पापोंको घटाओ ! और सदा सर्वदा परमेश्वरकी भक्ति और सेवामें लगे रहो; कारण जिंदगी बिजलीकी चमककी तरह क्षणिक है. इस चमकमें मोती पिरो लेना अर्थात् परमेश्वरको पहँचान लेनाही चेतना है.

लावनी—सभी जान जगत् व्यवहार, रैनका सपना ।
तुम क्यों कहते हो यार, भूलकर अपना ॥ टेक ॥

निज मात तात दारा, भगिनी सुत भ्राता।
ये सभी सवारथ जान, परस्पर नाता॥ सभी जान०॥१॥
इक राम भजन बिन, और नहीं निस्तारा।
गुरु ज्ञान गहो तुम, उतरो भवजल पारा॥ सभी जान०॥२॥
शिर काल अचानक, खबर नहीं इक पलकी।
क्या करते हो अभिमान, आश नहीं कलकी॥ सभी०॥३॥

८८ चार हजार पुस्तकोंमेंसे जरूरतकी चार बातें मिलीं उनमेंभी दो याद रखनेकी और दो भूलजानेकी.

धर्मका तत्त्व कितना बडा है और तबभी वह कैसे छोटेसे रूपमें आसकताहै सो समझानेके लिये एक अनुभवी फिलासोफर (तत्त्ववेत्ता) ने कहाहै, कि बडे परिश्रमके साथ बडा काल लगाकर मैं चार हजार पुस्तकें पढा. उन चार हजार पुस्तकोंमेंसे मुझे सच्चे कामके योग्य चार बातें मिलीं उन चार बातोंमेंसेभी दो तो याद रखनेकी और दो भूलजाने योग्य थीं. (१) ईश्वर और (२) मृत्यु ये दो बातें याद रखनेकी और सदैव स्मरण रखनेका हैं और (१) एक हमने दूसरेपर उपकार किया हो वह और (२) दूसरोंने हमारा बुरा किया है वह, ये दो बातें भूल जानेयोग्य हैं.

ईश्वरका याद करनेसे हम ईश्वरीय आनंदमें साझी होसकते हैं और मृत्युको याद रखनेसे हमारे मनमें मंद वैराग्य बनारहताहै, जिससे आसक्ति कम होतीजाती है, औरोंपर कियाहुआ उपकार भूलजानेसे हमारा अहंभाव छूटजाताहै जिससे वह उपकार ब्रह्मार्पण होजाताहै और हम पर दूसरोंके द्वारा कियेहुए अपकारोंको भूलजानेसे क्रोध छूटजाता और समदृष्टि आती जाती है जिससे हम प्रभुमय होसकते हैं. तात्पर्य यह कि, याद रखने योग्य भक्ति

है और भूलजाने योग्य कियाहुआ परमार्थ है सब धर्मोंका सार यही है, इससे भक्ति और परमार्थको अपने जीवनका तत्त्व बनाओ!

८९ कडवी तूँबीको कितनीही यात्रा कराओ परंतु भीतरसे धोये विना मीठी नहीं होती वैसेही अंतःकरण धोये विना ऊपरी आडंबरसे पाप नहीं धुलते.

ऋषियोंने बहुत अच्छी तरह समझादिया है कि, धर्मका तत्त्व भक्ति और परमार्थ है और भक्ति तथा परमार्थ हृदयकी सरलतासे तथा हृदयकी पवित्रतासे बने तबही कामके हैं, मनकी मलिनता जबतक न धोई जाय तबतक बाहरी चाहे जितने कर्म करनेसेभी हम पवित्र नहीं होसकते. लंबे २ तिलक, बडी २ छापें, सुंदर मालाएँ और बहुतसी कंठियां धारण करने और अनेक बार नहाने या औरोंका स्पर्श होनेसे छूत माननेसे ही हम पवित्र नहीं हो सकते किंतु हृदयकी सरलतासे पवित्र हो सकते हैं. यहां पर एक पुराना दृष्टांत है:—

दो भाई थे. जिनमें छोटा बहुत खटपटी और धामधूम करनेवाला था. वह छोटी २ बातोंमें आसक्त रहता और बातबातमें क्रोध करता, जरा जरासी बातमें उसको मान अपमानका विचार पडता और थोडी देरभी वह अपनी वृत्तियोंको शांत नहीं रखसकताथा. वह बहुतसी उपाधियाँ अपने शिर लेलेता और बहुतसे प्रपंच करके खूब धन कमाताथा. मान और कीर्ति पानेकी उसको बडी लालसा थी इससे अपनी जातिमें नाम पानेके लिये वह यात्रा करने चला, जाते समय उसने बडे भाईसे भी चलनेको कहा तब शांतवृत्ति और सरल चित्तवाले बडे भाईने कहा " मुझको तो यहीं यात्रा है. जहां ईश्वरका नाम लिया जाय वही तीर्थ है, मैं तेरे साथ इस समय नहीं चल सकता परंतु मेरी एक तूंबी है उसे साथ लेजा और सब यात्रा कराला. जहाँ २

तुम लोग स्नान पान करो वहां २ इसेभी स्नान पान कराना. ”

छोटा भाई उस तूंबीको साथ लेगया और उसे अपने साथ अच्छी तरह यात्रा कराने लगा.

चार छः महीनेमें यात्रा पूरी करके जब वह लौटा तो बडे भाईने उसे अपने यहां निमंत्रण दिया और दोनों भाई भोजनके लिये बैठे. बडे भाईने वह यात्रावाली तूंबी ऊपरसे मुँह काटकर भीतरसे विना धोयेही पानी भरके छोटे भाईके पास धरदी और भोजन करते २ पूँछा “ क्यों भाई ! इस तूंबीको सारी यात्रा करालाये ? ”

उसने जवाब दिया “ हां भाई ! अच्छी तरहसे यात्रा करायी है. कोईभी स्थान खाली नहीं छोडा गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, पुष्कर, प्रयाग, सरस्वती, त्रिवेणी आदि सबही स्थानोंमें इसे स्नान करायाहै. ”

बातें करते २ उसे प्यास लगी. उसने उसी पास धरी हुई तूंबीसे पानी पिया परंतु वह इतना कडवा था कि, पिया नहीं गया. पानीको थूंककर उसने कहा “ भाई ! यह क्या ? इतना कडवा पानी कैसा ? ”

बडे भाईने कहा “ यह क्या ? यह तो नई बात है ! क्या पानी कडवा है ? भाई यह तो वही तूंबी है जिसे तू अडसठ तीर्थ करालायाहै ! क्या अबभी इसमें कडवापन रहगया ? मालूम होता है कि, तूने इसको अच्छी तरह यात्रा नहीं कराई ! ”

छोटे भाईने कहा “ भाई ! हमने यात्रा तो उसको सब कराई है और स्नानभी इसको सबही तीर्थोंमें कराया है परंतु वह स्नान तो ऊपरसे कराया है कुछ भीतरसे तो धोयाही नहीं है ! तब ऊपरके धोनेसे भीतरका कडवापन कैसे जासकताहै ? ”

तब बडा भाई बोला “ भाई ! तुम यात्रा तो कर आये परंतु मेरी तूंबीकी तरह बाहरहीसे यात्रा की है. या कुछ भीतरसेभी ? ”

यह सुनकर छोटा भाई लज्जित होगया. उसको विश्वास होगया

कि, व्यावहारिक प्रपंचोंमें होशियार होना संसारसागरको पैरनेका उपाय नहीं है. इससे भीतरके विकार अर्थात् मनका कडवापन थोडाही जाताहै ! वह कडवापन तो हृदयकी सरलतासे, हृदयकी पवित्रता-सेही दूर होता है. इससे ऊपरी ढोंगोंको छोडकर हृदयकी सरलता रखना सीखो ! ईश्वरको सरलताही प्रिय है, प्रपंच नहीं ! आजकल लोग सरलताको भोलापन (सादगी) कहते हैं परंतु याद रखो ईश्व-रको भोलापनही पसंद है. इसलिये भाइयो ! बाहरी आडंबर और प्रपंचहीमें न पडेरहो किंतु अंतःकरणकी भी कुछ शुद्धि करो !

गजल ।

जिसने आपको देखा नहीं, मन मैलको धोया नहीं ।
दिल दागको खोया नहीं, असनान किया तो क्याहुआ॥ जि० ॥
कुत्ता हुआ धन मालका, धंधा किया जंजालका ।
हिरदा भया चंडालका, काशी गया तो क्या हुआ ॥ जिस० ॥

९० यजमान अपने समयपर पुरोहितको देता है वैसेही ईश्वर अपने समयपर हमको देगा. फिर फलकी उतावल क्यों ?

भक्तिका फल पानेके लिये तुम जल्दबाजी क्यों करते हो ? तुम्हारी जल्दबाजीसे कुछ काम नहीं होगा, क्योंकि ईश्वर अपने सम-यपर देगा. हमारी इच्छाके अनुसार तुरंत देदेनेको वह बंधाहुआ तो हैही नहीं ! ब्राह्मण या पुरोहित यजमानके घर मांगने जाता है तब यजमान उसे अपने समयसे देता है. वैसेही ईश्वरभी हमको योग्य समय आनेपर अवश्य देगा. उसमें हठ या जल्दबाजी करना ठीक नहीं है. भक्तिका इनाम हम ईश्वरसे जबरदस्ती हठकरके नहीं लेसकते किन्तु उसकी कृपासे लेसकते हैं. हम हठयोगी नहीं हैं परंतु कृपा-

भिलाषी हैं. प्रत्येक भक्तको यह वात भलीभाँति समझ रखना चाहिये.

९१ घरकी छत गिरने लगै तव कौनसी वस्तु गिरैगी और कौनसी बचैगी सो नहीं कहा जासकता. इसी तरह देशमें जव आपत्तियां पडती हों तव अधिक भक्ति करना चाहिये.

सदा ईश्वरकी भक्ति करना हमारा कर्तव्य है जिसमेंभी देशमें जव आपत्तियां पडती हों तव तो प्रत्येक मनुष्यका भक्ति करना औरभी अधिक कर्तव्य होता है, कारण जव घरकी छत गिरने लगती है तव नहीं कहाजासकता कि, ऊपरकी नीचेकी और आसपासकी कौनसी वस्तुएँ गिरकर टूटजायँगी और कौन २ सी वचजायँगी ? वैसेही देशमें रोगकी, अकालकी, लडाईकी और गरीवी आदिकी आपत्तियां पडरहीहों तव वहभी घरकी छत टूटनेकेही समान है. ऐसे समयमें इस वातका क्या विश्वास कि हम सपाटेमें नहीं आयंगे. इसलिये भाइयो ! ऐसे आपत्तिके समयमें तो अवश्यही ईश्वरभजन करना चाहिये, कारण भक्तिमें संतोष है और समर्थ ईश्वरके नाममें आपत्ति टालनेका वल है. इससे सव लोगोंको सच्चे दिलसे परमेश्वरकी प्रार्थना करना चाहिये और परस्पर सहायक होना चाहिये.

९२ जहाजपर तूफान आता है तव सामान पानीमें फैंककरभी प्राण बचाये जाते हैं, वैसेही जंजालोंको फैंककर तत्त्वको पहँचानो.

जव जहाजपर तूफान आता है तव सारा सामान पानीमें फैंककरभी प्राणकी रक्षा करते हैं. वैसेही हमको कालरूप तूफान लगाहुआ है इससे भोनरी अच्छे लगनेवाले पाप और व्यावहारिक जंजालरूप सामानको

बाहर फैंक प्रभुमें लीन हो आत्माको बचालेना चाहिये. तूफानके समयमेंभी जो सामानका लोभ किया जाय तो जहाज नहीं बचसकता. वैसेही प्रीतिपूर्वक हृदयमें रक्खे हुए पापोंको दूर न फैंके तो हम पार नहीं लगैं और संसारसागरमें डूबकर जन्ममरणके चक्रमें पिसा करें. जो इन जंजालों और पापोंको फैंक न दें तो हम अनंत जीवनमें नहीं जा सकते. इस लिये माल असबावसे जीवनको अधिक मूल्यवान् समझकर पापको दूर फैंक दो और अनंतजीवनको पसंद करो !

९३ जिसके घरमें आग लगती है वह सामान बाहर फैंक देता है, वैसेही जिस भक्तके अंतःकरणमें परमेश्वरके नामकी आग लगती है वह वासनाओंको छोडदेता है.

तुम जानते हो, जिसके घरमें आग लगती है वह घरका मालिक अपना सारा सामान घरसे बाहर फैंक देता है. वैसेही जिसके हृदयमें भक्तिका उदय होता है. तिसके हृदयमें ईश्वरके नामकी रटना लगजाती है, वहभी अपने दिलमेंसे सर्व चीजोंको निकाल फैंकता है और न तो अपने मनमें कोई चीज रखता है न घरमें रखता है, क्योंकि प्रभुके नामरूप ज्योति आग समान है जो सब निर्जीव वस्तुओंको जला देती है. इसलिये सच्चा भक्त वही है जो अपने मनमें भरीहुई दूसरी निकम्मी बातोंको अर्थात् मायाको बाहर फैंककर आत्मिक ज्योतिके अखंड शांत प्रकाशका अनुभव लेता है. इस आत्मिक ज्योतिका अनुभव करना और इस अखंड शांतिमें रहनाही जीवनकी सफलता है.

९४ भक्तिमें हठ और अभिमान नहीं करना, अभिमान छोडा कि स्वर्ग तुम्हाराही है.

एक साधु था. वह बहुत तप करता था, बहुत नियम पालता था और योगकी बहुत कठिन २ क्रियाएँ करता था परंतु सब

अहंभावसे करता था. " मैं करता हूं " " मैं बहुत करता हूं " " मैं अपने लिये करताहूं " "मुझजैसा करनेवाला दूसरा कौन है ? " ऐसे २ विचार उसके मनमें रहा करते थे, इस तरहपर कई वर्ष निकल गये.

एक दिन नारदमुनि वहाँ आ निकले. उस साधुने उनसे पूँछा " महाराज ! कहां जाते हो ? "

नारदजीने उत्तर दिया " भगवान्‌के पास ! "

साधुने कहा " महाराज ! भगवान्‌से पूँछते आना कि मेरा उद्धार कब होगा ? मैंने बहुत तप किया है और बहुतवर्षसे मैं इस वनमें रहता हूं अब तो उद्धार होना चाहिये. "

नारदजीने जवाबमें कहा " अच्छा ! मैं पूँछता आऊंगा, "

इतना कहकर नारदजी चले गये. जब वे वैकुंठमें पहुँचे तो भगवान्‌से बोले " महाराज ! वनमें एक साधु कई वर्षसे तप कर रहा है. उसने पूछाया है कि, मेरा उद्धार कब होगा. "

भगवान्‌ने कहा " भक्तोंके नामकी वह पुस्तक धरी है. उसे देख लो. "

नारदजीने वह पुस्तक देखी परंतु उसमें उस साधुका कहीं नाम न मिला तब उन्होंने भगवान्‌से कहा " महाराज ! आपके यहांभी बडी पोल जानपडती है ? ऐसे बडे तपस्वीका अपनी पुस्तकमें नामही नहीं है ! ऐसी बडी भूल ! "

भगवान्‌ने जवाब दिया " जो अहंकारसे भक्ति करता है उसका नाम मेरी पुस्तकमें नहीं लिखाजाता. "

यह सुनकर नारदजी वहाँसे चलदिये और उस साधुके पास पहुँचे, साधुने पूँछा " महाराज ! कहिये मेरा नंबर कब आवैगा ? "

नारदजीने जवाब दिया " भाई ! भगवान्‌के यहांकी भक्तोंके नामकी पुस्तकमें तुम्हारा तो नामही नहीं है ! "

साधुने चकित होकर कहा " महाराज ! यह कैसे बनसक-

ताहै ? मुझजैसे तपस्वी और पुराने भक्तका नामही भगवान्के यहां नहीं है ? "

नारदजीने कहा " हो ऐसाही है ! मैंने अच्छी तरहसे पुस्तक देखी है परंतु उसमें तुम्हारा नाम नहीं है. "

साधुने पूँछा " महाराज ! तो इस अंधेरका कारण क्या ? "

नारदजीने उत्तर दिया " भाई ! तुम भक्ति अहंकारके साथ करते हो और भगवान् कहते हैं कि, मेरी पुस्तकमें अहंकारीका नाम नहीं लिखाजाता. "

साधुने अपनी भूल स्वीकार करके कहा " महाराज ! वात तो सत्य है. मुझमें अहंकार अवश्य है. परंतु अवसे मैं वैसा नहीं करूंगा. "

इधर ये वातें होरहीथीं इतनेहीमें एक विमान आकर खडा हुआ विमानवालेसे पूँछनेपर उत्तर मिला कि "मैं इस साधुको लेने आयाहूं."

नारदजीने कहा " यह वात क्या है ? अभी हालहीतो मैं भगवान्के पाससे चला आताहूं. वहां तो इसका नामही पुस्तकमें नहीं निकला ! फिर इतनीसी देरमें विमान कहांसे आगया ? "

विमानवालेने उत्तर दिया "हालहीमें इसका अहंकार दूर हुआ और हालही विमान आगया. "

मनुष्य अपना अहंकार छोडताहै उसी समय परमेश्वर उसको अपनालेताहै. ईश्वरकी कृपा जव चाहिये तवही तैयार रहती है, उसको तो केवल लेनेकी देर है. हम हमारा अपनापन छोडदें और प्रभुमय हो जायँ तव स्वर्ग कुछ दूर नहीं है. निश्चय समझो कि, देर हमारीही है ! परमेश्वरकी देर नहीं है.

९५ अनर्थका अर्थ साधुसमागम गुरु गडरियेकी वात.

एक बूढा गडरिया था. किसीने उससे कहा कि "तू इतना वडा होगया परंतु अबतक तूने कोई गुरु नहीं किया सो ठीक नहीं.

किसीको गुरु बना तो ठीक है तेरा कल्याण होगा, नहीं तो योंका योंही चला जायगा. "

गडरिया था तो मूर्ख और जंगली परंतु साथहीमें आस्तिकभी था उसका कहना उसको पसंद आया और उसी दिनसे वह गुरु बनानेके विचारमें लगा. अकस्मात् उसको एक महात्मा साधु मिलगये. वह उनके पैरोंमें गिरगया और बोला " महाराज! मुझको गुरु बनाओ! "

साधुने कहा " बचा गुरु नहीं! चेला बन! चेला!! "

गडरियेने कहा " नहीं महाराज! मैं तो गुरुही बनूंगा! मुझसे एक मित्रने कहा है कि ' तू गुरु बना तो तेरा कल्याण होगा! ' इससे महाराज! मुझे तो गुरुही बनाओ चेला नहीं! "

साधुने मनमें सोचा कि यह मूर्ख है. इससे उसका आग्रह देखकर वह बोला " अच्छा भाई! आजसे तू मेरा गुरु! परंतु इतना याद रखना कि किसीसे बोलना मत और सदा चुपचाप मनका मनमें ' राम राम ' जपता रहना! "

गडरियेने वैसाही किया, किसीसेभी बोलना चालना बंद कर दिया और ' रामराम ' का मानसिक जाप जारी कर दिया.

होते होते कई मास निकल गये. फिरते २ एक दिन साधुने एक नगरके बाहर नदीके किनारेपर आसन जमाया और वहींपर अपनी धूनी डालदी. नगर बडा था और वहांके रहनेवालेभी श्रद्धावान् थे. शनैः २ साधुके पास लोग आने लगे और एक बडा जमाव जमने लगा. महाराजकी प्रशंसा नगरभरमें फैलगयी. यहांतक कि, वहांका राजाभी एक दिन साधुके दर्शन करनेको वहाँपर आया. बातें करते २ राजाकी दृष्टि उस बूढे गडरियेपर पडी उसने पूँछा " महाराज! ये कौन है? "

साधुने कहा " बाबा! ये मेरे गुरु हैं! परंतु अब कितनेही

समयसे इन्होंने मौन व्रत धारण कररक्खाहै. किसीसे बोलते चालते नहीं हैं. "

इधर ये बातें होतीथीं उसी समय वहां होकर एक बकरियोंका झुंड निकला झुंडको देखतेही गडरिये गुरुकी बकरियां हांकनेकी अपनी पहली बात याद आगयी और उसके मुंहसे निकलगया " तर्र ! तर्र ! तर्र ! तर्र ! "

' तर्र तर्र ' सुनतेही राजाको बडा आश्चर्य हुआ उसने पूँछा ' महाराज ! आप कहते थे कि मेरे गुरुने मौनव्रत धारण कर रक्खा है परंतु ये तो गडरियेकी तरह ' तर्र तर्र ' करते हैं. "

साधुने कहा " बाबा ! तुझपर गुरुमहाराजकी बहुत बडी कृपा हुई है इसीसे उन्होंने अपना व्रततक छोड दिया है, तू उनके कहनेमें समझा नहीं. उनका कहना यह है कि ' तर्र तर्र ' अर्थात् " संसारसागरसे तर ! तर ! तरनेका यत्न कर. "

साधुका कहना राजापर असर करगया, गुरु गडरियेके पैरोंमें बहुत कुछ भेंट करके राजाने साष्टांग प्रणाम किया और उसी दिनसे अच्छे २ कार्य करना आरंभ करदिया.

राजाके जानेबाद साधुने गडरिया गुरुसे " कहा भले आदमी ! यह तूने क्या किया ? तूने तो मेरी बातही बिगाडी थी ! खैर ! अबसे ऐसा मत करना किसीसे बोला चाला मत कर और मनही मनमें " राम राम जपकर. "

उस दिनके उपदेशका ऐसा फल हुआ कि थोडेही समयमें गडरिया वास्तविक गुरु बननेके योग्य होगया.

संतसमागमका यही माहात्म्य है इससे प्रत्येक मनुष्यको संत महात्माओंका समागम अवश्य करना चाहिये. संत समागमसे मनुष्य भवसागर पार उतर सकताहै,

९६ पापको मनमें रखनेसे शांति नहीं मिलती.

हम सबको सुख अच्छा लगता है और सुखहीके लिये हम

सब फटफटाया करते हैं, परंतु कवभी सचा सुख तो हमको मिलताही नहीं है, क्योंकि सुख मिलता है धर्मसे और धर्मको हम जानते नहीं हैं, कारण हमारा हृदय तो पापसे भरा है. धर्म और पाप प्रकाश तथा अँधेरेके समान हैं ये दोनों साथ २ नहीं रहसकते. इसलिये जवतक थोडासाभी पाप हो तवतक हमको सचा सुख नहीं मिलसकता. क्योंकि पाप हृदयके मर्मस्थानमें एक वडा घाव है. हृदयके मर्मस्थानमें एक वडा घाव होनेसे शांति कैसे मिलसकतीहै ? कहाहै कि !

साधुओंकी एक मंडली थी. उसमेंके साधु वहुत शांतिसे रहतेथे और और लोगोंको अपनी मंडलीमें मिलनेका उपदेश किया करतेथे. एक भला मनुष्य उनमें मिलगया और उनके साथ रहने लगा थोडे दिन वाद वह उस मंडलीके वडे साधुके पास जाकर वोला " महाराज ! मैं आपकी मंडलीमें मिलगया परंतु तवभी मुझे आपजैसा आनंद नहीं मिलता. "

साधुने उत्तर दिया " वचा ! अभी तुझमें कोई पाप होगा ! "

उसने कहा " महाराज ! कई वर्ष पहले मैंने अपने स्वामीकी चोरी की थी परंतु वह उस वातको नहीं जानता. "

साधुने कहा " वचा ! तो वह पैसा जिसका उसको देदै ! अव तू उसका क्या करैगा ? "

दूसरेही दिन उस मनुष्यने चोरीके दस हजार रुपयोंके नोट विना अपना नाम पता लिखे सेठके नामपर भेजदिये. इसके थोडे दिन वाद फिर वह मनुष्य उसी साधुके पास जाकर वोला " महाराज ! मैंने चोरीका पैसा पीछा भेजदिया तवभी मुझको आप जितना आनंद नहीं मिलता. "

साधुने कहा " रुपये भेजनेमें तूने अपना नाम प्रकाशित नहीं किया होगा. क्षमा नहीं मांगी होगी' इसीसे आनन्द नहीं मिलता. "

उस मनुष्यने जवाव दिया " महाराज ! यह कैसे वनसकता है ?

वह तो मुझे ईमानदार समझता है और मैं अपना चोरी करना स्वीकार करलूं तो मेरी प्रतिष्ठा बिगडजाय. "

साधुने कहा " बच्चा ! जो सच्चा आनंदही लेना है तो अपने पापकी क्षमा मांग ! पापकी क्षमा मांगे विना सच्चा आनंद नहीं मिलसकता. चल मेरे साथ ! मैं तुझे क्षमा करादूं ! थोडीसी लज्जाके लिये क्या तू सदाके लिये अपने हृजयमें शूल गडारहने देता है ? दुनियांकी थोडीसी शरमके लिये क्या तू ईश्वरीय आनंदको छोड-देगा ? थोडीसी देरकी लज्जाके लिये क्या तू नरकमें जायगा ? नहीं भाई ऐसा मत कर ! पापको हृदयमें भरा मत रख ! पापको रखकर कौन सुखी हुआ है ? ईश्वर बडा या शरम ? बेटा ! ईश्वरके लिये लज्जा छोडदे और क्षमा माँगले ! "

अंतमें वह मनुष्य उस साधुके साथ अपने पुराने स्वामीके यहाँ गया. साधुने सेठसे पूँछा " दो महीने हुए दस हजार रुपयेके नोट आपके पास पहुँचे ? "

सेठने जवाब दिया " हां ! रुपये दस हजार मुझको मिले परंतु मैं यह नहीं जानता कि रुपये किसने और किस कामके लिये भेजे हैं ? "

साधुने कहा " वे रुपये तुम्हारेही हैं. इस तुम्हारे पुराने मुनीमने वे रुपये तुम्हारीही कोठीपरसे कई वर्ष पहले चुरायेथे. अब यह हमारी भक्तमंडलीमें मिलगया है और पाप छोडकर धर्मका आनंद लेना चाहता है परंतु जबतक आपसे इसे क्षमा न मिलैगी तबतक इसके पाप दूर नहीं हो सकते और धर्मका आनंद नहीं मिलसकता. इसलिये आप कृपा करके इसे क्षमापत्र देदीजिये. "

सेठने चकित होकर कहा " मैं तो अबतक इस मुनीमको ईमानदारही समझता हूं. मैं नहीं जानता कि इसने यह चोरी कब की "

साधुने कहा " बाबा ! मनुष्य अपना पाप दुनियासे छिपा

सकताहै परंतु अपने मनसे कैसे छिपासकता है ? ईश्वरके आगे तो पाप छिप नहीं सकते ! हृदयमें पाप भरा हो तब आनंद क्योंकर मिलसके ? इसको आनंद प्राप्त करना है इससे आपकी क्षमाकी आवश्यकता है.

सेठने कहा " अच्छा तो मैं विचारकरके चार महीने पीछे क्षमापत्र लिखदूंगा. "

चार महीने पूरे होजानेपर वह मनुष्य और साधु दोनों उस सेठके पास फिर गये. सेठ उनको एक नये सुंदर मकानमें लेगया और बोला " यह मेरा क्षमापत्र है ! यह मकान आपके आनंदके लिये है ! ईश्वरीय आनंद पानेके लिये जो आपने पापकी क्षमा मांगता है और चुराये हुए दस हजार रुपये पीछे देता है उन रुपयोंको अपनी संदूकमें रखदेनेसे मुझेभी क्या आनंद मिलैगा ? इसलिये उन दस हजार रुपयोंमें बीस हजार रुपये दूसरे मिलाकर तीस हजारका यह मकान बना आपकी मंडलीके ईश्वरीय आनंद करनेके लिये मैं भेंट करताहूं. "

सच्चा आनंद प्राप्त करनेके लिये तो इस तरहपर निष्पाप होना चाहिये. पापको हृदयमें भरके कोईभी मनुष्य सच्चा आनंद और सच्ची शांति नहीं पासकता. इसलिये पापका पश्चात्ताप करो और जो भूलें होगई हैं उनको सुधारो ! यही आनंद प्राप्त करनेका सच्चा उपाय है.

१७ कस्तूरीके लिये हिरन झाडी २ में और पत्ते २ में ढूंढता फिरता है परंतु यह नहीं जानता कि, कस्तूरी तो मुझमेंही है, वैसेही ईश्वर हमारेही हृदयमें स्थित है परंतु हम उसे पहँचानते नहीं हैं.

कस्तूरी हिरनकी नाभीमेंही भरीहुई है, परंतु हिरनको उसकी

खबर नहीं है इससे अपनेही शरीरमें स्थित कस्तूरीकी गंधसे मोहित होकर वह उसकी खोजमें पहाड और जंगलमें फिरा करता है तबभी वह उसे नहीं मिलती. वैसेही हमभी अपने हृदयमें स्थित परमेश्वरको भूल जाते हैं और बाहरी स्थानों और बाहरी क्रियाओंमें ईश्वरको ढूंढते हैं तब वह क्यों कर मिलैं ? कारण कस्तूरी पहाडोंकी शिखरोंमें और झाडियोंकी जडोंमें नहीं होती किंतु ढूंढनेवाले उस हिरनहीकी नाभीमें होती है. वैसेही ईश्वरभी हमारेही हृदयमें स्थित है. जो आंतरवृत्ति हमारी साफ हो, सरल हो, विश्वास हो, सत्संग हो और ईश्वरके नामका स्मरण हो तो हमको ईश्वरको ढूँढनेके लिये दूर जानेकी जरूरत नहीं है. ईश्वर हृदयका धन है बाहरी वस्तु नहीं है. उसे केवल नहाने धोने और तिलक छापेमेंही न ढूँढे किंतु सदाचार और शुद्ध अंतःकरणसे अपनेही हृदयमें ढूँढो !

९८ लुटेरोंकी नजर राजा नहीं लेते वैसेही पापसे भरे हुए हृदयसे ईश्वर प्रसन्न नहीं होता.

किसी एक राजाके पुत्र उत्पन्न हुआ तो सरदार उमराव और सेठ साहूकार लोग राजाको नजर देनेगये । कितनेही लुटेरे और लुचे लफंगेभी नजर लेकर गये. तब राजाने कहा कि, तुम्हारी नजर हम नहीं लेंगे. बदमाशोंने कहा " महाराज ! हम आपकी प्रजा हैं. हमभी आपकी खुशीमें खुश होते हैं. इससे हमारीभी नजर स्वीकार कीजिये. "

राजाने जवाब दिया " तुम लोग बदमाशी करते हो सो बंद करो, मेरी प्रजाको लूटते हो सो बंद करो, मेरे कर्मचारियोंको कष्ट देते हो सो बंद करो और मेरे विरुद्ध चलते हो सो बंद करो. इन सब बातोंको छोडकर नजर करो तो मैं लेसकताहूं. शत्रु बनकर नजर करते हो सो कैसे लिया जाय ? तुम्हारी इस नजरसे

मैं तुमपर खुश नहीं होसकता और जबतक तुम लूट करना न छोड दो तबतक तुम्हारी मेरी मित्रता नहीं हो सकती. जो मुझे खुश करना चाहो तो तुम मेरी इच्छाके अधीन होकर चलो. मेरी इच्छाके अधीन हुए विना मैं तुम्हारी नजर नहीं लेसकता. "

हमभी उन लुटेरोंकीही तरह हैं. हम ईश्वरके विरुद्ध चलते हैं, ईश्वरके बाल बच्चों अर्थात् अपने भाई बंधुओंको ठगते लूटते हैं, मनमें बडे २ विकार उत्पन्न करते हैं, ईश्वरके विरोधी अर्थात् काम और क्रोध आदिको शरण देते हैं और रातदिन बुरे कामोंमें लगे रहते हैं और बार पर्वणी तथा उत्सवपर ईश्वरके नजर करते हैं अर्थात् कुछ साधारणसा दान धर्म करते हैं सोभी केवल ईश्वरके निमित्त नहीं किंतु अपने अहंकार और लोकलज्जाके लिये. इसीसे परमेश्वर उसे स्वीकार नहीं करता. ईश्वर कहता है कि, तुम सुधरकर अर्थात् मेरी आज्ञामें रहकर मुझे नजर करो. मुझको नजरकीभी जरूरत नहीं है. तुम तो केवल अपने शस्त्र अर्थात् पापोंको छोडकर मेरी शरणमें आजाओ ! बस फिर तुम मेरे हो और मैं तुम्हारा हूं.

१८ पद ।

प्रभुजी साचा मनके संगी, जाकी लीला प्रेमसो रंगी ॥ टेक ॥
ध्रुवने धरनि खड्यो हो सुमिर्‌यो, मूरति देखी त्रिभंगी ॥ १ ॥
प्रह्लादहु पण पूरि निबाह्यो, हिरनाकुश हत्यो कुसंगी ॥ २ ॥
ग्राह ग्रस्यो गजराज उबार्‌यो, गरुडहु छांड्यो संगी ॥ ३ ॥
रामजीवन प्रभु कैसैं बन है, यहँ तो प्रेमकी तंगी ॥ ४ ॥

९९ डूबते आदमीको बचानेके लिये नदीमें फैंकाहुआ भाला.

किसी नदीके चढावमें कितनेही आदमी बहते जारहेथे. यह देखकर उनको बचानेके लिये किनारेपरसे राजाने अपना भाला नदीमें बढाया जिन्होंने उस भालेको पकडलिया वे बचगये और जिन्होंने

भालेका फल चुभजानेके भयसे उसे न पकडा वे वहगये. इसी तरह हमारे धर्मगुरुओंको समझना चाहिये. धर्मगुरु हैं वे वह राजा हैं और उनका धर्म है सो भाला है. जैसे भालेका फल पकडनेमें डर लगता है वैसेही हमको धर्मके कर्म करनेमें कठिनाई जान पडतीहै. प्रार्थना, परोपकार, मनोनिग्रह आदि काम तवही होतेहैं जव हम अपने व्यावहारिक बुरे सुखोंको त्याग दें, तात्पर्य यह कि धर्म पालना कठिन लगता है परंतु इन कठिन कामोंको जो पकडे रहता है वह वचजाता है और जो इनसे डरकर अपने निर्वल मनसे निर्जीव स्वार्थके लिये पवित्र धर्मको छोड देता है वह मृत्युमें और नरकमें डूवजाता है. ईश्वर! हमको वचा! वचा!! हमको धर्म पालनेका वल दे.

१०० सच्चे भक्त कैसी दृढतावाले और कितने कम होते हैं? सच्चे भक्तकी वार्त्ता.

किसी राजासे उसके गुरुने कहा " महाराज! संसारमें भक्ति बढानेका उपाय करना प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है. यह काम प्रत्येक मनुष्यको अपनी शक्तिके अनुसार अवश्य करना चाहिये. इससे आपभी ऐसा यत्न कीजिये जिसमें आपके राज्यमें भक्ति वढै."

राजाने कहा " आपही वताइये! क्या करना चाहिये?"

गुरुने उत्तर दिया " जो भक्त हों उनका कर छोड दीजिये."

राजाने इसे स्वीकार करलिया और नगरभरमें निश्चय कराया तो केवल एक भक्त निकला. उसके सव कर राजाने छोडदिये और नगरमें ढिंढोरा पिटवादिया कि जो भक्त होगा उससे किसी प्रकारका कर नहीं लियाजायगा.

अव तो कर वचानेकी लालचसे वहुतसे मनुष्य भक्त होनेलगे. दोही तीन वरसमें सारा गांव भक्त होगया. सवही लोग तिलक छापे लगाने लगे, मंदिरमें जाने लगे और भक्तिका पूरा २ ढोंग

दिखानेलगे. राजगुरु उस समय यात्रा करने गयाथा. वह जब २ २–३ वरसमें लौटा तो क्या देखताहै कि, राजा ठाठवाठरहित और उदास होरहाहै. तब उसने राजासे पूँछा " महाराज ! यह क्या ? आप इतने चिंतातुर क्यों हैं ? "

राजाने उत्तर दिया " यह आपकी आज्ञाके अनुसार चलनेका फल है. आज तीन वर्षसे सब लोग भक्त होगये हैं और कर आना बन्द होगया है जिससे राज्यपर ऋण चढगया है. "

राजगुरुने कहा " इसका उपाय कल करूंगा. आज आप नगरमें ढिंढोरा पिटवा दीजिये कि जो भक्त हों वे यहां आवैं. जब वे आजांय तो उसको एक मकानमें बन्द कराके उनसे कहला-दीजिये कि " हमारे गुरु आये हैं. उनको भक्ततेलकी आव-श्यकता है. इससे तुम लोगोंका कल तेल निकाला जायगा. साथहीमें तेल निकालनेका एक कोल्हूभी मँगवाकर उनके आगे खडा करवा दीजिये. "

राजाने वैसाही किया अब तो वे लोग लगे कांपने और थर-थराने जैसे तैसे रात पूरी हुई प्रातःकाल होतेही राजा वहां आया है और द्वारपर खडा होकर एक एक मनुष्यसे पूँछने लगा " क्यों भाई तू भक्त है ? "

सब लोगोंने अपने २ तिलक छापे पोंछडाले. कंठियां तोडडालीं और वही उत्तर दिया कि " नहीं महाराज ! मैं तो भक्त नहीं हूं ! भूलसे यहां आ फँसा हूं मुझे क्षमा कीजिये. "

इस तरहका उत्तर देदेकर सबही लोग चलदिये केवल एक मनुष्य रहगया उसने उत्तर दिया " महाराज ! हां ! मैं भक्त हू जो किसीको आवश्यकता हो तो खुशीके साथ मेरा तेल निकाले, मैं तैयार हूं देहका नाश तो होनाही है फिर किसीके काममें आकर नाश हो तो बहुत अच्छी बात है. दधीचि ऋषि, मोरध्वजराजा संगालशाह सेठ और महाराज दिलीप आदि भक्तोंनें औरोंके लिये अपने तथा अपने

पुत्रके प्राण दिये हैं. मैंभी जो मेरा देह किसीके उपयोगमें आवे तो प्राण देनेको तैयार हूं. इससे जो आपकी इच्छा हो सो कीजिये !

यह सुनकर गुरुने राजासे कहा " यह सच्चा भक्त है ! इसके सब कर छोडदीजिये और बाकीके इन सब ढोंगियोंसे चढाहुआ बाकीका कर वसूल कीजिये !

इसपरसे यह समझना चाहिये कि, ऊपरी ठाठ बाठ और ढोंग धतूरेसे मनुष्य भक्त नहीं बनसकता, भक्त बननेके लिये तो भक्तिका नशा भीतरहीसे आना चाहिये और भक्तिका रंग चारों ओरसे चलना चाहिये, दुःख या विपत्तिमें भक्तिको छोडदेनेवाले भक्त नहीं कहला सकते. इससे ऊपरी ढोंग छोडकर सच्चे अंतःकरणसे भक्ति करो ! इसीमें कल्याण है !

१९ पद ।

प्रेमपियालो पीयो हरिजन अमर नाम तिन कीयो रे ॥ टेक ॥
ध्रुव पीयो प्रह्लादहु पीयो, मीरांबाई पीयो रे ।
राणै प्यायो विषको प्यालो, सो अमृत करदीयो रे ॥ १ ॥
मोरध्वज नृप सत नहिं छोड्यो, पुत्र चीरकर दीयो रे ।
करी कृपा जब कृष्ण मुरारी, हरि हरि करि सुतजीयो रे॥ २॥
नरसी मेहताकी लज्जा राखी, माहेरो भरदीयो रे ।
रामजीवनकी बनहै कैसें, प्रभुपद प्रेम न कीयो रे ॥ ३ ॥

१०१ भगवान्को भजनेसे किसीकी लज्जा नहीं जाती तबभी हमको भगवान्को भजनेमें लज्जा आती है और लज्जाके काममें लज्जा नहीं आती.

वैष्णव गाया करतेहैं कि प्रभुको भजते अभी किसीकी लज्जा जातो नहीं जानी ! इत्यादि.

हमारे बहुतसे भाई ऐसे हैं जिनको भक्ति करते और मंदिरोंमें जाते लज्जा लगतीहै और भक्त कहलानेमें अपमान होताहै. परमें-

श्वरका पवित्र नाम लेनेमें नाने लजाने, अपने पापोंको क्षमा करानेके लियेभी जीभ न उठाने, अपराधोंके लिये पश्चात्ताप करनेकोभी तैयार न होने और भक्तमंडलमें वैठते संकोच करनेवाले मनुष्योंका उद्धार परमेश्वर कैसे करेगा ? किसीको ताली देते हमें लज्जा नहीं आती, मनमें बुरे विचार करते हमको लज्जा नहीं लगती, माता पिता वृद्धों और गुरुजनोंके आगे वेअदवीसे चलते हमको लज्जा नहीं आती, खोटे प्रपंच और व्यभिचार करते और रंडी मुंडीको रखते हमको लज्जा नहीं आती, सट्टे और जुएमें हमारी लज्जा नहीं जाती, अश्लील शब्द वोलते और नीच प्रकारकी हँसी करते हमको लज्जा नहीं आती, माता पिता और पति स्वामीसे लडते हमको लज्जा नहीं आती, जरा जरासी वातों और पराई रकम हजम कर जानेके लिये अदालतोंमें जाते हमको लज्जा नहीं आती, आधे नंगे दीखनेवाले वारीक वस्त्र और वहभी विना ढंगसे पहनते हमको लज्जा नहीं आती, दूसरे निर्दोष मनुष्योंकी कामशक्तिको उसकानेवाले हाव भाव और कटाक्ष करते हमको लज्जा नहीं आती, हमारे पास वहुत कुछ होते हुएभी गरीवोंको, दीनोंको देनेमें नाहीं करते हमको लज्जा नहीं आती, नये २ नाटक तमाशेवालोंकेसे कपडे पहनते और स्वांग भरते हमको लज्जा नहीं आती और जैसे भीतरसे नहीं है वैसे अपनेको दिखानेके लिये ऊपरी ढोंग करते हमको लज्जा नहीं आती, परंतु भक्ति करनेमें, भक्तोंसे वोलनेमें, भक्त कहलानेमें और सवके आगे ईश्वरका पवित्र नाम लेनेमें हमको लज्जा आती है ! ईश्वर दया कर ! दया कर ! ! इस लज्जाके पापसे हमको छुडा ! ! ! कैसे विचारकी वात है कि, जिन वातोंमें लज्जा आनाचाहिये उनमें तो हमको लज्जा नहीं आती और जो हमारे मुख्य काम हैं, जिनको करना हमारा धर्म है उनमें हमको लज्जा आती है. अफसोस ! अफसोस ! ! ऐसी झूंठी लज्जा रखनेवालोंके लिये अफसोस ! ! ! ईश्वर ! ऐसे अधजलोंपर दया कर ! दया कर ! ! और उनको भक्ति करनेकी सामर्थ्य दे ! ! !

२० पद ।

शरम भरमको त्यागि संतजन सेवै स्वामी श्रीजदुराय ॥ टेक ॥ राजा रंक गुनी अगुनी जन, सेवत जाहिं गनेश मनाय ॥ बाल वृद्ध कायर अरु शूरा सेवैं जाकी करत सहाय ॥ १ ॥ ध्रुव प्रह्लाद शरम तजि सेयो, जन जन आगे प्रभुगुन गाय । अंबरीष उद्धव अक्रूरहु, लाजजहाज दियोहै बहाय ॥ २ ॥ नृप खट्वांग मुहूरत सेयो अविचल भयो मोक्षपद पाय । रामजीवन जीवन मनि खोकरि, मीज हाथ फेरि कहा बसाय ॥ ३ ॥

१०२ भला मनुष्यही जब किसीकी मजदूरी दिये विना नहीं रहता तब ईश्वर अपनी सेवाका फल दिये विना कैसे रहेगा ?

दोहा—तुलसी तनक न छाँडिये, लेन हरीको नाम ।
मनुस मजूरी देह हैं, क्यों रक्खैंगे राम ॥

हम सब जानते हैं कि, किसी हकदारका हक मारना बडा पाप है. कोईसाभी भला मनुष्य किसीकी मजदूरी नहीं रखलेता. तब विचार तो करो कि, अनंतब्रह्मांडका नायक समर्थ परमात्मा हमारी मजदूरी कैसे रखलेगा ! इसका कारण तो बताओ कि ईश्वर हमारी सेवाका फल क्यों नहीं देगा ? सर्व शक्तिमान् दयालु परमेश्वर हमको देने समर्थ है और हम उसकी दयाके पात्र हैं सो समझते हुएभी हम अविश्वास क्यों करते हैं ? विश्वास रक्खो कि भगवान् हमारी मजदूरी कभी नहीं रखलेगा ! मजदूरकी थोडी देर और थोडी मेहनतका हमभी जब थोडा बहुत पैसा देदेते हैं तब भक्तोंकी, कि जो

नित्यप्रति घंटेके घंटे अपने जीवनभर अपने अनेक स्वार्थोंको छोड-कर भगवत्सेवामें तन मन धनसे लगाते हैं, मेहनत क्योंकर वृथा जा सकती है ? भाइयो ! इसका इनाम बहुत बडा है. सत्संगका सुख, हृदयकी पवित्रता, मनकी शांति, जहां २ दृष्टि पडे वहां २ आनन्द, स्वर्गका सुख और अनन्तकालकी मोक्षका आनन्द ये सब इसीका इनाम है. इससे भाइयो ! ऐसा सुख ऐसा इनाम पानेका यत्न करो !

दोहा–मानुसके गुण जो कथै, सो इच्छित फल पाय ।
प्रभुहिं भक्तिसों जो भजै, सो किमि खाली जाय ॥

१०३ दूधवाली गायको अच्छा २ खाना मिलता है, वैसेही ईश्वर भक्तोंको बहुत २ सुख देताहै.

विना दूधकी गायकी अपेक्षा दूधवाली गायको हम अधिक खिलाते हैं और उसकी संभालभी अधिक रखतेहैं, कारण वह दूध देती है और बच्चोंका पोषण करती है. वैसेही ईश्वरके लिये भक्तजन दूधवाली गायके समान हैं, कारण वे संसारमें ईश्वरका नाम रूप अमृत बरसाते हैं और प्रजाको विश्वासरूप पोषण देते हैं. इससे औरोंकी अपेक्षा वे ईश्वरसे अधिक पानेके हकदार हैं. जरा विचार तो करो कि ऐसी भगवत्सेवा करनेमें जीवन व्यतीत करनेवाले विश्वासु भक्तोंको भगवान् कैसे भूलजायगा ? जब विना दूधकी गायोंकोही जो चाहिये सो मिलजाता है, मरकही गायोंको मिलता है, गायोंको भोंकनेवाले कुत्तोंकोभी मिलजाता है, और गायोंसे शत्रुता रखनेवाले बाघकोभी वह नहीं भूलता तब दूधवाली गायसेभी श्रेष्ठ, दुनियामें ईश्वरका नामरूप अमृत बरसानेवाले भक्तोंको ईश्वर कैसे भूलजायगा ? क्या तुमको इतनाभी विश्वास नहीं है ? जो हममें इतनाभी विश्वास न हो तो हम मनुष्य कहलाने योग्य नहीं हैं, इस-लिये ऐ कृपाभिलाषियो ! ईश्वरके विश्वासमें आओ और ईश्वरको

अपने विश्वासमें लाओ ईश्वर सबको सुख देनेवाला है! वह तुमको कभी नहीं भूलेगा!

२१ ध्रुवपद।

हरि बिन जग आन नाहिं, भूले मन सहाई ॥ टेक ॥
ध्रुवको पद अचल दियो, प्रह्लादको उबार लियो।
गजकी जब सुनी टेर, गरुड छांडि धाई ॥ १ ॥
पाडवनपर विपति परी, दुरवासा कुमति धरी।
शाख चाख लाज राख, ऋषि दिये भगाई ॥ २ ॥
द्रुपदसुता विकल भई, लज्जा मम अब गई।
हरि पुकारि हेरतहू, हरि भये सहाई ॥ ३ ॥
जर्जर तनु श्वेतबाल भयेउ सोचि नंदलाल।
दारा सुत जग जँजाल, कोउ नहीं सहाई ॥ ४ ॥

१०४ भिक्षुक भिक्षाके पात्र हैं परंतु भक्त और गुरु दानके पात्र हैं.

शास्त्र कहते हैं कि, भिक्षुक भिक्षाके पात्र हैं परंतु भक्त और गुरु दानके पात्र हैं, कारण वे ईश्वरकी जय बुलानेवाले हैं और जगत्में प्रभुका नामरूप अमृत डालनेवाले हैं. इससे वे श्रेष्ठ हैं. संसारके बहादुर पुरुषोंसेभी भक्तजन अधिक बहादुर हैं, क्योंकि वीर पुरुष औरोंके साथ लोहेके शस्त्र और बारूदगोलीसे लडाई करते हैं परंतु भक्तजन तो संसारके मिथ्यासुखोंके साथ लडाई करते हैं, किसीसेभी जीतनेमें न आसकनेवाले बलवान् विषयोंके साथ लडाई करते हैं, समझमें न आने योग्य ईश्वरकी अकलित मायाके साथ लडाई करते हैं और वहभी बाहेरी बारूद गोलेसे नहीं किंतु विश्वासके बारीक अदृश्य तारसे. राजा लोग

तो केवल बाहरी जगत्पर हुकूमत चलाते हैं परंतु गुरु लोग हमारे अंतर्ब्रह्मांडमें राज्य करते हैं. इससे वे राजाओंसेभी श्रेष्ठ हैं. इस तरह वे मान और दानके पात्र हैं.

दानमें हाथी, घोडे, रथ, पालकी, मकान और गांवभी दिये जा सकते हैं, और तो क्या परंतु अपना देहतक अर्पण किया जा सकता है. भक्त और गुरु ऐसेही दानके पात्र हैं, क्योंकि वे ईश्वरके नामका बरसात बरसाते हैं, परंतु भिक्षुक तो भिक्षाहीके पात्र हैं अर्थात् उनको तो उनकी आवश्यकताके योग्य यथाशक्ति देना जरूरी है. दान और भिक्षामें इतना अंतर है, कारण दान लेनेवाले भक्तोंके यहां बहुतसे भिक्षुकोंका निर्वाह होता है और गुरुओंके यहां बहुतसे शिष्योंका पोषण होता है परंतु भिक्षुकोंके यहां ऐसा कोईभी काम नहीं होता. वे केवल अपने लिये अथवा अपने कुटुं-बके लियेही माँगते हैं इससे वे भिक्षाके पात्र हैं और गुरु तथा भक्त-जन दानके पात्र हैं. इसीसे इनको सहायता देनेकी शास्त्रमें आज्ञा है और वही सब भाइयोंका कर्तव्य है. भाइयो जो ईश्वरीय मार्गमें आगे बढना है तो इस कर्तव्यको अच्छे प्रकारसे पूरा करो !

२२ दोहा ।

जगतमांहिं जन बहुत पर, गुणिजन पावै मान ।
जिमि पुहुपनके तरुनको, सींचत माली जान ॥ १ ॥

१०५ इंद्रकी पानीकी वर्षासेभी भक्तोंकी प्रभुनामकी वर्षा अधिक श्रेष्ठ है.

एकबार इंद्रको अभिमान हुआ कि मैंही सबसे बडा हूं क्योंकि मैं पृथ्वीपर पानी बरसाताहूं, जो मैं पानी न बरसाऊं तो सब प्राणी थोडेही समयमें मरजांय, मेरासा अधिकार और किसीके हाथमें नहीं है और मुझजैसा बल किसीके पास नहीं है जिस

समय इंद्र इस तरहकी अभिमानकी वातें कररहाथा उसी समय उसका अभिमान तोडनेके लिये ईश्वरकी इच्छासे देवताओंकी दुंदुभी वजने लगी. यह देख इंद्रने अपने गुरु बृहस्पतिसे पूँछा " महाराज ! आज क्या है ? दुंदुभी क्यों वजती है ? "

गुरुने उत्तर दिया " तेरे शिरपर पैर धरके अभी एक भक्त पृथ्वीपरसे ब्रह्मलोकको जानेवाला है. उसकी खुशीमें दुंदुभी वजती है. "

इंद्रने पूँछा " महाराज ! उसमें ऐसा कौनसा वल है जिससे वह मेरे शिरपर पैर रखकर जायगा ? "

गुरुने कहा " तूं तो केवल ऋतुमेंही पानी वरसाताहै और उसमंभी कभी २ लोभ करजाताहै तवभी इतना अभिमान करताहै परंतु उस भक्तने तो अमृतसेभी अधिक उत्तम परमेश्वरके नामका पृथ्वीपर अखंड वरसात वरसाया है और वहभी ब्रह्मार्पण, इससे वह तेरे शिरपर पैर रखकर स्वर्गकोभी उल्लंघन करके सीधा ईश्वरके पास चला जायगा. "

यह वात सुनकर इंद्रका अभिमान जाता रहा. उसको निश्चय होगया कि, मेरी पानीकी वर्षासेभी भक्तोंकी प्रभुके नामकी वर्षा अधिक श्रेष्ठ है. इसलिये सव भाइयो ! भक्तिका महत्त्व समझकर भक्त वननेका यत्न करो !

१०६ विश्वासकी डोरीपर दौडनेवाले भक्तजनोंकी श्रेष्ठता.

ऊंची और पतली दीवारपर किसी मनुष्यको चलते देखकर हमको भय और आश्चर्य होता है, वांसपर मनुष्यको चलते देखकर उससेभी अधिक आश्चर्य होता है, नटोंको रस्सीपर चलते देखकर औरभी आश्चर्य होता है और सरकसोंमें लोहेके वारीक तारपर विल्ली कुत्तेको दौडते देखकर तो हमारे आश्चर्यका ठिकानाही नहीं रहताहै, तव भक्तजन हमारी स्थूल आंखोंसे न दीखसकने योग्य पतली, वारीक और चिकनी विश्वासकी डोरीपर

चलते हैं, प्रभुके विश्वासपर जीवन व्यतीत करते हैं वे कितने श्रेष्ठ हैं इसका विचार तो करो, इस तरह आश्चर्यकारक प्रभुको प्रिय और विश्वासी मार्गपर जीवन व्यतीत करनेकी इच्छा रक्खो ! यही उत्तम है ! भगवान्नेभी कहाहै किः–

"अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥"

गी० अ० १७ श्लो० २८.

अर्थ–श्रद्धा विना विश्वास विना जो कुछ होम किया जाय, दान किया जाय, तप किया जाय अथवा और कोई काम कियाजाय तो वह सब व्यर्थ है. इसलिये हे अर्जुन ! जो करै सो श्रद्धापूर्वक कर !

विश्वासही धर्म और भक्तिका तत्त्व है और वही ईश्वरको प्रिय है. भाइयो ! विश्वासी जीवन व्यतीत करना सीखो ! सीखो !! सीखो !!!

दोहा–एक भरोसा एक बल, एक आश विश्वास ।
स्वातिबूँद रघुनाथ है, चातक तुलसीदास ॥

१०७ श्रद्धा तो है मोहर समान और दूसरे साधन हैं कौडी समान.

महात्माओंका कथन है कि श्रद्धा है सो मोहर समान है और दूसरे साधन हैं सो कौडीसमान हैं. जो तुम्हारे पास एकभी मोहर होगी तो कौडियां बहुतसी आपोंआपही चली आवैंगी परंतु कौडियां बहुत न होंगी तो मोहर नहीं आसकैगी एक मोहर अर्थात् एक गिन्नीके आजकल पंद्रह रुपये आते हैं, एक रुपयेके सोलह आने आते हैं और एक आनेकी दो सौ छप्पन कौडियां आती हैं इस हिसाबसे एकही मोहर कमानेसे इकसठ हजार चार सौ चालीस कौडियां आसकती हैं परंतु कौडियां जब इकसठ हजार चार सौ चालीस इकट्ठी कीजाय तब एक मोहर आसकती है.

मोहर सो विश्वास है और कौडियां हैं सो दूसरे साधन हैं एक एक कौडी कमानेमें अर्थात् एक एक दुर्गुण छोडनेमें वहुत २ समय लगता है और तवभी विश्वास विना पूरी २ प्राप्ति नहीं होती इस तरह दीर्घकालतकभी हम एक मोहर पूरी नहीं वनासकते. इस लिये पहलेही विश्वासी वनो ! हृदयमें विश्वासको भर रक्खो ! और विश्वासकी डोरीसे ईश्वरको मनके साथ वांधलो ! विश्वास एक ऐसी वस्तु है कि जिस एकहीको पालेनेसे सव वस्तुएँ मिलजाती हैं. इसीसे यह उत्तममें उत्तम है और ऐसा होनेहीसे विश्वासके द्वारा ईश्वर पहँचाना जासकताहै. एक ईश्वरको जानलेनेसे सव कुछ जानलिया जाता है, परंतु सव कुछ जानलेनेपरभी विना विश्वास ईश्वर नहीं जानाजासकता. इसलिये विश्वासकोही एक सच्चा तत्त्व समझकर वाहरी दौडधूप छोड विश्वासके तारको पकड लो ! यही जीवनका मजा है, यही जीवनकी सार्थकता है, यही ईश्वरसे माँगने योग्य है, यही ईश्वरको देने योग्य है और कि, यही अपने भाई वंधुओंमें उपदेश करने योग्य है कि भाइयो ! विश्वासी वनो ! विश्वासी वनो ! ! और ईश्वरके भरोसेका वल रखना सीखो !

१०८ विश्वाससे ईश्वरही मिलजाता है तव भक्तिके साधन मिलनेमें क्या नयापन है.

तुम जानते हो हम कितने वडे अविश्वासी हैं. एक महात्माने कहा है कि, जो तुममें राईके एक दाने वरावरभी विश्वास हो तो तुम्हारे कहनेसे पर्वत हट सकता है, समुद्र उछल कूद करना छोड सकता है और सूर्य अपने स्थानपर स्थित रहसकताहै.

केवल एक राईके दाने वरावर विश्वासमें इतना वल है परंतु खेद है कि हम राईके दानेके हजारवें अथवा लाखवें हिस्सेके वरावरभी विश्वास नहीं रखते. विश्वास कितना सूक्ष्म और कितना वलवान् तत्त्व है तवभी हमको उसका अपने जीवनमें कितना थोडा अनुभव होता है इस वातको समझानेके लिये हमारे शास्त्र

कहते हैं कि गायके सींगपर राईका दाना ठहरसके इतनीसी देरभी जो तुम विश्वास रखसको तो तरजाओ. तात्पर्य यह कि इतनासा विश्वासभी हम नहीं रखसकते. इससे विश्वास रखनेका यत्न करो ! क्योंकि जब विश्वाससे सारा भवसागरही तरनेमें आसकताहै तब उस सागरमेंसे थोडीसी सीपैं बीन लेना कौन कठिन है ? अर्थात् विश्वाससे ज़ब स्वयं भगवान्‌ही मिलसकते हैं तब विश्वाससे भक्ति और दूसरे साधन मिलसकें इसमें क्या नयी बात है ? इसलिये भाइयो ! भगवत्‌शरणका बल रखना सीखो ! वही सब धर्मका मर्म है ! वही सब तत्त्वोंका तत्त्व है ! और वही ईश्वरको पानेका सुगमसे सुगम और अंतिमसे अंतिम उपाय है ! निश्चय समझो कि, इसके सिवाय ईश्वरको जाननेका दूसरा कोई उपायही नहीं है. तात्पर्य यह कि, हमारे जीवनमें जो हम विश्वास रखना न सीखें तो निश्चय समझ लो कि, हमारा सारा जीवन वृथाही गया और हम चौरासी लाखके फेरेमें पडगये. परंतु इसपरसे निराश नहीं होजाना चाहिये, क्योंकि अबभी कुछ बिगडा नहीं है. अभी हमारे हाथमें समय है उतनेमें विश्वास करना सीख लो और विश्वाससे महासमर्थ ईश्वरकी पवित्र शरण पालो.

१०९ विना लगामके घोडेपर बैठाहुआ लडका गढेमें गिरगया. वैसेही हमभी जो अपने मनपर विश्वासकी लगाम न लगायँगे तो नरकहीमें गिरैंगे.

एक लडका बिना लगामके घोडेपर बैठाहुआ था और जहाँ घोडेकी इच्छा होती थी वहांही उसे दौडने देता था यह देख किसी मनुष्यने उससे पूँछा " बचे ! ऐसे बदमाश घोडेको विना लगाम लगाये कैसे छोड रक्खा है ? ".

लडकेने जवाब दिया " यह तो योंही चलता है. "

आदमीने पूँछा " तू इसे कहां लिये जाता है ? "

लडकेने जवाब दिया " जहाँ यह मुझे लेजाता है वहीं मैं जाताहूं. "

आदमीने कहा " बच्चे ! यह तू बडी भूल करताहै ! यह लगाम विनाका घोडा तुझे किसी गढेमें गिरादेगा या किसी जंगलमें जा डालैगा. बेटा ! तू इस लगाम विनाके घोडेके भरोसे मत रहे ! "

लडकेने उसका कहना न माना और घोडेको वैसेही जाने दिया परिणाम यह हुआ कि थोडीही देरमें घोडेने उसे एक गढेमें जा गिराया.

हमभी अपने मनरूपी चंचल घोडेको विश्वासरूपी लगाम नहीं लगाते और उसको अपनी इच्छाके अनुसार दौडने देते हैं इससे किसी गढेमें जा गिरे तो क्या नयी बात है ? भाइयो ! अपने मनरूपी घोडेको विश्वासकी लगाम लगाओ तबही तो वह ईश्वरीय मार्गमें सीधा चल सकैगा नहीं तो पापके कांटेवाले जंगलहीमें फँसावैगा. हमको आँख होते हुएभी अंधा और कान होते हुएभी बहरा नहीं बनना चाहिये. मनके घोडेपर विश्वासकी लगाम लगानेसे वह हमको देवलोकमें लेजायगा और विना लगाम उसकी इच्छाके अनुसार चलने देनेसे वह राक्षसोंमें ले जायगा. कहो अब तुम कौनसा मार्ग पसंद करते हो ? देवमार्ग या राक्षसमार्ग ? स्वर्ग या नरक जौनसा चाहो वैसाही मार्ग पा सकते हो, परंतु इसका आधार है लगाम लगानेपर और वह लगाम है विश्वास, विश्वासमें सर्वस्व है विश्वासमें स्वयं भगवान् है. इससे यह निश्चय समझो कि, जिसने विश्वास पालिया उसने ईश्वरकी कृपा पाली.

दोहा—काहूके धन धाम है, काहूके परिवार ।
तुलसी मोसम दीनके, राम नाम आधार ॥ १ ॥
नहिं विद्या नहिं बाहुबल, नहिं खरचनको दाम ।
तुलसी मोसम पतितकी, तुम पत राखो राम ॥ २ ॥

११० है तो असंभव तबभी शायद चमचेसे समुद्र खाली करदिया जा सके, परंतु मनुष्यसे प्रभुका पार कभी नहीं पाया जा सकता.

एक बडा तपस्वी साधु था. उसने बहुतसे कर्म किये थे और बहुतसे शास्त्र पढे सुने थे. उनपरसे उसने मनमें समझ लिया था कि मैंने ईश्वरको जानलिया. वह औरोंके आगे अपनी इसी तरहकी बढाइयां माराकरता था. इसपरसे एक दूसरे साधुने उसकी भूल सुधारनेके लिये अपने एक बालक शिष्यको हाथमें चमचा देकर समुद्रपर उसी जगह भेजा जहाँपर वह साधु स्नान किया करता था. वहां पहुँचकर उस लडकेने चमचा भरभरके समुद्रका पानी किनारेपर फैंकना आरंभ किया. थोडीही देरमें वह ईश्वरको जानलेनेका अभिमान रखनेवाला साधुभी वहां जा पहुँचा. उसने उस लडकेको चमचे भरभरके पानी फैंकता देखकर पूँछा " बचा यह क्या खेल करता है ? "

लडकेने उत्तर दिया " मैं इस चमसेसे समुद्रका थाह लेना चाहता हूं. "

साधुने कहा " मूर्ख ! इस तरहभी कहीं समुद्रका थाह आया है ? जा अपने घर ! नहीं तो अभी समुद्रकी लहरोंमें बह जायगा ! "

लडकेने कहा " महाराज ! यहांपर एक साधु आते हैं. वे मनमें समझते हैं कि मैंने ईश्वरको जान लिया. उनकी भूल बतानेके लिये अमुक साधुने मुझे यहां भेजा है. मैं उन साधुसे कहूंगा कि, यद्यपि यह बनसकने योग्य बात नहीं है तथापि थोडी देरके लिये मान लियाजाय कि कदाचित् समुद्र तो कितनेही जमानेमें चमचेसे खालीभी हो जाय परंतु मनुष्य ईश्वरके गुणोंका थाह नहीं पा सकता.

उस लडकेकी यह बात सुनकर साधुका अभिमान छूटगया. उसको भलीभाँति मालूम हो गया कि ईश्वरकी गति अपार है.

जैसे लडका समुद्रके पानीका चमचे चमचेसे थाह नहीं पा सकता वैसेही हमभी चंचल मन और स्थूलबुद्धि तथा इसपरभी अनेक विघ्न होनेसे अपूर्ण साधनोंद्वारा ईश्वरका पूर्ण रूप नहीं समझसकते. हमारा तो यही कर्तव्य है कि, दीनतासे ईश्वरकी शरणमें जाकर उसकी इच्छाके अधीन हो रहें. ऐसा करनेका सुगमसे सुगम और अच्छेसे अच्छा उपाय भक्ति है. इस लिये प्रार्थना करे कि हे भगवन् ! हमको भक्ति दे ! ईश्वरका स्वरूप भक्तिहीसे जाना जा सकता है, कल्पनासे नहीं. यही पक्का सिद्धांत है.

पद ।

तू अगाध, तू अगाध, तू अगाध देवा । निगम नेति नेति कहै, जाने नहिं भेवा ॥ तू अगाध० ॥ १ ॥
ब्रह्मादिक विष्णु शंकर, शेषहू बखाने । आदि अंत मध्य तुमहि, कोऊ नहिं जाने ॥ तू अगाध० ॥ २ ॥
सनकादिक नारदादि, शारदादि गावें । सुर नर गंधर्व मुनि, कोऊ नाहिं पावें ॥ तू अगाध० ॥ ३ ॥ साधु संत थकित भये, चतुर बुध सयाने । सुंदरदास कहा कहे, अतीही हराने, तू अगाध० ॥ ४ ॥

१११ संसारकी हलकीसे हलकी वस्तुकाही हमको पूरा २ ज्ञान नहीं हो सकता, तब ईश्वरका पूरा २ ज्ञान क्योंकर होसकता है ?

पृथ्वीपर तुमको जो छोटीसे छोटी और हलकीसे हलकी वस्तु दीखती हो-उसीको उठालो और देखो कि, उस छोटीसे छोटी वस्तुकाभी तुमको कितना थोडा ज्ञान है. फलको तुम अनेक बार

सूँघतेहो और सैकडों वार हाथमें लेतेहो परंतु उसकाभी तुमको या किसी दूसरेको कभी पूरा ज्ञान हुआहै ? रोटी, दाल और भात हम नित्य खाते हैं परंतु नाम और रूपके सिवाय उसका सच्चा स्वरूप हमने कभी समझा है ? अपने वालोंको हम नित्य देखते है और नाखून तो दिनभरमें सैकडों वार हमारी आखोंके सामने आते हैं परंतु उन वालों और नाखूनोंका स्वरूप भी हमने कभी समझा है ? धूल मट्टी और पत्थरसे हमको सदैव काम पडतारहताहै कारण हमारे घर इनसेही वनेहैं और इनहीपर हम चलते सोते वैठते हैं, सारांश यह कि, जीवनभर हम इनसे कभी दूर नहीं हो सकते परंतु इसके लिये भी हम क्या जानते हैं ? इसका स्वरूपभी तो हम नहीं समझ सकते !

जव ऐसी २ साधारण वातोंकाही हमको पूरा २ ज्ञान नहीं है तव जिसको वेदभी ' नेति नेति ' कहते हैं उस अनिर्वचनीय, इंद्रियों, मन और वाणी तथा बुद्धिसे पर ईश्वरका संपूर्ण स्वरूप हम कैसे समझ सकतेहैं ? इसका जरा विचार तो करो ! किसीभी छोटीसे छोटी वस्तुका स्वरूप समझनेमें भी जव उसका आदि अंत आताहै तो वहां ईश्वरही आ खडा होताहै, तव स्वयं ईश्वरका आदि अंत समझनेमें सिरपच्ची की जाय तो कैसे पता लगसकताहै ? ऐसा करनाही एक प्रकारकी मूर्खता है. इससे तो वहुतसे मनुष्य नास्तिक होजाते हैं और वहुतसे दीवाने वन-जातेहैं. इसलिये उचित यही है कि, पूर्ण विश्वाससे ईश्वरके शरण हो जाओ ! ऐसा करनेसे जो कुछ समझने योग्य है वह आपोंआप समझमें आने लगेगा. ईश्वरकी शरणमें गये विना ईश्वरको जाननेका कोईभी मार्ग नहीं है. भक्ति करनेसे ईश्वरकी शरण प्राप्त होती है. जो ईश्वरका सच्चा स्वरूप जाननेकी इच्छा हो तो भक्ति करो ! भक्ति करो ! ! प्रेमलक्षणाभक्ति विना ईश्वरका सच्चा स्वरूप समझनेकी आशा रखना व्यर्थ है ! व्यर्थ है !! व्यर्थ है !!!

सवैया।

हारिरहे मनमाहिं मुनीश्वर, विश्वपतीकी वात विचारी।
तर्क किये कछु तत्त्व मिलो नहिं,दृष्टि बहुत मन गहरी उतारी॥
मान त्यागि अनुमान कियो यह,मन अरु वाणी न पहुँचे हमारी।
कैसे सकै कहि कोई कवीश्वर, ईश्वरकी गति विश्वसे न्यारी॥

(कवि दलपतराम)

११२ जो यहां ऊँचे होंगे वे ईश्वरके आगे नीचे गिरेंगे. जो यहां नवेगा वह ईश्वरके यहां मान पावेगा.

गुजरातीमें कहावत है कि 'नम्योते प्रभुने गम्यो' अर्थात् जो नवैगा वह ईश्वरको प्यारा होगा. याद रक्खो कि, तराजूका जो पलडा नवता है वही भारी होता है, और जो ऊँचा रहता है वह हलका माना जाताहै. इसी तरह जो मनुष्य नवता है वह वडा है, और जो सदा शिर ऊँचा किये रहताहै वह संसारमें हलका गिनाजाताहै, और ईश्वरके आगे औरभी अधिक हलका समझा जाताहै. जो वृक्ष फलवाले होते हैं वेही झुकते हैं. परंतु विना फलवाले नहीं झुकते. वैसेही जिनके हृदय दया और भक्तिसे भरे हैं वे नवते हैं परंतु जो हृदयके धनसे खाली होते हैं वे नहीं नवते. हमने नदीके किनारेपर देखाहै कि, जो नवते हैं वे छोटे २ झाडभी वचजातेहैं और जो नहीं नवते वे वडे वडे वृक्षभी पानीमें वहजातेहैं तात्पर्य यह है कि, नवना औरोंके लिये नहीं है परंतु खास अपनेही बचावके लिये है. इसीलिये शास्त्रोंमें कहाहै कि, जो यहां वडे होंगे अर्थात् अभिमानी होंगे वे ईश्वरके यहाँ नीचे होंगे अर्थात् हलकी जगह पायँगे और जो यहां नवेंगे वे ईश्वरके यहाँ मान पावेंगे. इसलिये भाइयो! दीनता रखना सीखो! दीनता विना की भक्ति शोभा नहीं देती और सच्चा फलभी उससे नहीं

मिलता. भक्तिका अर्थ है. अधीनता और अधीनता दीनता बिना होसकती नहीं. इसलिये जैसे बने वैसे दीनता रखना सीखो !

२३ दोहा।

जो नरमाई गहत सो, शत्रुनमध्य बसाय।
बत्तिस दाँतन मध्य जिमि, जीह रहत हरपाय ॥ १ ॥

११३ परमेश्वरने हमारे मौतके वारंटपर और हमको नरकमें डालनेके फैसलेपर अभी दस्तखत नहीं किये इतनेहीमें हमको पाप छोडदेना चाहिये.

एक लडका बडा बदचलन था. उसके घरवाले बडे तंग रहतेथे. वह दिन प्रतिदिन अधिक २ बिगडताही गया और गाँव लोगोंको सताने लगा. जब सारे गाँवके लोग उससे दुःखित होगये तो उन लोगोंने उस लडकेको गांवसे बाहर निकाल देनेका ठहराव करलिया और सबने मिलकर उसके पितासेभी इस काममें राय माँगी. कुछ तो अपने पुत्रसे दुःखित होनेसे और कुछ लोगोंके दबावमें आनेसे पिताभी उस समय उसको गाँवसे निकालदेनेकी सलाहको स्वीकार कर लिया परंतु जब वे लोग इकठे होकर उस ठहरावके कागजपर हस्ताक्षर कराने आये तो उसकी हस्ताक्षर करदेनेकी हिम्मत न पडी. उस समय वह बहुत उदास होगया, हाथमेंसे कलम गिरनेलगी और उस देशनिकालेके कागजपर हस्ताक्षर करनेमें उसने आनाकानी की. तब तो लोग भडक उठे और बोले " यह क्या बात है ? पहले तो तुम इस बातको स्वीकार करचुके हो और अब क्या विचार करतेहो. अब दस्तखत करनेमें इतनी देर क्यों ? ऐसे नालायक लडकेपर इतना स्नेह क्यों करतेहो ? "

पिताने कहा " वह कैसाही नालायक है परंतु है तो मेरा पुत्र ! उसको देश निकाला देते मेरा जी नहीं मानता. लडके कुपात्र होजाते हैं परंतु माता पिता कुपात्र नहीं होते इससे मैं चाहताहूं कि

एकवार फिरभी इसको सुधरनेका अवसर दिया जाय तो ठीक !"

लडका दूर खडा २ सुन रहाथा. उसको मालूम होगया कि मेरा पिता अवभी मेरे लिये इतना दुःखित होता है और मुझ जैसे नालायक पुत्रको भी छोडना नहीं चाहता तो उसके प्रेमके लिये और उसकी भलाईके लिये सुधरजानेका मैं यत्न क्यों न करूं ! इतना विचारकर वह उसी समय बोल उठा " वस साहव बस ! बहुत हुआ ! मुझे क्षमा करो ! मैं आजसेही अपनी चाल सुधारनेकी प्रतिज्ञा करताहूं. "

लोगोंने पूँछा "यह क्योंकर वनसकताहै कि अव तूं सुधर जाय ? एक साथ सुधरजानेकी प्रतिज्ञा करनेका कारण तो वता ? "

लडकेने उत्तर दिया " यह वात मैं आज समझाहूं कि मेरी बुरी चालसे मेरे पिताको इतना दुःख होता है. इससे अपने पिताके लिये मैं आजहीसे अपनी चाल सुधारनेकी प्रतिज्ञा करता हूं. "

यह सुनकर पिता वहुत प्रसन्न हुआ उस दिनसे पिताने उसे अपने घरमें रक्खा और गाँवके लोगोंने उसे क्षमा करदिया. इसके वाद थोडेही दिनोंमें लडका विलकुल सुधरगया.

जिसके अंतःकरणसे फटकार लगजातीहै, जिसके भीतरसे चावी लगती है उसके सुधरनेमें देर नहीं लगती. परंतु वात इतनी है कि, हमको सुधरनेके लिये दृढतापूर्वक प्रतिज्ञा करलेना और जो मन बुराईकी ओर झुकाहुआहै उस मनको भक्तिकी ओर झुकालेना चाहिये. हमभी उस नालायक लडकेकी तरह अंतःकरणसे बुरे हैं. परंतु हमारे दयालु पिता परमेश्वरने अवतक हमको घरसे वाहर नहीं निकाला है और हमको देशनिकाले अर्थात् नरकमें डालनेके आज्ञापत्रपर तथा मौतके वारंटपर अभीतक हस्ताक्षर नहीं किये हैं, इतनेहीमें हमको सुधरजाना चाहिये तो हम वचसकतेहैं. हमारे समर्थ पिताको दुःख देकर उसका अपमान करके हम क्या लाभ उठा सकेंगे ? बुराई करनेसे जो

सुख मिलते हैं वेभी दुःखही हैं. बुराईके सुखसे भलाईका सुख करोड-गुना अच्छा है. इससे भलाई द्वारा सुख प्राप्त करनेका प्रण करो ! ईश्वरको प्रसन्न करनेका यही उत्तमसे उत्तम मार्गहै. ईश्वरका सामना करके अच्छा फल नहीं मिलसकता सो तो राक्षसभी समझते हैं और मूर्खभी समझते हैं, तव हम तो मनुष्य हैं और सोभी अमेरिकाके असली इंडियन अथवा आफ्रिकाके होटेंटाट नहीं किंतु आर्य हैं. इसलिये आजसे अपने पवित्र पिता ईश्वरके निमित्त पाप छोडदेनेका प्रण करलो !

११४ भक्तोंका आनंद उनके हृदयहीमें भरा रहता है, उस आनंदको ढूंढनेके लिये उन्हें बाहर नहीं जाना पडता.

पद।

दिल लगाओ राम फकीरीमें, दिल लगाओ राम फकीरीमें॥ ॥ टेक ॥ राम फकीरी अदल फकीरी, चारों खूँट जागी-रीमें ॥ दिल ल० ॥ १ ॥ जो सुख मिलता रामभजनमें, सो सुख नहीं अमीरीमें ॥ दिल० ॥ २ ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो ! साहब मिलता सबूरीसे ॥ दिल० ॥ ३ ॥

दो मित्र थे. उनको सुख पानेकी बडी इच्छा थी. इससे वे नाचमें जाते, नाटकमें जाते, रास लीलामें जाते, हवा खाने जाते, मेलोंमें जाते, बाजीगरोंके तमाशोंमें जाते, स्त्रियोंका गाना सुनने जाते, हँसी मजा करते, किश्तियोंमें चढकर समुद्रकी सैर करते, प्रदर्शिनियोंमें जाते, बारातमें जाते, सभाओंमें जाकर आगेही आगे बैठते, टी पार्टी करते, सरकस देखते, घुडदौड देखते, बाइ-सिकल दौडाते, गाने बजानेका शौक रखते, स्त्रियोंके समाजमें जाकर आँखें सेकते और जहाँ कुछभी नयी बात होती वहां अवश्य करके

पहुँचते थे. कारण वे सुखकी तलाशमें थ और इन बातोंमें उनको सुख मिलताथा. कुछ समय बाद उनमेंसे एक भक्त होगया अब वह ईश्वरकी सेवामें अच्छे कामोंमें और ईश्वरीय आनंदमें रहने लगा और बाहरी तुच्छ और हलकी बातोंमेंसे उसका आनंद जातारहा.

एक दिन वह दूसरा मित्र आकर उस भक्तसे बोला "अब तू ऐसा कैसे बनगया ? न कहीं जाना, न कहीं आना, न मौज शौककी बातें करना, न हँसी दिल्लगीमें मन बहलाना यह तेरी क्या दशा होगई ? पहलेके आनंदको बिलकुलही भूलगया क्या ?"

तब उस भक्तने उत्तर दिया "मित्र ! अब मेरा आनंद मेरेही पास है. अब मुझे दूसरे आनंदोंकी आवश्यकता नहीं रही. अब मेरा हृदय सदा आनंदसे भरा रहता है. मुझे आनंदकी तलाश करनेके लिये बाहर नहीं जाना पडता. अब तेरा आनंद मेरे लिये दुःखस्वरूप है. जो तूभी मुझजैसा आनंद चाहता है तो तूभी मेरी तरह भक्तिरसमें डूबजा ! और जो तू वैसा न कर सकै तो कृपाकरके अब मेरे पास मत आ ! मुझको अपना ईश्वरीय आनंद भोगने दे सोही बस है ! ईश्वरीय आनंदके आगे दूसरे आनंद किसीभी गिनतीके नहीं ! इसीलिये भगवान्‌नेभी कहा है:—

"यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके ।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥"

गी० अ० २. श्लो० ४६.

अर्थ—जैसे पानी पीना, नहाना, धोना आदि जो काम थोडे पानीके स्थानमें होते हैं वेही काम चारों ओरसे खूब भरे हुए बडे तालावमेंभी हो सकते हैं. वैसेही वेदमें कहे हुए कर्म करनेसे जिस २ प्रकारका आनंद होता है वह सब आनंद प्रभुको जाननेवाले भक्तको मिलता है.

३१५ अधिकार विना अच्छी वस्तुएँभी पसंद नहीं आतीं, इससे ईश्वरीय आनंद लेनेकी योग्यता प्राप्त करो.

एक स्त्री किसी मंदिरमें कथा सुनने गई तब अपने छोटे बच्चेकोभी साथमें ले गई. वहाँ जाकर थोडी देरमें बच्चा रोने लगा. स्त्रीने उसे स्तनपान कराया. तबभी बच्चा रोताही रहा, तो क्रोधमें आकर उसने बच्चेके गालपर थप्पड जमादी. यह देख व्यासजी बोले " बाई ! बच्चेको क्यों मारती हो ? "

स्त्रीने उत्तर दिया " महाराज ! यह मुझे कष्ट देता है और कथा सुनने नहीं देता तब मारूं नहीं तो क्या करूं ? "

व्यासजीने कहा " वह तुमको कष्ट नहीं देता किंतु तुम उसको कष्ट देती हो. वह यहाँ आनेके योग्य थोडाही है ! उसको तो खिलौने चाहिये, छोकरोंके साथ खेलना चाहिये, घरमें दौडधूप मचाना चाहिये, और कुछ खानाभी चाहिये. उसको तुम कैद करनेकी तरह एक जगह बिठला रक्खो सो कैसे बनै ? वह कथामें क्या समझे ? उसको तो स्वतंत्रतासे खेलने कूदनेकी जरूरत है. तुम उसे यहां लाकर दुखी करती हो, वह तुमको दुखी नहीं करता. "

इसी तरह अधिकार विना अच्छी वस्तुएँभी पसंद नहीं आतीं.

२४ दोहा।

नरतनु पाय कहा भयो, भरतखंडके बीच ।
विना जो न करी हरिभक्ति सुठि,आय ग्रस्यो पुनि मीच॥ १ ॥

३१६ एक धर्मके उपदेश करनेवालेने कहा कि प्रभुके नामका बल तो देखो, कि, मुझजैसा पापीभी भक्तिमान् होकर गुरु बन सकताहै.

किसी एक बडी सभामें खडा होकर एक विद्वान् धर्मका उपदेश करनेलगा. उस समय सभाके लोगोंमेंसे किसी एकने एक पत्र

लिखकर उसके पास रक्खा. उस पत्रमें लिखाथा " अपने पहले कर्मोंकोभी अपने व्याख्यानमें कहना. "

उस पत्रको हाथमें लेकर उस विद्वान्ने सबके आगे पढसुनाया और कहा " हम सब लोग किसी न किसी तरहसे किसी न किसी पापमें पडेही हुए हैं. जिसमेंभी मैं तो बहुतही बडा पापी था. मुझसे ऐसे २ महापाप बने हैं कि उनका स्मरण करनेसे मैं कांप उठताहूं परंतु प्रभुके पवित्र नाममें इतना बल है और ईश्वरकी कृपा ऐसी बडी वस्तु है कि उसके कारणसे मुझजैसा महापापी भी आज गुरु बनगयाहै. भाइयो ! मनुष्योंके मनकी निर्बलताकी ओर न देखो परंतु परमेश्वरकी बडाईकी ओर देखो ! प्रभुके नाममें और प्रभुकी शरणमें इतना बडा बल है कि, मुझजैसे पापीभी भक्तिमान् बनकर गुरु बनसकते हैं. ऐ सब भाइयो ! ईश्वरकी शरणमें आओ ! भक्तिकी प्रज्वलित अग्निमें पापरूपी काष्ठको जलते देर नहीं लगती, क्योंकि पाप करनेवाला तो है मनुष्य और कृपा करनेवाला स्वयं भगवान् है ! इससे प्रभुकी कृपाके आगे पाप विचारे किस गिनतीमें ? परंतु वह कृपा भगवान्की सेवा करनेसे मिलती है, हरिके चरणकी शरणसे मिलती है. इसलिये ऐ कृपाभिलाषियो ! समर्थ प्रभुकी बलवान् शरण लो तो मेरी तरह तुम बुरे होगे तब भी प्रभुके पवित्र नामसे भले बन जाओगे ! भगवान्ने भी गीतामें कहाहैः—

" अपिचेत्स दुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मंतव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छांतिं निगच्छति ।
कौंतेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥ "

गी० अ० ९. श्लो० ३०–३१.

अर्थ—बहुत पापी मनुष्यभी जो अनन्य चित्तवाला होकर मुझको भजे तो उसको श्रेष्ठ मानना क्योंकि वह उत्तम निश्चयवाला है. वह पापी मनुष्यभी मेरे भजनसे तुरंत धर्मात्मा बनजाताहै और सदाके लिये शांति पाजाताहै. हे अर्जुन ! तू शपथ खाकर कहना कि, भगवान्के भक्तका नाश नहीं होता.

इसलिये बोलो भाइयोः—

पद ।

हरिदासा, हरिदासा, बनजा हरिदासा हरिदासा॥ टेक॥
सुधासिंधुके धोरे बसिके, मूढ रहत क्यों प्यासा ।
दीन होइ क्यों दुख पावत है, वसि पारसके पासा ॥
बनजा० ॥ १ ॥ कामधेनु सुरद्रुम चिंतामणि, ईश्वर
अखिल निवासा । उनको छाँडि औरको ध्यावै, सो
तो वृथा प्रयासा ॥ बनजा० ॥ २ ॥ मानुषदेह दुर्लभ
छिन भंगुर, ज्यों जलबीच बतासा । अचल सत्य
एक सेवा हरिकी, सबकुछ तुरत तमासा ॥
बनजा० ॥ ३ ॥ शरणागतवत्सल भगवाना, क्यों मन
रहत उदासा । दयाराम सतगुरू बताया, है मनसूबा
खासा ॥ बनजा० ॥ ४ ॥

१३७ ट्रेन छूटजाने बाद स्टेशनपर रोना किस कामका ?
मरेके पीछे रोनाभी निष्फलही है !

एक मनुष्य कहीं विदेश जाताथा उसे पहुँचानेके लिये उसकी माता स्टेशनतक गई. विदेश जातेहुए. पुत्रको देखकर माता रोने लगी. पुत्रने बहुत कुछ कहा सुना परंतु माताका रोना बंद न हुआ. इतनेहीमें समय हुआ और गाडी छूटी गाडी चलने लगी तो बुद्धि-

याने पकडली परंतु उसके पकडनेसे गाडी रुक थोडीही सकतीथी. गाडी चलने लगी और बुढियाभी साथ २ खिंचने लगी. अंतमें उसने गाडी तो छोडदी और चिल्ला २ कर रोना शुरू किया, परंतु गाडी चलदेनेवाद रोना किस कामका ? जवतक गाडी नहीं छूटी और हम उसमें सवार नहीं हुए तवहीतकमें हमको ऐसा यत्न करलेना चाहिये जिसमें आगे जाकर रोना न पडे ट्रेन छूटे पीछे रोकर किसको दिखानाहै ? हम जिसके लिये रोते हैं वह हमारे आँसू थोडाही पोंछ सकता है ?

इसी तरह मरेके पीछे रोनाभी निष्फल है. यहांसे सदाके लिये रवाना होनेसे पहलेही हमको यहां ऐसा प्रबंध करलेना चाहिये और अपने साथ इतनी रस्ता खरची (मार्गव्यय) वांधलेनी तथा इतनी तैयारी करलेनी चाहिये कि, जिसमें रेलगाडी छूटनेपर यहांवालोंको हमारे लिये रोना न पडे. और हमको अपने असली देशमें जाते दुःखित और उदास न होना पडे. हमको और हमारे पीछेवालोंको मौतके समय रोना पडताहै उसका कारण यह नहीं है कि, मातम दुःख है इससे रोना पडता है परंतु अपनी मूर्खता और अपने स्वार्थके लिये रोना पडताहै. अभी हमारे हाथमें साधन है तवतक हमको अपनी भूलोंको सुधारलेना चाहिये तो हम मौतकोभी एक आशीर्वादस्वरूप वना सकते हैं. ऐसा करनेका यत्न करनेसे परमेश्वर प्रसन्न होताहै. ट्रेन छूट जानेपर बैठे २ रोते रहनेसे कोई लाभ नहीं होता इसी तरह रोना है सो जानेवालेके लिये असगुन करना है, जानेवालेका अहित चाहना है, अपने प्यारेके हृदयमें तीर मारने समान है और ईश्वरकी इच्छाके विरुद्ध होनेका काम है. इस लिये भक्तजनोंको मरेके पीछे रोना नहीं किंतु उसकी आत्माको शांति देने और अपने आपको धैर्य देनेके निमित्त मरेके पीछे धर्मके अच्छे २ काम करने चाहिये.

११८ मृत्यु क्या है? साधु कहते हैं कि, मृत्यु ईश्वरकी कृपा है!

मृत्यु क्या है! इसका जवाब ज्ञानी और भक्तजन यह देते हैं, मृत्यु एक प्रकारका संतोष है, मृत्यु पुरानेमेंसे नया बनानेवाली है, मृत्यु नीचे दरजेसे ऊंचे दरजेमें लेजानेवाली है, मृत्यु ईश्वरका आशीर्वाद है और मृत्यु ईश्वरकी कृपा है, कारण जो मृत्यु न होती तो हम वैसीकी वैसी स्थितिमें पडे रहते. जो मृत्यु न होती तो हमारी उन्नति कैसे हो सकती? मृत्यु न होती तो हम स्वर्गमें कैसे जा सकते? मृत्यु न होती तो हम ईश्वरको कैसे पा सकते? मृत्यु केवल एक परदा है. भगवान्‌नेभी इसके लिये गीतामें कहा है:—

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥"
अ० २. श्लो० २२.

अर्थ—जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र छोडकर नये वस्त्र पहनता है वैसेही पुराना शरीर छोडकर जीव दूसरे नये शरीरको धारण करता है.

पुरानेके बदलेमें नया मिलना तो बडे आनंदकी बात है. बडी कृपाकी बात है. इस ऊपरके श्लोकसे भगवान् यह दिखाते हैं कि, मृत्युमें दुःख नहीं है बरन् धैर्य है. इतनाही नहीं परंतु इससे भगवान् यहभी कहते हैं कि, मृत्यु है सो केवल कपडा बदलनेके समान है. मृत्यु है सो नाटकका एक परदा है. इस परदेके हटनेपर पीछेसे एक नयाही दृश्य दिखाई देता है. इस लिये मृत्युका शोक न करना क्योंकि वह दैवी है और ईश्वरीय नियम है. इससेभी बढकर बात है कि हमारे आगे बढनेमें जो जो अडचनें पडती हैं उनको मृत्युही दूर करती है. याद रक्खो कि. मृत्युमें

कुछभी शोक करनेका काम नहीं किंतु वह तो ईश्वरकी कृपा है और वहभी हमारे कल्याणहीके लिये है. मृत्युसे हमको शोक होता है इसका कारण यही है कि, हम अज्ञानमें डूबे हुए हैं इससे मृत्युका उज्ज्वल स्वरूप नहीं समझसकते. हम पापसे भरे हुए हैं इसीसे मृत्युकी उज्ज्वल उग्र ज्योति सहन नहीं कर सकते और इसीसे हम मृत्युसे डरते हैं.

इससे सिद्ध होताहै कि, मृत्युके लिये हम मृत्युसे नहीं डरते किंतु अपने पापोंके लिये हम मृत्युसे डरते हैं, और मरनेवालेको रोते हैं सोभी उनके आत्माके लिये नहीं किंतु अपने स्वार्थके लिये, इसी तरह ईश्वरने उनके लिये जो अच्छे साधन दियेथे उनसे वे कुछ लाभ न उठासके और खाली हाथही चले गये इससे हमें उनपर दया आती है सोही हमारे रोनेका कारण है. कुछ मृत्युकी कठोरता हमारे रोनेका कारण नहीं है. भक्तोंकी दृष्टिमें तो मृत्युका स्वरूप वडा आनंदरूप है और वे उसे ईश्वरकी कृपा समझते हैं इसलिये भाइयो ! आजसे प्रण करलो कि, हम मृत्युसे डरेंगे और उदास होंगे नहीं किंतु उसको ईश्वरकी कृपा समझकर और शांतिके साथ उसके अधीन होंगे, याद रखना कि जो मृत्युसे डरते और शोक करते हैं वे सच्चे भक्त नहीं हैं क्योंकि वे भगवान्‌की इच्छाके अधीन नहीं होते, निश्चय समझो कि वे लोग स्वार्थी हैं, उनके हृदयमें अवभी मोह समायाहुआहै और भक्त होनेपरभी वे संसारके मिथ्यापनको नहीं समझे हैं, तथा ईश्वरके अधीन नहीं होसकते हैं. इसीसे वे सच्चे भक्त नहीं हैं !

११९ भक्तिका मार्ग खरदरा है सो बीचमेंही अटक पडनेके लिये नहीं है परंतु जल्दी पहुँचनेके लियेहैं.

ज्ञानी महात्माओंका कथन है कि भक्तिका मार्ग खरदरा है सो इसी लिये कि वहां जल्दी पहुँचाजासके. हमको जब धूपमें चलना पडता है तो हम वहुत जल्दी २ चलते हैं, और रेतीले मैदानमें

होकर जानाहोता है तब भी पैर बडे जल्दी २ उठते हैं क्योंकि देर लगनेसे वहांपर पीनेको पानी तक नहीं मिलता, बडे जंगलमें होकर जाना पडता है तबभी हम अधीरे हो जाते हैं क्योंकि जो वहींपर रात पडजाय तो बडी कठिनाई पडती है, इसी तरह जिस मार्गमें चोर या डाकुओंका डर होता है, उस मार्गमेंभी हम बडी उतावलीसे चलते हैं क्योंकि माग बुरा होनेसे हमको जल्दी करनी पडती है.

इसी तरह ईश्वरने भक्तिका मार्ग खरदरा बनायाहै जिसमें हम आगे बढनेमें जल्दी करैं और उतावली मचावैं, जो उस मार्गमें फूल बिछे होते तो फूलोंकी सुगंधिमें मग्न होकर हम वहाँके वहाँही खडे रहजाते, जो उस मार्गमें मखमली गद्दे बिछे होते तो हम वहींपर निश्चिंत होकर सोजाते, और जो वह मार्ग हीरे पन्नेसे बना होता तो हम आगे चलना भूलजाते और उनके कंकरोंको बीनने उठानेमेंही लगजाते, परंतु ईश्वरने भक्तिका मार्ग दयाकरके खरदरा बनाया है सो इसीलिये कि मनुष्य बीचमें न रहजाय, परंतु मार्गकी कठिनाईके मारे औरभी अधिक जल्दी चलै. जो ईश्वरके मार्गकी कठिनताको देखकर डरजाँय वे ईश्वरके कृपापात्र बनने योग्य नहीं हैं. इससे भक्ति करनेमें कोई अडचन आपडै तो उससे हिम्मत हारकर हरिभक्ति छोड न देनी किंतु और अधिक उत्साहके साथ आगे बढना चाहिये. यही सच्चे भक्तका लक्षण है और इसीसे पार पहुँचा जासकता है. इसलिये भाइयो! खरदरा मार्ग देखकर रुक मत जाओ परंतु जल्दी पहुँचनेकी उतावली करो! उतावली करो!! उतावली करो!!!

१२० यह संसार एक यात्रा है, हमारा घर तो ईश्वरके दरबारमें है, और शांति घरमें है इससे घर पहुँचनेकी उतावली करो.

किसी शिष्यने गुरुसे पूँछा, "महाराज! शांति कहाँ है?"

गुरुने उत्तर दिया " बच्चा ! शांति घरमें है ! पृथ्वीका अंतही घर है. सेवक स्वामीके यहाँसे अपने घर आकर शांति पाताहै, किसान घरमें आकर हल छोडताहै, व्यापारी लोग घरमें आनेसे अपनी झंझटो और जंजालोंको भूलजातेहैं. बच्चे पाठशालासे छूटकर घर जानेकी उतावली करते हैं और पथिकजन घर पहुँचनेसे शांति पाते हैं. परंतु बेटा ! तू जानता है हमारा घर कौनसा है ? यह दुनिया है सो हमारी यात्रा है. ईश्वरका दरबार है सोही हमारा घर है. वहां पहुँचे विना शांति नहीं मिलसकती. इससे जल्दी घर पहुँचनेका यत्न करो ! हम जो रोजगार धंधा करते और दुःख उठाते हैं सो सब घरका सुख पानेहीके लिये ! इसी तरह अपने असली घरके सुखके लिये भी तो भगीरथकी तरह पक्का प्रयत्न करना चाहिये, क्योंकि विश्वास रक्खो कि, घर विना कहीं भी सुख नहीं मिलता, और हमारा घर भगवान्के दरबारमें है. इससे घर जल्दी पहुँचनेका यत्न करो ! इस जन्महीमें छुटकारा पाजानेका यत्न करो ! घर पहुँचनेसे पहलेही चौरासीके चक्करमें न पडजानेकी पूरी २ सावधानी रक्खो !

१२१ परमेश्वरके दरबारमें तुम्हारी विद्वत्ता नहीं पूँछी जायगी. वहां तो तुम्हारी भक्तिही पूँछी जायगी.

अनुभवी मनुष्य जानते हैं कि, बडे २ व्यापार करनेवाले व्यापारियोंके घरमें उनकी मिल्कियत और संपत्तिको देखतेहुए नकद रोकड बहुतही कम होती है, क्योंकि सारा पैसा तो उनका व्यापारमें लगा रहता है, वैसेही जो बहुत विद्वान् होते हैं, बहुत बातें करनेवाले होते हैं, बहुत व्याख्यान देनेवाले होते हैं, बडे लेखक होते हैं, और जो अपने मान पानके बहुत भूँखे होते हैं वे सच्चे भक्त नहीं समझे जासकते, वे तो अपनी विद्वत्ता और बडाईमेंही खाली रहजाते हैं क्योंकि कह बताना दूसरी वस्तु है और कर दिखाना

दूसरी वस्तु है. मुँहसे कहदेनेमें और वैसाही करनेमें रात दिनकासा अंतर है. इसलिये अधिक बोलनेवालोंको बडा भक्त समझनेकी भूल नहीं करना चाहिये.

साधुलोग कहते हैं कि, विद्वत्ता तो मानसिक प्रपंच है और भक्ति है सो हृदयकी शांति है. इसलिये विद्वत्ता और भक्तिमें पृथ्वी आकाशकासा अंतर है. भक्तिमें बडी २ फिलासोफीकी आवश्यकता नहीं है. उसमें तो हृदयकी सरलता और ईश्वरपर प्रेम रखनेकी आवश्यकता है. इससे इनको प्राप्त करनेका यत्न करो! महात्मा कहते हैं कि, जो तुममें विद्वत्ता न होगी तो काम चलजायगा, परंतु भक्ति न होगी तो काम नहीं चलैगा क्योंकि परमेश्वरके दरबारमें विद्वत्ताकी पूँछ नहीं है भक्तिकी पूँछ है, इसलिये ये पूज्य विद्वानो! इस बातकी पूरी सावधानी रक्खो कि बडे २ व्यापारियोंके पास बहुतसा धन होनेपरभी घरमें नकद रुपया नहीं रहता वैसे तुमभी खाली हृदय न रह जाओ! जो इस बातकी सावधानी न रक्खोगे तो तुम्हारी विद्वत्ता तुमको अधिक दुःख देगी. याद रक्खो कि और मारसे मानसिक मार अधिक बुरी होती है. इसलिये चेतो! चेतो!! चेतो!!!

२९ ध्रुवपद।

नरतनु सुठि रतन पाय, मति गँवाय भाई ॥ टेक ॥
लखचौरासी भ्रमत भ्रमत, विषयिन सँग रमत रमत ॥
दीनबंधु दया कीनी मोक्षद्वार आई ॥ १ ॥ ऐसो दाव वोह न आव, हरिगुनगन गाव गाव । नातर पुनि अंतकाल, शिर धुनि पछिताई ॥ २ ॥ दारा सुत गेह देह, इनपर मत करि सनेह । ये सुमासम रामजीवन कहत दे दुहाई ॥ ३ ॥

१२२ भाइयो ! भविष्यत्के संकटोंको याद करके दुःखका बोझा मत बढाओ !

भविष्यत्में होनेवाले संकटोंको याद करकरके दुःखित होना भक्तोंका काम नहीं है ! इस तरहपर वृथा दुःखका बोझा जान बूझकर अपनेही हाथसे अपने शिरपर रखलेना क्या आवश्यक है ? हम दुःखोंकी गिनती एकही साथ करते हैं इसीसे हमको दुःख अधिक जान पडते हैं परंतु हमको याद रखना चाहिये कि, सारे दुःख एकही वारमें इकट्ठे होकर नहीं आजाते, दैवयोगसे और हमारे कर्मोंके अनुसार एक एक दुःख आता है, और वह भी अपना उपाय अपनेही साथ लेकर आता है, इससे उसको भगवान्की इच्छा समझकर भगवान्के अधीन हो उसको मिटानेका शांतिके साथ उपाय करना चाहिये, परंतु दुःखसे कायर होकर हाय तोबा नहीं मचाना चाहिये, क्योंकि ऐसा करनेसे दुःख घटता तो है नहीं किंतु और बढजाता है. गयेहुए दुःखोंको याद करके तथा आनेवाले दुःखोंकी गिनती करके नाहक दुःखित नहीं होना किंतु समर्थ ईश्वरकी अनंत दयापर विश्वास करके प्रभुमय होजाना चाहिये. दुःखको याद करते रहनेसे दुःख बढता है और ईश्वरको याद करनेसे दुःख घटता है. इसलिये भाइयो ! दुःखसे बचनेके लिये पवित्र प्रभुके नामको स्मरण करो !

१२३ लडकेकेभी लडकोंकी चिंता करके वृथा क्यों दुःखी होतेहो ? प्रभुकी इच्छाके अधीन होजाओ तो दुःख अपने आपही कम होजायँगे.

एक मनुष्य अच्छी स्थितिमें था तबभी बहुत फिकर किया करताथा और अपनी स्त्रीके पास बैठकर आनेवाले दुःखोंकी गिनती करकरके दुःखित हुआ करताथा वह कहता था " अब हमारे बच्चे होंगे तब खर्च बढैगा. बच्चोंकी सगाई करनी

पडेगी और जो समधिन अच्छे स्वभावकी नहीं मिलेगी तो औरभी तकलीफ पडेगी. हम लोगोंमें रीत रिवाज वहुत वढगये हैं. एक वधू लानेके लिये कमसे कम तीन हजारका तो जेवरही चाहिये. जो चार पांच लडके होगये तो भाग्यही खुलगया ना? धंधा रोजगार कम होगया, रस कस घटगया, व्यापारमें सार नहीं रहा और खर्च तो वढताही जाताहै. अब करना क्या? मेरी माताभी आजकल बीमार रहती है. पंद्रह वीस दिनमें उसकी ओरसेभी खटकाही दीखताहै. जो ऐसा हुआ तो खर्च करनाही पडेगा. छः महीने पीछे तेरी सोवड आवेगी उसकीभी तकलीफही समझ! सोवड करनेके लिये किसे बुलायँगे? बहन तो आनेवाली नहीं, क्योंकि उसके और तेरे तो वारहवां चंद्रमा है. अगले साल तेरे भाईका विवाह होगा तव फिर घर जाना पडेगा. मेरा चचा मरने पडाहै तव गये विना छुटकारा थोडाही होगा? खर्च पर खर्च चला आताहै तव गये क्या करना? सेठजीका लडका दिन दिन जवान होताजाताहै त्योंत्योंही उसका मिजाज विगडा जाताहै. आगे जानेपर उससे अधिक दिन पटनेकी आशा नहीं है. छोटी वहनका पति प्रायः वीमार रहताहै. तेरे वापका मिजाजही कुछ और है. उससे कुछ कौडीभी मिलनेकी आशा है? अपना पुराना घरभी दुरस्त कराना ही पडेगा. इसकी दुरस्ती करातेसमय नयी खिडकी वनवानेके लिये पडोसीसे लडाई होगी. कुछ कम आपत्ति है क्या? इतने दुःख तो शायद किसीपर न होंगे! इतनी आफतें कैसे सही जाँय?"

वह नित्यप्रति लोगोंके आगे और अपनी स्त्रीके आगे इसी तरहके रोने रोया करताथा, चिंतासे सदा उदास रहताथा और हलके विचार किया करताथा. इसपरसे स्त्रीने मनमें विचार किया कि, यह मूर्ख तो इसी प्रकारके निरर्थक विचारोंमें किसी दिन अपघात कर डालैगा इससे इसको समझाना चाहिये. ऐसा विचारकर एकदिन उसने घरका कुछ काम नहीं किया, और जानबूझकर वह उदास

होकर सोरही. शामको जब पति घरमें आया तो क्या देखताहै कि, न तो चिराग बत्ती जली है, न झाड़ू लगाहै, न बर्तन मलेगये हैं, न रसोई तैयार और न पीनेको पानी है. तब तो क्रोधमें आकर उसने कहा "यह आज क्या होरहाहै ?"

स्त्रीने उत्तर दिया "मेरे दुःखका पारही नहीं है. आज एक ब्राह्मण आयाथा सो कहगयाहै कि तुम्हारी उमर ६० बरसकी है. साठमेंसे अभी मुझे बीसही बरस हुएहैं. चालीस बरस और बाकी हैं इतनेमें तो मुझे न जाने क्या क्या करना पडेगा. मैंने अपने दुःखोंकी गिनती की सो तो सुनलो फिरही मुझपर नाराज होना ! मुझे नित्य धडीभर (पांच सेर) पीसना पडताहै. जिसकी महीने ३० धडी और साल भरकी ३६० धडी हुई, इस हिसाबसे चालीस बरसमें चौदह हजार चार सौ धडी मुझे पीसना पडेगा. नित्य दस घडे पानी भरना पडता है जिसके महीने भरमें ३०० घडे और सालभरके तीन हजार छः सौ घडे होते हैं जिसके चालीस बरसमें एक लाख चवालीस हजार घडे पानीके हुए. नित्य दोनों बारमें मिलाकर मुझे चालीस बर्तन मलने पडते हैं. इस हिसाबसे एक महीनेमें बारह सौ, सालभरमें चौदह हजार चार सौ, और चालीस बरसमें पांच लाख छिंतर हजार बरतन मलने पडेंगे. अब जरा तुम विचार तो करो कि, मैं अकेली चौदह हजार चार सौ धडी अनाज कैसे पीससकूंगी, एक लाख चवालीस हजार घडे पानी मुझसे कैसे भराजायगा, और पांच लाख छिंतर हजार बरतन मुझसे कैसे मलेजायंगे ? इतना काम तो मेरे बापका बाप और उसकाभी बाप आजाय तबभी पूरा नहीं पड-सकता. फिर देखो ! वह ब्राह्मण कहगया है कि तुम्हारे १४ लडके होंगे. अभी तो एकही बालक तीन महीनेका मेरे पेटमें है इसीमें मैं मरने पडी हूं तब चौदह बालक ! इतना दुःख तो मुझसे कभी सहन नहीं होगा इससे तो मरजाऊं तोही अच्छा !"

यह सुनकर पति बोला "रांड दीवानी! पागल होगई है क्या? यह सब काम तुझको एक दिनमें थोडाही करना है? क्या चौदह बालक तू एकसाथ जनेगी? तुझको तो नित्यके योग्यही काम करनाहै ना? इसमें इतना लंबा हिसाब लगानेकी जरूरत क्या है?"

स्त्रीने उत्तर दिया "तब तुम लडकोंकेभी लडकोंकी चिंता क्यों करतेहो? जैसे मेरा काम नित्यकी आवश्यकताका नित्य होता जायगा वैसेही तुम्हारे दुःखभी नित्य २ थोडे २ होते जायँगे जिसकी तुमको खबरभी नहीं पडेगी. आगेके दुःखोंको याद करक-रके वृथा क्यों दुःख उठातेहो? ईश्वरकी इच्छाके अधीन होजाओ तो दुःख आपोंआप घट जायँगे.

बुद्धिमान् स्त्रीका उपदेश उसपर काम करगया. उसी दिनसे उसने आगे होनेवाले कामोंकी चिंता करना छोडदिया. इसी तरह हमकोभी वृथाकी चिंता छोड देना और जैसे ईश्वर रक्खै वैसे रहना चाहिये. ईश्वरकी इच्छाके भलीभांतिसे सरलतापूर्वक अधीन होनाही सच्ची भक्ति है और यही व्यावहारिक तथा मानसिक दुःखोंसे बचनेका अच्छेमें अच्छा मार्ग है.

१२४ दुःखसे दुःखित मत हो! समुद्रके उतार और चढा-वकी तरह दुःख और सुखभी जितनी तेजीसे आते हैं उतनीही तेजीसे चलेभी जाते हैं.

एक मनुष्यने समुद्र कभी नहीं देखा था. संयोगवश वह एक-वार समुद्रके किनारे बंदरपर चला गया. वह बंदरपर गया तब चढावका समय था. समुद्रका पानी बडे जोरसे उछलता और आगे बढता जाता था. यह देखकर उसको बडा भय हुआ. वह विचा-रने लगा कि, ऐसा न हो कि पानी इसी तरह बढता जाय तो सारा नगरही बहजाय. उसने यह बात अपने एक मित्रसे कही.

मित्र समुद्रके चढाव उतारकी वात जानता था. उसने उत्तर दिया "तुम घवराओ मत! समुद्रके चढने उतरनेकीभी सीमा है. समुद्रका चढना नगर डुवानेके लिये नहीं है, किंतु पानी साफ रखने और कितनेही दैवी नियमोंमें सहायता देनेके लिये समुद्रमें चढाव और उतार हुआ करता है. इस समय यह पानी जैसा जोरसे आगे वढता है थोडी देरमें वैसाही जोरसे पीछेभी हट जायगा."

इसी तरह हमारे दुःखभी जितने जोरसे आते हैं उतनेही जोरसे चलेभी जाते हैं. सुखकीभी यही दशा होती है. सुख और दुःख हमारी परीक्षाके लिये हैं हमारे नाशके लिये नहीं! इससे दुःखसे घवराना नहीं और सुखसे पागल वनजाना नहीं चाहिये, परंतु जैसे पर-.र रक्खे वैसेही रहना चाहिये. भगवान्‌ने गीतामें कहा है:-

"मात्रास्पर्शास्तु कौंतेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत॥"

गी० अ० २. श्लो० १०.

अर्थ-हे अर्जुन! इंद्रियोंको ठंड गरमी आदि लगनेसे सुख दुःख होता है. ये तो आने और जानेके स्वभाववाले हैं. इस लिये हे अर्जुन! इस थोडी देरके सुख और दुःखको तू सहन कर!

ईश्वर इस तरह हमको सुख और दुःख सहन करनेकी स्पष्ट आज्ञा देता है. इस लिये ईश्वरकी इच्छाके अधीन होकर हमको सुख और दुःख चुपचाप सहन करने चाहिये. जैसे समुद्रमें चढाव और उतार हुए विना काम नहीं चलता वैसेही जवतक शरीर है तवतक दुःखभी हुए विना नहीं रहेंगे और उनको भोगे विना छुटकाराभी नहीं है. तव ईश्वरकी इच्छाके विरुद्ध रोरोकर भोगनेसे तो ईश्वरकी इच्छाके अधीन होकर स्वाभाविक रीतिसे भोगनाही हजारगुना अच्छा है. व्यवहारी लोगोंमें और जनोंमें यही

भेद है कि, अज्ञानी लोग हर्ष शोकके अधीन होकर सुखदुःख भोगतेहैं और ज्ञानीजन भगवत्‌की इच्छा समझकर समदृष्टिसे सुखदुःख भोगते हैं. यही भक्तोंका विशेष गुण है. इसलिये भाइयो ! इस विशेषगुणको प्राप्त करनेका यत्न करो !

१२५ जूतेमें कंकर भरजानेसेही जब हम आगे नहीं चलसकते, तब हृदयमें पाप भरे रहनेसे ईश्वरीय मार्गमें कैसे चला जासकताहै ?

शिष्यने गुरुसे पूँछा " महाराज ! पाप ईश्वरीयमार्गमें आगे नहीं बढने देता इसका क्या कारण है ? "

गुरुने उत्तर दिया " बेटा ! हमारे जूतेमें एक छोटासा कंकर आजाताहै उसकोही निकाले विना हम अच्छीं तरहसे आगे नहीं बढसकते, तब पाप भरे हृदयसे हम कैसे आगे बढसकते हैं ? "

कंकरसेभी पाप कितनी बुरी वस्तु है और जूते तथा पैरके तलुएसे हृदय कितनी कोमल वस्तु है, इसकाभी तो विचार करो ! यह तो सोचो कि हमारे यहांकी सडकोंसे ईश्वरीय मार्ग कितना तंग और कठिन है ? एक छोटीसी कंकरीवाला जूता पहनकर हम दसबीस कदमभी नहीं चलसकते तब अपने हृदयमें हजारों पाप भरके करोडों योजनका ईश्वरीय मार्ग क्योंकर चलसकेंगे ? भगवान्‌ने गीतामें कहाहैः—

"लभते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥"

अ० ५. श्लो० २५.

अर्थ—जिसके पाप कटगये हैं, जिसके संदेह मिटगये हैं, जिसका मन अपने वशमें है और जो प्राणिमात्रका भला चाहनेवाला है वही भक्त भक्ति पाताहै.

भाइयो ! भगवान् स्पष्ट कहते हैं कि, जिसके पाप कटगये हों

वही मुक्ति पाताहै. पापको हृदयमें भररखनेसे कोईभी शांति नहीं पासकता. यही सब शास्त्रोंका और सब महात्माओंका सिद्धांत है, और हम लोगोंकेभी थोडे वहुत अनुभवसे यही सिद्ध होताहै; इस लिये भाइयो ! जैसे वने वैसे पापको छोडनेका यत्न करो ! यही जीवनकी सार्थकता है, इसीका नाम पुरुषार्थ है, यही मनुष्यके मनुष्यत्वकी कसोटी है, इसीसे देवता प्रसन्न होते हैं, इसीसे अंतःकरणकी शांति होती है, इसीसे स्वर्ग मिलसकता है, इसीसे ईश्वरकी कृपा प्राप्त होसकती है, इसीसे कृतकृत्य होना वनता है, इसीसे मोक्ष मिलसकती है, इसलिये जैसे वने वैसे सच्चे दिलसे पापको छोड दो ! पापको छोडदो ! !

१२६ मरे पीछे हमारे हीरे मोती और भोगविलास काम नहीं आवेंगे, केवल धर्मही तव काम आवेगा.

हमको विचार करना चाहिये कि, जिसके लिये हम इतनी दौडधूप करते हैं, जिसके लिये हम इतने मरते पचते हैं, जिसके लिये इतना झगडा झेलते हैं और जिसके लिये अनेक प्रकारके दुःख भोगते हैं, वह धन हमारे साथ चलैगा या नहीं ? नहीं भाई नहीं ! हमारे साथ कुछभी नहीं जायगा ! हमारे महंगे कपडे और कीमती जेवर यहीं पडे रहजायँगे, हमारे खजाने, हमारे नोट, हमारे चेक, हमारे सोनेके कडे, हमारी मोतियोंकी माला और हमारी पानीदार चमकतीहुई हीरेकी अँगूठियां यहीं पडी रहजायँगी, उनमेंसे राईभर हिस्साभी हमारे साथ नहीं जानेका. हमारे वडे वडे भपकेदार मकान, वाग वगीचे, हमारे कीमती अरवी घोडे और हमारी झूलती हुई रवरटायरके पहियोंकी फिटन गाडियांभी हमारे साथ नहीं जायँगी, ये सव वाहरी चीजें हैं, इससे ये तो साथ नहीं ही चलसकतीं परंतु हमारा शरीर, कि जो साथ आयाथा, वहभी साथ नहीं जायगा, वहभी यहांही पडा रहजायगा तव औरोंकी तो गिनतीही क्या ? वहां तो

केवल भक्तिही साथ जायगी. वहां तो केवल धर्मही साथ जायगा. वहां तो केवल पवित्र परमेश्वरका नामही काम देगा !

मरे पीछे हमारी यहांकी सैकडों प्रकारकी मौजशोकमेंसे वहांपर एकभी काम नहीं आवेगी. केवल इन मौजशौककी ज्वाला हमको जलानेकाही काम करैंगी. भाइयो ! जहांतहांसे जितना बनसकै उतना परमार्थ करो और लिया जाय उतना भगवान्का नाम लो !. अंतकालका यही धैर्य है, अंतःकरणकी यही शांति है और हमारे आचरण सुधारनेका यही उत्तम उपाय है. यही एक ऐसी वस्तु है जो मरे पीछेभी हमारे साथ चलैगी. इस लिये भाइयो ! प्रेमपूर्वक भक्ति करो! भक्ति करो !! और प्रभुकी शरण गहो !!!

२६ पद।

कहा करत फिरत जगमेला, आइया हरि भजिवेकी बेला ॥ टेक ॥ आप तो दूल्हो बन्यो फिरत तू दम आन ना देवै धेला। वा दिनकी सुधि नाहिं करत तू उडिज्या हंस अकेला ॥ १ ॥ नरतनु पाय आय जग प्यारे, सतकी बाजी न खेला। असतमाहिं वोह फैंकत पासे, सार न जहँ सुन हेला ॥ २ ॥ रामजीवन अबहूँ सुधि करिले, बिगरयो है एक धेला । साफ दिवालो निकल जाय तब, परिहैं बहोत झमेला ॥ ३ ॥

१२७ हम समुद्रका मार्ग नहीं जानते तबभी कप्तानपर विश्वास करके जहाजमें सवार होते हैं, वैसेही ईश्वरपर विश्वास करके भक्तिरूपी जहाजमें बैठजाओ।

हम समुद्रका मार्ग नहीं जानते, जहाज चलानेकी विद्या नहीं जानते और कप्तानको भी नहीं जानते तबभी कप्तानका विश्वास करके जहाजपर सवार होते हैं और उसमें निश्चिंत होकर सो भी जाते

हैं. मार्गमें बुरी २ जगह आवैं, बडी २ लहरें आवें और कहींभी किनारा दिखाई न दे तबभी हम घबराते नहीं हैं. कारण हम मार्ग नहीं जानते तो क्या हुआ परंतु कप्तान तो जानता है और कप्तानपरही हमको भरोसा है कि, वह नियत समयपर हमारे इच्छित स्थानपर पहुँचादेगा.

इसी तरह हम सरल हृदयसे ईश्वरको कप्तान बनावे और ईश्वरपरही भरोसा रक्खैं तो संसारसागरको तैरजाना कुछ कठिन नहीं है परंतु यह बात तबही हो सकती है जब हम ईश्वरको तो अपना कप्तान बनावे और भक्तिरूपी नावमें हम सवार होजाय. भक्तिरूप नावमें बैठे पीछे मुकामपर पहुँचनेमें कुछभी देर नहीं लगती परंतु मुख्य बात यह है कि, जैसे बनै वैसे झटपट उस नावमें बैठजाना चाहिये. यह निश्चय समझो कि, भक्तिरूपी नावमें बैठे बिना संसारसागर पैरनेमें नहीं आता इसलिये जो जल्दी मुकामपर पहुँचना हो, जल्दी घर पहुँचना हो तो भक्तिके जहाजमें बैठजाओ ! उसमें देर न लगाओ भाइयो ! उसमें देर न लगाओ !

पद ।

हरिसे कोई नहीं बडा दीवाने, क्यों गफलतमें पडा ॥
॥ टेक ॥ प्रह्लाद बेटा हरिसों लिपटा, तबही खंब कड-
कडा ॥ दीवाने० ॥ १ ॥ गोपीचंद रु भरतरी राजा माल
मुलक छोडा ॥ दीवाने० ॥ २ ॥ पुंडरीकने सेवा कीनी,
विट्ठल वहांपर खडा ॥ दीवाने० ॥ ३ ॥ कहत कबीर
सुनो भाइ साधो ! हरिचरण चित चडा ॥ दीवा० ॥ ४ ॥

१२८ जैसे तिलमें तेल है परंतु दबानेसे निकलताहै, वैसेही हमारे हृदयमें भक्ति है सो भगवत्सेवा करनेसे बढतीहै.

तिलोंमें तेल अवश्य है परंतु निकलता तबही है जब तिलोंको

कोल्हूमें डालकर दवायाजाताहै. गन्नेमें रस है परंतु गन्ना पेचमें रखकर दवाया जाय तव ही रस निकलताहै और तवही उसका गुड तथा शक्कर वनसकती है. जो ऐसा न किया जाय तो समय निकल-जानेपर गन्नेका रस सूखजाय. दियासलाईमें आग है परंतु घिसनेसे पैदा होती है. औषधोंमें रोग मिटानेकी शक्ति है परंतु उनको पहँ-चानकर विधिपूर्वक काममें लानेकी आवश्यकता है. तेलमें प्रकाश करनेकी शक्ति है परंतु प्रकाश तवही हो सकताहै. जव उसमें वत्ती रखकर जलाई जाय. सूरजमें ठंड मिटानेकी शक्ति है . परंतु उसकी धूपमें जाकर वैठनेहीसे ठंड मिट सकती है. वैसेही हमारे हृदयमेंभी दैवी रीतिसे भक्ति और परमेश्वर दोनों हैं परंतु यत्न करके सत्संग, ज्ञान, ध्यान, नामस्मरण, परमार्थ और प्रभुसेवा की जाय तवही वे प्रकट हो सकते हैं.

हमारे हृदयमें हैं तवतक वे वीजरूप हैं. उस वीजका वृक्ष उगाना चाहिये तवही फल मिल सकता है. वीजको वीजरूपही रखछोडनेसे फल नहीं मिलता किंतु उसका वृक्ष हो तवही फल मिलसकता है. वनै जैसे हमको भक्ति वढानी चाहिये. भक्तिको वढानेका नामही पुरुषार्थ है, भाइयो ऐसा काम करो जिसमें हमारेमें और दुनियामें भक्ति वढै इसीका नाम कर्तव्य है इसीका नाम ईश्वरकी कृपा है और इसीमेंसे मोक्ष है. इस लिये सदा भक्ति वढानेका उपाय करो !

१२९ वकीलको अपना मुकद्दमा सौंपदेते हो उससे तो ईश्वर अनंतगुना समर्थ है. तव ईश्वरपरही क्यों नहीं छोडदेते ?

जव हम वीमार होते हैं तो दवा लेते हैं. उस दवाको हम नहीं जानते, स्वादभी उसका अच्छा नहीं होता और कईवार हम

दवा देनेवाले उस वैद्यकोभी नहीं पहँचानते. तबभी हम नीरोग होनेकी आशासे विश्वास रखकर दवा। ले लेते हैं, और जो कभी डाक्टर हमारे नश्तर लगावे, प्लास्टर लगावे अथवा हाथ पैरभी काट डाले तो हम उसकोभी अपने भलेके लिये स्वीकार कर लेते हैं. जो पढते २ भी कभी पूरा नहीं होता ऐसे वैद्यकशास्त्रके आधारपर अजाने डाक्टरको अपनी तंदुरुस्ती सोंपदेनेमें हम नहीं हिचकिचाते और अजानी कडवीकसेलो दवाइयां पीजानेमें हमको कुछ अडचन नहीं जानपडती, तथा मकडीके जालेकी तरह क्षणभरमें टूटजानेवाले कानूनकी जालमें फँसे हुए और हमाराही पाकेट खाली करनेवाले किसी वकीलको अपना मुकद्दमा सोंपदेते अथवा वैसेही किसी चालबाजको अपना मुख्तार बनाते हमको कुछभी विचार नहीं पडता, कुछभी चिंता नहीं होती, परंतु हमारी मूर्खता तो देखो कि, प्रभुको अपना केस सोंपदेनेमें अर्थात् ईश्वरकी इच्छाके अधीन होजानेमें हमारी हिम्मत नहीं चलती !

क्या यह शोककी बात नहीं है कि, हम एक वकील या एक डाक्टर जितनाभी ईश्वरका भरोसा नहीं करते ? प्रत्येक ईश्वरीय जीवको इतना तो माननाही चाहिये कि, वैद्यक तथा कानून और अन्यान्य किसीभी विषयकी अपेक्षा ईश्वरके दिये हुए धर्मशास्त्र अधिक बलवान् हैं और हमारे अच्छेसे अच्छे वैद्य और प्रामाणिकसे प्रामाणिक वकीलकी अपेक्षा ईश्वर अनंतगुना अधिक समर्थ है, उसके भरोसेपर अपना केस छोडदेनेमें कोईभी हानि नहीं है. इस लिये जैसे बनै वैसे ईश्वरकी इच्छाके अधीन हो प्रभुमय बनजाना चाहिये और प्रभुमेंसेही जीवन प्राप्त करना चाहिये. शास्त्रोंकी यही आज्ञा है, महात्माओंका यही उपदेश है, ईश्वरकी यही इच्छा है और सचे भक्तोंकीभी यह चाल है कि, प्रभुपरायण रहना, इसलिये भाइयो ! ईश्वरसे ईश्वरकी इच्छाके अधीन होनेका बल प्राप्त करो !

१३० भक्तिरूपी बाजारमेंसे ईश्वररूपी रत्न खरीदो[1]!

साधुओंका कथन है कि, भक्तिभी एक प्रकारका बाजार है. जैसे बाजारमें साग तरकारी, कपडे जवाहिरात आदि वस्तुएँ मिलती हैं वैसेही भक्तिसेभी अपनी २ भावनाके अनुसार सब चीजें मिलसकती है. व्यावहारिक बाजारकी तरह भक्ति अंतःकरणका बाजार है. जिसमें हमारी भावनाके अनुसार फल मिलताहै, मनुष्यको बाजार विना अर्थात् लेन देन किये विना काम नहीं चलता वैसेही भक्तिके बाजारमेंभी सब चीजोंकी लेन देन होती है उनको और मनुष्य अपने २ शौकके अनुसार अर्थात् अपने २ अधिकारके अनुसार खरीदताहै, जैसे किसीको साग तरकारी अधिक पसंद होती है. किसीको फूल अच्छे लगते हैं, किसीको कपडे लत्ते पसंद होते हैं, और किसीको गहने अच्छे लगते हैं. वैसेही भक्तिमेंभी किसीको व्यावहारिक सुख अच्छे लगते हैं, किसीको ऋद्धि सिद्धिके चमत्कार प्राप्त करना अच्छा लगताहै. किसीको स्वर्ग पानेकी इच्छा होती है और किसीको ईश्वरमय होजाना प्रिय लगताहै.

बाजारमें जैसे हीरे खरीदनेमें अधिक पैसेकी आवश्यकता होती है वैसेही ईश्वरतत्त्वकी खरीद करनेमेंभी अधिक भक्ति खर्च करनी पडती है. भक्तिमें जो भेद हैं और भक्तोंके जो दरजे हैं वे येही हैं कि कोई तो साग तरकारी खरीदकर प्रसन्न होजाताहै, कोई फूल माँगताहै, और कोई मोती खरीदताहै. परंतु सब रत्नोंमें एक प्रभुही सबसे सच्चा और उत्तम रत्न है. इसलिये भक्तिके बाजारमें यही रत्न खरीदनेकी इच्छा रक्खो! साग तरकारीजैसे दूसरे व्यावहारिक सुखोंमें आसक्त न हो और उन्हीमें तृप्ति न मान बैठो! किंतु भक्तिसे भगवान्‌को पानेकी प्रबल इच्छा रक्खो!

---

१ मेस्मेरिज्मके प्रयोगमें भक्तिके विषयमें प्रश्न करनेपर विधेयने यह उत्तर दिया था.

२७ पद ।

गोविंद गाव मन गोविंद गाव, हरिनाम जपिवेको योही दाव ॥टेक॥ नरतन विन योह छिन नहीं पावै, औसागर तरिवेको यही है नाव ॥ १ ॥ जप तप तीरथ नेम धरम करि, पर प्रभुको मत विसरै भाव ॥ २ ॥ हरिगुन गान करहु निशिवासर, जासों मिटै काम क्रोधको घाव ॥ ३ ॥ रामजीवन इमि जीवन सफल करि, अंत समय वैकुंठको जाव ॥ ४ ॥

१३१ ईश्वरकी आज्ञाके विरुद्ध चलनेवाले पापियोंकी जातें.

जैसे पाप वहुत जातके हैं वैसेही उन पापोंको करनेवाले पापियोंकी जातेंभी कई हैं. जैसे कोई अपनी मूर्खतासे पाप करताहै, कोई पाप करके फूलताहै, कोई वहुत दुःखित होजानेपरभी पाप कियाही करताहै, कोई जानवूझकर पाप करताहै और कोई विना नथे नारे (वैल) की तरह मस्त होकर वेपरवाहीके साथ पापहीपापमें जीवन व्यतीत करताहै.

इन सव पापियोंके ज्ञानियोंने पांच भाग किये हैं:—

१ मूर्खपापी, २ अभिमानीपापी, ३ हठीलापापी, ४ ज्ञानी पापी और ५ ईश्वरका छोडाहुआ पापी. इन पापियोंको पहँचाननेके लिये और पापका स्वरूप पहँचानकर उनसे वचनेके लिये हमको इन पांचों प्रकारके पापियोंका कुछ हाल जानना चाहिये.

१३२ मूर्ख पापी १.

मूर्ख पापी वह है जो पराया माल खनेसे राजी होताहै, परंतु यह नहीं समझता कि, यह पच कैसे सकैगा ! याद रक्खो कि, कसेली वस्तु खानेवालेको अवश्य वमन करनाही पडता है वैसेही जो मूर्ख दूसरोंके माल खानेमें प्रसन्न होताहै उसको किसी न किसी

दिन वमनही करना पडैगा. उसको खायाहुआ सूदसहित पीछाही देना पडैगा. हरामका खाना सो कसेला खानेके समान है. खानेमें खीर बहुत अच्छी लगती है परंतु जो उसमें मक्खी गिरगयी होगी तो केवल वह खायी हुई खीरही पीछी नहीं निकलैगी किंतु साथमें महीने दोमहीने पहले तकका खायाहुआभी निकल जायगा, वैसेही पराया माल खाना हमको इस समय तो अच्छा लगता है परंतु उसमें पापरूप मक्खी है सो उसको हजम नहीं होनेदेगी जो इस वातको नहीं समझते और पाप करते हैं वे मूर्ख पापी हैं.

१३३ अभिमानी पापी २.

अभिमानी पापी वह है जो पाप करके फूलता है. उसको कसाईके मोटे वकरेकी तरह समझना. कसाईके वकरेकी तरह ऐसे पापीका फूलनाभी उस अभिमानीके नाशकेही लिये है. ऐसा नहीं समझना चाहिये कि, ऐसे अभिमानी पापी थोडे होते हैं. हमभी तो वैसेही हैं. हमभी तो किसीकी निंदा करके, किसीकी हानि करके किसीको पीटकरके, किसीके पेटपर पैर रखके, किसीका अपमान करके और किसीसे कठोर वचन कहकरके मनमें फूलते हैं और दूसरोंके आगे अपने ऐसे पराक्रमोंकी वडाई मारते हैं, परंतु यह नहीं समझते कि इस प्रकारके ईश्वरको अच्छे न लगनेवाले काम करना पराक्रम नहीं किंतु पाप कहलाता है. ऐसे पापियोंको शास्त्रमें अभिमानी पापी कहा है. प्रथम तो अभिमान करनाही पाप है और फिर पापका अभिमान करना पापका भी पाप है अर्थात् सवसे वडा पाप है. जो लाचारीसे अथवा भूले चूके कोई पाप होजाय तो हमको उसके लिये पश्चात्ताप करना चाहिये, क्योंकि पश्चात्तापकी आगसे पापकी कठोरता पिघलसकती है, परंतु पापका अभिमान करके उसे और दुगुना कभी नहीं करना चाहिये. पापके कामोंसे फूलकर हमको कसाईका वकरा कभी नहीं वनना चाहिये. इतना वन

सके तवभी पाप आधे रहजाते हैं. इसलिये भाइयो ! पापका अभिमान मत करो !

१३४ हठीला पापी ३.

अपने पापसे आपही दुःख पावे. अपनी आँखोंसे देखे और समझे तवभी पापको न छोडे वह हठीला पापी कहलाता है. जैसे शहदको खूब गरम करलिया जाय तवभी रीछ उसमें मुँह डाले विना नहीं रहता. उससे मुँह जल जाता है, कष्ट उठाना पडता है और हैरान होना पडता है तवभी वह उसमें मुँह डालताही है. रीछ जैसे एकवार जलजानेपरभी नहीं मानता और उसमें मुँह डालताही है वैसेही हठीले पापीभी अपने पापसे कष्ट पानेपरभी पापी हठको नहीं छोडते. जुआरी लोग जानते हैं कि जुआ खेलनेसे खरावी होती है तवभी जुआ खेलना नहीं छोडते. व्यभिचारी जानते हैं, देखते हैं, समझते हैं और भुगतते हैं कि व्यभिचारसे हमारे देहकी, प्रतिष्ठाकी और पैसेकी खरावी होती है और धर्म-भरसे हम विमुख होते हैं तवभी वे व्यभिचारको छोडते नहीं हैं. शरावी जानते हैं कि, शराव पीनेसे शरीर, मन और पैसेकी खरावी होती है और इज्जत आवरू तथा ईश्वरीज्ञानका सत्यानाश होता है तवभी शराव पीना नहीं छोडते. जातके पंच पटैल लोग जानते हैं कि, हम, वहुतसी वातें अनुचित करते हैं, अपने अधिकार और स्वत्वका दुरुपयोग करते हैं और वहुतसे गरीव जातभाइयों तथा विधवाओंके हमपर विश्वास पडते हैं, तवभी वे अपनी पटैलाई नहीं छोडते. मूँजीलोग समझते और देखते हैं कि, आजतक इस संसारमेंसे कोईभी अपने साथ धूलकी एक चिमटीतक नहीं ले गया और न ले जायगा, तवभी वे अपने लोभको मूंजीपनको नहीं छोडते. कारण यह है कि, वे हठीले पापी हैं. इससे इस वातकी सँभाल रक्खो कि, हमभी अपनी हलकीसी वातोंके लिये पापमें न पड जाँय, ऐसे हठीले पापी न वन जाय !

१३५ ज्ञानी पापी ४.

हाथमें चिराग लेकर जो कुएमें गिरता है वह ज्ञानी पापी कहलाता है. जो सुनै सब कुछ, समझै सब कुछ परंतु करै कुछभी नहीं, वह ज्ञानी पापी कहलाता है. वैसे आदमी बातें बडी २ मारते हैं, उपदेश बडे २ करते हैं और ऊपरसे ढोंगभी बडे २ दिखाते हैं, परंतु अंतःकरणमें तो 'ढोलके अंदर पोल' ही होती है. और लोग तो अँधेरा होनेसे कुएमें गिरते हैं परंतु ज्ञानी पापी हाथमें मशाल लेकर कुएमें गिरते हैं. और तो अज्ञानसे, कुसंगसे, अथवा अकस्मात् भूलचूक कर मरते हैं परंतु ज्ञानी पापी तो मानो आत्मघातही करते हैं. दूसरे पापियोंमें और ज्ञानी पापियोंमें भेद इतना है कि ज्ञानीपापी तो अंधेके समान हैं और ज्ञान उनके हाथकी मशाल है परंतु अंधेको जैसे मशाल काम नहीं देती वैसेही उन ज्ञानी पापियोंको उनका ज्ञान काम नहीं देता, क्योंकि जो ज्ञान पापसे बचानेवाला है उसी ज्ञानसे वे अधिक पाप करते हैं. यह एक बडा प्रश्न है कि, पापको जानकरभी लोग पाप क्यों करते हैं? परंतु महात्माओंका कथन है कि, ज्ञान दुधारे खांडेके समान है कि जिससे हमारे बंधन कटते हैं और हमारा शिरभी कटसकता है. ज्ञानरूपी तलवारको काममें लाना उस आदमीके हाथमें है जिसके पास वह है. भक्तलोग ज्ञानरूपी तलवारसे अपने कर्मोंके बंधनको काट डालते हैं और ज्ञानी पापी उसी ज्ञानरूपी तलवारसे अपने हृदयमें घाव कर देते हैं. ज्ञानी भक्त और ज्ञानी पापीमें यही अंतर है कि, ज्ञानी भक्त तो तैर जाते हैं और ज्ञानी पापी डूब जाते हैं. इस लिये भाइयो! इस बातकी पूरी २ संभाल रखना कि, मूर्ख रहजाओ तो कुछ चिंता नहीं परंतु ज्ञानी पापी मत होना!

१३६ ईश्वरके छोडे हुए पापी ५.

जो सब प्रकारके पाप करते हैं, जो किसीभी प्रकारका पाप

करते हिचकिचाते नहीं, जिनको पापका कुछभी डर नहीं लगता, जो पाप करनेमें पीछे फिरकर नहीं देखते और जिनकी अच्छा बुरा समझनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है उनको साधु लोग ईश्वरके छोडे हुए पापी कहते हैं. ईश्वरकी दयामेंसे निकले हुए जीवको ईश्वरका छोडा हुआ पापी कहते हैं. प्रभुकी सामान्यदयामेंसे तो कोईभी नहीं निकलसकता परंतु जीवोंपर और उनमेंभी विशेषकरके मनुष्यजातिपर परमेश्वरकी विशेष दया है और भक्तजनोंपर तो सबसे अधिक दया है. उस विशेष दयामेंसे ईश्वरके छोडे हुए पापी निकल जाते हैं; कारण यह कि मूर्खपापी अभिमानी पापी, हठीले पापी, और ज्ञानी पापी तो कोई २ सेही पाप करते हैं किंतु ईश्वरके छोडे हुए पापी तो सब प्रकारके अघोर पाप वेधडक होकर करते हैं और उनके लिये उनको कभी पश्चात्ताप नहीं होता. ऐसे पापी किसीभी तरह सुधर नहीं सकते. ऐसे पापी व्यवहारमें सुखी देखे जाते हैं जिससे लोगोंको वडा आश्चर्य होता है और वारंवार ऐसा प्रश्न किया करते हैं कि ' धर्मीको धक्के और पापीको पैसे ' क्यों मिलते हैं ? इसके उत्तरमें साधुलोग ऐसा कहते हैं कि ईश्वरकी कृपामेंसे छूटे हुए पापी मनुष्यको उसके पहलेके किये हुए अच्छे कर्मोंका फलभी ईश्वर उसी समय दे देता है जिसमें उसके लिये नरकका मार्ग बिलकुल खुल जाता है. इस जन्मके सुकर्म, पूर्वजन्मके सुकर्म और पूर्वजोंके सुकर्म नरकके मार्गमें अडचन करनेवाले होते हैं. इस लिये ऐसे नरक योग्य पापी जीवोंको भगवान् उनके कर्मोंका नकद फल चुका देता है जिसमें चटपट उनको नरकमें भेजा जा सके. इस तरहके ईश्वरकी दयामेंसे निकले हुए पापीजीवोंको ईश्वरके छोडे हुए पापी कहते हैं. ऐसे पापियोंको वडीसे कडी सजा होनेवाली है इसीसे ईश्वर उनको इस समय छोटी मोटी सजा नहीं करता इस कारणसे वे अपने पापोंमें मस्त रहते और संसार, धर्म तथा ईश्वरकी परवाह

नहीं करते. ऐसे ईश्वरके छोडे हुए पापी संसारमें जीते हुए यम-दूतके समान हैं, परंतु हमपर इतनी ईश्वरकी दया है कि ऐसे पापी होते थोडेही हैं. ईश्वरसे हमारी यही प्रार्थना है कि ऐसा पापी कोई न हो !

१३७ हम ईश्वरसे कितने विमुख हैं ? चाह पीनेकी नित्य इच्छा होती है वैसे सत्संग करनेकीभी इच्छा होती है ?

हम ईश्वरसे कितने विमुख हैं सो तुम जानतेहो ? काचमें मुँह देखकर हम जितने फूलते हैं उतने कभी शास्त्रोंको देखकरभी फूलतेहैं ? नये बूट पहनकर हम जितने प्रसन्न होते हैं उतने अतिथिका सत्कार करनेमेंभी प्रसन्न होते हैं ? बीडी (तंबाकू) पीकर उसके धुओंसे खेल करनेमें हमको जितना आनंद आताहै उतना आनंद देवदर्शन करनेमेंभी कभी आताहै ? चा पीनेकी जैसी हमको नित्य इच्छा होती है वैसी सत्संग करनेकीभी कभी इछा होती है ? नाटक देखनेका जैसे वारवार मन होता है वैसे प्रभुनिमित्त व्रत उपवास करनेकाभी कभी मन होता है ? राज्यकी पदवियां प्राप्त करनेकी जैसे इच्छा होती है वेसे भगवान्‌की पदवियां प्राप्त करने अर्थात् भक्त बननेकी भी कभी इच्छा होती है ? लडके लडकियोंके विवाह करनेकी जैसे उतावली पडती है वेसे परमार्थके काम करलेनेकी कभी उतावली पडती है ? समाचार पत्र पढनेका जैसे शौक होताहै. वैसे शास्त्रोंका रहस्य समझनेकाभी कभी शौक होताहै ? हमारे बहुतसे शौकीनी जीव नित्य उठकर प्रातःकालही जैसे नाईके आगे शिर झुकाते हैं वेसे ईश्वरके आगेभी कभी शिर नवाते हैं ? कहो कि नहीं ! ऐसे ' ठनठन पाल मदन गोपाल ' जैसे सूखे साखे रहनेसे ईश्वरकी कृपा क्योंकर प्राप्त होसकेगी ? इसकाभी तो विचार करो !

१३८ सच्चे बहादुर कौन भक्त या योधा ?

सैनिक कर्मचारियोंमें एकवार यह प्रश्न उठा कि, सच्चा बहादुर कौन ? तव किसीने उत्तर दिया कि, सिंहके साथ लडे सो बहादुर, किसीने कहा कि तोपके गोलेके सामने जाय सो बहादुर, किसीने कहा कि, जो सबसे अधिक शत्रुओंको मारे सो बहादुर, किसीने कहा कि, जो छातीमें घाव सहे और पीठ न दिखावे सो बहादुर, किसीने कहा कि, जिसके घावको शत्रु सराहे सो बहादुर, और किसीने कहा कि शिर कटजानेपर भी जिसका धड लडता रहै सो बहादुर है. इतना सुनकर वहां बैठा हुआ एक बावा साधु बोल उठा कि " आप लोगोंका यह सब कहना ठीक है परंतु सच्चा बहादुर तो इनसे जुदाही होताहै. "

साधुकी इस बातपर एक सैनिक बिगड उठा और बोला " तुम वैरागी लोग बहादुरीमें क्या समझो ? शिर कटजानेपरभी धड लडता रहै इससे बढकर बहादुरी संसारमें और क्या हो सकती है ? "

साधुने कहा" यह बहादुरी सच्ची है परंतु है वह थोडीही दरकी ! सच्ची बहादुरी तो भक्तोंकी है, जिनको जीवनभर संसारके लालचों और पापोंसे लडाई करते रहना पडता है. तुम्हारी लडाई तो पांच दस वरसमें कभी होती है और वहभी थोडेही समयतक ठहरती है, परंतु भक्तोंकी लडाई जीवन भर और अनेक जन्मोंतक रहती है इससे सच्ची बहादुरी तो भक्तोंकी है. इसके लिये वैष्णव गाते हैं. "

२८ पद ।

संत जगतमधि शूरा जांका बाजत ताल तंबूरा रे ॥
॥ टेक॥ शेर हतेहू नाहिं शूरमा, जो अंगनाहग धूरा रे ।
नैनबान लागतही लोटे, तनकी शुद्धि बिसूरा रे॥ १ ॥
संत सवार होय सत ऊपर, सतगुरु शब्द सो पूरा रे ।

काम क्रोध मद लोभ मोह हनि, कीन्हो चूरा चूरा रे ॥ २ ॥ पांच पछारि पांय मधि डारे, आन भागगये दूरा रे । विजय पाय वैकुंठ सिधारे, पायों चतुर्भुज नूरा रे ॥ ३ ॥ रामजीवनपै कृपा करो सोऊ; मो सम आना न कूरा रे । अलख निरंजन लखो ताहिसों, ब्रह्मानँद भरपूरा रे ॥ ४ ॥

यह सुनकर. सब सैनिक बोल उठे "महाराजने तो खूब कहा ! हमारी बहादुरी तो किसी गिनतीमें नहीं ! सच्ची बहादुरी तो ईश्वरके कृपापात्र भक्तकीही है ! इसलिये भाइयो ! भक्त बननेकी कोशिस करो !

१३९ आफ्रिकाके जंगली दो चार पैसेके खिलौनेके लिये सोनेकी रेत देदेते हैं, वैसेही भक्तिका बदला माँगना हीरा देकर राखकी पुडिया लेनेसमान है.

अपनी जराजरासी निर्जीव इच्छाओंको पूरी करनके लिये भक्ति करनां बहुतही नीचे दरजेकी भक्ति है, सच्चे भक्त कभी ऐसी भक्ति नहीं करते. ईश्वरसे यह कहना कि ' तुम हमको अमुक वस्तु दो तो हम तुम्हारे लिये अमुक काम करैं एक प्रकारका ठेका करना है. सच्चे भक्तोंको इस प्रकारका ठेका करनेका विचार कभी स्वप्नमेंभी नहीं आसकता. जो भक्तिके महत्त्वको नहीं समझते वेही इस प्रकारकी हलकी भक्ति करते हैं. भक्ति तो पारसमणि है पारसमणिसे जैसे लोहेका सोना बनजाता है वैसेही भक्तिसे मनुष्य नरसे नारायण होजाता है. नारायण बनना छोडकर क्षणिक सुख माँगलेना तो स्पष्ट मूर्खता है. आफ्रिकाके जंगली लोग कपडेके छोटे २ रूमाल, काँचके खिलौने और पागल बनानेवाले शराब खरीदनेके लिये सोनेकी रेत देडालते हैं उनसेभी बढकर मूर्ख वे

हैं जो धनके लिये, स्त्री पुत्रके लिये, अथवा शत्रुको दवानेके लिये अपनी भक्ति बेचडालते हैं. इसलिये भाइयो ! निरर्थक जंजालरूप राखकी पुडिया लेनेके लिये भक्तिरूप हीरा मत खोडालो ! इसका पूरा विचार रक्खो !

२९ पद ।

कामनासों भक्तिरतन मत खोय, कामनासों भक्तिरतन मत खोय ॥ टेक ॥ प्रभुकी भक्ति भाग्यसों पाई, या तुलना आन न कोय ॥ १ ॥ धन दौलत सुत माल खजाने ये सुपनासम जोय ॥ २ ॥ यासों काज सरत कुछ नाहीं, क्यों बबूल रह्यो बोय ॥ ३ ॥ रामजीवन जीवनफल चहै तो, प्रभुके शरनै होय ॥ ४ ॥

१४० भगवत्सेवा किये विना रूखे ज्ञानसे संसारसागर पार करनेकी इच्छा रखना पैदल चलकर महासागरको पार करनेकी इच्छा रखने समान है.

साधुजन कहते हैं कि, भक्तिसे हृदय भीगे विना केवल रूखे ज्ञानसे कल्याण नहीं होनेका, क्योंकि संसारसागरको पार करनेके लिये भक्तिही एक नाव है और सूखा ज्ञान तो पैदल चलनेके बराबर है. परंतु पैदल चलनेसे समुद्र पार नहीं किया जासकता. महात्मा तुलसीदासजीनेभी कहाहैः—

चौपाई ।

जे अस भक्ति जानि परिहरहीं । केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
ते शठ महासिंधु बिन तरणी । पैर पार चाहत बिन करणी ॥

जो मनुष्य भक्तिको छोडकर केवल ज्ञानकी बातें करके या सुनकेही रहजाते हैं वे मूर्ख मनुष्य जहाजको छोडकर केवल पैदल

चलकेही महासागरको पार करना चाहते हैं, कारण करणी (कर्म) किये विना संसारसागरको पार करनेकी इच्छा रखना पैदल चलकर महासागरको पार करनेकी इच्छा करनेके समान है और वह कभी वनसकनेके योग्य नहीं है, क्योंकि कहाँ तो महासागरका वडापन और कहाँ मनुष्यकी निर्वलता ? अच्छे काम किये विना और सच्चे अंतःकरणसे भगवत्सेवा किये विना संसारसागर कभी पार होही नहीं सकता ! इसलिये भाइयो ! केवल वातोंहीमें न लगे रहकर भले काम करनेमें लगो ! यही भक्ति है और यही पार करनेका मार्ग है !

१४१ ज्ञान और भक्तिका भेद. ज्ञानका अर्थ है जानना और भक्तिका है भोगना.

ज्ञानका अर्थ है जानना और भक्तिका अर्थ है भोगना. अर्थात् ज्ञानसे केवल जानाजासकताहै परंतु भक्तिसे वह जानाहुआ विषय भोगनेमें आसकताहै. जाननेमें और अनुभवमें पृथ्वी आकाशकासा अंतर है. विलायतके आदमी जानते हैं कि, हिंदुस्थानमें आम अच्छे होते हैं इसका नाम जानना है, परंतु उन आमोंको प्रत्यक्ष खाना सोही भोगना है. जो केवल इतनाही जानतेहों कि आम नामक एक फल होताहै वे आमके स्वादको तो नहीं जानसकते वैसेही जो केवल धर्मकी वात कियाकरैं परंतु धर्म पाले नहीं वे ईश्वरीय आनंद तो नहीं भोगसकते ! उस आनंदको तो केवल वेही भक्त पासकते हैं जो सदा प्रभुको अपने हृदयमें रखते हैं, और प्रभुको हृदयमें रखना केवल भक्तिसे वनसकताहै. इससे भक्तिही उत्तम है पहलेके लोग ज्ञानशब्दसे अनुभवका अर्थ निकालतेथे, अर्थात् उन्होंने ज्ञानको वहुत वडा महत्त्व दियाथा परंतु अव हम ज्ञान शब्दका अर्थ केवल जाननाही करते हैं इसलिये ऐसे रूखे ज्ञानसे भक्ति उत्तम है.

हम जानलें कि, अमुक वडी संपत्तिके हम मालिक हैं परंतु जव-

तक उस संपत्तिका अधिकार हमारे हाथमें न आवे तबतक हम उसको भोग नहीं करसकते. हम संपत्तिके मालिक हैं इस जाननेका नाम ज्ञान है, और उस संपत्तिपर कबजा जमानेका स्वत्व प्राप्त करना और उसको भोगना भक्ति है. इस समयके सूखे ज्ञानसे केवल जाना जासकताहै परंतु भोग नहीं कियाजासकता. वह जाना हुआ विषय तो केवल भक्तिसेही भोगनेमें आसकताहै. इस लिये भाइयो ! जो प्राप्त करनेका है उसे ज्ञानसे जानो और भक्तिसे भोगो !

३० पद ।

भक्ति विन दीखत जैसो प्रेत, दीखत जैसो प्रेत ॥ टेक ॥
रवि विन दिवस चंद्र विन रजनी, दीपक विना निकेत ।
पति विन पत्नी नैन विन तनु, जिमि जलविन सरवर चेत
॥ १ ॥ विप्र वेदविन मात पुत्रविन, जिमि नहिं शोभा
देत । तिमि हरिभक्तिविना तीरथ व्रत, जस न जपन
समेत ॥ २ ॥ रामजीवन जीवनकी मूरी प्रभुपदप्रीति
सचेत । जन्म जन्म मत जाय विसर मोहिं, प्रभुकी बलैया
लेत ॥ ३ ॥

१४२ ज्ञानको छोटा नहीं समझना ज्ञानके प्रकाशसेही प्रभु दीखसकताहै.

ज्ञानका अर्थ जानना है और भक्तिका अर्थ भोगनाहै यह बात ठीक है परंतु इसपरसे किसीको भूलकर यह नहीं समझलेना चाहिये कि, ज्ञानकी आवश्यकता नहीं है. ज्ञानसे भक्ति उत्तम है सो बात सत्य है, परंतु ऐसी उत्तम भक्ति प्राप्त होसकती है ज्ञानहीसे. जबतक अपने कर्तव्य धर्मका और ईश्वरीय मार्गका यथार्थ ज्ञान न होजाय तबतक भक्तिका गहरा तत्त्व समझमेंही नहीं आसकता और सच्चा तत्त्व समझे विना भक्ति नहीं बनसकती इसलिये भक्ति श्रेष्ठ है

तबभी भक्तिको दौडाने चलानेवाला ज्ञानही है. ज्ञान न हो तो भक्तिका पूरा २ मजा नहीं मिलसकता. ऐसा होनेसे भक्ति उत्तम है तबभी उसको दिखानेवाला तो ज्ञानही है इससे ज्ञान भक्तिका गुरु है.

संसारमें सब वस्तुएँ तैयार हैं परंतु वे गरमीसे होती हैं और गरमीके प्रकाशसेही दीखती हैं. जो प्रकाश दुनियामेंसे निकाल डाला जाय तो सबही वस्तुएँ निकम्मी अर्थात् व्यर्थ होजाँय वैसे धर्म, भक्ति और ईश्वरभी इसी सृष्टिमें और हमारे हृदयमेंही है परंतु जो ज्ञानरूपी प्रकाश उन्हें न दिखावे तो वे हमारे हृदयमें होते हुएभी निरर्थक हैं. इससे भाइयो! ज्ञानको नीचा समझनेकी भूल मत करो और ज्ञानकी ओर बेपरवाही मत करो!

१४३ भगवान् हमको बहुतही देताहै परंतु हम ले कहां सकते हैं?

जब हम भोजन करने बैठते हैं तब अच्छा रसोइया हमको खूबही खिलाना चाहताहै परंतु हमही नहीं खासकते तब हाथ आडा लगा देते हैं. भला रसोइया तो एकके बदले दो लड्डू रख जाता है और आधेके बदले पूरा दौना खीरसे भरजाताहै परंतु हमही नहीं खा सकते तब इनकार करदेते हैं. वैसेही ईश्वरने तो हमको बहुतही दिया है और बहुतसा देना चाहताहै परंतु हमही नहीं ले सकते इतनाहीं नहीं परंतु जो मिलाहै उसकोही हम भोग नहीं सकते. हमारे दरिद्री रसोइयेही जब खूब परोसते हैं और हम माँगते हैं उससेभी अधिक देते हैं. तब विचार तो करो कि, उन परोसनेवालोंकी अपेक्षा अनंत ब्रह्मांडका नायक परमेश्वर कितना बडा और कितना अधिक उदार है? विचार तो करो कि वह हमको कितना अधिक परोस सकता है! परंतु बात इतनीही है कि, उसे लेनेका हमारे पास स्थान कहाँ है? और उसको हजम करनेकी हममें शक्ति कहाँ है? हमारी पाचन शक्ति अच्छी न हो तब परोसनेवालेका दोष क्या? वैसेही हममें

योग्यता न हो तब ईश्वरका क्या दोष ? महात्मा लोग तो यही कहते हैं कि ' ऋद्धि सिद्धि नामकी दासी. '

ऋद्धिसिद्धि तो प्रभुके नामकी दासी है ! खास ऋद्धिसिद्धिही जब प्रभुकी दासी हैं तब दूसरी छोटी मोटी वस्तुओंका तो कहनाही क्या ? इस लिये भाइयो ! याद रक्खो कि, परमेश्वर तो हमको बहुतही देनेको तैयार है परंतु हमही अपनी अयोग्यताके कारण ले नहीं सकते. यह अयोग्यता ईश्वरको जाने विना नहीं मिटसकती और भक्ति विना ईश्वरीय आनंद और अखूट वैभव लूटनेमें नहीं आ सकता तथा हजम भी कर नहीं सकता. इस लिये यह अलौकिक लाभ लेना हो तो भक्ति करो ! भक्ति करो ! ! भक्ति करो !!!

१४४ हमको मायारूप साँपने काटाहै. इस सर्पविषको उतारनेवाला गुरु है, इससे सद्गुरुकी शरण लो ।

एक जिज्ञासुने किसी साधुसे पूँछा " महाराज ! हम गुरुको क्यों मानना चाहिये ?

साधुने उत्तर दिया " बेटा ! लोगोंको मायारूप साँपने काटा है. साँपका विष उतारनेवाला गुरु है. इससे गुरुको मानना चाहिये. तुम्हारे पास सैकडों हजारों दवाइयां और दूसरे साधन हैं परंतु उनसे मायारूप साँपका विष नहीं उतरेगा किंतु और बढताही जायगा. तुम्हारे मरहम पट्टी करनेसे तो घाव बढतेही जांयगे औरभी जोड (पैबंद) लगानेसे अधिकही अधिक गढे पडते जायँगे. तुम उस मायाके विषपर रंग चढाना चाहतेहो परंतु तुम्हारी इच्छा सफेद रंग (अर्थात् भलाई गुणोंकी समान अवस्था) चढानेकी है जिसके बदले लाल अर्थात् तमोगुणी आपत्तिका और प्रेमका रंग चढताहै, और तुम्हारी इच्छा नीलारंग अर्थात् शांति और वृद्धि चढानेकी है जिसके बदलेमें काला रंग अर्थात् भ्रम, अज्ञान और अंधकार चढ जाता है. इस प्रकारको भूलों और विषोंमेंसे बचनेके लिये गुरुकी आवश्य-

कता है. प्रभुकी कृपासे गुरुको ऐसा मंत्र याद होताहै कि, उसकी फूँकसेही हमारा मायारूप सर्पका विष उतरजाताहै और अवतक जो द्वार हमारे लिये वंद पडे हैं वे खुलजाते हैं, कारण गुरुकी वाणी द्वारा ईश्वरकी कृपा हमपर उतरती है. इस लिये गुरुको माननेकी आवश्यकता है. सद्गुरुकी कृपा हो तव परमेश्वरकी कृपा हुई समझो. जवतक श्रीसद्गुरुकी कृपा न हो तवतक हमको जहाँ नजर डालें वहांही कुछ डरावने और कहीं २ तो काले विचित्र रंग दिखाई देते हैं, परंतु जव गुरुकी वाणी द्वारा ईश्वरकी कृपा प्राप्त होजाती है तव आकाशके शुद्ध आसमानी नीले रंगके विशाल, घनश्यामरूपकी अखंड शांति और अभेदके ही दर्शन होते हैं इसलिये भाइयो! जो मायारूप साँपका विष उतारना हो तो श्रीसद्गुरुके चरण जाओ!

मनहर छंद।

गुरुके प्रसाद बुद्धि उत्तम दशाको गहै,
गुरुके प्रसाद भवदुःख विसराइये।
गुरुके प्रसाद प्रेम प्रीतिहु अधिक बाढै,
गुरुके प्रसाद रामनाम गुन गाइये॥
गुरुके प्रसाद सब योगकी जुगति जानै,
गुरुके प्रसाद शून्य समाधि लगाइये।
सद्गुरु कहत गुरुदेवजू कृपाल होई,
तिनके प्रसाद तत्त्व ज्ञान पुनि पाइये॥

गुरुदासके संवंधी और भी किसी कविकी उक्तिहैः—

दोहा।

कोइ चितदुखी कोई मन दुखी, कोइ चित्तहिचित्त उदास।
थोरे थोरे सब दुखी, सुखी सद्गुरू दास॥

१४५ समय खो देनेसे सस्ती वस्तुभी महँगी होजा-तीहै, वैसेही देर लगानेसे भक्तिकी कीमतभी बढजाती है । इसलिये जैसे बने वैसी जल्दी भक्तिमें लगजाओ ।

एक मनुष्य किसी पुस्तक वेचनेवालेकी दूकान पर गया. उसने पुस्तक माँगी वेचनेवालेने पुस्तक दी. उसने उसकी कीमत पूँछी. दूकानदारने कहा आठ आने. थोडी देरतक पुस्तकको देखदाखकर उसने फिर पूँछा " ठीक दाम बताओ ! "

दूकानदारने जवाब दिया " ठीक दाम इसके वारह आने हैं "

फिर थोडी देर झंझट करके उसने कहा " भाई ठीक दाम बताओ ! "

दूकानदारने कहा " अब इसकी कीमत एक रुपया है. "

उसने फिर पूँछा " भाई ! उडानबाजी क्या करते हो ? ठीक बताओ ना ! "

दूकानदारने कहा " अब इसका दाम सवा रुपया है.

उसने कहा " यार हँसी करते हो क्या ? पहले आठ आने बता-कर अब सवा रुपया कैसे बतातेहो ? "

दूकानदारने कहा " दाम तो इसके आठही आने हैं. परंतु तुमने झक २ की अपना समय खराब किया और मेराभी समय खराब किया इससे इसकी कीमत बढगयी. "

वैसेही हमभी ज्यों ज्यों भक्ति करनेमें देर लगाते हैं त्यों त्यों हमारे ऊपर प्रभुका ऋण बढता जाता है और भक्तिकी कीमत महँगी होती जाती है. इसलिये जैसे बने वैसे जल्दीही भक्तिमें लग-जाना चाहिये क्योंकि ज्ञानियोंने कहा है कि, देर लगाना भयप्रद है और फजीहतमें फायदा नहीं है. देर तो शैतानके साथ चाहिये और पापके कामोंमें देर चाहिये, परंतु धर्ममें देर करना नहीं चाहिये. धर्म तो चटपटही करलेना अच्छा है. अपने मनके साथ और दूसरे लोगोंके

साथ झगडा झंझट करनेमें समय वितानेसे लाभ क्या ? इससे तो भक्तिकी कठिनता वढती है और भक्तिकी कीमत वढती जाती है. इसलिये भाईयो ! वाहरी चतुराई छोडकर जैसे वने वैसे जल्दी भक्तिमें लग जाओ ! समय मत खो !! समय मत खो !!!

पद।

हरिकी भगती करना रे, पलकमें होवैगा मरना, पलकमें होवैगा मरना। अहो हरीजन हृदयकमलमें, हरिभगती करना ॥ काका मामा कुटुम कवीला, छोड चले प्यारे, समझ मन छोड चले प्यारे। सपनेमें जो सृष्टी होती, ऐसा जग सारे, ऐसा जग सारे रे, समझ मन ऐसा जग सारे ॥ सपनेमें० ॥ धाम, धरा, धन, माल, खजाना,आखर नहिं अपना, समझ मन आखर नहिं अपना। एक दिना सव छोडके जाना, मट्टीमें खपना, मट्टीमें खपना रे, समझ मन मट्टीमें खपना ॥ एक दिन० ॥ काम, क्रोध, मद, मोह न रखना, करना सुकृतको, समझ मन करना सुकृतको। एक निरंजन नाम सुमिरना, भवजल तरनेको, भवजल तरनेको रे समझ मन भवजल तरनेको ॥ एक निर० ॥ झूँठ जगत्की छोड वासना, जा सद्गुरुचरना, समझ मन जा सद्गुरुचरना। अहो हरीजन हृदयकमलमें हरि भगती करना, हरि भगती करना रे, पलकमें होवैगा मरना ॥ अहो० ॥

१४६ जबतक समय है तबतक ईश्वरके निमित्त एक पैसा देकर जितना पुण्य प्राप्त कर सकोगे उतना समय चूकजानेपर एक मोहर देनेसेभी नहीं मिलेगा.

जो हम बचपनसेही भक्तिमें लगजायँ तो बहुत थोडे परिश्रमसे बहुत बडा काम कर लेते हैं, कारण उस समय हमारा मन सरल होता है इससे उसमें भक्तिके बीज जल्दी जमजाते हैं और भक्तिकी जड दृढ होजानेपर पापका बडा डर लगता है. इस कारण स्वाभाविक रीतिसेही पापोंसे बचाव हो जाता है. इसके पीछे ऐसा हो जाता है कि, पाप करना तो एक ओर रहा वरन् पापके विचार आनाभी कठिन होजाता है. जवानीमें शरीरमें बल होता है, इसलिये उस बलसे जो हम उस समय भगवान्की सेवामें लगजायँ तो बहुतसे काम ऐसे होजाते हैं जिनसे प्रभु प्राप्त हो सकै, परंतु वह समय निकल जानेपर शरीरका बल चला जाता है ।

३१ दोहा ।

भवनद्वार पर्वत कियो, नगरद्वार परदेश ।
आह बुढापा ! तोहिने, मो तन करि परवेश ॥ १ ॥

और जरा २ से काम कठिन जान पडते हैं, ऐसे समयमें अपने शरीरको चलानाही कठिन पडजाताहै तब धर्मके काम कहांसे होसकते हैं ? इस तरह भक्ति करनेमें हम ज्यों ज्यों देर लगाते हैं त्यों ही त्यों भक्तिकी कीमत बढती जाती है. ज्यों ज्यों देर होती है त्यों त्यों हमारे मनमें मायाका कचरा भरता जाता है. वह कचरा बाहर निकाला जाय तबही उस स्थानमें भक्ति आसकती है. परंतु याद रक्खो कि, इस कचरेको हटाना कुछ सुगम बात नहीं है. इससे अबभी जबतक मनमें अधिक कचरा नहीं भरा है तबतक ईश्वरकी ओर झुकजाओ ! झुकजाओ !!

तुम जानतेहो देर लगानेसे भक्ति कितनी महँगी होजाती है ? जो तुम इस बातको अच्छी तरह समझलो तो तुमको आश्चर्य और अपनी ऐसी बडी भूलके लिये खेद हुए विना न रहे. अभी भक्तिमें लग जानेसे हम इसी जन्ममें ईश्वरके कृपापात्र बनसकते हैं. और इसी जन्ममें तरसकते हैं. परंतु समय खोदेनेसे अर्थात् इसी समय भक्तिमें न लग जानेसे हमारा यह जन्म वृथा जाता है और हम चौरासी लाखके चक्करमें पडजाते हैं. अब जरा विचार करके देखो कि, कहाँ तो इसी जन्ममें छुटकारा और कहाँ चौरासी लाखका चक्कर ! जरासी देर लगानेमें इतनी बडी हानि होती है परंतु खेद है कि, तबभी हम सचेत नहीं होते. हमारी इस मूर्खताको तो देखो ! ईश्वर ! हमको इस मूर्खतासे बचा और जल्दी भक्तिमें लग जानेका बल दे !

यह तो देखो कि, अभी भक्तिमें लगजानेसे कितना बडा लाभ होता है; शास्त्र कहते हैं कि इस समय स्नान करने मात्रसे तुम जो फल पासकतेहो वह फल समय चूकजाने पर दान करनेसेभी नहीं पाओगे, इस समय थोडे मीठे शब्द बोलनेसे तुम अपना जितना कल्याण करसकोगे उतना समय चलाजानेपर पश्चात्ताप करनेसेभी नहीं कर सकोगे, अभी जबतक समय है तबतक ईश्वरके निमित्त अपने गरीब भाइयोंको पैसा देकर जितना पुण्य प्राप्त करसकतेहो उतना समय निकलजानेपर मोहर देकरभी नहीं प्राप्त करसकोगे अभी छोटे मोटे व्रत करके जितना फल पासकोगे उतना फल समय चूकजानेपर बडे २ यज्ञ करकेभी नहीं पासकोगे, और इस समय थोडी देर जप करनेसेभी ईश्वर जितना प्रसन्न होगा उतना प्रसन्न समय निकले पीछे बरसोंतक जप करनेसेभी नहीं होगा. अभी ईश्वरने कृपा करके हमको यह समय दिया है इसलिये इस समयसे, इस अवसरसे लाभ उठालो यह अवसर चूकजानेपर भक्तिकी कीमत बढजायगी ! इसे निश्चय जानो !

१४७ भक्तोंपर पडनेवाले दुःख जहाजकी पीठपर लगनेवाले पवनके समान हैं, इनसे इच्छित स्थानपर जल्दी पहुँचा जासकता है.

एक अनजान मनुष्य जहाजमें बैठकर कहीं जारहाथा थोडी देरमें हवा जोरसे चलने लगी और जहाज डगमगाने लगा यह देख वह नया आदमी डरगया और कहने लगा " हाय ! हाय ! अब क्या होगा ? मैं तो आज मरा ! अरे मैं भूलकर इसमें कहाँ आनबैठा ? इस पवनने तो सर्वनाश करदिया ! "

इस तरहपर जब वह चिंतातुर होरहाथा तब मल्लाहने कहा " यह हवा तो बहुत अच्छी है ! इससे हम जल्दी अपने मुकामपर पँहुचेंगे. इसमें घबरानेका काम क्या है ? "

उस अनजान आदमीकी तरह हमभी वृथाही दुःखसे डरते हैं परंतु यह नहीं जानते कि, ये दुःख तो हमारे लिये जहाजकी पीठ-पर लगनेवाली हवाकी तरह हैं. संत लोगोंका ऐसा कहना है कि जो हमको इन दुःखोंका उपयोग करना आताहो तो ये हमको तारनेवाले हैं, क्योंकि भक्तोंपर पडनेवाले दुःख उनको डुबानेके लिये नहीं है. किंतु जलदी मुकाम पर पहुँचानेके लिये है. हवा न होनेसे जहाजको चलनेमें देर लगती है वैसेही दुःख न होनेसे ईश्वरीय मार्गमें चलनेमेंभी देर लगती है. इसलिये दुःख है सोभी एक प्रकारका गुणही समझना चाहिये. इस गुणका समझकर लाभ लेनेसे दुःख बदलकर सुख हो जाता है और हमको ईश्वरीय मार्गमें एकसाथ आगे बढाता है. इस लिये दुःखसे कायर मत होओ और ईश्वरकी इच्छाके अधीन होओ तथा जैसे ईश्वर रक्खे वैसेही रहनेमें आनंद मानो ! यही महात्माओंका उपदेश है. यही धर्मका तत्त्व है. यही ईश्वरका प्रसन्न करनेका सुगमसे सुगम मार्ग है. इस लिये भाइयो ! सब लंबी चौडी बातोंको एक ओर रखकर समझलो कि, ईश्वर जो करता है सो सब अच्छाही करता है, और तब उसकी इच्छाके अधीन होनेका बल प्राप्त करो !

-

१४८ ज्ञानसे भक्ति उत्तम है, क्योंकि ज्ञान बाहरसे आताहै और भक्ति भीतरसे आती है.

ज्ञानसे भक्ति उत्तम क्यों है ? पंडित लोग इसका उत्तर यह देते हैं कि प्रथम तो ज्ञान बाहरसे आता है और भक्ति भीतरसे उपजती है, दूसरे ज्ञान मस्तिष्कमें रहता है परंतु भक्ति हृदयमें रहती है और तीसरे ज्ञानको जिस ओर झुकाना चाहें उसी ओर झुकासकते हैं अर्थात् उसका बुरा उपयोगभी होसकता है, परंतु भक्ति तो एक परमेश्वरकीही ओर झुकती है और ज्ञानकी अपेक्षा इसमें शांति भी अधिक है इसके सिवाय ज्ञानमें बहुतसे प्रपंच मिले हुए हैं और भक्तिमें हृदयकी सरलता मिली हुई है, इन्हीं कारणोंसे ज्ञानकी अपेक्षा भक्ति उत्तम है. फिर देखो ! ज्ञानमें कठोरता है परंतु भक्तिमें कोमलता है, ज्ञान प्राप्त करनेमें कठिनाई पडती है और भक्ति सुगमतासे मिलसकती है, ज्ञानको बढानेके लिये बाहरी अनेक साधनोंकी आवश्यकता पडती है परंतु भक्ति बाहरी साधनोंके विनाभी बढसकती है, ज्ञानको देशकालकी आवश्यकता है, परंतु भक्तिको देशकालकी इतनी आवश्यकता नहीं है, ज्ञानमें स्वभावसेही अहंकार है और भक्तिमें स्वभावसेही दीनता है और तो क्या परंतु ज्ञान शब्दही उग्र है और भक्ति शब्द शांतिकारक है. इसीलिये भक्त कहते हैं कि, भक्ति उत्तम है ! भक्ति उत्तम है ! !

सवैया।

चारोंहि वेद पुराण अठारहौं, चौसठ तंत्रके मंत्र विचारे।
तीनसौ साठ महाव्रत संयम, मंगल यज्ञ पुरी पुर सारे॥
योग वियोग प्रयोग उपासन, मैं हरिदत्त सभी निरधारे।
तीनोंहि लोकनके सगरे फल, मैं हरिनामके ऊपर वारे॥

(रागरत्नाकर.)

१४९ परमेश्वरकी परीक्षा लेनेकी इच्छा मत करो ! परंतु सरलतासे उसकी इच्छाके अधीन हो !

एक गरीब परंतु भगवद्भक्त बाई किसी कामसे एक पहाडपर गयी. वहांपर उसे एक सिपाई मिला. सिपाई बडा नीच था. बाईको अकेली देखकर उसने उसपर आक्रमण करना चाहा. स्त्री धर्मवती और पतिव्रता थी. वह जानती थी कि, लाज खोकर जीना धिक्कार है. उस समय उसके बचनेका कोई उपाय नहीं था इससे वह उस ऊंची पहाडीपरसे गिरपडी, एक झाड परसे दूसरे पर और दूसरे परसे तीसरे पर गिरती हुई वह नीचे होकर बहनेवाली नदीमें जा गिरी, ईश्वर बडा दयालु है, उसकी कृपासे वह इतने ऊंचेसे गिरनेपरभी बचगयी और उसके कहीं चोट न आयी. कितनेही बरस पीछे फिर उसको उसी पहाडपर चढनेका काम पडा ऊपर जानेपर उसे उस सिपाईकी बात याद आगयी और मनमें विचार आया कि पहली बार जैसे ईश्वरने मेरी रक्षा कीथी वैसे अबकी बारभी करता है या नहीं इतना विचार आतेही वह एक छोटेसे पत्थरपरसे गिरी. इस बार गिरते ही उसकी हड्डियां टूटगयीं. पैरसे लँगडी होगयी और बडी कठिनाईसे प्राण बचे !

थोडे समय पीछे जब वह एक धर्मगुरुसे मिली तो उसने पूँछा " महाराज ! पहली बार मैं ऊंचे पहाडपरसे गिरीथी तब भी मुझको चोट नहीं लगी और दूसरी बार एक छोटे पत्थर परसे गिरी उसमेंही हाथ पैर टूटगये और जीना कठिन पडा इसका कारण क्या ? ".

गुरुने कहा " बाई ! पहले तो तुमपर सच्चा संकट था और मरनेसेभी तुमने पातिव्रतकी रक्षा करना अधिक अच्छा समझाथा इससे भगवान्‌ने तुमको बचालिया. परंतु दूसरी बार वैसा कोई

कारण नहीं था. इस बार तो तुम केवल ईश्वरकी परीक्षा करनेहीके लिये गिरीथी इससे इसका फल तो ऐसाही होना चाहिये. क्योंकि हमको समर्थ परमेश्वरकी परीक्षा लेनेका कोई स्वत्व नहीं है. "

जो इस तरहपर ईश्वरकी परीक्षा करते हैं उसकी तो खराबीही है. भाइयो ! तुम अपने धर्मकी रक्षा करो तो ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा परंतु जो तुम ईश्वरकी परीक्षा करो तो वह तुम्हारी सहायता नहीं करेगा, क्योंकि ईश्वर तो विश्वास चाहता है और उसकी परीक्षा करना है सो पूरा २ अविश्वासीपन है. ऐसे अविश्वासीपनेका ईश्वरके साथ क्या संबंध ? जो धर्म या विश्वासको नहीं समझते वेही ईश्वरकी परीक्षा लेने जाते हैं और उक्त बाईकी तरह तकलीफ उठाते हैं इसलिये भाइयो ! ईश्वरकी परीक्षा करनेकी इच्छा मत करो किंतु उसकी इच्छाके अधीन हो !

१५० विश्वास क्या है ? स्वर्गके द्वारकी चावीका नाम विश्वास है.

एक शिष्यने अपने गुरुसे पूँछा " आप सब लोकोंसे बारबार कहते हैं कि विश्वास करो ! विश्वास करो ! परंतु विश्वास वस्तु क्या है सो तो बाताओ ? "

गुरुने कहा " बेटा ! स्वर्गके दरवाजेको खोलनेकी चावीका नाम विश्वास है. "

यह सुनकर शिष्य चकितसा होगया और गुरुकी मुँहकी ओर देखने लगा तब गुरुने फिर कहा "बेटा ! इसमें चकित होनेकी कोई बात नहीं है, विश्वासही स्वर्गके दरवाजेकी चाबी है. तूने भी बहुतसे शास्त्र सुने और पढे हैं. उनमें ईश्वरका दरवाजा खोलनेकी कोई दूसरी चाबी देखी हो तो तूही बता. "

शिष्यने बहुत कुछ विचार किया परंतु विश्वासके सिवाय दूसरी कोईभी चाबी उसे मिली नहीं. तप, दान, सेवा, यज्ञ, योग,

भक्ति, ज्ञान आदि वहुतसे साधन हैं परंतु विश्वास विना एकभी साधन कामका नहीं है. विश्वास विना इनमेंका एकभी साधन पूरा नहीं पडसकता और जो कोई थोडा वहुत हुआभी तो पूरा २ फल तो कदापि देही नहीं सकता. इस लिये सव साधनोंका आधारभूत एक विश्वासही प्रभुका द्वार खोलनेकी चावी है. भगवान्‌नेभी गीतामें कहा है—

"अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥"

अ० ४. श्लो० ४०.

अर्थ—अज्ञानी, श्रद्धा विनाके, तथा संशयवाले नाश पाते हैं. जिनमेंभी संशयवालोंका तो यह लोक विगडता है, परलोक विगडता है और सुखभी नहीं मिलता.

फिरभी कहाहै—

"अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥"

अ० १७ श्लो० २८.

अर्थ—हे अर्जुन! श्रद्धा विना जो हवन कियाजाय, दान कियाजाय तप कियाजाय, अथवा और कोई कर्म कियाजाय तो वह सव असत् कहलाता है, कारण श्रद्धा विना जो कियाजाता है उसका इस लोकमें और परलोकमेंभी फल नहीं मिलता.

१५१ ज्ञान और कर्ममेंसे विश्वास उत्पन्न होताहै, इसलिये ज्ञान और भक्ति विनाका विश्वास मरेहुएके समान है.

विश्वास स्वर्गकी चावी है. इस वातको जानलेनेवाद यहभी जानना चाहिये कि विश्वासकी उत्पत्ति कहांसे हुई है. महात्मा लोग कहते हैं कि ज्ञान और कर्ममेंसे विश्वास उत्पन्न हुआ है. अकेले ज्ञानसे नहीं

और अकेले कर्मसेभी नहीं किंतु ज्ञान और कर्म दोनोंसे विश्वास बनाहै. इस लिये ज्ञान और कर्म विनाका विश्वास सो झूठा विश्वास कहलाता है, क्योंकि विश्वास कर्म और ज्ञानसे पैदाही नहीं हुआ है किंतु कर्म और ज्ञानमेंही विश्वास है. इसलिये सत्कर्म और अच्छा ज्ञान न हो तब सच्चा विश्वास नहीं समझना. अंतःकरणका समाधान हो वैसे शास्त्रोंके अच्छे ज्ञान विनाका विश्वास सो अंधा विश्वास कहलाताहै, और अच्छे कर्म विना केवल ज्ञानकी बातें करनेका विश्वास सो चारों वेद जाननेवाले परंतु बुरे कर्म करनेवाले रावणकासा विश्वास सो आसुरी विश्वास कहलाताहै. ऐसा विश्वास किसी कामका नहीं होता. ऐसे विश्वाससे तो उलटी खरावी होती है इसलिये ज्ञान और कर्म विनाके विश्वासको साधु लोग मराहुआ विश्वास कहते हैं. भाइयो! ऐसे मरेहुए विश्वासमें न पडे रहो परंतु प्रभुको तुम्हारे विश्वासका निश्चय करानेके लिये शास्त्रोंके अच्छे ज्ञान फैलाओ और धर्मके अच्छे काम कर दिखाओ!

१५२ हनुमान्‌जीने रामचंद्रजीसे कहा कि मुझको स्वर्गमें या मोक्षमें सुख नहीं है परंतु मेरा सुख तो आपकी इच्छाके अधीन होनेमें है.

भगवान् रामचंद्रजीने एक वार हनुमान्‌जीसे पूँछा कि तुम्हारी क्या इच्छा है? हनुमान्‌जीने कहा "महाराज! आपकी इच्छा सोई मेरी इच्छा! मेरे प्रभुसे मेरी इच्छा जुदी कैसे होसकती है?"

रामने फिर पूँछा "तुम्हारा सुख किसमें?"

हनुमान्‌जीने उत्तर दिया "महाराज! आपकी आज्ञा पालनेमेंही मेरा सुख है."

रामचंद्रजीने पूँछा "तुमको स्वर्गमें भेजूं तो सुख होगा?"
हनुमान्‌जीने कहा "महाराज! मेरा सुख स्वर्गमें नहीं है!

मेरा सुख तो आपकी आज्ञा पालनेमें है. जो आप आकाशमें भेजें तो मेरा सुख आकाशमें है, पातालमें भेजें तो पातालमें सुख है, आप स्वर्गमें भेजें तो स्वर्गमें सुख है और नरकमें भेजें तो मेरा सुख नरकमें हैं. मेरा सुख न स्वर्गमें है न नरकमें है परंतु आपके अधीन होनेहीमें मेरा सुख है."

भक्तोंका हृदय कैसा होता है सो इस बातपरसे समझलेना चाहिये. दूसरी बात यहभी इसपरसे सीखनेकी है कि, किसीभी देशमें किसीभी कालमें और किसीभी स्थितिमें सच्चा सुख नहीं हैं, परंतु प्रत्येक देशमें, प्रत्येक कालमें और प्रत्येक स्थितिमें भगवदिच्छाके अधीन होनेहीमें भक्तोंका सुख है और अपना स्वार्थ छोडकर अपनी इच्छा छोडकर प्रभुके अधीन होना ही सच्चा तप है. बाहरी धूनियां तापना, उपवास करना, ठंड सहना और इसी प्रकारके अन्य हठ करके जानबूझकर तकलीफ उठाना और मनको बिगाडना सच्चा तप नहीं कहलाता, परंतु भगवान्‌की इच्छासे प्रारब्धके अनुसार स्वाभाविक रीतिसे जो आन बनै उसीको हर्ष शोक किये बिना शांतिसे भोग लेना ही सच्चा तप है, और इसीका नाम भगवदिच्छाके अधीन होना है. इसलिये जैसे बनै वैसे प्रभुकी इच्छामें अपनी इच्छा मिलादो. इसीका नाम तप है और इसीमें उत्तम सिद्धि है.

पद—रागविहाग ।

राखो तैसे रहूं प्रभु तुम, राखो तैसे रहूं । जानतहो दुख सुख सब जनको मुखसे मैं कहा कहों॥ जैसे०॥ १॥ कबहुँक भोजन देहो कृपा करी, कबहुँक भूख सहों । कबहुँक चढत तुरंग महागज, कबहुँक भार वहों ॥ जैसे०॥ २॥ कमलनयन घनश्याम मनोहर, अनुचर

होयरहों। सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि, तुमरे चरण गहों ॥ जैसे० ॥ ३ ॥

१५३ जहां दूसरे वृक्ष नहीं होते वहां एरंडही बडा कहलाताहै; इसी तरह पापियोंमें बडा गिनेजानेसे फूलना नहीं.

हम बच्चोंमें बडे गिनेजायँ परंतु बूढोंमें तो छोटेही कहलाते हैं. वैसेही हम पापियोंमें अच्छे गिनेजायँ परंतु पहलेके और हालके महा-पुरुषोंमें तो नीचेही गिने जाते हैं पापियोंमें बडे गिनेजानेसे हमको फूलना नहीं चाहिये किंतु यही समझना चाहिये कि, भलोंके आगे तो हम ' नहीं तीन नहीं तेरहमें और नहीं छप्पनके मेलमेंही ' हैं. तब ईश्वरके आगे तो हम कितने नीचे हैं ? भाइयो ! निर्धनोंमें धनवाले और बालकोंमें बडे गिनेजानेहीसे हमको प्रसन्न नहीं हो जानाचाहिये, यों तो जहां कोई दूसरे बडे वृक्ष नहीं होते वहां एरंडका पेडही बडा मानाजाताहै परंतु यथार्थमें एरंड कुछ बडा गिनाजाने योग्य नहीं है. इसी तरह हम भी पापियों और अज्ञानियोंमें अच्छे गिनेजानेसे यथार्थ अच्छे नहीं होसकते, परंतु यथार्थ अच्छे बननेके लिये तो सच्चे धनवाले, धर्मके धनवाले और सच्चे बडे, बच्चोंमें बडे नहीं परंतु ज्ञानि-योंमें बडे होनेका यत्न करना चाहिये इसीमें बडाई है, और इसीमें सार्थकता है.

१५४ प्रभुपर हमको विश्वास है या नहीं इसका प्रमाण क्या ? शास्त्रसे ज्ञान प्राप्त करना और धर्मके अच्छे काम करना हमारे विश्वासका प्रमाण है.

ईश्वरके जरूरत माफक ज्ञान और धर्मके अच्छे काम के बिना जो खाली विश्वास है उसको साधु मराहुआ विश्वास कहते हैं. ऐसे

मरे हुए विश्वाससे कुछभी काम नहीं चलता क्योंकि तोतेके राम राम रटनेकी तरह ईश्वरीय बातोंको केवल मुँहसे रटना सच्चा विश्वास नहीं कहलाता किंतु उसके अनुसार चलनाही सच्चा विश्वास है. जबतक हमारे नित्यके व्यवहारमें और आचरणमें वह विश्वास काम नहीं आवै तबतक केवल मनमें मानाहुआ विश्वास किस कामका ? ऐसे रूखे विश्वास–ऐसी अंधी श्रद्धासे कुछ काम नहीं होता ! क्योंकि केवल मानलेना तो बीज है और मानेहुएके अनुसार चलना उसका पेड है. बीजमेंसे वृक्ष हो तबही फल मिल सकताहै. वैसेही हम शास्त्रकी जिन बातोंको मानते हैं उनको पालैं तबही फल पासकते हैं, विना पाले केवल मानलेनेसे फल नहीं मिलता. गुरु कहै कि, संध्या करना चाहिये तब हम कहैं कि, हां महाराज ! ठीक है. गुरु कहै कि प्राणायाम करना चाहिये तब हम कहैं कि, हां महाराज ! बहुत ठीक है. गुरु कहै दान देना अच्छा है तब हम कहैं कि, वाह ! वाह ! कैसा अच्छा उपदेश है. गुरु कहै कि, विद्या सीखना चाहिये तब हम कहैं कि हां महाराज ! यह तो बडी कल्याण करनेकी बात है. गुरु कहै कि, अधिक हर्ष शोच नहीं करना तब हम कहैं कि वाह वाह ! हमारे धन्य भाग्य ! बडा अच्छा प्रसंग है. इस तरहकी बातें तो हम अनेक करैं परंतु पालैं एककोभी नहीं तो वह डफोलशंखपनाही है या और कुछ !

ऐसा करनेसे हमारा कल्याण नहीं होसकता और न गुरुही प्रसन्न होताहै. वैसेही धर्मकी और शास्त्रोंकी बातें मानलेनेहीसे कल्याण नहीं हो सकता परंतु उन बातोंका अपने जीवनमें अनुभव करने और व्यवहारमें पालनेसेही कल्याण हो सकता है. भाइयो ! जैसे बनै वैसे ईश्वरके ज्ञान और धर्मके कामोंको साथ लेकर विश्वास करो ! ज्ञान और कर्म विनाका विश्वास तो मराहुआ विश्वास है. इस लिये ऐसे मरे हुए विश्वासमें पडे मत रहो किंतु शास्त्रके ज्ञान और धर्मके कामसे ईश्वरको अपने विश्वासका प्रमाण दिखाओ ! प्रमाण दिखाओ !

१५५ कर्तव्य पालन करनेके लिये किसी बार ईश्वर-भजन छोडना पडै तो वहभी एक तप है.

संसारमें सब चीजोंमें प्रभुका भजन करना एक उत्तममें उत्तम सारकाभी सार और तत्त्वकाभी तत्त्व है. इतना होनेपरभी किसी समय कर्तव्य पालन करनेके लिये ईश्वरभजन छोडदेना पडै तो वहभी एक प्रकारका तपही है. ईश्वरके निमित्त ईश्वरभजनके लिये अपनी इच्छाका भोग देना पडे वह तप है, और ऐसा होनेपरभी कोई समय ऐसा आताहै कि, खास भजनकोभी भोग देना पडताहै, कारण भजनकी इच्छा होनाभी एक प्रकारकी मनकी वृत्ति है अर्थात् भजनकी इच्छा भी एक प्रकारकी इच्छाही है. यद्यपि यह इच्छा उत्तम है परंतु भगवदिच्छाके सब तरहसे अधीन होनेवाली इच्छासे भजन करनेकी इच्छा अधिक वडी नहीं है. इस लिये भगवदिच्छाके सब तरहसे अधीन होनेके लिये कभी २ भजनकाभी भोग देना पडता है अर्थात् भजनभी छोडना पडताहै. इस तरहपर भजन छोड देना पडै तो वह भजन छोडनाभी तपही करना कहलाता है.

जैसे कोई स्त्री अपने बचेको रोता छोडकर देवदर्शन करने जाय तो वह पाप है, यद्यपि दर्शन करना पुण्य है परंतु बचेको सँभालना कर्तव्य है और कर्तव्य है सो ईश्वरकी आज्ञा है. पुण्य करनेसेभी ईश्वरकी आज्ञा पालना वडा है. इससे ईश्वरकी आज्ञाका भंग करके पुण्य करना सो पुण्य करनेपरभी पाप करनेके समान है. वैसेही जिस मनुष्यपर कुटुंबका आधार हो वह मनुष्य जो तीव्र वैराग्य विना केवल दुःखसे घबराकर अथवा किसी अन्यकारणसे कुटुंबको निराधार छोडकर चलाजाय अथवा बावासाधु बनजाय तो उसकोभी पाप लगताहै, कारण जिस कुटुंब स्नेहका वह भागी बनाहै उस स्नेहका बदला देनेको वह बँधाहुआ है और उसका बदला देना ईश्वरकी

आज्ञा है. उस आज्ञाको तथा स्नेहको तोडकर चाहे भजनहीकी इच्छासे हो परंतु विना तीव्र वैराग्यके जो घर छोडजाय वे पापके भागी बनते हैं, क्योंकि भजनभी एक प्रकारका आनंद है, इससे अपने आनंदके लिये ईश्वरकी आज्ञाको तोडना प्रत्यक्ष स्वार्थपरता है. स्वार्थपरतासे ईश्वर कैसे प्रसन्न होसकता है ? इसलिये भाइयो ! याद रक्खो कि, ईश्वरकी इच्छाके अधीन होनेके लिये स्वार्थी भजनका भोग देना अर्थात् त्याग करना पडै तो कुछ वडी वात नहीं है.

१५६ मित्रोंके दोष नहीं देखे जाते और उनके कितनेही घाव सहने पडते हैं, तब जो सच्चे भक्त हों वे प्रभुके दोष कैसे देखैं ? और प्रभुके घावोंको सहनेमें आनाकानी कैसे करें ?

एक सेठ गाडीमें वैठकर सैर करने जारहाथा. मार्गमें एक वेश्याके घरके आगे होकर गाडी निकलतेही वेश्याने कागजकी एक गेंदसी बनाकर सेठपर फैंकी, गैंद सेठके शिरपर जाकर लगी जिससे पगडी नीचे गिरगयी इससे सेठजीको और उसके साथवाले नौकरोंको वडा क्रोध आया, इतनेहीमें वह वेश्या हँसती २ खिडकीमेंसे बोली "सेठ साहब ! क्या हुआ ? यह गैंद तो मैंने फैंकी है !"

यह सुनकर सेठ हँसदिया और अपने आदमियोंसे कहने लगा "कुछ नहीं २ ! यह तो उसने हँसी की है !"

इस तरह पर उस वेश्याने वीच वाजारमें गैंद मारकर पगडी गिरादी तब भी सेठ उसपर नाराज न हुआ, कारण यह था कि, वह उसको प्यारी थी. उसने सेठकी परीक्षा और हँसी करनेके लिये प्रेमसे गेंद फैंकीथी वैसेही प्रभु हमारी परीक्षा करनेके लिये हमपरके प्रेमके कारण किसी समय घाव करदेता है उससे अप्रसन्न न होना

चाहिये. वच्चा हमारी मूंछ खैंचे, स्त्री कभी २ कठोर वचन कहदे और मित्र कभी कोई भूलकर जाय तो हम उनपर अप्रसन्न नहीं होते, परंतु ईश्वर जो कभी हमपर कुछ सहजकीसी तकलीफ डाले तो हम उसी समय विगडजाते हैं इसका कारण क्या ! इसका कारण यही है कि, हम जितना प्रेम औरोंपर रखते हैं उतना प्रेम ईश्वरपर नहीं रखते इससे औरोंका जितना सहसकते हैं उतनाभी ईश्वरका नहीं सहसकते. इसलिये जवतक हममें ईश्वरकी इच्छाके सामने पडनेका जोश रहै तवतक निश्चय समझ रखना चाहिये कि हमने ईश्वरको पहँचाना नहीं है. संसारमें जव कोई मनुष्य अपने प्रेमपात्रकेही दोषोंको नहीं देखता तव जो प्रभुपर हमको पूर्ण प्रेम हो तो हम उसके दोषोंको कैसे देखसकते हैं, और उसके किये हुए घावोंको सहनेमें कैसे आनाकानी करसकते हैं ? हम अपने नाम मात्रके मित्रोंके लिये और खुशामदियोंके लिये प्राण देनेको तैयार रहते हैं और ईश्वरकी ओरसे किसीभी दिन कोई अडचन आपडै तो हम दौडधूप और हाय तोवा मचा डालते हैं. क्या यह वैष्णवता है ? यह क्या प्रेमलक्षणा भक्तिका चिह्न है ?

१५७ ईश्वर जो करता है सो अच्छाही करता है परंतु हम उसका भेद नहीं समझते, इसीसे उसे बुरा बतातेहैं.

जो पक्के भक्त होते हैं वे सदा यही समझते हैं और अनुभवते हैं कि, ईश्वर जो करताहै सो ठीकही करताहै. वे विश्वासपूर्वक यहभी मानते हैं कि, बुरा होता है सो भी अच्छेहीके लिये. हम अंतःकरणसे ऐसा विश्वास नहीं रखसकते यही हममें और भक्तोंमें भेद है. बुरा होताहै सोभी भलेहीके लिये इस वातके प्रमाणमें भक्त लोग यह उदाहरण देते हैं:—

एक भक्त द्वारका जानेके निमित्त जहाजमें बैठनेके लिये समुद्रपर जानेको घरसे निकला. मार्गमें अकस्मात् उसके पैरमें चोट लगी. जिसपर पट्टी आदि बांधनेमें देर लगगई और जहाज छूटगया जिससे उसको समुद्रपरसे पीछे लौटआना पडा तब तो मार्गमें लोग उसकी हँसी करने और पूँछने लगे " क्यों भक्त ! द्वारका हो आये ? "

भक्तने उत्तर दिया "ईश्वर जो करता है सो अच्छाही करता है ?"

लोगोंने यह सुनकर उसकी हँसी की और पूँछा " तुम्हारी टांग टूटी इसमें ईश्वरने क्या भला किया ! "

भक्तने उत्तर दिया " ईश्वर तो सब भलाही करता है, परंतु हम उस बातको समझ हीं सकते इससे बुरा मानते हैं.

दूसरेही दिन तार आया जिससे मालूम हुआ कि द्वारका जानेवाला कलका जहाज मार्गमें डूबगया और उसके एकभी यात्रीका पता नहीं लगा. यह खबर सुनकर जो लोग कल उस भक्तकी हँसी करतेथे वेही आज उसको बधाई देने लगे और अपने आप इस बातको स्वीकार करने लगे कि ईश्वर जो करताहै सो सब अच्छाही करता है परंतु हम उसे समझते नहीं इससे बुरा मानते हैं इसलिये ऐसा कडवापन मनमें न आनेदो और इस बातको सीखनेका यत्न करो कि ईश्वर जो करताहै सो अच्छाही करताहै.

१५८ भक्तिका बदला मांगना ईश्वरकी परीक्षा लेनेके समान है.

सच्चे भक्त बडी भक्ति करते हैं और इतनी शक्ति रखते हैं कि, उस भक्तिके प्रतापसे जो चाहे सो पासके परंतु तबभी वे अपनी भक्तिका बदला ईश्वरसे कभी पानेकी आशा नहीं करते, क्योंकि बदलेकी आशा रखना ईश्वरकी परीक्षा करनेके समान है इस बातको बहुतसे लोग नहीं समझते इससे वे व्यवहारोंमें भक्तिका बदला पानेकी बारबार आशा किया करते हैं और काचका टुकडा लेनेके

लिये भक्तिरूपी पारसमणिको देनेपर तैयार रहते हैं. बहुतसे आदमी कहते होंगे कि भक्तिका बदला मांगनेमें क्या बुराई है ? किसान लोग मनोती मानते हैं कि मेरा बैल अच्छा होजायगा तो तीन ब्राह्मण जिमाऊंगा. स्त्रियां मनोती मानती हैं कि मेरी चोली (कंचुकी) नहीं मिलती सो मिलजायगी तो श्रीजीकी पेटीमें दो पैसे डालूंगी. विद्यार्थी लोग मनोती मानते हैं कि इस परीक्षामें हम पास होजायगे तो अमुक-महादेवके स्थानमें दीपावली करेंगे. मुकद्दमेबाज मनोती मानते हैं कि हम मुकद्दमा जीतजायँगे तो हनुमान्‌जीके प्रति शनिवार तेल चढायँगे और दूकानदार लोग मनोती करते हैं कि, इस सालमें हमको अमुक लाभ होगा तो सत्यनारायणकी कथा करावेंगे.

इस तरह प्रायः सबही लोग जरासी बातके लिये अपनी भक्तिको बेचडालते हैं और अपने थोडेसे स्वार्थके लिये ईश्वरकी परीक्षा लेनेको तैयार होते हैं ' मनुष्यकी खोपडीमें कितनी हड्डियां है ? ' ' मुसलमानोंका राज्य कैसे गया ? ' आदि प्रश्न पूछनाही परीक्षा लेना नहीं कहलाता परंतु ईश्वरसे भक्तिका बदला मांगनाभी परीक्षा लेनाही है, क्योंकि इससे ईश्वरपर अविश्वास प्रमाणित होता है. ' हम तेरे लिये अमुक किया करते हैं, तू हमारे लिये अमुक काम करदे ' इस प्रकारकी बात करना तो व्यापार करने समान है प्रभुकी परीक्षा लेना है और प्रत्यक्ष अविश्वास है. सच्चे भक्तका तो यही धर्म है कि, जैसे प्रभु रक्खे वैसेही रहना, सब तरहसे ईश्वरकी इच्छाके अधीन होना और अमूल्य भक्तिका धूल जैसी वस्तुसे कभी बदला मांगनेकी इच्छा न करना.

१५९ अंधे मनुष्यको अपने अगुएके भरोसेपर चलना चाहियें तबही वह सकुशल चलसकताहै. वैसेही हमकोभी अपनी डोरी ईश्वरकोही सोंपदेना चाहिये.

अंधा आदमी उसकी लकडी पकडकर चलनेवाले आदमीके भरोसे रहें

तवही सकुशल आगे वढसकताहै परंतु जो वह उसपर विश्वास न रक्खे तो पलपलमें उसको फिकर रहता है, वह वारवार रास्ता भूल जाताहै और कभी २ तो गढेमेंभी गिरजाताहै. अंधे मनुष्यकी तरह हमभी अज्ञानी हैं. प्रभुकी मायाका पार नहीं पाया जाता. हमभी अपने चलानेवाले अगुए प्रभुको छोडकर अपनी इच्छाके अनुसार चलें तो मायाके चक्रमेंभी फँसेगये विना कभी न रहें और जो मायाके चक्रमें फँसगये तो अवश्य चौरासी लाखके चक्रमेंभी जाही पडे. ऐसा न होने देनेके लिये हमको अपनी डोरी अंधेवाली लकडी ईश्वरके हाथमें सोंपदेनी चाहिये. प्रभुके हाथमें डोरी देदेनेसे हम निर्भय होजाते हैं और समय पर अपने इच्छित स्थानपर सकुशल पहुँचसकते हैं. जो अंधा अपने अगुएके भरोसे नहीं रहता वह खराव होताहै, इसी तरह हमभी धर्मके काममें और प्रभुके मार्गमें महा अज्ञानी होतेहुएभी जो अपनी डोरी समर्थ ईश्वरके हाथमें नहीं सोंपदेंगे तो कदापि शांति प्राप्त नहीं करसकेंगे और कभी सच्चा सुख नहीं पासकेंगे. इसलिये भाइयो ! प्रभुके चरणके शरणका वल प्राप्त करो और अपनी डोरी समर्थ प्रभुके हाथमें सोंप दो तो वह करुणाका भंडार हमारा कल्याण करेगाही !

१६० भक्तिकी जड बालसेभी वारीक तार पर है, वह वारीक तार सोही विश्वास है[१].

महात्मा लोग कहते हैं कि, भक्तिकी जड मनुष्यके बालसेभी वारीक तारपर है जो वह पतला तार टूट गया तो सारी मेहनत चली जाय कारण जड कटजानेसे पेड नहीं ठहर सकता. जैसे वने वैसे उस पतले तारको उस जडको मजबूत करो. भक्तिकी

---

१ मेस्मेरिज्मके प्रयोगसमय विषय दृष्टिमें ऐसे विधेयसे भक्तिसंवंधी प्रश्न करनेपर उसने यह उदाहरण दियाथा औरभी उसके कितनेही उदाहरण इस पुस्तकमें दिये हैं.

यह जड सोही विश्वास है. अर्थात् श्रद्धा विनाकी भक्ति है सो जड विनाके वृक्ष समान है. भाइयो ! जडकी रक्षा करो ! जडकी रक्षा करो ! क्योंकि वह जड वारीकमें वारीक और नाजुकमें नाजुक है. वह तार सहजहीमें टूटजाने योग्य है. इससे उसकी पूरी २ सँभाल रक्खो. अविश्वासके किसीभी भावको मनमें मत आने दो ! श्रद्धा टूट जानेका कोईभी काम न करो ! अपने विश्वासको डिगानेवाली किसीभी जगह न जाओ ! सब प्रकारसे और सारे बलसे भक्तिके नाजुक तारको सँभालो ! क्योंकि जो यह तार टूट गया तो काताकूता कपास हो जायगा और सारा परिश्रम निष्फल जायगा. भक्तिकी जडको ढीला न पडनेदेनेपर ध्यान रक्खो क्योंकि जो रक्षा करने योग्य वस्तु है सो यही है. जैसे बने वैसे प्रभुपरके विश्वासको दृढ करो ! यह दृढता शास्त्रोंको जानने और अच्छे काम करनेसेही होती है. इस लिये भक्तिकी जड दृढ करनेके लिये ज्ञान और कर्म वढाओ !

पद।

प्रभुजी ! मोहिं आसरे तेरो ॥ टेकं ॥ कोऊ आश धरे
काहूकी, तुम विन और न मेरो । नहिं कछु कर्म,
नहिं कछु विद्या नहिं परपंच घनेरो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
ठाकुर हाथ लाज चेरेकी, तुम ठाकुर मैं चेरो ।
सूरदास ज्यों घरको चेरो, मैं चेरो घरकेरो॥प्रभुजी ०२॥

कवित्त।

काहूके अधार सेवा बणिज व्यापारहूको,
काहूके अधार थित वित खेत गामको ।
काहूके अधार तनसार भ्रात बंधुनको,
काहूके अधार प्रिय सार निज नामको ॥

काहूके अधार विद्या बुद्धि और बलको है,
काहूके अधार हाथी घोडा धन धामको ।
मैं तो निराधार मेरी हरिही करोगे सार,
मेरे तो अधार एक केवल हरिनामको ॥ १ ॥

१६१ बच्चेकी मांगीहुई सबही वस्तु पिता नहीं देदेता है, परंतु जो उचित होता है सो देता है, वैसेही ईश्वरभी हमको उचित होताहै सोही देताहै !

हम देखते हैं कि, पुत्र पितासे अनेक वस्तुएँ मांगता रहता है परंतु पिता वे सबही वस्तुएँ उसे नहीं ला देता. वह तो वेही वस्तुएँ देता है जो वे पानेके योग्य है, और जो उनके लिये उपयोगी हैं. वैसेही हमभी अपने समर्थ पिता परमेश्वरसे अनेक वस्तुएँ मांगते हैं. परंतु उनमेंसे जो जो योग्य होती हैं वेही वह हमको देता है. उसके आगे हम तो एक छोटे बालककी तरह है और इसीसे हम एक बीछू तकको पकडना चाहते हैं, सांपतक परभी हाथ मारना चाहते हैं, और चांदकोभी जेबमें रखलेनेकी इच्छा करते हैं परंतु वह पिता हमको करने कैसे दे ? सर्वशक्तिमान् प्रभु हमारे पितासेभी हमारा अनंतगुण कल्याण चाहता है, इससे हमको अच्छी लगनेवाली परंतु उसको अच्छी न लगनेवाली वस्तु वह हमको क्योंकर दे सकता है ? इसलिये जब जब हमारी इच्छाके अनुसार हमको मिलनेमें देर हो तब तब यही समझो कि या तो हमारे हृदयमें इतनी पवित्रता और इतना भगवदावेश नहीं आया है कि, जिससे हमारी प्रार्थना परमेश्वरतक पहुँचसके अथवा हमारी मांग अयोग्य है. ऐसा समझकर जब हमारी मांग खाली जाय तबही अधिक २ भक्ति करना चाहिये परंतु निराश होकर

भक्तिकी डोरीको ढीली नहीं करदेना अर्थात् भक्तिको छोड नहीं देना चाहिये.

१६२ प्रभुको अपनी इच्छाएँ न सोंपदें तबतक कुछभी दिया नहीं कहला सकता.

हम ईश्वरके लिये चाहे जितनी बातें करें चाहे जितना खर्च करें, चाहे जितने तीर्थ करें, चाहे जितने व्रत करें, और चाहे जितनी दौडधूप करें परंतु जबतक उसको अपनी इच्छाएँ न दे दें तबतक प्रभु प्रसन्न नहीं होता और न हमारा उसको कुछ दिया कहलासकता, क्योंकि इच्छाएँ देदेनेमेंही सब वस्तुओंका समावेश हो जाताहै. इससे जिसने अपनी सब इच्छाएँ ईश्वरको दे दीं और ईश्वरकी इच्छाके अधीन होनेका बल प्राप्त करलिया उसीने धर्मका सार समझलिया और उसीने संसारको जीतलिया. जिसने ईश्वरको अपनी इच्छाएँ देदीं उसने सर्वस्व देदिया और जिसने अपनी इच्छाओंको अपने अहंभावमें रखकर फिर कुछ दिया उसने कुछभी नहीं दिया. परमेश्वर हमसे धन दौलत नहीं मांगता, ईश्वर हमारे स्त्री पुत्रोंको नहीं मांगता, ईश्वर हमारी कायाको कष्ट देनेकी आज्ञा नहीं देता और ईश्वर हमसे घरबार छोडकर राख लपेटनेको नहीं कहता वह तो केवल हमारी इच्छाएँ अर्पण करनेको कहता है.

सब शास्त्रोंका यही सार है और सब महात्माओंका यही उपदेश है।कि तुम्हारी इच्छाएँ परमेश्वरके अर्पण करदो तो तुम्हारा सर्वस्व अर्पण होचुका. ईश्वरको अपनी इच्छाएँ देदेनेका अर्थ इतनाही है कि जैसे परमेश्वर रक्खै वैसे रहना, उसमें हर्ष शोक करना नहीं और किसीभी स्थितिमें उसको भूलना नहीं. इसीका नाम सच्ची भक्ति है. इसलिये भाइयो! अपनी इच्छाएँ ईश्वरके अर्पण करके उसकी इच्छाके अधीन होनेका यत्न करो! यही भक्तिका तत्त्व है,

और यही भक्तकी खूबी है कि, अपना अपनापन भूलजाना और प्रभुमय होजाना.

१६३ जो रोगी दवा खावै परंतु पथ्य न करे उसका रोग नहीं मिटता. वैसेही जो धर्मको जानै परंतु पालै नहीं उसका उद्धार नहीं होता.

जो रोगी दवा खावे परंतु पथ्य न करे उसका रोग नहीं मिटता किंतु कभी २ अधिकही होजाता है. वैसेही जो मनुष्य धर्मको तो जानै परंतु उसको पाले नहीं वह दवा खाने परंतु पथ्य न करनेवाले रोगीके समान है. वे तो उलटे अधिक दोषके पात्र हैं, क्योंकि वे जानतेहुएभी भूल करते हैं अर्थात् हाथमें मशाल लेकर कुएमें गिरते हैं. अज्ञानियोंपर कदाचित् दयाभी होजायगी परंतु धर्मको जानकरभी जो पालते नहीं उसको कैसे क्षमा किया जायगा ? वे धर्मराजके पास न्यायके समय अपना बचाव कैसे करसकेंगे ?

रोगीको रोगमुक्त होनेके लिये केवल दवाही नहीं खानी पडती परंतु साथमें पथ्यसेभी चलना पडता है, जो पथ्यसे न रहे तो दवा कुछभी गुण नहीं करती वैसेही केवल धर्म जाननेसे अर्थात् धर्मकी बातें करने तथा धर्मकी पुस्तकें पढलेनेसेही काम नहीं चलता परंतु धर्मके नियमोंको अच्छी तरहसे श्रद्धापूर्वक पालनेसे काम चलता है. धर्म केवल मुँहसे कह डालनेका नहीं होता किंतु हृदयमें धारण करने और जीवनभरमें अनुभव करनेका है. जो लोग धर्मको केवल ऊपरी बातोंहीमें खो देते हैं और हृदयमें खाली रहजाते हैं वे दयाके पात्र हैं. समय पडनेपर उनका मन उनको काटे बिना नहीं रहेगा. भाइयो ! देने लेनेमें हाथ पीछे और बातें करनेमें जीभ आगे रखनेसे कुछ धर्म नहीं होता किंतु उसका पालन करनेसे धर्म होताहै. इसलिये धर्मके नियम सीखो ! धर्मके नियम पालना सीखो !! अपने आचरण सुधारना सीखो !!!

१६४ प्रजाको अपने राजाके नियम जानने चाहिये वैसेही मनुष्योंको ईश्वरके नियम अर्थात् धर्मके नियम समझना चाहिये.

राजाकी ऐसी आज्ञा होती है कि, मेरे राज्यमें रहनेवाले सब लोगोंको मेरा कानून जानना और पालना चाहिये. यदि कोई मनुष्य कायदा न जानता हो और कोई अपराध करडालै तो पोलिस उसको पकडकर लेजाती है, वैसे समयमें जो वह मनुष्य यह कहै कि, मैं आपका कानून नहीं जानता था इसीसे मुझसे यह अपराध बन-गया तो पोलिस उसको सजाकिये विना नहीं छोडते, उलटा ऊपरसे यह कहती है कि, तुमने राजाका कानून नहीं जाना तो यहभी तुम्हारी भूल है. क्योंकि जिसके राज्यमें रहना उस राज्यका कानून जानना तो वहांकी प्रजाका कर्तव्य है. वैसेही ईश्वरके नियम जानना और उनको पालना ईश्वरके अखंड धर्मराज्यमें रहनेवाले मनुष्यमात्रका कर्तव्यहै कानून न जाननेसे यह अपराध बनगया ऐसा कहनेसे बचाव नहीं होसकता. ऐसा कहना तो कहनेवालेकी नालायकी है, क्यों-कि जो जानना चाहिये सो न जाननेमें तो उसहीकी भूल है इसलिये भाइयो ! ईश्वरके नियमोंको जानो और उनको पालो, यही बचावका उपाय है. हम नियम नहीं जानतेथे इससे नहीं पालसके ऐसा कह देनेसे सजा पानेसे बचाव नहीं होसकता. इससे बनै जैसे ईश्वरके नियम पालना सीखो !

१६५ औरोंको लाभ पहुँचानेके लिये साधुओंको भजन छोडना पडै तो वहभी एक तप है.

एक विद्वान् ब्राह्मणको नित्य वेदका पाठ करनेकी वडी रुचि थी. वह नित्य इच्छानुसार शास्त्रोंका पठन पाठन किया करता था. इसके पीछे उसकी एक सेठसे पहँचान होगयी. सेठ उसको अपने

पास रखना चाहताथा परंतु वह ब्राह्मण इससे राजी न था, क्योंकि वहांपर उसका ठीक २ पठन पाठन नहीं चलताथा. इसके सिवाय धनवानोंका आडंबरयुक्त आचार विचार उसको पसंद नहीं आता और पैसेवालोंकी पैसेकी गरमी अभिमान उस निखालिस गरीब परंतु विद्वान् ब्राह्मणको सहन नहीं होताथा. इन सब बातोंसे वह मन ही मनमें अकुलाया करता था, परंतु अपनी भलमनसीके विचारसे और कुछ २ लोभवश होकरभी उस सेठकी इच्छाके विरुद्ध नहीं होताथा.

सेठका घर देखनेमें सोनेकाही घर था परंतु उस ब्राह्मणके लिये तो वह प्रत्यक्ष पिंजरा और कैदखानासा जान पडताथा. पिंजरा कैसाही अच्छा हो परंतु उसमें बंद तोतेको स्वतंत्रताका मनमाना आनंद कभी नहीं मिलसकता. पिंजरेमें तोतेको कैसाही अच्छा अच्छा फल फूल आदि खाना मिलता हो और जंगलमें चाहे कच्चा, कडवा अथवा सूखा रूखा खाना मिलता हो, पिंजरा चाहे सोनेका हो और जंगलमें उसको खुरदरे ऊंचे नीचे तथा टेढे सीधे वृक्षपर बैठना पडताहो, पिंजरेमें ऋतु ऋतुके अनुसार सुखसे रहनेको मिलताहो और जंगलमें ठंडसे सिकुडना, गरमीसे तपना और बरसातसे भीगना पडताहो तबभी तोतेको तो खुला रहनाही पसंद आता है, इसी तरह उस गरीब ब्राह्मणको सेठके यहां अमरस पूडी मिलती, बरफी पेडा मिलता, अच्छे २ अचार और साग तरकारी मिलती, सोनेके लिये हवा-दार मकान मिलता, बैठने फिरनेको घोडा गाडी मिलती, और बातें करनेके लिये बडे २ आदमी मिलते परंतु तबभी ये सब बातें उस-को सोनेके पिंजरे समानही जानपडतीथीं, कारण वहाँ उसको इच्छाके अनुसार पठन पाठन करनेको नहीं मिलताथा, सत्संग नहीं मिलता था और न भजनस्मरणही करनेको मिलताथा. वहां तो नई २ फॉंसीकी बातें, नई २ मौज शौककी बातें काफी और आइसक्रीम (मलाईका बरफ) की बहार, हवा खानेजानेकी तैयारियां, गाडी घोडोंकी बातें,

पोशाकोंकी धामधूम और महमानदारियोंकी बातें चला करती थीं. सिठानियोंके रूठने मनाने चला करतेथे और लडकोंकी धाकाधाकी चला करतीथी. इन बातोंमें उस एकांतवासी ब्राह्मणका मन कैसे लगसकताथा ? इससे वह विचारा ब्राह्मण मनहीमनमें अकुलाया करताथा और वहांसे छूटनेका यत्न विचारा करताथा.

अकस्मात् उसको गुरु मिलगये. गुरुसे हाथ जोडकर उसने कहा "महाराज ! मैं तो एक सेठके लफरेमें फँसगया. मेरा सारा पठन पाठन छूटगया. अब जो सेठको छोड भगताहूं तब तो उपाधिमें फँसताहूँ और नहीं छोडताहूं तो मेरा पठनपाठन सब मारा जाता है ? "

गुरुने कहा " बेटा ! तू पढा तो है परंतु गुना नहीं है ! "

शिष्यने पूँछा " महाराज ! यह कैसे ? "

गुरुने उत्तर दिया " अभी तु कच्चा है इससे इसका भेद नहीं समझता ! उस सेठके पास रहनाभी तेरा एक प्रकारका तपही है ! "

शिष्यने विस्मययुक्त होकर पूँछा " महाराज ! इसमें तप कैसा ? पठन पाठन छूटगया क्या यही तप है ? "

गुरुने कहा " उस गृहस्थके लिये तू अपनी इच्छाओंका भोग देता है यही तेरा तप है और अपनी विद्याका उस सेठके कुटुंबको लाभ पहुँचाताहै यह तेरा धर्म है. उस सेठने पूर्व जन्ममें अच्छे कर्म किये हैं. उन अच्छे कर्मोंका फल ईश्वर उसको तेरे द्वारा पहुँचाता है. इससे कायर मत हो ! तेरे भजनके भोग अर्थात् त्यागद्वारा उस कुटुंबको सत्संग और ज्ञानका लाभ पहुँचता है सोही तेरा तप है ! "

१६६ घरमें तो घोर अंधकार हो और बाहर बडे २ दीपक हो तो किस कामके ? इसी तरह हमारी बाहरी धूम-धाम तो बहुत बडी है परंतु अंतःकरण भीगा हुआ नहीं है सो किस कामका ?

बहुतसे नगरोंमें हम देखते हैं कि सडकोंपर बडे २ लालटैन लगे रहते हैं और बहुतसे घरोंमें बाहर बहुत तेज रोशनी होती है परंतु उनही सडकोंके पासकी गलियोंमें और उन घरोंके भीतर हिस्सेमें घोर अँधेरा रहता है. बाहर दिखानेके लिये तो बडे २ दीपक होते हैं परंतु भीतर एक जरासाभी नहीं होता. गलियोंमें और घरोंमें चाहे इस तरह काम भी चल जाय परंतु हमारे हृदयमें तो इस तरह काम चलना उचित नहीं है ! हम ऊपरसे तो धर्मका बडा आडंबर रखवे और बडी २ धूम धाम मचावे परंतु भीतरतक उसे न पहुँचावे तो वह किसी कामका नहीं. गरीबीके कारण घरोंमें तो घोर अंधकार और सडकोंपर बिजलीकी रोशनी ! शहर सफाईके संबंधमें चाहे ऐसा अंधेर चल जाय परंतु आत्माकी उन्नतिके विषयमें प्रभुके विषयमें ऐसा नहीं चल सकता " ऊपरसे तो रंगा चंगा, भीतरकी भगवान् जानें " वाली बात करनेसे ईश्वर ठगनेमें थोडाही आसकता है ? बाहरसे दीपक जलाना और भीतर घोर अँधेरा रखना तो धोखाबाजी कहलाती है. यह तो " खीसा खाली और भपका भारी " की बात हुई. हृदयमें अँधेरा रक्खें और ऊपरसे दीपक जलावें अर्थात् ऊपरी ढोंग दिखावें तो ईश्वर प्रसन्न थोडाही होसकताहै ? ऐसे ढोंग और दंभसे तो उलटी हानिही होती है. ईश्वर ! ऐसे दांभिक भावसे हमको बचा और हमारे हृदयको भक्तिमें भिगो ! बाहरसे तो नदी बहावें परंतु भीतरसे सूखा न रहजाय ! इसकी पूरी संभाल रक्खो ! जो भिगोने लायक वस्तु है वह तो भीतरहै

है. अंतःकरणमें ज्योति जगाये विना बाहरी प्रकाशसे काम चलने-वाला नहीं है इसलिये भाइयो! प्रभुके निर्मल प्रेमसे अंतःकरणको भिगोनेका यत्न करो! यत्न करो!! यत्न करो!!!

१६७ धर्मके काममें स्त्री पुत्रों और लोकलाजसे डर-नेके बदले प्रभुसे डरना सीखो!

हमारी मूर्खता तो देखो! हमारी नालायकी तो देखो! कि, हम जितने अपनी स्त्रीसे डरते हैं उतने प्रभुसे नहीं डरते हम जितनी सास श्वशुरकी लज्जा मानते हैं उतनीभी प्रभुकी नहीं मानते! हम जितना सत्कार अपने समधियोंका करते हैं उतनाभी सत्कार परमेश्वरका नहीं करते! हम अपने मालिकसे जितने डरते हैं उतने परमेश्वरसे नहीं डरते! हम मक्खी मच्छर और पिस्सू खटमलका जितना फिकर करते हैं उतनाभी फिकर पाप कर्म न करनेका नहीं करते! क्या यह हमारी मूर्खता नहीं है? जिसकी कृपासे हमारा जीवन और हमारा सर्वस्व बना हुआ है उस सर्वशक्तिमान् परमेश्वरका हम कुछभी डर नहीं रखते, उलटे और अपनी इच्छाके अनुसार स्वतंत्ररूपसे चलते हैं सो कबतक चलसकैगा? आगे या पीछे मृत्यु तो अवश्य आवेहीगी और न्यायभी हमारा होगाही, क्योंकि कर्मके फल छूट नहीं सकते तब उस समय धर्मराजको क्या उत्तर देंगे? भाइयो! पहलेसेही सचेत होकर प्रभुसे डरकर चलो तो फिर किसीसेभी न डरना पडै! परमेश्वर दयामें दयाका स्वरूप है वैसेही भयमें भयकाभी स्वरूप है उसके भयमें चलनेसे अर्थात् उससे डरकर चलनेसे हम अभय होसकते हैं. इसलिये भाइयो! स्त्रीसे डरनेके बदले और लोक-लज्जासे डरनेके बदले परमेश्वरसे डरना सीखो जिससे अभय होजाओ!

१६८ ज्ञान और भक्तिमें भेद क्या? ज्ञान तो है बीज और भक्ति है पेड!

लोग जानते हैं इतना ज्ञान और भक्तिमें भेद नहीं है. अंतमें दोनोंका अभेदही है. कारण महात्मा कहते हैं कि, ज्ञान है सो भक्तिका

छोटा रूप है और भक्ति है सो ज्ञानका वडा रूप है. ज्ञान भक्तिका छोटा रूप है अर्थात् उसका वीज है, कारण ज्ञानका अर्थ है जानना. पहले ईश्वरका स्वरूप और अपना कर्तव्य जानलेने और समझ लेनेसेही सच्ची भक्ति होसक्ती है. ज्ञान है सो भक्तिका छोटा रूप अर्थात् वीज है और भक्ति है सो ज्ञानका स्थूल रूप है अर्थात् वाहरसे दीखसकने योग्य ज्ञानका वडा रूप है सोही भक्ति है. सारांश यह कि, ज्ञान है सो वीज है और भक्ति है सो वृक्ष है. जव ऐसाही है तव वीज विना पेड नहीं हो सकता और पेड विना वीज नहीं हो सकता. अर्थात् ज्ञान और भक्ति एक दूसरेसे जुदा होने लायक नहीं है क्योंकि ज्ञानके विस्तारका नाम भक्ति है और भक्तिके वीजका नाम ज्ञान है. यद्यपि ज्ञान और भक्ति दोनों साथही साथ रहते हैं तवभी ज्ञान वीज है और भक्ति वृक्ष है. अर्थात् वीजसे वृक्षकी कीमत अधिक और महत्त्वभी अधिक होता है इसमें संदेह नहीं. परंतु वीजकी कीमतभी कुछ कम समझनेकी नहीं, है, क्योंकि वीज न हो तो वृक्ष होही नहीं सकता. तवभी वीज है सो पूर्वरूप अर्थात् वालक है और भक्ति है सो उत्तररूप अर्थात् युवा है. वालक और युवामें जितना भेद है उतनाही ज्ञान और भक्तिमें भेद है. तवभी इतना याद रक्खो कि, यह भेद है एकही वस्तुमें, दो न्यारी २ वस्तुओंमें नहीं, क्योंकि जो वालक है वही युवा होता है. तात्पर्य यह कि, जवतक वह वीजरूप है तवतक उसका नाम ज्ञान है और अनुभवरूप हो जानेसे उसका नाम भक्ति हो जाताहै.

इस तरह ज्ञान और भक्तिको अलग २ जाननेकी भूल नहीं करना चाहिये. जव हम ज्ञान और भक्तिके भेदको अच्छी तरह समझलेंगे तवहीं ज्ञानके अधिक २ वीज चुनसकेंगे और उनमेंसे भक्तिके अच्छे २ वृक्ष उत्पन्न करसकेंगे. सवही जानते हैं कि भक्तिके वृक्षमेंसे स्वर्ग और मोक्ष दोनोंके फल मिलसकते हैं. इस लिये भाइयो ! ज्ञानके वीज इकठे करने और उनसे भक्तिके वृक्ष उगानेका यत्न करो !

कवित्त–चाहे तू योग कर भ्रुकुटी बीच ध्यान धर,
चाहे नाम रूप मिथ्या जानके निहार ले ।
निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्याप रह्यो,
ऐसो तत्त्व ज्ञान निज मनमें तू धार ले ॥
नारायण अपनेको आपही वखान कर,
मोते वह भिन्न नहीं या विधि पुकार ले ।
जौलों तोहि नंदको कुमार नाहिं दृष्टि परे,
तौलों तू भलेही बैठ ब्रह्मको विचार ले ॥

३६९ सच्चे रुपयोंके साथ कोई २ खोटा रुपयाभी चलजाताहै, वैसेंही सच्चे भक्तोंकी साथ ढोंगीभी चल निकलते हैं इसलिये नहीं समझ लेना कि, संसारमें सच्चे भक्त हैंही नहीं.

आजकल संसारमें ढोंगी बहुत वढ निकले हैं सो सच है परंतु इसपरसे यह नहीं समझलेना चाहिये कि संसारमें सच्चे भक्त हैंही क्योंकि जो सच्चा भक्त नहीं तो ढोंगियोंकी दालही नहीं गलसकती. संसारमें जव सच्चे रुपये हैं तवही तो उनके साथमें कभी झूंठा रुपयाभी चल जाता है परंतु जो सच्चे रुपये बिलकुलही न हों तो झूठ रुपये चलही कैसे सकते हैं ? वैसेही सच्चे भक्तोंके साथमें ढोंगीभी चलजाते हैं. इसलिये जो कदाचित् हम कभी झूंठे ढोंगीकेठगनेमें आजायँ तो हमको निराश होकर सारेही भक्तोंपर अश्रद्धा न करना और सबही भक्तोंको झूंठे मानलेनेको महापाप नहीं करना चाहिये. यह तो अवश्य है कि सच्चे भक्तोंके साथ झूंठेभी लगेही हुए हैं परंतु उनके लिये सच्चे थोडेही छोडदिये जासकते हैं. मानलो कि हमको निन्नानवें भक्त झूंठेही झूंठे मिले परंतु जो एक सौवांही सच्चा भक्त मिलगया तो

वह निन्नानवें भक्त झूंठोंसे होनेवाली हानिकोभी पूरा करसकता है. इसलिये सच्चे भक्तोंपर कभी अश्रद्धा न करो ! ईश्वरको जितना अपना भक्त प्यारा है उतना और कोईभी पदार्थ प्यारा नहीं है. भक्तोंका सन्मान करना प्रभुका सन्मान करनेके समान है. शास्त्रोंका यह सिद्धांत समझ लेनेसे भक्तका महत्त्व समझमें आजाता है और तबही भक्तके साथ प्रेम और मानका वर्ताव कियाजासकताहै. भक्तोंपर ऐसी मीठी नजर रखनेसे किसी समय विना विचारा अमूल्य लाभ मिलजाता है. जो कभी कोई ठग भक्त मिलजाय तो निराश होकर सारेही भक्तोंपरसे श्रद्धा नहीं हटालेना चाहिये और यह नहीं समझलेना चाहिये कि, सच्चे भक्त कोई हैंही नहीं, कारण संसारमें सच्चे रुपये हैं तबही उनके साथ कोई खोटा रुपयाभी आजाताहै परंतु एक रुपया खोटा निकल आनेसे सारेही रुपये खोटे नहीं समझलिये जाते, इसी तरह किसी एक आधे ढोंगी भक्तको देखलेनेसे सबहीको वैसे मानलेनाभी भूल है केवल भूलही नहीं पापभी है ऐसे पापसे बचते रहो!

१७० प्रभुकी कृपा हमको क्यों नहीं मिलती ? दुर्गंधिवाले पाखानेमें हम जितना समय लगाते हैं उतनाभी तो ईश्वरके शांतिमय मंदिरमें नहीं लगाते !

हम चाहे तब शिकायत किया करते हैं, कि, भगवान् हमपर कृपा नहीं करता. ईश्वरको दोष तो हम बारबार दिया करते हैं परंतु अपनी भूलोंकोभी हम कभी देखते हैं ? कभी नहीं ! हमने ईश्वरके लिये ऐसा कौनसा काम किया है कि, जिसके लिये वह हमपर विशेष कृपा रक्खे ? हमारे बहुतसे भाई बीडी पीनेमें जितना समय लगाते हैं उतना समयभी कभी प्रभुको याद करनेमें नहीं लगाते ! दँतुअन करनेमें जितना समय गँवाते हैं उतने समय तकभी हम ईश्वरप्रार्थना कहाँ करते हैं ! नहानें धोनेमें जितना समय हम खर्च करते हैं उतनाभी ईश्वरके नामपर अच्छे कर्म करनेमें नहीं खर्च करते ! कपडे पहननेमें, बालोंमें

तल कंघा करनेमें और सेंट पोमेटम लगानेमें जितना समय खोते हैं उतना हम ईश्वरभजनमें नहीं खोते. खाने पीनेमें जितना समय लगता है उतना समयभी ईश्वरके नामपर अपने भाई बंधुओंका दुःख दूर करनेके काममें नहीं लगता. अखबार पढनेमें हम जितना समय लगाते हैं उतना समयभी प्रभुकी यादमें नहीं लगाते! बच्चोंको खिलानेमें हमारा जितना समय लगाता है उतनाभी प्रभुको रिझानेमें कहाँ लगता है? तेरी मेरी करनेमें हम जितना समय लगाते हैं उतना धर्मशास्त्र पढनेमें कहाँ लगाते हैं? अपने मित्र और सगे संबंधियोंसे मिलनेमें हम जितना समय लगाते हैं उतना समय ईश्वरसे मिलनेके विचारमें कहाँ लगाते हैं? और तो क्या परंतु दुर्गंधयुक्त पाखानेमें नाक बंद करके हम जितनी देर बैठे रहते हैं उतनी देरभी ईश्वरके शांतिदायक मंदिरमें हमसे कहां बैठाजाता है?

भाइयो! विचार तो करो! ईश्वरकी हमपर कैसे कृपा होसकती है? स्त्रियोंमें बैठकर हँसी मजाक करनेकी हमको जैसी प्रबल इच्छा होती है वैसी कभी धर्मका रहस्य समझनेकी भी होती है? पान खाने और बीडी पीनेकी जैसी रुचि होती है वैसी कभी प्रभुका स्मरण करनेकी भी रुचि होती है? मेले तमाशेमें जानेका जैसा मन होता है वैसा प्रभुके मंदिरमें जानेकाभी कभी होता है? अपनी स्त्रियोंकी और सरकारी हाकिमोंकी हम जितनी बडाई करते हैं उतनी कभी परमेश्वरकी भी बडाई करते हैं? पेट पालन करने निमित्तके काम धंधोंमें और आवश्यकताके योग्य सोनेमें जितना समय लगता है उतना समय यदि ईश्वरभजनमें यदि कोई गृहस्थ न लगासके तो ईश्वर उसे क्षमाभी करसकता है परंतु ऊपर लिखी बातोंमें लगनेवाला थोडा समयभी ईश्वर निमित्त न लगाया जाय तो ईश्वरकी हमपर कैसी कृपा हो सकती है? इसलिये भाइयो ईश्वरकी कृपा प्राप्त करनी हो तो प्रेमसे दीनतापूर्वक ईश्वरका शरण गहो और जो समय निरर्थक बातोंमें खोतेहो वह समय ईश्वरको पकडनेमें लगादो!

ऐसा करनेसे समय आनेपर आपोआप ईश्वरकी कृपा प्राप्त हो जायगी- इससे भाइयो ! प्रभुमें लगो !! प्रभुमें लगो !!!

३२ पद ।

हरि तोपै प्रसन्न किसविध होय । मनको रह्यो कपट न खोय ॥ टेक ॥ हरि कीर्तन हरि कथा सुननकों, बहु आलस ह्वै आवे। कामिनीकीर्तन परानिंदा माहिं उदय न अस्त दिखावै ॥ १ ॥ प्रभुकी पूजा करन माहिं तुव काया थरहर कंपै। दो कौडीके लोभ कारनै, निशदिन नैनन झंपै ॥ २ ॥ प्रभुसेवाको चंदन घसिवे, बहु श्रम शरीर आनै। अंगभोग लगि सांझ सवेरै, पहरलागि ताहि छानै ॥ ३ ॥ व्रत एकादशी जाग्रणमाहीं, नींद घनेरी आवे। पातरनृत्य भँडौवा महफिल छन जिमि रजनी जावै ॥ ४ ॥ अंतरके छलको तुव दफ्तर, बांच्यो अंतरजामी। रह्यो न छानी कह रामजीवन, रे कपटी खल कामी ॥ ५ ॥

१७१ अमृत कहां है ? सच्चा अमृत भक्तिमें है.

एकवार दुनियांको अच्छी तरह पहँचानेहुए अनुभवी रसिक कवि-योंमें विवाद चला कि अमृत कहां है ? किसी कविने कहा कि 'अमृत शहदमें है क्योंकि वह मीठा है.

दूसरेने कहा " नहीं ! अमृत तो नववधूके मुखमें है क्योंकि शहदसेभी वह अधिक मीठा होताहै. "

तीसरेने कहा " नहीं नहीं ! अमृत तो चंद्रमामें है क्योंकि उसमें शांति है.

चौथेने कहा " वाह ! चंद्रमा तो कलंकयुक्त है ! सच्चा अमृत समुद्रमें है क्योंकि समुद्रमथन करते समय देवताओंके समुद्रमेंसेही अमृत मिलाथा. "

पांचवेंने कहा " नहीं नहीं ! समुद्रमें अमृत नहीं होसकता, क्योंकि वह तो खारा है ! अमृत होता तो स्वर्गमें इंद्रके पास है. "

छठा बोला " नहीं भाई ! इंद्रके पास अमृत कहांसे आया ? इंद्रहीके पास अमृत होता तो नये नये इंद्रही क्यों होते ? अमृत तो लक्ष्मीजीके पास है कि जिनकी मायामें संसार लिपटा हुआ है. "

सातवें कविने कहा "तुम क्या कहते हो ? लक्ष्मीजीके पास अमृत नहीं है. जो अमृत लक्ष्मीजिकेही पास होता तो भक्तलोग लक्ष्मीका त्याग क्यों करते और शास्त्र मायाका त्याग करनेका उपदेश क्यों देते ? सच्चा अमृत तो भक्तजनोंकी वाणीमें है कि, जिससे वे खुद शांति पाते हैं और दूसरोंको शांति देते हैं. "

तब तो सब कवियोंने इस बातको स्वीकार किया और कहा " देवताओंका अमृत चाहे स्वर्गहीमें हो हमको उससे कुछ काम नहीं, हमको तो भक्तजनोंकी वाणीकाही अमृत मिलजाना चाहिये. वह अमृत देवताओंके अमृतसेभी बढकर है, क्योंकि देवताओंके पास अमृत होते हुएभी पुण्यक्षय होनेपर उनको पीछा नीचे गिरना पडता है और भक्तजन तो ईश्वरके नामरूप अमृतसे जन्ममरणके चक्रमेंसे छूटकर देवताओंके शिरपर पैर रखकर ईश्वरके दरबारमें जासकते हैं. "

इसलिये भाइयो ! भक्तोंकी वाणीका अमृत पानेकी प्रार्थना करो! वह अमृत भक्तोंका सत्संग करनेसे मिलसकताहै. और सत्संग करनेमें गांठका कुछ खर्च करना पडता नहीं. यह तो गरीबसे गरीब मनुष्यसेभी बनसकने योग्य काम हैं. इससे जो करना हो, अमर बनना और ईश्वरके पास पहुँचना हो तो भक्तोंकी वाणीका अमृत पिओ ऐसा सस्ता, सुगम और उत्तम अमृत दुनियांमें तथा स्वर्गमें दूसरा

नहीं है. इसलिये भाइयो ! संतजनोंके मुखसे प्रभुका नामरूप अमृत पिओ ! अमृत पिओ ! !

कवित्त--चढे गजराज चतुरंगिनी समाज सह,
जीत क्षितिपाल सुरपालसों सजत हैं ।
विद्या अपार पढ तीरथ अनेक कर,
यज्ञ और दान बहु भाँति सो करत हैं ॥
तीनों कालमें नहाय इंद्रियोंका वश लाय,
करके संन्यास विषय वासना तजत हैं ।
योग औ जप औ तपको अनेक करै,
बिना भगवंतभक्ति भव ना तरत हैं ॥

१७२ सत्संगमें जानेसे अंतःकरणके दोष मालूम होते हैं और पापसे बचाव होसकता है.

एक जिज्ञासुने किसी भक्तसे पूँछा " महाराज ! मनुष्यको सत्संगकी आवश्यकता क्यों है ? "

भक्तने उत्तर दिया " मनुष्यको अपनीही कीमत समझनेके लिये, अपनी शक्ति समझनेके लिये और अपना असली स्वरूप समझनेके लिये सत्संगकी आवश्यकता है. "

जिज्ञासुने पूँछा " महाराज ! सत्संगसे अपनी कीमत कैसे जानी जाती है ? "

भक्तने कहा कि सुनः--

एक सेठानी थी. वह बडी अभिमानी थी. प्रत्येक काममें मेरीही इच्छाके अनुसार हो इसका उसको बडा विचार रहता था. अच्छे बुरेका उसको कुछभी विचार नहीं था, औरोंकी इच्छा जानना तो उसने सीखाही नहीं था, वह बहुत भली थी, उदार थी, भक्तिमान् थी और ईश्वरीय मार्गमें आगे बढना चाहती थी, परंतु अहंकारके मारे

अपनेको दुनियाँभरसे अधिक बुद्धिमान् समझनेमें वह अपनी होशियारीमें अधूरीही रहगयी. इसके बाद किसी साधुका उसे उपदेश लगा जिससे वह सत्संगमें जाने लगी, वहां अंतःकरणके दोषोंकी चरचा चली, जिसे सुनकर उसको मालूम होगया कि, मैं बातबातमें अभिमान करती हूं और जराजरासी बातमें कडक होजाती हूं सो अनुचित है. इसके बाद उस साधुने जब उसने फिर दूसरे दिन आनेको कहा तब वह स्त्री बोली " महाराज ! मैं तो आपके यहां आनेसे पहले अच्छी थी सो और उलटी बुरी होगयी. "

साधुने पूँछा " यह कैसे ? "

स्त्रीने उत्तर दिया " जबतक मैं सत्संगमें नहीं जाती थी तबतक तो मैं यही समझती थी कि, मेरा जैसा कोई हैही नहीं, मैंही बुद्धिमान्, मैंही पवित्र, मैंही धर्मवती और मैंही सबसे अच्छी हूं, परंतु अब आपके सत्संगमें आनेसे तो सब बातही बदल गयी. अब तो मुझको ऐसा लगता है कि, मैंही सबसे खराब हूं, क्योंकि मुझमें अभिमान है. जबतक मैं सत्संगमें नहीं मिली थी तबतक मैं अपने मनको अच्छी लगती थी, परंतु जब सत्संगमें मिली और अंतःकरणके दोषोंको समझनेलगी तबसे तो अब मैं अपनेही मनको बुरी जानने लगगयी. इसीसे ऐसा हुआ कि, सत्संगमें आनेसे मैं बुरी होगयी. "

महाराजने कहा " बाई ! ऐसी खराबी तो सबकी हो ! मनुष्य अपने अंतःकरणके दोषोंको समझने लगै, और इसके लिये वह अपने तई पहलेसे बुराभी समझे तो क्या बुराई हुई ? ऐसी बुराई तो ईश्वर करै सबकी हो ! इस तरह हृदयके दोषोंको समझनेसे विकार छूट सकते हैं और दीनता आती जाती है. जितनी दीनता आती है उतनीही प्रभुमें लीनता होती जाती है, और प्रभुमें लीनता होनेसे अपना तथा प्रभुका स्वरूप पहँचाननेमें आसकता है. परंतु ये सब बातें होती हैं सत्संगमें जानेहीसे ! इसलिये जैसे बने वैसे सत्संगमें लगी रहो ! "

१७३ हमको अपनी कीमत समझनेके लिये सत्संगमें जानेकी आवश्यकता है.

इसके बाद दूसरे दिन भी वह सेठानी सत्संगमें गयी. महाराजने पूँछा " क्यों बाई ! आज क्या अनुभव हुआ ? "

सेठानीने कहा " आजभी एक नया पाठ मिला. पहले मैं धर्मके कामोंमें ऐसा समझा करती थी कि, यह अपने करनेका काम नहीं है, यह तो साधु संन्यासियोंका काम है, यह तो पागलोंका काम है, यह तो फक्कडोंका या नंग भंगेका काम है, यह तो जिसपर प्रभुकी पूर्ण कृपा हो उसका काम है. मुझसे ऐसे काम वन नहीं सकते. जिन धर्मके कामोंका पहले मैं ऐसा समझती थी, सत्संगमें पडनेसे उनहीको अव मैं समझने लगीहूं कि ये तो मैं सुगमतासे करसकती हूं. सत्संग करनेसे मुझमें इतना वल आगया है और अपनेही दोषोंको मैं ऐसी अच्छी तरह समझ गयीहूं कि शायद हजारों पुस्तकें पढनेसे कई वर्षमेंभी जितना समझमें नहीं आता. अव मुझको मालूम होने लगा है कि पहले मैं अपनेको वहुत अच्छी समझती थी सो केवल ऊपरहीका वारनिश था, भीतर तो ' ढोलके अंदर पोल ' ही थी, परंतु उस समय मैं यह वात नहीं जानती थी कि, लोग सत्संगमें क्यों नहीं जाते इसका कारण अव मेरी समझमें अपनेही उदाहरणसे आने लगाहै कि, सत्संगमें हमार अंतःकरणके दोष हमारी आँखोंके आगे आजाते हैं. वे हमसे सहन नहीं होते उन दोषोंको ढांकनेकी हमारी आदत पडीहुई है और व्यवहारमें उन दोषोंपर ऊपर ऊपरसे वारनिश लगानेकी चाल पडरही है परंतु अंतःकरणके पापोंको जडसे उखाड डालनेकी इस वारनिशमें शक्ति नहीं है अर्थात् संसारमें अच्छा लगनेके लिये ऊपरी ढोंग धतूरे करनेसे अंतःकरणके पाप नहीं मिटते. परंतु सत्संग इन दोषोंको जडसे उखाड फेंकता है. इस तरहपर हमारे प्यारे अंतःकरणके पापोंको सत्संग जडसे उखाड देता है और फिर नहीं होनेदेता

सो बात हमसे सहन नहीं होसकती. इसीसे हमको सत्संगमें जानेकी इच्छा नहीं होती. ”

इससे सिद्ध होता है कि, जो सत्संगमें न जायँ अथवा गये पीछेभी जो वहां न ठहरसकें और जिसके सत्संगमें रुचि न हो उसके लिये निश्चय समझना चाहिये कि अभी उनके अंतःकरणके पाप नहीं गये, वे अभी अपनी कीमत नहीं समझे और वह कीमत सत्संग विना समझीभी नहीं जाती इस लिये जैसे बनै वैसे सत्संग वढानेका यत्न करो !

१७४ कमर बांधनेका पट्टा पेटपर बांधनेसे कुछ भूख मरसकती है परंतु उससे पूरी शांति नहीं होती, वैसेंही भक्ति विनाके रूखे ज्ञान-सेभी पूरी शांति नहीं होती.

भाइयो ! याद रक्खो कि सच्ची भक्ति विनाका रूखा ज्ञान शांति नहीं देसकता ! भक्ति विनाके ज्ञानके विषयमें एक पंडितने कहा है कि, विलायतमें भूख बंद करनेके लिये कमरपर बांधनेका एक पट्टा आता है. उस पट्टेको कमरपर कसके बांधनेसे भूख कुछ कम होजाती है, और ज्यों ज्यों नित्य प्रति उसे कुछ २ कसा जाता है त्यों त्यों शनैः २ भूख मरती जाती है और अंतमें आहार बहुत कम होजाता है. यद्यपि इससे भूख कम होजाती है और थोडा खानेसे भूख मिटजाती है. परंतु इससे वैसी शांति नहीं होती जैसी मनभरके खानेसे होती है. पट्टा बांधकर भूख मारना और बात है, पेटभर खाना खाकर भूख शांत करना और बात है. भूख दोनोंही तरह शांत होती है परंतु उस शांतिमें बहुत अंतर है. इसी तरह भक्ति विनाका ज्ञानभी रूखाही होता है. भक्ति विनाका ज्ञान पट्टा बाँधकर भूख शांत करनेके समान है और भक्तिसहित ज्ञान मिष्टान्न भोजनसे भूख शांत करनेके समान है. इस लिये रूखे ज्ञानमें भटकना छोडकर

भक्तिसहित ज्ञान प्राप्त करो ! भक्तिसे ज्ञानका महत्त्व वहुत बढजाता है, क्योंकि भक्ति और ज्ञानका संयोग कुंदनमें हीरा जडनेके बराबर है, भगवान्‌ने भी गीतामें कहा है:—

"तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥"

अ० ७. श्लो० २७.

अर्थ—उनमें (भक्तोंमें) सदा समान चित्तवाला तथा एकभक्तिवाला ज्ञानी श्रेष्ठ है, क्योंकि मैं ज्ञानी भक्तको अधिक प्रिय हूं और ज्ञानी भक्त मुझे बहुत प्रिय है.

१७५ कुएमें हो उतना घडेमें आता है, वैसेही गुरुमें हो उतना शिष्यमें आसकताहै. इस लिये उत्तममें उत्तम गुरुको पसंद करो.

कहावत है कि, कुएमें हो उतना घडेमें आवै. जो हमारे पास न हो, जो हममें न हो वह दूसरेको कहाँसे दियाजाय ? इस लिये गुरुलोगोंको प्रेम भक्तिसे अपने हृदयको और ज्ञानसे अपने मस्तिष्कको तर करना चाहिये. जो गुरुओंमेंही अच्छे गुण न हों तो वे शिष्योंको क्या सिखलासकते हैं ? प्रायः गुरुके अच्छे बुरे आचरणपरही शिष्यके आचरणका आधार रहता है. इस लिये जैसे बनै वैसे गुरुलोंगोंको अपना आचरण सुधारना चाहिये, गुरु तँवाकू पीनेवाला हो तो उसका शिष्य गांजा फूँकनेवाला अवश्य होता है. गुरु परम त्यागी होता है उसका शिष्यभी परमार्थी होताहै. जैसे पिताके गुण दोष स्वभावसेही थोडे बहुत पुत्रमें आजाते हैं वैसेही गुरुका चाल चलनभी शिष्यके आचरणपर आवश्य असर करता है, इसी लिये मनुष्योंको अच्छे गुरु ढूंढनेकी आवश्यकताहै. क्योंकि गुरु बनना कुछ हँसी खेल नहीं है. चौरासी लाखके चक्करमेंसे बचाकर स्वयं भगवान्‌के पास लेजानेकी शक्ति रखनेवाले गुरु कैसे उत्तम होने

चाहिये और उनका कितना वडा महत्त्व समझना चाहिये सो विचार तो करो ! इतना वडा पद, इतनी वडी जोखमका काम विना शक्ति जो अपने ऊपर लें उनको कितने वडे पापी और कितने वडे मूर्ख समझना चाहिये ? इतने वडे पापमें पडनेसे वचनेके लिये गुरुलोगोंको अच्छेसे अच्छे आचरण रखने चाहिये और शिष्योंको ज्ञानियोंमें ज्ञानी और भक्तिमानोंमें भक्तिमान् गुरु ढूंढने चाहिये. जो ऐसा न हो तो—

" लोभी गुरु और लालची चेला। दोनो नरकमें ठेलम ठेला॥ "

वाली वात होजाय. इस लिये सावधान रहो !

१७६ थोडासा रोग मिटानेके लिये रोगी वैद्यको वहुतसा देडालता है तव प्रभुने तो हमको सव कुछ दिया है उसके लिये हमको क्या करना चाहिये ?

एक आदमी वीमार था. हाथ उसका अटक गयाथा, पैरसे लंगडा था, शरीरसे कोढी था, पेटमें वायगोला था, और आंखसे अंधा था उसको धन्वन्तरि जैसा एक वैद्य मिलगया उसने उसको अच्छा करदेना स्वीकार किया और दवा देना आरंभ किया. थोडे दिनमें पेटका गोला मिटगया तो रोगीने वैद्यको सौरुपये दिये. थोडे दिन पीछे उसका हाथ अच्छा होगया तव उसने एक अच्छा घोडा दिया. फिर लंगडापन मिटगया तव उसने एक खेत दिया अंतमें जव कोढ मिटगया तो रोगीने वैद्यको अपना घरवारही देदिया. तव वैद्यने पूँछा " अव मैं तेरा अंधापन भी मिटादूं तो वोल ! मुझे क्या देगा ? "

रोगीने हाथ जोड पैरोंमें पडकर कहा "महाराज वैद्यराज ! नम्रतापूर्वक आपको साष्टांग प्रणाम करनेके सिवाय अव मेरे पास और है ही क्या ? आपका उपकार अपार है ! आपकी मेहनतका वदला देनेको मेरे पास कुछ नहीं है ! "

इसपर उसकी नम्रतासे प्रसन्न होकर वैद्यने उसका अंधापन दूर करदिया.

भाइयो ! उस वैद्यने तो केवल विगडेहुए अंग दुरस्त कियेथे जिसकेही वदलेमें रोगीने उसको अपना सर्वस्व देदिया और उसके पैरोंमें पडा तव विचार तो करो कि, हमारा तो कुछभी नहीं था तव भी ईश्वरने हमको सव कुछ दिया है, इसके लिये हम उसका कितना करें ? अच्छी इंद्रियां, अच्छी तंदुरुस्ती, अच्छे कुल और अच्छे देशमें जन्म, अच्छे मातापिता, सुंदर स्त्री, निर्दोष वच्चे, उत्तम विद्या और वहुत २ से वैभव पानेके लिये हमने क्या ईश्वरके यहाँ धरोहर जमा की है ? याद रक्खो कि, इन सव वस्तुओंको पानेका हमारा कुछभी हक नहीं है परंतु यह सव उसकी कृपाकाही फल है. उसका वदला तो हम नहीं ही देसकते किंतु मानपूर्वक नम्रतासे उसको दंडवत् प्रणाम भक्ति तो कर सकते हैं. भाइयो ! सो प्रेमपूर्वक भक्ति करो ! भक्ति करो !

१७७ एक मनुष्यके तीन मित्र ! धन, कुटुंब और धर्म.

एक मनुष्यके तीन मित्र थे. उनमेंसे एक सदा उसके साथही रहताथा. प्रत्येक भोग विलासमें वह उसको तैयारी करदेता और प्रत्येक धामधूममें वह सदा उसके आगे वना रहताथा. दूसरा मित्र था सो दो चार दिनमें मिलता था, तवभी अपने मित्रकी चिंता रखता और अच्छे बुरे मौकेपर काम आताथा. तीसरा मित्र था सो महीने वीस दिनमें बुलानेसे आता था. उसको अपने मित्रके पास रहनेकी इच्छा तो वहुतही थी परंतु वह शौकीन नहीं था और अपने मित्रको इच्छानुसार चलनेभी नहीं देताथा वरन् उसपर अपना अंकुश रखताथा इस लिये मित्र उसे नित्य नित्य नहीं बुलाताथा. इस लिये उनका आपसमें मिलना वहुत दिनोंमें होता था.

एकवार उस मनुष्यको अदालतमें हाजिर होनेका हुक्म मिला तव तो वह घवराया और अपने अति प्रिय तथा सदा साथ रहनेवाले

मित्रसे बोला " यार ! मुझे आज अदालतमें हाजिर होनेका हुक्म हुआ है मेरी सहायताके लिये साथ चलना ! "

उसने उत्तर दिया " नहीं भाई ! यह मुझसे नहीं बनैगा ! मैं तो तेरे घरतकका साथी हूं, अदालतमें जानेका साथी नहीं हूं. "

मित्रने कहा " अरे यार ! यह क्या सूखा जवाब देता है ? तूने मेरे साथ इतनी तो मौज की, नित्य नित्य तू मेरे साथका साथ रहा, मुझको नोंच नोंचकर खागया और अब ऐनवक्तमें जवाब देतहै ! धूल पडी तेरी मित्रतामें ! "

उसने जवाब दिया " तू चाहे जितना कहै परंतु मैं एकभी नहीं माननेका ! तेरी मेरी दोस्ती इतनीही है ! पहलेही इसका क्यों न विचार किया ? हमारी दोस्तीमें किसीका भला हुआ है सो तेरा होगा ? जरा विचार तो कर मैं तेरे पीछे २ फिरताथा या तू मेरे पीछे २ फिरताथा ? "

अपने प्रियमित्रके ऐसे सूखे उत्तरसे दुःखित हो पश्चात्ताप करताहुआ वह अपने उस दूसरे मित्रके पास गया जिससे दो चार दिनमें मिला करताथा और बोला " तू मुझको अदालतमें मदद देगा ? "

उसने जवाब दिया " मैं तो अदालतमें नहीं जासकता. तू अधिक आग्रह करता है तो मैं तेरे साथ अदालतके दरवाजेतक चलूंगा परंतु हाकिमके पास जाकर तेरा बचाव तो नहीं कर सकूंगा. "

तब उसने उस तीसरे मित्रको बुलाया और उससे भी वही बात कही. उसने तुरंत उत्तर दिया " मैं तेरे साथ चलनेको तैयार हूं. तू मुझे नहीं बुलाता तो तेराही दोष है ! मैं तेरे साथ न्यायाधीशतक चलूंगा और बनैगा सो तेरा बचाव करूंगा. जबतक मैं तेरे साथ हूं तबतक तुझको कुछभी भय नहीं रखना चाहिये. "

इस तीसरे मित्रकी ऐसी बात सुननेसे उसको समाधान हुआ. दोनों अदालतमें गये और वहांपर जितना बना उतना उसने उसका बचाव किया.

हमकोभी उस तीसरे मित्रको पकडना चाहिये वह तीसरा मित्र कौन था तुम जानतेहो? वह धर्म था. पहला प्रिय मित्र जिसने अदालतमें जानेसे इनकार कियाथा वह धन था और जिसने अदालतके दरवाजे तक साथ जाना स्वीकार किया था वह श्मशानतक साथ जानेवाला कुटुंब था. धन और कुटुंब तो यहांही रहजाँयगे परंतु प्रभुके दरबारतक साथ देनेवाला तो एक धर्मही है. इसीसे महात्मा कहते हैं कि धर्म करो! धर्म करो!! धर्म करो!!! क्योंकि धर्मही सच्चा साथी है. ईश्वरके दरबारमें हमारा वकील धर्मही है. धर्मके सिवाय दूसरा कोईभी वहांपर मदद कर नहीं सकता. इसीसे महात्मा बुधने कहा है.

"धर्मं कुरु धर्मं कुरु प्रसारय धर्मध्वजम्।
प्रताडय धर्मदुंदुभिं प्रधम धर्मशंखम्॥"

अर्थ—धर्म करो, धर्म करो, धर्मकी ध्वजा फैलाओ! धर्मके नकारे बजवाओ! धर्मके शंख फूंको!

महात्मा बुधने ये शब्द किस समय कहे हैं सो तुम जानते हो महाकठिन तप करते २ जब बुद्धदेवको सच्चा ज्ञान हुआ तब तपमेंसे समाधिमेंसे उठनेपर सबसे पहले उनके मुँहमेंसे जो उद्गार निकले वे येही शब्द हैं!

१७८ सोनार जैसे सोनेके रजकणोंको सँभालताहै वैसेही भक्तोंको समयके कण (सेकंडों) को सँभालना चाहिये.

सोनार जैसे सोनेके रजकणोंको सँभालता है वैसेही हमको अपने समयके सेकंडोंको सँभालना चाहिये. जरासे रजकणोंको पानेके लिये सोनार लोग कितना श्रम करते हैं? कैसी सफाईसे रेतको इकठा करते हैं? उसको फटकनेमें, धोनेमें, तपानेमें, दूसरी रेतसे अलग करनेमें और उसकी सँभाल करनेमें वे कितना श्रम करते और कितना ध्यान देते हैं? जो हम इन सब बातोंपर बराबर ध्यान दें तो

आश्चर्य हुए विना न रहे. इस तरह थोडे २ रजकणोंको इकट्ठा करके वे इतना सोना इकट्ठा करलेते हैं कि, जिसे देखकर हमको आश्चर्य हो, आश्चर्य इसी बातका कि इतनेसे छोटे रजकणोंमेंसे इतना सोना ?

भाइयो ! इतनी मगजपच्ची करनेपरभी सोनार तो थोडाहीसा सोना पाते हैं, परंतु भक्तजन सोनेकी रेतकी तरह समयके कण इकट्ठे करनेसे कुछका कुछही पाजाते हैं. समयकी रेत सो सेकंड अर्थात् पल है इन पलोंको प्रभुभजनमें लगानेसे केवल सोनाही नहीं मिलसकता किंतु उसमेंसे दैवत और स्वर्गभी मिलसकता है, केवल स्वर्गही नहीं अमरत्व और ईश्वरभी उन पलोंको सँभालनेसेही भक्तजन प्राप्त कर सकते हैं. इन पलोंका स्वभाव है चलाजाना परंतु जो इनको पकडकर रखसकता है अर्थात् इनका अच्छा उपयोग करता है वही संसारमें बडेसे बडा मनुष्य बनसकता है और जो इन पलोंको भगवंत्सेवामें लगाताहै वही भक्त ईश्वरका कृपापात्र होता है. इसलिये समयका सदुपयोग करनेका यत्न करो !

हमारी जिंदगी पलोंसे बनीहुई है और पल एक २ करके ऐसे निकलजाते हैं कि, हमको खबरतक नहीं पडती. इस लिये महात्माओंका कथन है कि, समयको सँभालना और कालका स्वरूप समझना ही सबसे कठिन विषय है. विद्वान्लोग कहते हैं कि, समय नापनेकी शीशी अर्थात् रेतघडीमेंसे जो रेतके कण गिरते हैं वे केवल रेतकेही कण नहीं हैं परंतु वे चमकीले हीरे हैं हीरेसेभी बढकर हैं वह गिरताहुआ रेतका एक २ दाना आकाशके एक २ तारेसेभी बढकर है और उसको जो पकड सकता है वही ईश्वरको पकडसकता है. जो इस तरहपर जाते हुए समयको न पकडा जाय और उसको अच्छे कामोंमें न लगायाजाय तो भर्तृहरि महाराजके इस 'कालो न यातो वयमेव याताः' कथनके अनुसार 'समय नहीं गया परंतु हमही चले गये' वाली बात होजाती है, सँभाल रक्खो कि ऐसा न होनेपावै, क्योंकि संसारमें और सबही पीछा मिलसकता है

परंतु गया हुआ समय पीछा नहीं मिलसकता. सारी पृथ्वी देदेनेसेभी एक पल पीछा नहीं मिलैगा. ऐसे अमूल्य समयको न खोनेकी पूरी २ याद रक्खो ! संसारियोंमें और भक्तोंमें यही भेद है कि, संसारी जीव समयका मूल्य नहीं समझते इससे उसे मौज शौक और आलस्यमें खोदेते हैं और भक्त लोग समयकी कीमत जानते हैं इससे उसे भगवत्सेवामें लगा देते हैं. और तव तर जाते हैं इसलिये भाइयो ! ऐसे अमूल्य समयको निकामे मौज शौक और विषयवासनामें न लगाओ ! न लगाओ ! उसको तो प्रभुसेवामेंही प्रभुस्मरणमेंही लगाओ !

३२ पद ।

कहा मन विषयनसों लपटाई, या जगमें कोउ रहन न पावै, इक आवै इक जाई ॥ टेक ॥ काको तन धन संपति काकी, कासों नेह लगाई । जो दीखै सो सकल विनाशै, ज्यौं बादरकी छाई ॥ २ ॥ तज अभिमान शरण संतन गहु, मुक्त होहु छिनमाहीं । जन नानक भगवंत भजन विनु सुख सुपनेहू नाहीं ॥ ३ ॥

१७९ चित्रकारकी कलम यह अभिमान नहीं करसकती कि यह चित्र मैंने बनाया है, वैसेही मनुष्य भी ईश्वरके हथियार हैं इससे हमको ऐसा अभिमान नहीं करना चाहिये कि यह काम मैंने किया.

जैसे हम सव काम किसी न किसी साधन या हथियारसे करते हैं वैसेही मनुष्य ईश्वरके हथियार हैं. जैसे कुम्हारको चक्कर है, लेखकको कलम है, लोहारको हथोडा है, किसानको हल है, वढईको वसूला है

धोवीको पत्थर है, मल्लाहको नाव है और चित्रकारको कलम है, वैसेही ईश्वरके काम करनेके लिये मनुष्य हथियार है. किसीभी लेखनीको यह कहनेका अधिकार नहीं है कि, अमुक पुस्तक मैंने लिखी है, किसीभी हथोडेको यह कहनेका अधिकार नहीं है कि, यह यंत्र मैंने वनाया है, कोईभी सुई यह नहीं कह सकती कि यह वढिया कपडा मैंने सिया है, और कोईभी चित्रकारकी कलम यह अभिमान नहीं करसकती कि अमुक चित्र मैंनेही वनाया है, क्योंकि ये तो सव हथियार हैं, परंतु उसमें जो कुछ कारीगरी है वह उसको काममें लानेवालेकी है. वैसेही हमभी परमेश्वरके हथियार हैं, हम जो कुछ अच्छे काम करते हैं वह ईश्वरकीही खूवी है, हम तो केवल निमित्त मात्र हैं, इस लिये हमको अपने कामका कभी अभिमान नहीं करना चाहिये.

धोवीकी शिला कपडे साफ करनेका दावा करै, वढईका वसूला घर वनानेका दावा करै; कुम्हारका चाक दुनियाँभरको वर्तन देनेका दावा करै, और सुई संसारभरके मनुष्योंको वस्त्रोंसे ढांकनेका अभिमान करै तो कैसे चलसकता है ? यह सत्य है कि इन इन हथियारोंसेही वे वे काम सफाईके साथ होते हैं परंतु इसपरसे यह नहीं हो सकता कि उन कामोंके कर्त्ता वे हथियार ही समझे जायँ, क्योंकि उन कामोंमें जो खूवी है वे तो उनके करनेवालोंहीकी है. इसी तरह हमारे हाथसे भी जो काम होते हैं उनमें खूवी परमेश्वरकीही है. इससे इन कामोंका कर्त्तापन अपने ऊपर लेना और उनका अभिमान करना वडा पाप है. इसलिये समझते बूझते हमको ऐसा पाप नहीं करना चाहिये. भगवान्ने गीतामें कहा है:—

" ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया ॥"

अ० १८ श्लो० ६१.

अर्थ—जैसे पेचमें लगी हुई पुतली जैसे २ कल फिराई जाती है वैसे वैसेही चलती फिरती है, वैसेही अर्जुन ! इन सव जीवोंको उनके हृदयमें स्थित अंतर्यामी ईश्वर अपनी मायासे फिराता है.

भगवान् कहते हैं कि, तुम तो कलकी पुतलीजैसे हो! तुमको चलानेवाला तो तुम्हारे हृदयमें बैठा हुआ मैंही हूं. इतनाही नहीं किंतु भगवान् यह भी कहते हैं कि, तुम तो निमित्तमात्र अर्थात हथियार समान हो, तुमसे जो कुछ होता है वह कृपा तो मेरीही है. भगवान्ने स्पष्ट कहा है कि:-

"तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुंक्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्॥"
गी० अ० ११. श्लो० ३३.

अर्थ-इसलिये तू युद्ध करनेको उठ! यश प्राप्त कर! और शत्रुओंको जीतकर समृद्धिवाला राज्य भोग! हे अर्जुन! युद्धसे पहलेही मैंने उनको मारडाला है. तू तो केवल निमित्तमात्र हो!

भाइयो! हम जो अच्छे और बडे काम करते हैं उनके लिये दयालु परमेश्वरने पहलेहीसे तैयारी कररक्खी है. हमारे केवल निमित्तमात्र होनेहीकी देर है, केवल उसका लाभ लेनेहीकी कसर है! ईश्वरकी इतनी बडी कृपाका उपकार मानना तो एक ओर रहा परंतु उसके बदलेमें ऐसा अभिमान करना कि, सब काम मैंनेही किये हैं कितनी बुराईकी बात है! इसका विचार तो करो! ऐसी भूल न होने देनेके लिये दीनभावसे ईश्वरके शरण जाओ! और प्रभुका महत्त्व समझो! भाइयो! महत्त्व समझो!

१८० हम दुनियांदारीमें इतने फँसगयेहैं कि, ईश्वरकृपा अपनेही पास होनेपरभी उसका लाभ नहीं ले सकते.

एक मनुष्य यूरोपसे अमेरिकाकी नायगरा नदीके पानीका गिराव देखने गया. उस स्थानसे सात मीलके अंतरपर जब वह पहुँचा तो उसने पानीकी आवाज सुनी, आवाज सुनकर उसने पासके गांववालोंसे पूँछा कि, यह आवाज किसकी है. गांववालोंने उत्तर दिया कि हम नहीं जानते. तब तो उसको बडा आश्चर्य हुआ. उसने उनसे फिर पूँछा कि, क्या तुमने वह पानी गिरनेकी जगह कभी नहीं देखी?

किसानने उत्तर दिया " नहीं ! कभी नहीं ! मैं तो अपने कुटुंब और खेतकेही काममें लगारहता हूं मुझे उसे देखने सेखनेकी कोई जरूरत नहीं. हमको तो अपने कामसे काम है. "

यात्रीने विस्मित होकर कहा " बाबा ! संसारमें ऐसेभी आदमी होते हैं ! मैं तो पांच हजार मील दूरसे इस जगहको देखने आया हूं और ये लोग पास होनेपरभी नहीं देखते ! "

इसी तरह जो दुनियांदारीमें अधिक लीन होजाते हैं वे अपने पासकी पासही स्थित प्रभुकृपाको नहीं देखते. व्यवहारकी वस्तुएँ तो दूरभी होती हैं और उनको देखने जानेमें देशकालकी कितनीही अडचनेंभी रोकती हैं परंतु ईश्वरको और ईश्वरकी कृपाको देखनेमें तो कोईभी रोक टोक नहीं होती. इस लिये वे हमसे दूर होही नहीं सकते परंतु कसर इतनीही है कि, हम उन्हें देखनेकी परवाह नहीं रखते. जो हम उनको देखने और जाननेकी इच्छा करें तो वह हमसे दूर नहीं है, परंतु हम उस दिहातीकी तरह दुनियादारीमें इतने फँसे रहते हैं कि, ईश्वर अपने पास होतेहुएभी हम उसे जानने समझनेकी परवाह नहीं करते. इसमें ईश्वरका नहीं हमाराही दोष है, क्योंकि ईश्वरने तो कहा ही है कि, न मुझको कोई प्रिय है न कोई अप्रिय है परंतु जो मुझको भावसे भजताहै वह मुझमें है और मैं उसमें हूं. इस लिये भाइयो ! पासही पडे हुए रत्नको खो मत दो किंतु उसका ईश्वरकृपाका लाभ लेना सीखो ! लाभ लेना सीखो !

१८१ हमारे पाप काटनेहीके लिये हमको दुःख दिये जाते हैं.

एक छोटे बच्चेको उसकी माता साबुनसे मलमलके नहलारहीथी जिससे बच्चा रोनेलगा परंतु उसने उसके रोनेकी कुछभी परवाह न की और जबतक उसके शरीरपर मैल रहा तबतक उसी तरहसे नह-लाना जारी रक्खा और जब मैल निकलचुका तबही मलना रगडना बंद किया. वह उसका मैल निकालनेहीके लिये उसे मलती रगडती

थी कुछ द्वेषभावसे नहीं. वैसेही वह उसको दुःख देनेके अभिप्रायसें नहीं रगडतीथी परंतु बच्चा इस बातको समझता नहीं था इससे रोता था. इसी तरह हमको दुःख देनेसे परमेश्वरको कोई लाभ नहीं है परंतु हमारे पूर्वजन्मोंके पाप काटनेके लिये और हमको पापोंसे बचानेके लिये और जगत्का मिथ्यापन बतानेके लिये वह हमको दुःख देता है. अर्थात् जबतक हमारे पाप नहीं धुलजाते तबतक हमारे रोनेचि-ल्लानेपरभी परमेश्वर हमको नहीं छोडता. इस लिये भाइयो ! दुःखसे निराश मत हो ! दुःखसे निराश मत हो !

१८२ गायको लकडी मारना ग्वालको अच्छा नहीं लगता, परंतु वह गायके फायदेहीके लिये ऐसा करता है. वैसेही हमको दुःख देनेमें ईश्वरको कुछ लाभ नहीं परंतु हमाराही कल्याण है.

गायको लकडी मारना कुछ भले ग्वालको अच्छा नहीं लगता परंतु गायोंको बुरे मार्गपर जानेसे रोकनेके लिये हाँकना और समयपर लकडीभी मारनी पडती है. इस लिये लाचारीसे कभी गायको लकडीभी मारनी पडै तो वह ग्वालको भलेके लिये नहीं, परंतु गायके भलेके लिये है. वैसेही हमपर जो दुःख पडते हैं वेभी हमारेही भलेके लिये हैं. हमको पापसे बचाने और हमसे भजन करानेहीके लिये हमपर कभी २ आपदाएँ आपडती हैं, क्योंकि सुखकी अपेक्षा दुःखमें प्रभु अधिक याद आता है. भगवान्‌ने गीतामें कहा है:--

" चतुर्विधा भजंते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥

अ० ७. श्लो० १६.

अर्थ--भरतवंशमें श्रेष्ठ अर्जुन ! भले काम करनेवाले चार प्रकारके लोग मुझे भजते हैं १ दुःखिया, २ प्रभु और धर्मको जाननेकी इच्छा-वाला ३ भोग भोगनेकी सामग्री प्राप्त करनेकी इच्छावाला और ४ ज्ञानी.

भाइयो! इन चार प्रकारके भक्तोंमें दुःखियाको प्रभुने पहिले गिनाया है यह इतनेहीके लिये कि जिसमें मनुष्य यह समझसके कि, दुःख है सो केवल दुःखही नहीं है परंतु उसमें भक्तिभी है और दुःख पापसे बचा सकताहै. गायको ग्वालकी लकडी नहीं अच्छी लगती वैसेही हमकोभी दुःख अच्छा नहीं लगता, परंतु गाय यह नहीं समझती कि ग्वालकी लकडी विना मैं सरकारी कांजीहौसमें कैद होजाऊंगी. ग्वालकी लकडी विना मैं संध्यासमय अपने बछडेसे प्यार करनेके लिये घर नहीं पहुँचसकूंगी, ग्वालकी लकडी विना मैं अपने स्वामीके घरका खाना नहीं पासकूंगी और ग्वालकी लकडीके अधीन हुए विना मैं कभी बाघके मुँहमें जापडूंगी, इन बातोंसे रोकनेके लिये गायको अच्छा न लगने परभी ग्वालकी लकडीकी आवश्यकता है और उस लकडीमेंही मजा है, वैसेही हमकोभी दुःख अच्छे नहीं लगते परंतु जो विचारसे देखा जाय तो उसमें बडा आनंद है. इसलिये भाइयो! दुःखसे कायर मत हो!

१८३ रात बहुत अँधेरी होजाती है तबही बरसात आता है. वैसेही दुःखके पीछे तुरंतही सुख आता है इसलिये दुःखसे कायर मत हो.

जब दुःख आपडै तब निश्चय समझना चाहिये कि, अब हमपर प्रभुकी कुछ विशेष कृपा होनेवाली है, क्योंकि दुःख पीछे सुख देना ईश्वरका नियमही है. जब बद्दलोंसे घिरकर बहुतही अँधेरी काली रात होजाती है तब लोग समझते हैं कि अब अवश्य पानी आवेगा और होताभी तब वैसाही है कि शीघ्रही गहरा पानी आता है, वैसेही हमारे दुःखभी गहरी अँधेरी काली रातके समान है, उसके पीछे बरसात अर्थात् सुख तैयार रहता है परंतु बात इतनी ही है कि, आँधी और बद्दलका तूफान हुए बिना ठीक २ बरसात नहीं आता, वह हलकासा और क्षणिक तूफानही पानी आनेका लक्षण है. वैसेही हमपर आपडनेवाले दुःखभी भविष्यतमें आनेवाले सुखकेही चिह्न हैं इसलिये अपनी

बुरी दशा देखकर दुःखित मत हो, क्यों कि सब दिन एकसे नहीं होते. साधु लोग गाते हैं.

कवित्त ।

काहू दिन बाग हात बाजते नगारे साथ,
काहू दिन प्यादे पाँव बोझ शीश सहिये ।
काहू दिन मेवा मिसरीनके अजीरन होत,
काहू दिन मुठीभर चून गोहि लहिये ॥
काहू दिन आप द्वार भीर व्है भिखारनकी,
काहू दिन आप जाइ पर द्वार रहिये ।
हारिये न हिम्मत बिसारिये न हरिनाम,
जाही विध राखे राम ताही विध रहिये ॥

१८४ नये पत्ते आनेके लिये शरदृतुमें वृक्षके पुराने पत्ते गिरजाते हैं, वैसेही हमको अधिक सुख मिलनेको थोडे दुःख आते हैं, इस लिये दुःखसे घबराना नहीं !

शरदृतुमें वृक्षके पत्ते गिरजाते हैं सो किस लिये ? इसीलिये कि उसमें पुरानेके बदले नये पत्ते आवैं और आगे जाकर वह नये फूल फल देवैं, कुछ इस लिये नहीं कि, पेडही सूख जायँ ? पुराने पत्तोंको गिरते देखकर वृक्ष दुःख मानै तो वह उसकी भूल है, क्योंकि उसपरसे जितना जाता है उससेभी अधिक थोडेही समयमें मिलजाता है. वैसेही हमपर पडनेवाले दुःख और आपत्तियांभी बरसात आनेसे पहले होनेवाले क्षणिक तूफानके समान हैं, इस लिये ऐसे क्षणिक दुःखोंके लिये रोना मूर्खता है, क्योंकि ये दुःख तो गिरते हुए पुराने पत्तोंके समान हैं उनके बदलेमें हमको दूसरे बहुतसे नये सुख

मिलनेवाले हैं, फिर दुःख क्यों मानना ? क्या हम समझ सकते हैं कि, किस मार्गसे प्रभु हमारा कल्याण करैगा ? इस लिये चाहे जैसा दुःख आपडने परभी हमको घबराना नहीं चाहिये, परंतु उसको भगवदिच्छा समझ उसमेंसे कुछ न कुछ अच्छा होनेकी आशासे शांतिके साथ ईश्वरका भजन करते २ उसको भोग लेना चाहिये.

१८५ मालिक अपनी इच्छाके अनुसार फेरफार करै उसमें नौकरको बोलनेका क्या हक ? वैसेही ईश्वर हमको अपनी इच्छाके अनुसार रक्खै उसमें हमको उदास होना क्यों चाहिये ?

एक नौकरने देखा कि, घरमें मेज उलटी पडी है, कागज फटे पडे हैं, बोतलैं फूटी हुई हैं, पुस्तकैं तितरबितर होरही हैं, और घडी बंद होरही है. यह देखकर वह बहुत दौडधूप करने लगा, गड-बड मचाने लगा और बिगडकर कहने लगा ' यह गडबड किसनें करडाली ? मैं उसको समझूंगा ! "

इतनेहीमें उसके मालिकने आकर कहा " यह सारी गडबड मैंने की है. "

इतना सुनतेही नौकर चुप होगया और सब चीजोंको यथा-स्थित करने लगा, क्योंकि मालिक अपनी इच्छाके अनुसार करै उसमें नौकरको बीचमें बोलनेका क्या अधिकार ? वैसेही हमपर जो दुःख पडते हैं वे भगवदिच्छासेही पडते हैं इससे उनके लिये बडबडानेका हमको क्या अधिकार है ? ईश्वर तो मालिककाभी मालिक है. वह चाहे सो करै, उसमें वृथा हाय हाय मचानेसे क्या लाभ ? हमारे रोने धोनेसे वह अपना नियम थोडाही बदल देगा ? इसलिये भाइयो ! दुःखसे हार मत मानो परंतु ईश्वरी इच्छाके अधीन हो !

१८६ दुःखकी परवाह करै सो भक्त काहेका ?

एक वैद्यकी स्त्री प्रायः बीमार रहा करतीथी परंतु तबभी वह बडी आनंदी थी. उसको बहुत निर्बल देखकर दूसरी स्त्रियोंने हँसीमें कहा "देखो देखो ! यह वैद्यकी स्त्री है !"

तब एकने पूँछा "बाई ! तुम इतनी निर्बल हो तबभी आनंदमें कैसे हो ? अपने दुःखकी तुमको कुछ चिंता नहीं होती ?"

उसने उत्तर दिया "मेरे दुःखकी मुझको चिंता नहीं है ! क्योंकि मेरा पति वैद्य है, उसने बहुतसे रोगियोंको मेरे देखते २ अच्छा करदिया है. वह जब मनमें विचारेंगे तब मेरा रोग मिटनेमें क्या ढील लगती है ? जिसका पति पक्का वैद्य हो उसको रोगसे क्यों डरना चाहिये ?"

भाइयो ! वैद्यकी स्त्रीकोही जब इतनी हिम्मत होती है तब समर्थ ईश्वर जिनका पति है उन भक्तोंको दुःखसे क्यों डरना चाहिये ? इतनेपरभी जो डरता हो वह भक्त नहीं. सच्चे भगवज्जीव तो यही मानते हैं कि जब ईश्वरकी दृष्टि पडैगी तबही हम निहाल हो जायँगे. साथहीमें उनका यहभी समझनाहै कि, गरीबोंपर तो दयालु परमेश्वरकी दृष्टि सबसे पहले पडैगी. उस समय दुःख आशीर्वाद समान होजायगा. इस लिये परमेश्वरकी इच्छासे आनेवाले दुःखोंसे कभी डरना नहीं चाहिये !

३४ कुंडलिया।

दुख सुख सम करि मानिये यह कर्मनको भोग। राई घटै न तिल बढै हर्ष करहु भउँ सोग॥ हर्ष करहु भउँ सोग भोगविन ये न मिटाई। नल पांडव हरिचंद सहे दुःख मन न भमोई॥ रामजीवन कहै सोचि बात चतुरनकों सांची। रावणहू दुख सह्यो जाहि कर्मनगति बांची॥ १॥

१८७ दुःखही हमारी परीक्षा है.

सोनार लोग सोनेको आगमें तपाते हैं सो उसको जलाडालनेके लिये नहीं किंतु उसकी परीक्षा करने और उसको शुद्ध करनेके लिये सोनेको आगमें डालनेसे उसकी कीमत घटती नहीं है किंतु और हमारा विश्वास और चाह उसपर बढती है और कीमतभी उसकी निश्चय होजाती है, वैसेही ईश्वर हमको जो दुःख देता है वह हमारा नाश करनेके लिये नहीं किंतु हमको पवित्र करने और हमको सच्चा सुख देनेके लियेही !

भाइयो ! अवश्य याद रखना कि सुखका ताला खोलनेकी चावी दुःख है. दुःखकी चावीसे सुखका ताला जलदी खुलजाता है. इस लिये ईश्वरकी कृपासे दैवयोगहीसे यह चावी तुमको आमिले तो उसे फैंकना नहीं ! फैंकना नहीं ! अर्थात् उससे हिम्मत मत हारजाना ! निराश मत होजाना ! उसमेंभी मजा है परंतु उस मजेकी खवर तुमको अभी नहीं पडेगी. जव उस चावीसे सुखका ताला खुलजायगा तवही उसका मजा मिलेगा.

१८८ ईश्वरके लिये दुःख सहनेमेंभी मजा है !

पृथ्वीके पेटमें हलकी नोक घुसेडी जाती है सो किस लिये ? जमीनको साफ करनेके लिये और उसको अधिक फलवाली करनेके लिये ! याद रखना कि जमीनकी कीमत वढानेके लिये और उसमेंसे अधिक फल उत्पन्न करनेके लिये ही उसमें कुदाली फावडेके घाव किये जाते हैं, कुछ उसको खराव करनेके लिये नहीं ! वैसेही हमपर जो दुःख पडते हैं वे हमारा बुरा करनेके लिये नहीं किंतु हम न समझसकें वैसी रीतिसे हमारा कुछ न कुछ भला करनेहीके लिये. इस लिये ! दुःखसे डरो मत !

दुःखका रहस्य समझनेवाले अनुभवी साधु तो यही कहते हैं कि

खूबी है एक दुनियामें। महादुःखही सहनेमें ॥

क्योंकि सुखमें मायाका स्मरण होता है और दुःखमें प्रभुका स्मरण होता है. इसलिये दुःखके लिये दुःख अच्छा नहीं है परंतु ईश्वरके लिये दुःख अच्छा है. इस लिये प्रभुइच्छासे आयेहुए दुःखोंसे उदास मत हो परंतु प्रभुके निमित्त दुःख सहन करो और उसमेंसेभी धैर्य ग्रहण करो!

१८९ मालीभी विना किसी प्रबल कारणके वृक्षकी एक डालीतक नहीं काटता, तब कृपासागर परमेश्वर हमको विना कारण दुःख क्यों देगा ?

कभी २ माली वृक्षको ऊपर २ से या आसपाससे थोडा बहुत काट छाँट डालता है सो क्या वृक्षका नाश करनेके लिये ? नहीं भाई नहीं ! वह काट छाँट केवल इसीलिये करता है कि जिसमें वृक्ष सुंदर दीखने लगे. उसके कीडे दूर होजायँ, और वह अधिक फलफूल देने लगे. वैसेही ईश्वर हमको कुछ कम कर देता है अथवा हमको अच्छी न लगनेवाली स्थितिमें रखदेता है सो इसलिये नहीं कि, उसकी हम पर कुछ कृपा कम हो किंतु हमारा कल्याण करनेहीके लिये, परंतु हम उसका ठीक कारण नहीं समझते इससे शिर पीटते हैं. भक्त जन कहते हैं कि, उस तरहकी बातोंपर चिंता करना और दुःखित होना तो ईश्वरका विश्वास न करनेके समान है,क्योंकि तुम विचार तो करो कि, एक जंगली मालीही जब विना किसी प्रबल कारणके वृक्षकी एक डारी या पत्तेतक नहीं तोडता तब कृपाका सागर आनंदस्वरूप परमेश्वर हमको विना कारण दुःख क्यों देगा ? जिस कारणके लिये उसने दुःख दिया है उस कारणके दूर होतेही दुःख आपोआप चला जायगा इसलिये दुःखसे हिम्मत मत हारो ! हिम्मत मत हारो !

१९० दुनियाँमें जन्म लिया वहां दुःख तो हमको भोगनाही पडैगा, फिर चाहे उसे हाय हाय करके भोगैं चाहे प्रभुका स्मरण करते शांतिसे भोगै !

सुख और दुःख जन्मके साथ हैं वे तो भोगनेही पडेंगे क्योंकि हमारे शरीरकी बनावट ही वैसी है और इस दुनियांकी रचनाही वैसे है

कि, किसीभी जीवको सुख दुःख हुए विना नहीं रहता इसी लिये भगवान्ने गीतामें कहा है—

"मात्रास्पर्शास्तु कौंतेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनो नित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥"

अ० २. श्लो० १४.

अर्थ—हे अर्जुन ! ठंड धूप आदि विषयोंके साथ इंद्रियोंका संबंध होनेसे सुख दुःख होते हैं, ये सुख दुःख तो आने और चलेजानेवाले स्वभावके हैं और रहतेभी थोडी ही देर, इससे हे अर्जुन ! इनको सहन कर !

भाइयो ! ईश्वर हमको आज्ञा देता है कि सुख दुःख तो तुमको सहनेही चाहिये. केवल सहनाही नहीं चाहिये वरन भगवान्का कहना तो यहांतक है कि सहने ही पडेंगे, क्योंकि जीवमात्रकी बनावट और कुदरतके नियमही ऐसे हैं कि जहांतक शरीर है वहांतक सुख दुःख हुए विनां रहेंगेही नहीं ! इन सुखदुःखमेंसे हम किसी तरह छूट ही नहीं सकते, तब हम चाहे हँसकर सहें चाहै रोकर सहें परंतु भोगने हमको ही पडेंगे, क्योंकि इंद्रियों और विषयोंके संबंधमेंही सुखदुःख हैं और जबतक यह शरीर है तथा जबतक तुम इस दुनियामें हो तबतक किसीभी देशमें, किसीभी कालमें और किसीभी स्थितिमें एक पलभरभी तुम इंद्रियों और विषयोंके संबंध विना नहीं रह सकते और इस जीवन तथा इस दुनियामें सुखदुःख हैं सो सब इस संबंधमेंही है, इससे इनको भोगे विना छुटकारा नहीं है जिसमें हमारा वश ही नहीं चलता उसमें रोनेसेभी क्या लाभ ? इसलिये भाइयो ! शांतिसे दुःख सहन करो ! !

३९ कुंडलिया ।

दुःख गह्यो सुख मानिकै भूल्यो सब संसार ।
आठ प्रहर भ्रमतो फिरै करतो लोकाचार ॥

करतो लोकाचार रार शत्रुनसों ठानै ।
संतनको उपदेश नाहिं हिरदा बिच आनै ॥
रामजीवन कहै अहो भूलि परिगइ जगमाहीं ।
सुख त्यागो दुख मानि चाहिसों त्रल लखाहीं ॥ २ ॥

१९१ याद रक्खो कि, प्रभुकी आज्ञासेही दुःख आते हैं, इस लिये उनको भोगनाही पडेगा.

दुःख पडनेपर बडबडाना और उदास होना ईश्वरका सामना करनेके समान है, क्योंकि ईश्वरकी आज्ञा माननेको हम धर्मसे बँधे हुए हैं. इतनाही नहीं परंतु हमारे शरीरकी रचना और जगत्की प्रकृतिके नियमसेभी हम ईश्वरकी आज्ञा माननेको बंधेहुए हैं इसके सिवाय यहभी समझनेका है कि, हमपर जो दुःख पडते हैं उनको भोगनेकी ईश्वरकी आज्ञा है, इतनाही नहीं परंतु वे दुःख ईश्वरके भेजेहुए हैं और उनको भोगनेकी इच्छा न करें तबभी वे तो भोगनेही पडते हैं उनसे छूटनेका कोई उपाय है ही नहीं, क्योंकि पापका दंड देनेके लिये तथा पापसे बचानेके लिये दयालु प्रभुने हमपर दया करके दुःख भेजे हैं. इस लिये उसको भोगे विना छुटकाराही नहीं है. भगवान्ने गीतामें कहा है:-

"बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवो भावो भयं चाभयमेव च ॥
अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।
भवंति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥"

अ० १०. श्लो० ४-५.

अर्थ-बुद्धि, ज्ञान, मोहरहित होना, क्षमा, इंद्रियोंका जीतना, मनको जीतना, सुख, दुःख, उत्पत्ति, अधिकार, भय अभय तथा

अहिंसा, समता, संतोष, तप, दान, यश और अपयश आदि जुदे २ भाव प्राणियोंको मुझसेही होते हैं.

इस तरह जब प्रत्येक वस्तु ईश्वरकीही दीहुई है तब उसका सामना करना ईश्वरका सामना करनेके समान है. इस लिये भाइयो ! दुःखसे हारकर प्रभुका सामना मत करो ! परंतु दुःखको शांतिसे भोगकर प्रभुको प्रसन्न करो !

पद।

सब दिन होत न एक समान ॥ टेक ॥ एक दिन राजा हरिश्चंद्र घर, संपति मेरु समान। एक दिन जाय श्वपचगृह सेवत, अंबर हरत मसान ॥ सब दि० ॥ १ ॥ एक दिन सीता रुदन करत है, महाविपिन उद्यान। एक दिन रामचंद्र मिलि दोऊ, विचरत पुष्पविमान ॥ सब० ॥ २ ॥ एक दिन राजा राज युधिष्ठिर, अनुचर श्रीभगवान। एक दिन द्रौपदि नग्न होत है, चीर दुशासन तान ॥ सब दिन० ॥ ३ ॥ प्रकटत है पूरबकी करनी, तज मन शोच अजान। सूरदास गुण कहँलग बरणों, विधिके अंक प्रमान ॥ सब दि० ॥ ४ ॥

१९२ अच्छे खेतमेंही खाद डालाजाताहै वैसेही जो प्रभुके प्यारे होते हैं उनही पर दुःख पडते हैं.

तुम जानतेहो कैसे खेतमें खाद डाला जाता है ? जो खेत अच्छा होता है उसमेंही खाद डालाजाता है, परंतु जो खेत खराब होता है उसको वैसाही छोड देते हैं. मल, मूत्र, विष्ठा, हड्डी, गोबर, गांवभरका कचडा और मोरियोंका सडाहुआ पानी खादमें होताहै. ऐसी बुरी २ चीजें किसान अपने प्यारे खेतोंमें डालताहै, कारण यह कि, वह खाद है और खादका गुण है अधिक फल देना. गांवका कचरा अच्छे खेतमें पडनेसेही जब अधिक फल आतेहैं तब भक्तजनरूपी

भले खेतमें पडनेवाला दुःखरूपी खाद कितना अच्छा फल देगा सो तो विचार करो ! इसलिये भाइयो आजहीसे याद रखना कि, भक्तों-पर पडनेवाले दुःख नहीं है किंतु खाद है. खादमें कुछ वदवू तो अवश्य आती है परंतु गुणभी उसमें वडा है. वैसेही दुःख सहना वुरा तो लगताहै परंतु उसे शांतिसे सहलेनेमें वडा फल है सो याद रखना !

१९३ फूल तोडाजाय तवही वह देवतापर चढसकता है, वैसेही मनुष्य अपने धर्मके दुख सहें तवही ईश्वरको पासकते हैं.

सुंदर फूलोंको और मीठी कलियोंको हम पेडपरसे तोड लेते हैं सो किस कामके लिये ? क्या उनको दुःख देनेके लिये ? नहीं नहीं ! उनको उपयोगी वनानेके लिये ! उनको देवपर—ठाकुरपर चढानेके लिये ! जो वे फूल वैसेही पेडपर रहनेदिये जायँ तो कुछ कालमें कुम्हलाकर आपही आप गिरजायँ ! ऐसा होनेसे वे अकारथ जायँ, क्योंकि उनके जन्मकी सार्थकता नहीं होसकती. किसीभी वस्तुकी सार्थकता उसके उपयोगसे होती है और उपयोगीपन दुःखसे होताहै. इस लिये अपनी उन्नतिक लिये और ईश्वरको पानेके लिये मनुष्यजातिको दुःखके विनां कामही नहीं चलसकता. पेडपरसेही फूल नहीं तोडा जाता, परंतु फूलकी डंडी और पँखुडियांतक जुदी करदीजाती हैं. इसके वाद उसमें सुई डाली जाती है तवही उसकी माला वनती है और तवही वह ठाकुरपर चढाने योग्य होती है. इतना संस्कार किया जाय तवही वह सुंदर स्त्रियोंके कोमल कंठमें पहुँच सकती है और इतना दुःख सहनेसेही वह राजाओंके मुकुटमें पहुँच सकती है और तवहीं वे राजाओंको, सुंदरियोंको तथा देवमूर्तियोंको सुशोभित कर सकती हैं. याद रक्खो कि, इतनी उत्तमता दुःख सहनेसेही आती है. इस लिये भाइयो ! दुःखसे उदास न हो परंतु यही समझो कि, दुःखमेंभी दैवी धैर्यही है; दुखमेंभी आशीर्वाद है, दुःखमेंभी ईश्वरीय कृपा है

और धर्मके दुःख शांतिसे सहन करनेमेंही ईश्वर प्राप्त हो सकता है. इस लिये दुःखसे उदास न होनेका विचार कर लो !

१९४ अनंतकालके मोक्षके सुख पानेके लिये दुनियाँके थोडे दुःख भोगलेना सूलीका कष्ट सुईमें टाल देनेके समान है.

भाइयो ! हम समझें तो ईश्वरकी इच्छासे आये हुए दुःख तो आशीर्वादसमान हैं, क्योंकि इनसे सूलीका कष्ट सुईमें टलजाता है. तुम विचार तो करो कि, जिसको जन्मभरके लिये देशनिकालेकी सजा होनेवाली हो उसका यदि १० ही १९ दिनमें साधारण कैद भोग लेनेसे छुटकारा होसकता है तो उसे भोग लेनेको कौन इनकार करेगा ? वैसेही जो नरकमें जानेसे बचाव होता हो तो इस दुनियाँके थोडे दुःख भोग लेनेमें क्या हानि है ? परंतु इन बातोंको हम अच्छी तरहसे जानते नहीं हैं, इसीसे छोटे २ दुःखोंकोभी हम बडे पहाडकी तरह मानते हैं, यदि हम समझें और विचार करै तो मालूम हो जाय कि, दुःखरूप बनकर यह ईश्वरकी दयाही हमपर बरसती है परंतु हम इसका विचार नहीं करते इसीसे इससे फायदा नहीं उठा सक्ते और दुःख २ पुकारा करते हैं. इसलिये दुःखसे उदास मत हो परंतु यह समझो कि, ईश्वरके निमित्त यहाँपर थोडा दुःख भोग लेना सूलीके कष्टको सुईमें टाल देनेके समान है.

१९५ दुःख है सो पापका दंड है, इस दंडको भोग लेनेसे पाप कट जाते हैं और ईश्वरकी कृपा हमपर जल्दी होती है, इससे इस दंडको भोगलेनेमें आनाकानी मत करो !

एक पिताके दोनों पुत्र कुछ अपराध करैं और रुष्ट होकर पिता दोनों पुत्रोंको योग्य दंड दे तब उनमेंसे एक तो अपनी भूलको स्वीकार कर नम्रतापूर्वक पितासे क्षमा मांगै और दूसरा पुत्र पिताके सामने पडजाय तो दोनोंमें लाभ किसको ? जो पुत्र पश्चात्ताप करै,

क्षमा माँगे और दंडको भोगले उसपर पिता जल्दी राजी होगा और जो पिताका सामना करै उसे पिता छोड नहीं देगा वरन् दो चार लात अधिकही मारेगा. इसी तरह ईश्वरइच्छासे पडनेवाले दुःखभी हमारे पापोंकाही दंड है धैर्य रखकर उनको सह लेनेसेही हम ईश्वरको प्राप्त कर सकते हैं परंतु उसका सामना करनेसे अर्थात् हायतोबा मचा-नेसे तो और अधिकही दुःखी होना पडेगा. इसलिये भाइयो ! सुखसे फूलो मत और दुःखसे हिम्मत हारो मत ! परंतु जैसे ईश्वर रक्खे वैसेही आनंदसे रहो !

१९६ कुत्ता जबतक अनजान रहता है तबहींतक जंजी-रसे बँधताहै, वैसेही पाप होते हैं तबहींतक हमको दुःख भोगने पडते हैं.

कुत्ता जबतक अजाना रहता है, सबके सामने भोंकता है, इधर उधर भागजाता है, और मालिककी आज्ञामें नहीं रहता है तबहीतक जंजीरसे बाँधा जाताहै, परंतु जब वह अपना जंगलीपन छोडदेता है, और मालिककी आज्ञामें, दुनियादारीके कामोंमें और मालिकके इशारोंमें समझने लगता है तब उसको जंजीरसे अलग करके खुला करदिया जाताहै वैसेही जबतक हम पापी हैं और सच्चे भक्त नहीं बने हैं तब-तक ही दुःख है, पीछे कुछ नहीं. भक्त होजानेपर ईश्वरकी इच्छामें अपनी इच्छा मिलादेनेपर हमको दुःख नहीं है और पाप छोडदेनेपर हमको बंधनभी नहीं है. ये सब झगडे तो तबहीतकके लिये है, जब-तक हम सर्वात्मभावसे प्रभुके शरणागत नहीं होते, दुःखसे छूटना हो तो अजाने कुत्तेकी तरह ईश्वरसे अजाने न रहो, परंतु अपने विका-रोंको छोडकर प्रभुके शरणागत हो ! इसके सिवाय दूसरा मार्ग दुःखसे छूटनेका नहीं है. बहुत रोने धोने और हायतोबा करनेसे दुःख नहीं जाता. दुःख तो पापको छोडकर प्रभुके शरणागत होने-सेही छूटता है. इस लिये भाइयो ! दुःखसे छूटनेके लिये किसीभी

तरह, किसीभी मार्गसे, सर्वात्मभावसे प्रभुके मार्गमें जाओ ! प्रभुके मार्गमें जाओ !! प्रभुके मार्गमें जाओ !!!

१९७ चतुर वैद्यही अपनी बनते कडवी दवा नहीं देता तब आनंदस्वरूप परमेश्वर विना कारण हमको दुःख क्यों देगा ?

मनुष्यपर दुःख कब पडताहै सो तुम जानतेहो ? दुःख कुछ मजेकी चीज नहीं है, वह तो एक लाचारीका उपाय है. चतुरवैद्यही अपनी बनते रोगीको कडवी दवा नहीं देता और गरीबसे गरीब माताभी अपने बचेको हलका खाना नहीं खिलाती. तब तुम विचार तो करो कि, सुखका स्वरूप और आनंदकी मूर्ति परमात्मा हमको जानबूझकर दुःख कैसे देगा ? वह तो जब हम शास्त्रको न माने, गुरुकी परवाह न करें, पूर्वजोंके बताये हुए मार्गपर न चलैं, धर्मको एक ओर रखदें, अंतःकरणकी सलाहपर पानी फेरदें, स्वर्गके सुखोंसेभी न ललचें और नरकसेभी न डरें तब लाचार होकर ईश्वरको दुःखका अंतिम उपाय करना पडता है और वहभी हमारे भलेहीके लिये, क्योंकि दुःखसे लाचार होकरही मनुष्य प्रभुकी ओर झुकता है. इस तरह अपनी ओर खींचनेहीके लिये प्रभु हमको दुःख देता है. इस लिये ईश्वरइच्छासे आयेहुए दुःख हमको धैर्यके साथ सहन करलेने चाहिये।

१९८ भक्तिका बदला माँगनेकी इच्छा रखना ईश्वर पर अविश्वास रखनेके समान है.

भक्तिके विषयमें श्रद्धामें सब बातोंका समावेश होजाता है क्योंकि श्रद्धा है सो रुपयेके समान है और दूसरे साधन कौडियोंके समान हैं, जो हमारे पास रुपया हो तो कौडियां बहुतसी आसकती हैं, परंतु हम प्रभुसे अपनी भक्तिका बदला माँगते हैं सो तो अपने पासका रुपया खोडालते हैं, अपनी सारी पूँजी गँवादेते हैं और फिर भीख

माँगते हैं, क्योंकि विश्वासही भक्तिकी पूँजी है. भक्तिके बदलेकी आशा रखना सोई विश्वास खोदेना है. जो हमको परमेश्वरपर पूर्ण विश्वास है तो हमको उससे भक्तिका बदला माँगनेकी आवश्यकता क्या है? क्योंकि भक्तका योगक्षेम करनेके लिये तो भगवान् बँधाही हुआ है और हमारी अपेक्षा हमारा कल्याण वह अच्छी तरहसे समझता है. इस लिये उसकी इच्छाके अधीन होनेमें मजा है, उसका सामना करके माँगनेमें मजा नहीं है. माँगना तो अविश्वास और हलकाई है. भगवान्ने गीतामें कहा है:—

"दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥"

अ० २. श्लो० ४९.

अर्थ—फलकी इच्छा विना जो कर्म करना सोही उत्तम है, फलकी इच्छावाले कर्म तो उतरते दरजेके हैं इसलिये हे अर्जुन! ईश्वरके पानेके लिये इच्छारहित होकर कर्म कर! भक्तिके बदलेकी इच्छा रखनेवाले तो लोभी हैं!

इसलिये भाइयो! भक्तिके बदलेकी इच्छा रखकर अविश्वासी मत बनो! परंतु भगवान्के आसरेका बल रखकर विश्वासू जीवन व्यतीत करना सीखो. संसारसागर तरनेका सुगम मार्ग यही है.

३६ पद ।

प्रभुको भावसों नित भजहु, प्रभुको भावसों नित भजहु ॥ टेक ॥ सुख दुख द्वंद धर्म है तनके यों मनमें समझहु ॥ १ ॥ विषयवासना दुखके कारन तू इनको संग तजहु ॥ २ ॥ रामजीवन प्रभुभजन कारण स्वर्ग जायवे सजहु ॥ ३ ॥

१९९ वृक्षके नीचे बैठनेसे छाया और फल दोनों मिलते हैं, तब ईश्वरकी शरण लेनेसे कितना मिलेगा ! इसका विचार तो करो !

वृक्ष जड है तबभी हम उसके नीचे बैठें तो हमको छाया देता है और समय आनेपर फलभी देता है. मनुष्य हजारों विकारोंसे भरे हैं तबभी जो हम किसी मनुष्यके आसरे रहें तो वह यथाशक्ति हमारी सहायताही करता है. जो हम सूखी लकडीका आधार पकडलें तो वह लकडीभी हमको पानीमें डूबनेसे बचालेती है. लकडीकी बनी नावही हमको सकुशल पार उतार देती है, तब जो हम प्रभुकी शरण लें, प्रभुकी इच्छाके अधीन हो जायँ तो हमको कितना लाभ होसकता है ! जरा विचार तो करो वृक्षसे, लकडीसे और हमारे पटैल तथा सेठ साहूकारोंसे ईश्वर कितना बडा है, कितना श्रेष्ठ है ? ऐसे महापवित्र ईश्वरके शरणागत होनेमें हमको अडचन क्या है ? उसकी शरणमें गये पीछे हमको किसी वस्तुके मांगनेकी जरूरतही क्यों पडे ? क्योंकि वह नहीं जानता कि हमारा कल्याण किस बातमें है क्या हम आजतक उसकी कृपा बिनाही जीते रहते हैं ? भाइयो ! उसकी तो अखंड दया है. हमको हमारे कल्याणकी आजतक जो वस्तु मिल गयी है उसकी रक्षा करनेको और हमारी योग्यताके अनुसार दूसरी देनेको वह बंधाहुआ है, उसने ऐसा कियाही नहीं है जिसमें हमको उससे माँगना पडे. सच्चे भक्तको तो प्रभुके सिवाय प्रभुको छोडकर दूसरी वस्तु मांगनेके योग्यही क्या है ? इसीलिये भाइयो ! पूर्ण प्रेम लगाकर अंतःकरणके विश्वाससे और हृदयके बलसे सर्वात्मभावसे प्रभुके शरणागत हो ! प्रभुके शरणागत हो ! !

२०० तप किसे कहते हैं ? अपने मनकी इच्छाओंको रोकना सोही तप है.

तप किसे कहते हैं ? महात्माओंका कथन है कि, अपनी इच्छा-

ओंका भोगदेना अर्थात् त्याग करना सोही तप है. इच्छाको रोकनेका उदाहरण यह है:–

किसी मनुष्यने एक साधुसे भिक्षाके लिये अपने घरपर आनेको कहा. साधुने कहा "बाबा! मुझे आज खीर खानेकी इच्छा हुई है."

गृहस्थने कहा "अच्छा महाराज! तो आज मैं खीरही बनवाऊंगा.

साधुने कहा "नहीं बच्चा! मैं खीर नहीं खाऊंगा."

गृहस्थने पूँछा "महाराज! यह क्या? अभी तो कहते थे कि मैं खीर खाऊंगा और अब कहते हैं कि, नहीं खाऊंगा इसका कारण क्या?"

साधुने कहा "बच्चा? मुझको खीर खानेकी इच्छा हुई है. इसीसे मैं खीर नहीं खाऊंगा."

गृहस्थने पूँछा "महाराज! इसका कारण क्या?"

साधुने कहा "ऐसा करनाही तप है अपनी इच्छाओंको और अपने मनको रोकनाही तप है."

जो हम अपने मनकी इच्छाके अनुसारही काम करते रहें तो इच्छाएँ कभी पूरी नहीं पडतीं. एक इच्छा पूरी होनेसे पहले दूसरी दस इच्छाएँ उत्पन्न हो आती हैं, और उन दसमेंसे दूसरी सौ फिर पैदा होजाती हैं, परंतु जो एकहीको दबादिया जाय तो दस बंद होसकती हैं. इससे अपनी इच्छाओंको रोकनाही तप कहलाता है. इससे वस्तुओंपरसे मोह छूटजाता है, विषय फीके लगने लगते हैं, इंद्रियां शांत होती जाती हैं और ईश्वरीय मार्गमें बढना सुगम होजाता है. इसलिये असमर्थताके कारण यदि हमसे ईश्वरके निमित्त और कुछ न दिया जाय तो चिंता नहीं परंतु अपनी इच्छाएँ तो उसको देहीदेनी चाहिये. अपनी इच्छाएँ तो उसको देदेने बाद और कोईभी वस्तु देना बाकी नहीं बचता. मन मारना सीखनेसेही ईश्वरकी इच्छाके अधीन होना बनता है और ईश्वरको अपनी इच्छाएँ अर्पण कीजासकती हैं. इसीका नाम तप है और वह सात्विक तप है. इस तरह मनको मारना सीखनेसे व्यवहारके संकट सहना कठिन नहीं जान

पडता और ऐसा धैर्य रखनेसे जीवनमें बडी सरलता होती है. यह तप ऐसा है. जिसको थोडा या बहुत सबही मनुष्य साध सकते हैं. इस लिये भाइयो! मनको रोकना सीखो! रोकना सीखो!

२०१ लडका अपने पिताका अपमान करे सो कितनी बुरी बात है? तब हम तो सारे जगत्के पिताका अपमान करते हैं सो कैसा?

दूसरे लोग हमारा अपमान करे तो कम परवाह रहती है परंतु खास हमारेही लडके हमारा अपमान करे तो कितना बुरा लगता है और उसमेंभी जिनपर हमने बहुत परिश्रम कियाहो और जिनसे अच्छी आशा रक्खीहो वे पढे लिखे जवान लडकेही जब हमारा अपमान करें तो हमको कितना बुरा लगता है. वैसेही जो जीव प्रभुमेंसे उत्पन्न हुए हैं और प्रभुसेही अपना जीवन पारहे हैं वेही जीव प्रभुका सामना करें और प्रभुका अपमान करे तो प्रभुको बहुत बुरा लगता है. पशु पक्षी कीडे मकोडे और वृक्ष वनस्पति आदि जीव बालक समान हैं. बालक पिताकी मूंछ खेंचे, गोदीमें मूतदे, और रोते रोते लातभी मारदे तो पिता उस अज्ञान बालकका प्रेमवश क्षमा कर देता है, परंतु जवान लडका अपने पिताकी मूंछ खेंच नहीं सकता और न अपने थोडेसे स्वार्थके लिये पिताको लात मार सकता है, और जो कभी उसने ऐसा किया तो पिता कैसाही भला हो और चाहे उस लातसे उसकी कोई हानि न होतीहो तबभी वह अपने पुत्रहीके लाभके लिये उसे कभी सहन नहीं करसकैगा. वैसेही मनुष्य हैं सो प्रभुके लिखे पढे जवान लडके हैं, और दूसरे प्राणी हैं सो अबोध बच्चे हैं, इसलिये दूसरे प्राणियोंके अपराध क्षमा होसकैंगे, परंतु मनुष्योंके पाप सच्चे पश्चात्ताप विना और सच्चे परमार्थ विना कभी क्षमा नहीं होंगे. भाइयो! समझबूझकरभी स्वार्थमें अंधे होकर पितापर लात न फैंको! न फैंको!! परंतु अपनी भूलोंपर पश्चात्ताप करके प्रभुसे क्षमा मांगो और उन भूलोंके बदलेमें और अधिक अच्छे कर्म करो तो दयालुपरमेश्वर तुमको अवश्य क्षमा करैगा।

३७ कवित्त।

कबको पुकारत हों सुनो नहीं एको बात,
एहो नंदलाल तुम कैसे प्रतिपाल हो।
कैहैं दयाल सो तो दयाहू न देखियत,
मेरी मति ऐसी आछे नीके पशुपाल हो॥
धन्यो हो नृसिंह रूप तब ही प्रह्लादकाज,
अब तो न लाज कछु गोधनमें ग्वाल हो।
डार्यो तेल काननमें कि बस्यो जाय काननमें,
शेषसेज लेट कीधौं पैठे जा पताल हो॥ १॥

२०२ दूसरोंको उपदेश करना कुछ बडाईकी बात नहीं है, परंतु उसके अनुसार स्वयं चलना बडाईकी बात है.

एक पक्के अनुभवी बूढे साधूसे किसी मनुष्यने पूँछा "महाराज! दुनियामें सबसे सुगम क्या है?"

साधूने जवाब दिया "औरोंको उपदेश देना!"

उसने पूँछा "महाराज! उपदेश देना सुगम कैसे हैं? उसमें तो बुद्धिमानीकी आवश्यकता है!"

साधूने कहा "बच्चा! औरोंको उपदेश देतेसमय तो सबही बुद्धिमान् बन जाते हैं. क्या तू नहीं जानता कि अपने सगे संबंधियोंमें या यार दोस्तोंमें अथवा तो जातजमातमें जब कोई मरजाताहै तब उसके यहां सब लोग जाते हैं और सैकडों बातें धीरज दिलानेकी कहते हैं, परंतु जब अपनेही घरमें मौत होतीहै तब कौन धीरज रखता है? व्यभिचारीभी यही कहते हैं कि व्यभिचार नहीं करना चाहिये, चोरभी औरोंको चोरी न करनेकाही उपदेश देते हैं और शराबको बुरा बताते जाते हैं तबभी ये लोग अपने २ व्यसनको छोड

नहीं सकते. लोग बात करनेमें सैकडों बार कहते हैं कि झूंठ बोलना बुरा है परंतु हमही कितनी वार झूंठ बोलते हैं सो तो विचार करो ! इससे औरोंको उपदेश करना तो सुगम है परन्तु उसको पालना कठिन है. ईश्वरके पवित्र नामसे—उस जन्ममें होनेवाली ईश्वरीय कृपासे हरिजन बहुतसे उपदेशोंको पाल सकते हैं, उपदेशोंके अनुसार चलते हैं. इसीसे दूसरे लोगोंकी अपेक्षा भक्तोंका दरजा बडा है. उपदेश देना तो अति सुगम है परंतु उसको पालना ही कठिन है और उसमें ही मनुष्यकी परीक्षा है. महाभक्त तुकारामका कथन है कि—

बोले तैसा चाले, त्याची वंदावी पाउलें ॥

अर्थात् जो मनुष्य बोलै वैसाही चलै उसके चरण तथा पादुका (खडाऊ) भी वंदन करने योग्य हैं. तात्पर्य यह कि, कहडालनेमें कठिनता नहीं पडती परंतु कहनेके अनुसार चलनेमें कठिनाई है. इस लिये शिक्षाको हृदयमें धारण कर उसका अनुभव करनेका यत्न करो ! यही सच्चे भक्तका लक्षण है.

२०३ अपने दोषोंको सुधारे विना गुरु बन बैठना पहलेसेही नरकका टिकट खरीद लेने समान है.

किसी राजाका गुरु मरगया तब वह दूसरा गुरु ढूँढने लगा. परंतु कोई योग्य गुरु मिला नहीं. गुरुका दरजा कुछ ऐसा वैसा नहीं. और गुरुकी जिम्मेदारीभी कुछ ऐसी वैसी नहीं. गुरु बनके माल मारना तो सबको अच्छा लगता है परंतु अंतमें परिणाम क्या होता है सोभी तो विचार करना चाहिये ? बहुतसी ढूँढ ढाँढके बाद राजाने एक विद्वान् पुरुषको पसंद किया और उससे कहा "आप मेरे गुरु बनिये और स्वर्गवासी गुरुकी गादी पर विराजिये."

तब उस पुरुषने कहा " मैं गुरु बननेके योग्य नहीं हूं. गुरुकी जिम्मेदारीको मैं समझताहूं. इतनी बडी जिम्मेदारी अपने शिरपर लेनेकी मुझमें शक्ति नहीं है."

राजाने उत्तर दिया " नहीं नहीं ऐसा नहीं ऐसा नहीं होसकता मैं तो आपको ही योग्य समझताहूं, कल प्रातःकाल आपको गुरुकी गादीपर बैठना होगा. "

राजाकी यह बात सुनकर पंडितको बडी चिंता हुई, रातभर उसको नींद न आई पडा २ वह मनमें विचार करनेलगा " अपने दोषोंको सुधारे विना मैं गुरु कैसे वनसकता हूं ? मेरा अंतःकरण मुझसे इनकार करता है ! इस तरह अयोग्य रीतिपर गुरु वन बैठना तो पहलेहीसे नरकका टिकट खरीद लेनेके समान है. ये सव लोग मुझको चाहे अच्छा समझते हों परंतु मैं तो इस योग्य नहीं हूं. मैं गुरु नहीं वनसकता और राजा अपनी आज्ञा नहीं वदलसकता ! इससे तो उत्तम वात यही है कि, अपनी जीभ काटडालूं तो सव झंझटही छूटजाय. जीभ काटडालनेसे राजा मुझे गुरु नहीं बनावैगा और मुझें नरकमें जाना नहीं पडेगा " वस इतना विचारकर उसने अपनी जीभ काटडाली.

भाइयो ! इस प्राचीन सत्य घटनापरसे हमको समझना चाहिये कि, गुरुपर कितनीही बडी जिम्मेदारी है. गुरुके पदकी जिम्मेदारी समझनेवाला साधक कभी गुरु बननेकी हिम्मत नहीं करसकता ! परंतु इस तरहके डफोल शंख गुरु वन बैठनेकी अपेक्षा वे तो अपनी जीभ काटडालनाही अच्छा समझते हैं. इस लिये भाइयो ! गुरु वननेसे पहले अपने दोषोंको सुधारो ! खूब शास्त्रोंको विचारो ! ! और तव गुरु बनो ! ! ! तूमडीमें कंकर भरके गुरु मत बनो ! ऐसे गुरु वन बैठनेसे शास्त्रोंका और धर्मका मजा नहीं आता. कहाभी है कि:—

३८ पद ।

ना जाने व्याकरणी वस्तुको ना जानै व्याकरणी ॥ टेक ॥
चंदनभार वह्यो खर तोहूं २ ना जानै ताकी करणी ॥ १ ॥ मुखपूरित घृत भरचो ताहि पै २ स्वाद न जानै वरणी ॥ २ ॥ छपनभोग बनावत तोहू २ करछी

स्वाद न धरणी ॥ ३ ॥ रामजीवन प्रभु पूरिरह्यो जग २ लहै संत निज करणी ॥ ४ ॥

२०४ संसारमें सब मूर्खोंकी अपेक्षा पापी अधिक मूर्ख है; क्योंकि वह प्रभुका सामना करता है.

संसारमें मूर्ख तो बहुतसे हैं परंतु उनमें पापी सबसे बडा मूर्ख है, क्योंकि वह प्रभुका सामना करता है. राजाका सामना करनेसे निर्बल मनुष्यकी जैसे खराबी होती है, और सिंहका सामना करनेवाली बकरीका जैसे नाश होता है, वैसेही समर्थसेभी समर्थ और कालकेभी काल प्रभुकी इच्छाके विरुद्ध होनाभी प्रभुसे लडनेके समान है. अब भाइयो! जरा विचार तो करो कि प्रभुका सामना करके हम क्या लाभ उठासकेंगे? कहावत है कि, सूरजपर धूल फैंकी जाती है पीछी फैंकनेवालेकीही आँखमें गिरती है. जब सूरजके सामने फैंकीहुई धूलही पीछी हमारी आँखमें गिरती है तब विचार तो करो कि, जो करोडों सूरजकोभी बनानेवाला हैं, उसपर हम धूल फैंकते हैं वह कहां गिरैगी? हम पापको छोटासा समझते हैं परंतु उस छोटेसे पापकी भयंकरता कितनी बडी है सो तो विचारो! पापकी अतिभयंकरतासे कांपकरही मुनियोंने कहा है कि, संसारमें सब मूर्खोंसे पापी अधिक मूर्ख होता है, क्योंकि संसारके और मूर्ख तो संसारकी और २ वस्तुओंकेही साथ मूर्खता करते हैं परंतु पापी तो स्वयं परमेश्वरके सामने होजाता है. इससे अधिक मूर्खता दूसरी क्या होसकती है.? प्रभु! हमको पापसे बचा!!! पापसे बचा!!!

२०५ बच्चे खानेको चीज लिये विना माका पल्ला नहीं छोडते, वैसेही इच्छित वस्तु न मिले तबतक तुमभी प्रभुका पल्ला मत छोडो.

बच्चे जैसे खानेकी चीज लिये विना माताका पल्ला नहीं छोडते वैसेही हमकोभी इच्छित वस्तु पाये विना ईश्वरका पीछा नहीं छोडना

चाहिये. हम भिक्षुकोंके माँगनेसे घबराजाते हैं परंतु परमेश्वर मांगनेसे नहीं घबराता. उसकी तो यही इच्छा है कि, मनुष्य मुझसे माँगाही करै और मैं उसको अधिकसे अधिक दियाही करूं. दो चार भिखारी पीछे पडे तो हमारे आजकलके तेजमिजाज सेठ बिगड पडते हैं, माँगनेवालोंसे कायर होजाते हैं और बिना कुछ सोचे विचारे चाहे जैसी गाली दे उठते हैं तथा नौकरोंसे उनको धक्का लगवाकर निकलवादेते हैं, परंतु याद रक्खो कि, परम दयालु प्रभु वैसा नहीं करता ! वह हमारे माँगनेसे कभी कायर नहीं होता. वह तो यही चाहता है कि औरभी अधिक २ लोग मुझसे अधिक २ माँगतेही जाँय और मैं उनको दियाही करूं, यही प्रभुकी प्रभुता है. हम माँगनेसे थकजायंगे तो प्रभु हमको कुछ नहीं देगा क्योंकि मातापिताको अपने प्यारे बच्चोंकी तोतली वाणी मीठी लगती है और उनसे वेही शब्द वारवार बुलाया करते हैं, वैसेही प्रभुको हमारी प्रार्थनाएँ मीठी लगती हैं और वह उन्हीं शब्दोंको हमसे वारवार कहलाना चाहता है. ईश्वरसे वारवार माँगनेमें हमको कायर नहीं होना परंतु जैसे बच्चे खाना पाये विना माताका पल्ला नहीं छोडते वैसेही हमकोभी इच्छित वस्तु मिले विना प्रभुका पीछा नहीं छोडना चाहिये. इच्छा करने योग्य वस्तु क्या है सो तो भक्तोंको बतानेकी आवश्यकताही नहीं है. सच्चे भक्त तो ईश्वरकी कृपाको छोडकर और कुछ माँगतेही नहीं है क्योंकि प्रभुको निष्काम भक्ति प्रिय है और ईश्वरकृपामें और सब इच्छित वस्तुओंका समावेश हो जाताहै इस लिये ईश्वरकी शरणमें जानेकी प्रबल इच्छा रखने सिवाय दूसरा कुछभी सच्चे भक्तोंको इच्छा रखने योग्य नहीं है.

पद ।

संतनके संग लाग रे तेरी अच्छी बनैगी ॥ टेक ॥
हंसनकी गति हंसही जाने, कोई न जाने काग रे ॥
तेरी० ॥ १ ॥ संतनके संग पूर्ण कमाई, होय बडे

तेरो भाग रे ॥ तेरी० ॥२॥ ध्रुवकी बनी प्रह्लादकी बनि गई, हरि सुमिरन बैराग रे ॥ तेरी० ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो, राम भजनसे लाग रे ॥ तेरी० ॥ ४ ॥

२०६ भूख न लगी हो तब अच्छा खानाभी अच्छा नहीं लगता, वैसेही पापियोंको प्रभुकी मोक्ष देने-वाली बातेंभी अच्छी नहीं लगतीं.

जिसको भूख नहीं होती वह खानेमें सैकडों बहाने निकालताहै और अच्छेसे अच्छे पदार्थ भी उसके आगे रक्खे जाँय तो वह कुछ न कुछ दोषही ढूंढता है. परंतु जिसको सच्ची भूख लगीहोती है उसको रूखा सूखा, कच्चा पक्का कैसाही पदार्थ दियाजाय तो वह उसेभी खुशीके साथ खाता है, वहभी उसको स्वादिष्ठ लगता है, वहभी उसको पच-जाता है और उसमेंसेभी उसको पोषण मिलता है. वैसेही जो ईश्व-रीय मार्गमें आना चाहते हैं, और जो सरलहृदयके हैं उनको प्रभु-संबंधी साधारण बातेंभी मीठी लगती हैं, उनमेंसेही उनकी भक्ति बढती है और उन साधारण बातोंमेंसेही वे अपूर्व आनंद लूटते हैं. परंतु जिनका हृदय कठोर है और जिनका मन सांसारिक बुरी लीला-ओंमें फँसा है उनको ईश्वरसंबंधी अच्छे विचार कभी नहीं आवे, वे भक्तिकी सुगमसे सुगम क्रियाभी नहीं पालन करसकते. ऐतिहासिक बातेंभी वे नहीं मानते और बडे २ भक्तोंकी अद्भुत शक्तिकी कित-नीही सच्ची बातें तथा ईश्वरकी अनंत दया और अखूट सामर्थ्यका विचारभी उनको कभी नहीं आता! उनके लिये तो यही समझना कि उनकी सच्चा ज्ञान प्राप्त करनेकी इच्छा अभी जागृत हुई नहीं है, उनका व्यावहारीक मोह अभी छूटा नहीं है, उनकी अज्ञानकी ऊंघ अभी उडी नहीं है और ईश्वरीय ज्ञानकी भूख अभी उनको लगी

नहीं है. वैसे लोग कितनेही सिद्धांतोंको नहीं मानते, इससे क्या ईश्वरीय नियम बदल सकते हैं? इस लिये कितनेही उतरते प्रकारके जीवोंको देखकर भक्तोंको उदास नहीं होना परंतु ऐसा समझना चाहिये कि, ईश्वरकृपासे हमको ईश्वरीय ज्ञानकी भूख जल्दी लग आई है और उनको घंटे दो घंटे वाद लगेगी. वेभी हमारे भाई हैं और उनकोभी अंतमें भूख लगेहीगी. इस लिये इनसे नाराज न हो और उनका तिरस्कार न करो परंतु प्रार्थना करो कि, हे प्रभो! हमारे बंधुओंको तेरी महिमा समझनेकी सद्बुद्धि दे!

दोहा—भाग्यहीनको ना मिलै, भली वस्तुको भोग।
आम पकनके दिननमें, होत कागको रोग॥

२०७ राजाका अपमान करनेहीसे सत्यानाश होजाता है, तव ईश्वरका अपमान करनेसे कैसी भयंकर खराबी होगी सो तो विचार करो।

एक जिज्ञासूने किसी महात्मासे पूंछा "महाराज! पाप किसे कहते हैं?

महात्माने उत्तर दिया "बेटा! ईश्वरका अपमान करना अर्थात ईश्वरकी इच्छाके विरुद्ध चलनाही पाप है. हम किसी गरीब आदमीका अपमान करें तो उसको क्रोध आता है, मालिकका अपमान करें तो वह हमको नौकरीसे जवाब देदेताहै. किसी सरकारी अफसरका अपमान करें तो वह उसी समय हमको पकडाकर चाबुकोंसे पिटवाताहै और कैद करादेताहै, तथा किसी राजाका अपमान करें तो उसी समय फांसी पाना पडता है.

मनुष्यका अपमान करनेसेही जब इतना कष्ट भोगना पडता है तब राजाओंके राजा और देवोंके देव परमेश्वरका अपमान करनेसे हमको कितना कष्ट सहना पडैगा सो तो विचारो! प्रभुका अपमान करनेका नाम पाप है, और ईश्वरीय आज्ञाएँ नहीं पालना, धर्मके नियमोंको न मानना सो ईश्वरका अपमान करना है क्योंकि हमारा

सनातनधर्म ईश्वरकाही दिया हुआ है इसलिये भाइयो ! प्रभुका अपमान न होनेकी पूरी सँभाल रक्खो !

हमारे वहुतसे भाई स्त्रीको अपने बायें पैरका जूता समझते हैं परंतु वह स्त्रीभी थोडावहुत अपमान होगया तो उसे सहन नहीं करसकती, इतनाही क्यों ? हमारे आश्रित पशुपक्षीभी अपमान सहन नहीं करसकते. तव अनंत ब्रह्मांड जिसके आश्रित हैं वह समर्थ प्रभु हमारे अपमानको कैसे सहन कर सकैगा ? हम अपने जरासे अपमानसेही जव विगड उठते हैं, तव कालकेभी काल समर्थ प्रभुका हम नित्य अपमान करते हैं अर्थात् नित्यप्रति कुछ न कुछ पाप करते हैं उससे वह कितना रुष्ट होगा और उसके रुष्ट होनेका परिणाम क्या होगा सोभी तो विचार करो ! और तो क्या परंतु हमको तो वह विचार करनेमें भी डर लगता है इस लिये भाइयो ! प्रभुकी इच्छाके सामने मत हो ! प्रभुका अपमान मत करो ! प्रभुका अपमान मत करो ! धर्मके नियमोंसे टेढे मत चलो ! धर्मके नियमोंके विरुद्ध मत चलो !

२०८ मीठे पानीकी आशासे कुआ खुदानेमें जो खारा पानी निकल आवै तो कितना दुःख होता है ? वैसेही प्रभुने हमको धर्म करने भेजा है परंतु हम पाप करते हैं इससे ईश्वरको कितना दुःख होताहोगा.

किसान वडा परिश्रम करके खेत हांकताहै, और खर्च करके अच्छा वीज वोता है सो इसी आशासे कि, उसमें खेती अच्छी हो, परंतु खेतीके वदले जो उसमें घास पैदा होजाय अथवा कुछभी पैदा न हो तो उसको कितना दुःख हो ? मीठा पानी मिलनेकी आशासे वडा खर्च करके कुआ खुदायाजाय और उसमें खारा पानी निकलै

तो कितना रंज हो ? बहुतसा समय, बहुतसा श्रम और बहुतसा खर्च करके बचेको पढा लिखाकर होशियार कियाजाय और फिर वह बदचलना निकल आवे तो पिताको कितना भारी दुःख हो ?

इसी तरह ईश्वरने कृपा करके हमको यह मनुष्ययोनि दी है, अच्छे देशमें जन्म दिया है, और उज्ज्वल धर्म दियाहै. इतनेपरभी जो हम सीधे मार्गपर न चलै और पापकर्म करैं तो ईश्वरको बुरा लगे बिना कैसे रहसकताहै ? ईश्वरकी यह इच्छा है कि, हम संसारमें आकर परमार्थमें लगै और इसी शर्तपर प्रभुने हमको मनुष्य अवतार दिया है परंतु हम अपने कुछ स्वार्थके लिये प्रभुकी इच्छाको एक कोनेमें रखदेते हैं और अपनी शर्तपर अपनेही हाथसे पानी फेर देते हैं, यह हमारी कितनी बडी नीचता है ? इससे ईश्वरको कितना बुरा लगैगा ? और ईश्वरके कोपसे हमारी कैसी २ खराबी होगी सो तो विचार करो ? इस लिये भाइयो ! हजार बातकी एक बात यह है कि, जैसे बनै वैसे पापसे बचनेका यत्न करो !

पद राग गौडी ।

कौन कुटिल खल कामी । मोसम कौन कुटिल खल कामी ॥ टेक ॥ तुमसों कहा छिपा करुणानिधि ! तुम उर अंतरयामी ॥ मोसम० ॥ १ ॥ भरि भरि उदर विषय रस पीवत, जैसे सूकर ग्रामी । जो तन दियो ताहि बिसरायो, ऐसो नमकहरामी ॥ मोसम० ॥ २ ॥ जहां सतसंग तहां अति आलस, विषयिन सँग बिसरामी । श्रीहरिचरण छाँडि औरनको, निशिदिन करत गुलामी ॥ मोसम० ॥ ३ ॥ पापी पतित अधम परनिंदक, सब पतितनमें नामी । कीजे कृपा दास तुलसीपर, सुनिके श्रीपति स्वामी ॥ मोसम० ॥ ४ ॥

२०९ यहांपर हमारे पाप छोटे २ बीज समान हैं परंतु प्रभुके दरवारमें पहुँचकर धर्मराजके पास न्यायके समय वडे वृक्ष हो जाते हैं.

वडके छोटे बीजमेंसे जैसे वडा वृक्ष उत्पन्न होजाता है और अग्निकी छोटीसी चिनगारीसे जैसे वडी भयंकर आग पैदा होजाती है. वैसेही पापको भी कभी छोटा नहीं समझना चाहिये. पाप यहाँपर बीज समान है इससे हमको छोटा और निर्जीवसा जान पडता है, परंतु ईश्वरके दरवारमें पहुँचतेही न्यायके समय वह वृक्ष समान वडा और अग्निसम भयंकर होजाता है, इतनाही नहीं परंतु एक पापमेंसे दस पाप उत्पन्न होजायँगे और उन दसमेंसे दूसरे सौ पाप निकल पडेंगे, क्योंकि पाप एक, दो, तीन, चार, पाँचके क्रमसे नहीं वढते परंतु एक, दस, सौ, हजार, दस हजार, लाखके क्रमसे वढते हैं. इसलिये पापोंसे वहुत कुछ सँभालना और वचना चाहिये. हम हैजे और प्लेगके कीडोंसे जितने डरते हैं उससे भी पापसे हजार गुना अधिक डरना चाहिये क्योंकि उन जंतुओंसे तो केवल कुछ जल्दीही मरना पडता है, परंतु पापोंसे हजारों और लाखों वरसतक नरकमें पडना पडता है. इसलिये भाइयो ! पापसे डरो और वचनेका यत्न करो !

२१० पापियोंके अच्छे कर्म वृथा नहीं जाते, परंतु भक्तोंके अच्छे कर्मोंसे उसकी कीमत थोडी होती है.

याद रखना कि, पापी मनुष्यकेभी अच्छे कर्म निष्फल नहीं जाते यद्यपि उन कामोंकी कीमत कम होजाती है तवभी वे निरर्थक तो नहीं जाते देखो !

दो राजाओंमें लडाई हुई. उनमेंसे एकके वहुतसे मनुष्य मरगये. तव उसने अपनी रक्षाके लिये उन मरेहुए मनुष्योंकी लाशोंसे किला वनाय और उसकी आडमेंसे गोली चलाना शुरू किया. फल यह हुआ कि, शत्रुओंकी गोलियाँ उन लाशोंमें लगकर अटकने लगी और इस तरहपर उसकी आडमें वैठी हुई सेना वचगयी. यद्यपि

मुरदे शत्रुओंके सामने खडे होकर लडते नहीं थे परंतु शत्रुओंकी गोली रोकनेमें तो वे कामही आये, वैसेही पापियोंके भले काम भी उन लाशोंके समान हैं वे शत्रुओंकी गोली थोडी देर सह सकते हैं परंतु शत्रुओंको मारकर नहीं भगा सकते अर्थात् भले काम करनेसे पापीजन कितनेही नये पापोंसे वचसकते हैं परंतु पापकी वासनाको निर्मूल नहीं कर सकते और प्रभुके पास पहुँचा नहीं सकते. इसलिये पापियोंके अच्छे कामभी मुरदोंके समान हैं परंतु वे मुरदे हैं तवभी शत्रुओंके घाव सहने और उनकी ओटमें खडे हुए लोगोंको बचानेवाले हैं, इस तरह अच्छे काम कभी व्यर्थ नहीं जाते इस वातका विश्वास रखकर पापियोंकोभी अच्छे काम करने चाहिये, ऐसा कभी मत मानो कि, पापसे भले कामभी व्यर्थ जाते हैं. भले काम करनेसे कभी मत हटो ! अच्छे कामको सदा करतेही रहो !

पापियोंके और भगवदीय जीवोंके अच्छे काममें अंतर इतनाही है कि, पापियोंके अच्छे काम तो मुरदेके समान हैं और धार्मिकोंके अच्छे काम लडनेवाले शूर वीर योधा समान हैं अर्थात् पापीजन अपने भले कामोंसे दूसरे पापोंसे वचते हैं परंतु भक्तोंके भले कामोंसे तो उनके अंतःकरणकी वासनाएँ ही जलजाती हैं जिसका परिणाम यह होता है कि, पापियोंके भले काम तो उनको शत्रुओंकी मारसे वचाते हैं परंतु धार्मिकोंके भले काम शत्रुकाही समूल नाश करते हैं. अच्छे कामोंमें इतना वडा वल है और जिसमेंभी धर्मार्थ किये हुए प्रभुनिमित्त कियेहुए कामोंमें तो अनंत गुना वल है इस लिये भाइयो ! पापको छोडकर ईश्वरके निमित्त अच्छे काम करो ! अच्छे काम करो !

२११ विष थोडासा खाया हो तबभी हानि ही करताहै वैसेही पापको छोटा नहीं समझना. छोटासा पापभी अंतःकरणमें शांति नहीं रहने देता.

बहुत वडी भूल तो हम यह करते हैं कि पापको छोटा गिनते हैं. हम ऐसा समझते हैं कि, जरासी झूँठ वोललेनेमें क्या होता है जरासा

भोग विलास करलेनेमें क्या होता है ? कभी क्रोध आगया तो क्या ? कोई पापी विचार मनमें आगया तो क्या ? एक दिन देवदर्शन नहीं हुए तो क्या ? एक आधा व्रत न हुआ तो क्या ? एक दिन माला नहीं फेरी तो क्या ? और कभी अपना मतलब निकालनेके लिये ढोंग बताना पडा तो क्या ? ये तो योंही चला करते हैं. ऐसी जरा-जरासी बातोंमें पाप नहीं लगाजाता.

बहुतसे आदमी ऐसा मानते हैं परंतु यह बडी भूलकी बात है, क्योंकि प्राचीन विद्वान् कहगये हैं कि पापको छोटा नहीं समझना. साँपके बच्चेको छोटा समझकर नहीं छोडदेना, क्योंकि चाहे वह छोटा है परंतु तुमको पूरा करडालनेके लिये तो बहुत है, और विषकोभी छोटा नहीं समझना क्योंकि प्राण लेनेके लिये तो वह भी बहुत है. इसी तरह पापकोभी छोटा नहीं समझना चाहिये. छोटासा पापभी सत्यानाश कर-देता है, क्योंकि वह शराब पीनेके व्यसनके समान है. शराब पीनेकी जैसे नित्यप्राति इच्छा बढतीजाती है वैसेही पाप करनेकीभी प्रवृत्ति दिन प्रतिदिन अधिकही अधिक होतीजाती है. इस लिये पापको हलका समझनेकी कभी भूल नहीं करना चाहिये. जो बचनेका है सो तो नित्यको छोटे पापसेही है. थोडा थोडा मिलकरभी बहुत बडा संग्रह होजाता है और तब उससेही बडा पाप करनाभी सूझता है. इस लिये जिनको हम छोटा समझते हैं उन छोटे पापोंसेही बचनेका यत्न करो तो बडे पापोंसे आपहीआप बचजाओगे ! हमको अधिक सँभलकर रहना है सो तो इन छोटे २ पापोंहीसे ! क्योंकि, येही हमारे हाथसे वारवार बनते रहते हैं. बडे पाप तो रोज रोज नहीं होते और होते हैं सोभी किसी २ पापीहीके हाथसे, परंतु छोटे २ पाप तो प्रत्येक मनुष्यसे बनजाते हैं, क्योंकि हम उनको छोटे गिनते हैं. याद रक्खो कि, जिन बातोंको हम छोटा गिनते हैं वेही छोटे २ पाप बडे पापोंका दरवाजा होता है. भाइयो ! यह दरवाजा बंद करो ! पापको छोटा न गिननेसे यह दरवाजा बंद होता है इस लिये पापको छोटा गिननेकी भूल कभी मत करो ! पाप कभी छिपा नहीं रहनेका !

३९ पद ।

छुपि पाप करै कहा जानी, प्रभुसौं तुव एक न छानी ॥ टेक ॥ दिन अरु रात्रि सूर्ज अरु चंदा ऐसे दस निगरानी ॥ १ ॥ जो प्रभु पूरि रह्यो जगमाहीं, तासों कोउ न लुकानी ॥ २ ॥ यों मन समुझि पाप पोटरिया, काहे शिर धारैं अज्ञानी ॥ ३ ॥ रामजीवन खुलि है यह आगे, चित्रगुप्त केरी दिवानी ॥ ४ ॥

२१२ प्रभुकी बातें छोडकर व्यवहारी झगडेंमें पडे रहना मिष्टान्न छोडकर मट्टी खानेके समान है.

हम ऐसे बहुतसे आदमियोंको पहँचानते हैं कि, जिनको राख, मट्टी, कोयला खानेकी आदत होती है. जिनको ऐसी चीजें खानेकी आदत होती है वे अच्छेसे अच्छा खाना पानेपरभी उस आदतको नहीं छोडसकते, वैसेही हमारे बहुतसे भाई बहनें ऐसी हैं कि, जिनको प्रभुकी उत्तमसे उत्तम बातेंभी अच्छी नहीं लगतीं और व्यवहारकी हलकीसे हलकी बातेंभी अच्छी लगती हैं. हमभी अबतक थोडे बहुत वैसेही बने हैं. दूसरोंके व्यभिचारकी, दूसरोंके, लडाईकी, दूसरोंके मुकद्दमेकी और दूसरोंकी रीति भांतिकी बातें सुनना हमको बहुत अच्छा लगता है, परंतु प्रभुकी बातें सुननेमें हमको अरुचि होती है, आलस्य होता है, नींद आती है और सचे झूंठे इधर उधरके अनेक बहाने उठ खडे होते हैं. अभी हममें प्रभुकी बातें सुननेका प्रेम जागृत नहीं हुआ है इससे उसमें रस नहीं आने लगा है-

राख, मट्टी, कोयला खानेकी आदतवालोंकी हम हँसी करते हैं और उनपर तर्स खाते हैं परंतु खुद हमही इस कहावतको पूरा करते हैं कि “ गधेको शक्कर अच्छी नहीं लगती और घूडेपरके जूंठे पत्ते चबाना अच्छा लगता है. ” प्रभुके गुणकी, प्रभुके यशकी और प्रभुके आनं-

दकी बातें छोडकर हम दिनरात सांसारिक दंतकथाओंमें लगे रहते हैं इसका तो कुछ विचार करो! औरोंकी ऐब निकालना सबकोही आता है परंतु अपना घरभी तो देखो! हमारी रुचि कैसी हलकी है सो सोचो. राख मट्टी खानेवाले तो केवल निर्दोष राख और मट्टीही खाते हैं परंतु हम तो लोगोंकी निंदा करके दूसरोंके पापको खाते हैं सो तो समझो! इस पापसे छूटनेका सुगम उपाय तो यही है कि जहांतक बनै वहांतक व्यवहारिक निरर्थक बातोंसे बचो और भगवान्का यश गानेमें लगो! भगवान्का यश गानेमें लगो!

४० पद।

रे मन जन्म पदारथ जात। बिछुरे मिलन बहुरि कब है है, ज्यों तरुवरके पात ॥ टेक ॥ सुनत बात कफ कंठविरोधी, रसना टूटी बात। प्राण लिये जम जात मूढमति, देखत जननी तात ॥ १ ॥ छिन इक माहिं कोटि जुग बीतत, पीछे नरककी बात। यह जग प्रीति सुवा सेमरको, चाखतही उडिजात ॥ २ ॥ जमके फंद नहीं पडिवो रे, चरणन चित्त लगात। कहत सूर बृथा यह देही, अंतर क्यों इतरात ॥ ३ ॥

२१३ स्वर्गका टिकट तो इकट्ठाही मिलता है. थोडे दिन वेश्या रहकर फिर सती होना नहीं बनसकता.

यह एक वहुत जरूरी याद रखनेकी बात है कि, स्वर्गके मार्गमें बीचमें ठहरनेको कोई मुकाम नहीं है. स्वर्गका टिकट तो इकट्ठाही मिलता है. हम यात्रा करने जाते हैं तब मार्गमें अनेक मुकामोंपर उतरते और टुकडे २ करके टिकट खरीदते जाते हैं परंतु स्वर्ग जानेके लिये टुकडे २ करके टिकट नहीं मिलता, वहां तो साबित एकही टिकट मिलता है. तात्पर्य यह कि, चार दिन भक्तिकरके छोडदोजाय

वरस छः महीने पीछे फिर भक्ति करना जारी करदियाजाय, किसी प्रकारका सुख या दुःख आपडे तो भक्ति छोड दीजाय, अवकाश मिलनेपर शुरू करदीजाय, इस तरहपर भक्ति नहीं होती.

संतका और सतीका धर्म एकसा है. कोईभी स्त्री थोडे दिन दुराचारिणी रहकर फिर सती नहीं होसकती, वैसेही वीच वीचमें थोडे २ दिन भक्ति छोडदेनेसे भक्त नहीं होसकता, और स्वर्गमें गया नहीं जासकता. इस लिये भक्तिका तार तो सावितही लगातारही रखना चाहिये, क्योंकि स्वर्गका टिकट टुकडे २ होकर नहीं मिलता किंतु सावित एकही वारमें मिलता है. इस लिये भाइयो! अखंड भक्ति करो! अखंड भक्ति करो!! भक्तिके तारको टूटने मत दो!!!

२२४ गढेके पानीको एक भैंसा खराव करडालताहै, वैसेही धर्मका ज्ञान न रखनेवाले भक्तोंको परधर्मी लोग शंकाशील बनादेते हैं, इस लिये धर्मका ज्ञान सीखो.

प्रत्येक भक्तको अपने धर्मके सिद्धांत और उसका रहस्य अवश्य जानना चाहिये. जवतक धर्मका पूरा रहस्य न समझाजाय तवतक प्रभुमय जीवन नहीं होसकता, और जवतक धर्मके सिद्धांत अच्छी तरह न समझेजायँ तवतक मनकी शंकाओंका ठीक २ समाधान नहीं होसकता, और जवतक शंकाओंका समाधान न हो तवतक परधर्मियोंके जालमें फँसजानेका भय रहताहै. इस लिये भक्तोंको अपने धर्मके संवंधमें अधिक नहीं तवभी आवश्यकताके योग्य ज्ञान अवश्य प्राप्त करलेना चाहिये. जैसे थोडे पानीके गढोंमें गिरकर भैंसे पानीको गंदा और मैला करदेते हैं वैसेही थोडे ज्ञानवालोंके मनकोभी परधर्मियोंको टेढे सीधे प्रश्नद्वारा भ्रमित करदेनेमें देर नहीं लगती, परंतु जैसे वडा तालाव भैंसोंके झुंडसेभी गदला नहीं होसकता वैसेही ज्ञानी भक्तोंका मन अपने धर्मके लिये दूसरोंकी विरुद्ध टीकासे कभी चलित नहीं होता. अपने धर्मपर विश्वास वढानेके लिये और अपने

भक्तिभावको दृढ करनेके लिये भक्तोंको और जिज्ञासुओंको अपने धर्मका पक्का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये. जो भक्त अपने प्रिय धर्मका ज्ञान प्राप्त करनेपर ध्यान नहीं देते वे कभी २ उस गढेकी तरह भैंसेके पडनेसेही गदले--भ्रमित होजाते हैं. इसलिये भक्तोंको छोटासा गढ न रहना परंतु वडा सागर वननेका यत्न करना चाहिये. यह वात धर्मशास्त्रके ज्ञानसे होसकती है. भाइयो! जो पक्का भक्त वनना हो तो धर्मका ज्ञान प्राप्त करनेका यत्न करो!

२१५ गुरुका कर्तव्य सडा हुआ कुत्ता और रामकी बात.

गुरु वनके पराया माल उडाना किसको अच्छा नहीं लगता? संसारमें मान पाना, शिष्योंसे पूजा कराना और इच्छा अनुसार चलना किसको अच्छा नहीं लगता? संसारकी उत्तमसे उत्तम वस्तु जव चाहो तव सामने मौजूद है, राजा महाराजा और सेठ साहूकार आकर पैरोंमें गिरते हैं. और जो जवानसे निकलै वही कायदा माना जाताहै तव कहो गुरु वनना किसको अच्छा नहीं लगता? परंतु योग्यता विना ऐसा अधिकार भोगनेका कैसा बुरा परिणाम निकलताहै सोभी तुम जानते हो? इसके लिये रामायणमें एक उदाहरण लिखा है कि:--

भगवान् रामचंद्र स्वधाम पधारते समय सारी अयोध्याको साथ लेकर सरयूपर पहुँचे तव उन्होंने वहांसे नगरमें आदमी भेजे और निश्चय कराया कि कोई अयोध्यामें रह तो नहीं गया? लौटकर आदमीने खवर दी "महाराज! एक कुत्ता बाकी है! वह एक दुर्गंधिवाली गलीमें पाखानेके पास पडा है. उसकी दशा बहुत खराव है. सारा शरीर उसका गलगयाहै. देहमें हजारों कीडे पडरहे हैं और बुरी वास आती है."

रामचंद्रजीने आज्ञा दी "उसे वडी सँभालके साथ मेरे पास ले आओ!"

दूत जाकर कुत्तेको उठालाया. उसे देखकर लोगोंको बडी दया आई. उन्होंने रामचंद्रसे पूँछा " महाराज ! इसका ऐसा क्या अपराध है, जिसके लिये इसको इतना दुःख भोगना पडता है ? "

रामचंद्रने उत्तर दिया " यह कुत्ता पूर्व जन्ममें गुरु था और इसके शरीरमें जो कीडे पडे हैं वे इसके शिष्य थे. उन अज्ञानी शिष्योंका माल इसने खूब खाया परंतु उनको अच्छे मार्गपर नहीं लगाया इससे अब वे शिष्य कीडे बनकर उसके शरीरको इस जन्ममें खाये डालते हैं. "

जो गुरु बन बैठेहों और जो बननेकी इच्छा रखते हों उसको रामचंद्रकी यह बात खूब ध्यानमें रखनी चाहिये. रामचंद्र कहते हैं कि, वैसे गुरु तो शिष्यका केवल रुपयाही खाते हैं परंतु जो वे उचित रीतिसे नहीं खाते हैं तो शिष्य तो उन गुरुओंका रुधिर, मांस और जीवनतक खाजायंगे इस लिये भाइयो ! विचार करो कहीं ऐसा न होजाय कि,

लोभी गुरु आलसी चेला। दोनों नरकमें ठेलम ठेला ॥

२१६ हम थोडासा सुख पाने परही अपने बंधुओंको भूल जाते हैं परंतु प्रभु अपने अनंत सुखमेंभी हमको नहीं भूलता.

एक सेठ किसी कामवश कहीं गयाथा वहांसे लौटते समय मार्गमें उसको एक ऊजड मैदान मिला. उस मैदानमें उसको ४–५ दिनतक सफर करनी पडी. जाडेकी ऋतु थी और जिसमेंभी जाडा उन दिनों तेज पडताथा इससे उसको जाडेका अपने शरीरसे अनुभव करना पडा. उस मैदानमें बसनेवाले गरीब लोगोंको जाडेसे दुःखित देखकर उसको बडी दया आई, जिससे उसने उन लोगोंसे कहा कि मैं तुम्हारे तापनेके लिये लकडियोंकी गाडियां भरके भिजवाऊंगा, साथहीमें उसने अपने साथवाले आदमियोंसे घर पहुँचनेपर लकडी भेजनेकी याद दिलानेके लिये भी कह दिया.

थोडे दिनमें वह घर पहुँचगया, घरपर कुछ अधिक जाडा नहीं पडताथा और तिस परभी पैसेवालेको सब तरहकी सुविधा रहती है तब उसको जाडेकी खबरही क्यों पडने लगी ? घरमें अच्छी अँगीठियां, काशमीरी दुशाले, काचकी खिडकियां और गरम कपडे तथा खाना तैयार हो वहां ठंड विचारी कैसे आसकती है ? घर पहुँचते ही सेठ साहबको गरमी मिलगयी इससे उस मैदानमें लकडी भेजनेकी बात याद न रही. नोकरने यादभी दिलाई परंतु उत्तर यही मिला कि अब तो मुझको गरमी लगने लगगयी इससे वहांभी गरमी आगयी होगी फिर लकडी भेजनेकी क्या जरूरत है ?

भाइयो ! हमभी उस सेठ जैसेही हैं. हमकोभी जब कुछ अनुकूलता अथवा कुछ सुख मिलजाता है तब अपने पहले दिनोंको और अपने गरीब भाइयोंको भूलजाते हैं. दयालु प्रभुही एक ऐसा है कि, जो अपने अनंत सुखोंमेंभी हमको नहीं भूलता और मोक्षधाम छोडकर तथा ईश्वरता छोडकर हमारे लिये अवतार धारण करता है. उसकी दया देखो ! प्रभुकी अनंत दया देखो ! और हमारी नीचता देखो ! इसलिये भाइयो ! जैसे बनै वैसे अपने मनकी नीचता छोडकर प्रभुकी दयामें जाओ ! प्रभुकी शरणमें जाओ और थोडासा सुख मिलजानेहीपर अपने गरीब भाई बंधुओंको मत भूलो ! मत भूलो !! मत भूलो !!!

२१७ धर्म जानते हुए भी औरोंको न बताना बडा पाप है. इसलिये भक्तोंको चाहिये कि औरोंको धर्मका उपदेश दें.

जो हमारे पास कोई अच्छी दवा तैयार हो अथवा हम जानतेहों कि, अमुक दवा अमुक रोगपर अच्छी है तो आवश्यकता पडनेपर वह दवा देना या बताना जैसे हमारा कर्तव्य है वैसेही धर्मके तत्त्व बताना और समझानाभी हमारा कर्तव्य है, क्योंकि उपदेश विना

ज्ञान नहीं मिलता. इसलिये उपदेश अवश्य करनाही चाहिये. गांवमें हैजा फैलरहाहो और हमारे पास हैजेकी दवा रक्खी हो परंतु जो हम किसीसे यह वात न कहें तो कोई जान थोडाही सकताहै ? यह वात न जतानेसे दवा होतेहुएभी वहुतसे मनुष्य मरजाँय तो क्या कम पाप है ? वैसेही लोग अधर्ममें फँसेहो और हम धर्मको जानतेहो तव भी उनको धर्मका मार्ग न वतावें तो वहभी एक वडा अपराध है, उपदेश करनेमें और धर्मका मार्ग वतानेमें प्रभुका मार्ग चौडा और भपकेदार करनेमें भक्तजनोंको और गुरुजनोंको विलकुल भी आलस्य नहीं करना चाहिये. जो तुम प्रसंगोपात्त वारंवार उपदेश किया करोगे तो किसी न किसी दिन मनुष्योंपर उसका अच्छा असर हुए विना रहैगा ही नहीं. धर्मका उपदेश तो सदा करतेही रहना चाहिये ! पृथ्वीपर जो जो धर्म वहुत फैलेहुए हैं वे सब उपदेशसेही फैले हैं. इसलिये धर्मका उपदेश करनेमें देर मत करो ! देर मत करो !

२१८ किसीको आगमेंसे या कुएमेंसे वचाना जैसे धर्म है वैसेही धर्मका उपदेश करना करानाभी ईश्वरका प्यारा काम है.

किसीको आगमेंसे वचालेना जैसे दयाका काम है, किसीको पानीमें डूवनेसे वचालेना जैसे परमार्थका काम है, किसीको घावपर मरहम-पट्टी करना जैसे भला काम है, धंधे विना भटकते लोगोंको रोज़गारसे लगाना जैसे धर्मका काम है, भूखेको अन्न देना जैसे मनुष्यका कर्तव्य है, और किसीकोभी आवश्यकताके समय अपनेसे वनती मदद देना जैसे ईश्वरका प्यारा काम है वैसेही औरोंको उपदेश करनाभी एक धर्मका पवित्र कर्तव्य है, और ईश्वरका प्यारा काम है, क्योंकि उपदेशसे [illegible]को मार्ग मिलजाता है, पापियोंके पाप छूटते हैं, भक्तोंको [illegible] शांति मिलती है व्यवहारमें फँसेहुए लोग अपने दोषोंको समझने लगते हैं, मनुष्योंमें अपनी शक्तियोंका उपयोग करनेका वल

आता है, दुःखियोंको प्रभुके नामसे धीरज मिलती है, और गंगा यमु-नामें स्नान करनेसे जितनी शांति होती है उससेभी अधिक मनकी शांति उपदेशसे होती है. इससे धर्मका उपदेश करना वहुत वडा पवित्र और परमार्थका काम है. इसलिये ऐसा यत्न करो जिसमें धर्मके अच्छेसे अच्छे उपदेशक वढें !

जिस धर्ममें उपदेशकोंको पूरा २ आश्रय मिलता है उसी धर्मकी और सव धर्मोंसे अधिक उन्नातिभी होतीहै. बौद्ध धर्मकी उन्नति प्राची-नकालमें उपदेशकोंहीसे हुईथी, महात्मा शंकराचार्यजीने भारतमेंसे बौद्धधर्मको गारत किया सोभी उपदेशसेही, और आजकल संसारमें ईसाई धर्म फैलताजाता है सोभी उपदेशकोंको आश्रय मिलनेहीसे है. सैकडों वर्षोंसे हजारों आपत्तियां भोगने परभी हिंदूधर्म अवतक ठह-राहुआ है इसका कारणभी उपदेशकही है. वे उपदेशक साधु ब्राह्मण हैं. उनको मिलनेवाले आश्रयहीसे हिंदूधर्म ठहराहुआ है. परंतु अव समय वदलगया है इससे समयके अनुसार उपदेशकभी रखने चाहिये तवही धर्मकी वृद्धि होसकती है, यह बात सव धार्मिक भाइयोंको और उनमेंभी विशेषःकरके धनवानोंको अवश्य याद रखना चाहिये.

राग विहाग ।

क्यों रे नींद भर सोया, मुसाफिर ! क्यों रे नींदभर सोया ॥ टेक ॥ मनुषा देहि देवनको दुर्लभ, जन्म अकारथ खोया ॥ मुसा० ॥ १ ॥ धन दारा जोवन सुत तेरा, वामें मन तेरा मोह्या ॥ मुसा० ॥ २ ॥ सूरदास प्रभु चलेहि पंथको, फिर नैनाभर रोया ॥ मुसा० ॥ ३ ॥

२१९ ईश्वरके गुणोंका पार नहीं आता !

एक वच्चा अपनी माताके साथ समुद्रकिनारे सैर करनेगया वहां जाकर माता तो किनारेपर वैठगयी और वच्चा खेलनेलगा. खेलते २

वह समुद्रमेंसे चुल्लू भरके पानी ले आया और बोला "माता ! देख तो मैं समुद्र लाया ? "

माताने कहा " हां बेटा ! ठीक है ! यहभी समुद्रकाही पानी है, परंतु समुद्र तो अभी पीछे है. इतनेसे चुल्लूमें समुद्र थोडाही आसकताहै?'

बच्चा फिर दूसरा चुल्लू भरलाया और बोला " मा मैं समुद्र लाया!"

तबभी माताने पहलेजैसाही जवाब दिया. इस तरह खेलही खेलमें वह बच्चा कई चुल्लू भरलाया परंतु वह माताने उसे समुद्र लाना नहीं माना इसी तरह मनुष्य प्रभुके चाहे जितने गुण गान करै परंतु इससे ईश्वरके गुणोंका पार नहीं आसकता और न उसके पूरे २ गुण गानेमें आसकते हैं सब भाइयोंको भली भांति याद रखना चाहिये कि, हम प्रभुके चाहे जितने गुण गान करै परंतु वह तो समुद्रमेंसे चुल्लू भरके पानी लानेकेही बराबर है. इसीलिये पुष्पदंत आचार्यने महिम्नस्तोत्रमें कहा है—

" असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिंधुपात्रे
सुरतरुवरशाखालेखिनी पत्रमुर्वी ॥
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ "

अर्थ—नीलगिरि पर्वत समान कज्जलकी स्याही बनाईजाय महासागरकी दवात बनाई जाय, सब देवताई वृक्षोंकी कलम बनाई जाय, पृथ्वीकी सतहका कागज बनाया जाय, और सबमें बढियासे बढिया लिखनेवाली सरस्वती सदा लिखती रहै तबभी हे ईश्वर ! तेरे गुणोंका पार नहीं आता.

इंद्रविजय छंद ।

वेद थके कहि तंत्र थके, कहि ग्रंथ थके निशि वासर
गाते । शेष थके, शिव इंद्र थके पुनि, खोज
कियो बहु भाँति विधाते ॥ पीर थके पुनि, मीर

थके, पुनि धीर थके बहु बोलि गिराते । सुंदर मौन गही सिध साधक कौन कहै उसकी सुख बाते ॥

२२० पैसेसे आत्माकी शांति नहीं मिलती.

एक मूँजी सेठ मरनेको पडा तब उसके सगे संबंधियोंने उससे वसियतनामा करजानेको कहा, परंतु उसके गले बात न उतरी. उसकी किसीको भी पैसा देजानेकी इच्छा नहीं थी, इससे वह यही जवाब देताथा कि, अभी देर है. होते होते उसका रोग बढगया और पैसेके लिये उसको बडा दुःख होने लगा, तब तो उसके रिश्तेदारोंने थैलियाँ उसके पास ला धरी, उसने उठाकर थैली अपनी छाती पर रख ली. रख तो ली परंतु उसका बोझा उससे सहा नहीं गया और बोझेके मारे श्वास रुकने लगा तब लाचार होकर, उदास होकर, कायर होकर उसने अपनेही हाथसे थैली कलेजे परसे हटादी. अंतमें पैसेकी चिंताही चिंतामें विना वसियतनामा लिखेही सेठजी चलते बने.

मक्खीचूसकी इस सच्ची बातपरसे हमको समझना चाहिये कि मरते समय अकेला धन सुख नहीं देसकता, किंतु धर्मही सुख देताहै, इस लिये जो धन हो तो धनसे धर्म प्राप्त करो ! धर्म प्राप्त नहीं करोगे तो धनसे उलटा दुःखही होगा. याद रक्खो कि, धन कमानेमें दुःख होता है, धनकी रक्षा करनेमें दुःख होता है और धनको छोडजानेमेंभी दुःख होता है. उसको तो केवल धर्मके कामोंमें खर्च किया जाय तबहीं सुख होताहै. भाइयो ! धनको धर्मके काममें लगानेका एकभी मौका मत जानेदो ! क्योंकि पंडितोंने कहा है कि धनकी तीन गति हैं दान भोग और नाश. जिसने धनका दान नहीं किया और भोगभी नहीं भोगा उसके धनका तो शहदकी मक्खियोंके छत्तेकी तरह नाशही होताहै इस लिये दान करो ! दान करो !! दान करो !!!

धन गाड रखनेसे जितना होगा उतनाही रहैगा, सूदपर देनेसे कई वर्षोंमें थोडा बहुत बढेगा परंतु धर्ममें खर्च करनेसे तो एकका अनंत

गुना फल होगा. इतनाही नहीं परंतु तुरंतही हृदयकी शांति होगी और जो नहीं खर्च करोगे तो मरते समय धनका ढेर छोडकर जाते खजाना भरा होतेहुएभी ईश्वरके पास खाली हाथ जाते न सहन होसकने योग्य वेदनाही होगी. इस लिये भाइयो! धन खर्च करके धर्म प्राप्त करो! धर्म प्राप्त करो!

राग विहार।

बेर बेर नहिं आवै अवसर, बेर बेर नहिं आवै। जो जाने तो करले भलाई, जन्म जन्म सुख पावै ॥टेक॥ धन जोवन अंजलिका पानी, जात देर नहिं लावै। तन छूटे धन कौन कामको, काहेको कृपण कहावै ॥ अवसर० ॥ १ ॥ जाको मन बडो कृष्णसनेहको, झुंठ कबहुं नहिं आवै। सूरदासकी येही बिनती, हरखि निरखि गुण गावै ॥ अवसर० ॥ २ ॥

२२१ विश्वास रक्खो कि, प्रभु जो करता है सो सब ठीकही है.

दो मित्र एक गाडीमें बैठकर जारहेथे. दोमेंसे एक तो गाडी हाँकताथा और दूसरा भीतर बैठाथा. हाँकनेवाला अपनी इच्छाके अनुसार गाडीको इधर उधर गलीकूंचीमें दौडाता जाताथा. इस तरह विना हिसाब किताब दौडती हुई गाडीको देखकर भीतर बैठे हुए मित्रने कहा "तू ऐसी तेजीसे गाडी दौडाता है और अपनी इच्छाके अनुसार टेढी सीधी हाँकता है, इससे मुझे डर लगता है."

गाडी हांकनेवालेने कहा "जो तुझको मेरा विश्वास नहीं और डरताहो तो गाडी अपने हाथसे हांकले!"

भीतरवालेने कहा "मुझे गाडी हांकना नहीं आता."

तब हांकनेवालेने कहा " या तो तू गाडी हांकले और नहीं तो मुझपर विश्वास रख ! गाडी हांकना तू जानता नहीं और मुझपर विश्वास रखता नहीं तब काम कैसे चलसकैगा ? "

अंतमें उसको उस हांकनेवाले पर विश्वास करके चुपचाप भीतर वैठ रहनापडा तबही सुख मिला.

वे दोनों मित्र जीव और ईश्वर हैं. गाडीमें वैठनेवाला जीव है और हांकनेवाला ईश्वर है. जीव ईश्वरके भरोसेपर रहै तबही सुखी होसकताहै, क्योंकि जीवको गाडी हाकना नहीं आता. तात्पर्य यह कि, हम इस वातको नहीं जानते कि, हमारा कल्याण किसमें है ? परंतु ईश्वर इस वातको अच्छी तरह जानताहै. इस लिये हमको सर्वात्मभावसे ईश्वरके शरणागत होना चाहिये और अखंडितरूपसे प्रभुके विश्वासमें रहना चाहिये, तवही इस लोक और परलोकके सुख प्राप्त होसकते हैं. भाइयो ! प्रभुको तुम्हारी गाडी हांकने दो ! अर्थात् भगवदिच्छाके अधीन हो और विश्वासका फल भोगो ! फल भोगो !

दोहा—मेरो चींत्यो होत नहिं, क्यों करों मैं चिंत ।
हरको चींत्यो हर करै, तापर रहुँ निश्चिंत ॥

२२२ राज नदीके बीचमें जल मरा ! इस बातका मर्म अनुभवी बिना दूसरा कौन बतावै ?

यह एक समझने योग्य बात है कि, अनुभवी लोग वातका मर्म कैसे समझ जाते हैं. एक उदाहरण है कि:—

एक संगतराश कारीगर कमाई करनेको विदेश गया. वहां अकस्मात् उसकी मृत्यु होगयी तब उसके किसी परिचितने उसके पुत्रके नाम लिखकर पत्र भेजा उसमें लिखाथा " तेरा बाप नदीके बीचमें जलकर मरगया. "

पत्र पढकर पुत्रको वडा आश्चर्य हुआ और दूसरे सुननेवालोंकोभी वडा विस्मय हुआ कि, नदीके बीचमें डुबकर मरना तो बन-

सकता है परंतु जलकर मरजाना कैसे होसकताहै ? बहुतसे आदमी वहांपर इकट्ठे होगये परंतु इस वातका ठीक २ अर्थ कोईभी नहीं बतासका. संयोगवश उसी समय एक दूसरा राज आपहुँचा, उसनें उस पत्रको पढकर कहा " ठीक तो है ? कागजमें लिखा है सो सत्य है ! "

लोगोंने पूँछा " यह कैसे बनसकताहै ? "

राजने उत्तर दिया " वह मकान बनानेका काम करनेवालाहै इससे नावमें भरकर कहींसे विना बुझाया चूना लाताहोगा सो पानी लगनेसे उसमें गरमी पैदा होकर आग भडक उठी और वह नदीके वीचमें नावका नावहीपर जलगया ! इसमें आश्चर्यकी वात क्या है ? "

यह सुनकर नदीके बीचमें जल मरनेकी वात सबको सत्य प्रतीत होगई. जो बात थोडी देर पहले झूंठी मानली गईथी वही वात अनुभवी मनुष्य गुरु मिलजानेसे जरासी देरमें सच्ची प्रमाणित होगई. गुरुमहिमा ऐसीही है. छोटमज्ञानीका बनाया पद है:—

४१ पद ।

सो गुरु बिन मर्म न जानैं कोय, पूरण ब्रह्म सच्चिदानँदको जा विधि अनुभव होय॥ टेक॥ भरयो भंडार औषधिन भारी बैचे पँसारी सोय। बैद बिना वाको मर्म न जानै कौन रोगकी कोय॥ १ ॥ रैन अँधेरी वस्तु परी ठिग जन नहीं जानै कोय । भानु उद्योत होत सहजहिमें जानपरत सब कोय ॥ २ ॥ रामजीवन जीवनफल चाहै तो सतगुरु संग जोय । जाकी कृपा होत अंतरमें आनंद घन ले जोय ॥ ३ ॥

भगवदिच्छाके अधीन होकर और किसीभी प्रकारका बडबडाहट किये बिना शांतिसे दुःखोंको भोगलै तो ईश्वर उन दुःखोंको दूरकर

देता है. दुःखोंके वीचमेंही कुछ सुख देदेता है और दूसरे नये दुःख नहीं आनेदेता. इस लिये जैसे वनै वैसे ईश्वरकी दयामें जाना चाहिये प्रभुकी दयामें जानेका सहज उपाय यह है कि, जैसे ईश्वर रक्खे वैसे रहना, परंतु इस तरहपर रहना विश्वाससेही वनसकता है. विश्वास न हो तो इस तरह रहना वन नहीं सकता. भाइयो ! भगवान्के आसरेका वल रखना सीखो ! तो प्रभु तुमपर दया किये विना रहैगाही नहीं !

२२३ हमारे काम कैसेही अच्छे क्यों न हों परंतु ईश्वरके कामोंके आगे तो किसीभी गिनतीमें नहीं, इससे इन कामोंका झूंठा अभिमान मत करो !

आजकल कलें इतनी वढगयी हैं कि, सव काम कलोंहीसे होने लगे हैं और इन कलोंहीकी कृपासे काम ऐसे सफाईदार होते हैं कि, पहलेकी वनी वस्तुओंसे इनका मिलान किया जाय तो जमीन आसमानकासा सफाईमें अंतर पाया जाता है. इतना होनेपरभी प्रभुके कामोंके आगे वे किसीभी गिनतीमें नहीं हैं तुम सुईको कैसीही चिकनी वनाओ परंतु जो दूरवीनसे देखोगे तो उसमें सैंकडों गढे मालूम होंगे, वढियासे वढिया उस्तरेकी धारको सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे देखोगे तो उसमें अनेक खांचे दीखेंगे और वढियासे वढिया रँगेहुए कपडेको ऐसे यंत्रसे देखोगे तो उसमें कमती वढती रंग दीखैगा, परंतु जो तुम एक मक्खीको या एक चिऊंटीको सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे देखोगो तो उसमें कहींभी वैसी गडवड या असमानता नहीं दीखेगी और न एक पतंगमें ऐसा कमती वढती रंग देखनेमें आवेगा, क्योंकि ये कुदरतके अर्थात् दैवी काम हैं. हमारे काम सादी आँखोंसे हमें अच्छे दीखते हैं परंतु दूरवीनसे जैसे उसकी कसर या दोष देखनेमें आजाता है वैसे ही हमारे काम ईश्वरके यहाँ दोषवाले दीखते हैं, कारण हमारे दूरवीन और सूक्ष्मदर्शक यंत्रकी अपेक्षा प्रभुकी शक्तिमें उन कामोंको जानलेनेका अनंत गुना वल है. इससे हमको अपने किसीभी कामका अभिमान नहीं करना चाहिये.

ईश्वरके काम हमारी सादी नजरमें छोटे जान पडते हैं परंतु दूरबीनसे देखनेमें अद्भुत चमत्कारवाले जानपडते हैं. अब विचारनेकी बात है कि जब सादे काचके दूरबीनसेही ऐसे जान पडते हैं तब भक्तिरूपी दूरबीनसे समर्थ ईश्वरके अद्भुत कृतिवाले स्वाभाविक कर्म कितने उत्तम दीखेंगे और उनके आगे हमारे कर्म कितने हलके दीखेंगे सो तो खयाल करो ! भक्तोंमें और व्यावहारिक लोगोंमें जो भेद है सो यही है कि, भक्त लोग अपने कामोंको छोटे समझते हैं अर्थात् ईश्वरके कामोंका महत्त्व समझते हैं और व्यवहारिक लोग अपने कामोंको बहुत तव समझते हैं अर्थात् प्रभुके कामकी सच्ची कीमत नहीं समझते. भाइयो ! अपने कामोंका अभिमान न करो परंतु भक्तिके दूरबीनसे अपने कामोंको और ईश्वरीय शक्तिको देखना सीखो ! भक्तिका दूरबीन ऐसा अलौकिक है कि वह ऊपर लिखे अनुसार चलनेसे तुम्हारे अभिमानको तोड डालैगा और प्रभुकी बडाई दिखाकर तुमको प्रभुके मार्गमें जा धरैगा. इसलिये भक्तिरूपी दूरबीनको पकडो !

२२४ सोनेकी खान हमारे घरमें है, परंतु हम उसे जानते नहीं. वह खान हमारा धर्मशास्त्रही है.

अमेरिकाकी सोनेकी खानकी जबतक लोगोंको खबर नहीं पडीथी, तबतक लोग उसमेंसे मट्टी लेकर घर बनातेथे, सडक बनातेथे और पुल बनातेथे, परंतु पीछे जब मालूम हुआ कि, इस मट्टीमें सोना मिलाहुआ है तब उनको बडा आश्चर्य हुआ. आश्चर्य होनेके साथ उनको खेद हुआ और पश्चात्तापभी हुआ कि हाय ! हाय ! सोनेकी मट्टी हमने घर बनानेमें लगादी !

अमेरिकाकी सोनेकी खानोंसे भी लाख गुनी कीमतवाले हमारे शास्त्र हमारेही घरमें धरे हैं परंतु हम उनकी कीमत नहीं समझते और उनको अपने काममें नहीं लेते. वेद, उपनिषद्, स्मृति, गीता, भागवत, महाभारत, पुराण, रामायण आदि ग्रंथ आज घर घरमें

रक्खे हैं परंतु खेद है कि वे केवल शोभाहीके लिये काचकी आल-मारियोंमें बंद कर रक्खे जाते हैं अथवा एक प्रकारकी वेगार टाल-नेके लिये कहीं कोने कोचरोंमें डाल रक्खे जाते हैं. हम अपने जीव-नमें उनसे कुछभी लाभ नहीं उठाते. उनको खानेका लाभ तो केवल कीडेही उठाते हैं. राम ! राम ! ! राम ! ! !

भाइयो ! याद रक्खो कि, भगवद्गीता, उपनिषद् आदि हमारे धर्मशास्त्र पारसकी खान समान हैं क्योंकि उनमें प्रभुकी महिमाका वर्णन है, और वे खानें हैंभी हमारे घरमेंही, परंतु तवभी हम उनका उपयोग न करैं तो उनमेंसे धर्मके तत्त्व न जानैं, उनमेंसे प्रभुका नाम न सीखैं तो समय आनेपर पश्चात्तापही होगा.

अमेरिकावालोंने तो विना जाने सोनेकी मट्टीको मकान बनानेके काममें लियाथा परंतु हम जानबूझकर वे पारस कीडोंको खिलाते हैं इस पापकी कैसे क्षमा मिलैगी ? इस पापका दंड हमको क्या मिलैगा ? इसका विचार तो करो ! इस महापापका हमको दंड मिले विना नहीं रहैगा इस लिये भाइयो ! अवभी समय है तवतक चेत जाओ ! चेत जाओ ! !

२२५ भरेहुए घडेमें जैसे दूसरी वस्तु नहीं समास-कती, वैसेही पापियोंके हृदयमें पाप भरा होनेसे उसमें ईश्वरीय ज्ञान नहीं आसकता.

भरे हुए घडेमें जैसे दूसरी चीज नहीं समाती वैसेही पापियोंके हृदयमें पाप भरा रहनेसे उसमें ज्ञान नहीं आसकता. रोगीको जैसे स्वादिष्ठ वस्तु भी अच्छी नहीं लगती और मिठाईभीं जैसे कडवी लगती है वैसेही जिसको पाप करनेका रोग वढा हुआ होता है उसको ज्ञान अच्छा नहीं लगता. अंधेके लिये जैसे दर्पण किसी कामका नहीं वैसेही पापियोंके लिये ज्ञानभी किसी कामका नहीं, क्योंकि जैसे आँख विना दर्पणमें पडनेवाला प्रतिबिंब नहीं

दीखसकता वैसेही धर्म विना ज्ञानभी समझमें नहीं आसकता, इसीसे पापियोंके हृदयमें ईश्वरीय ज्ञानका गहरा असर नहीं होता, भगवान्ने गीतामें कहाहैः—

"येषां त्वंतगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वंद्वमोहनिर्मुक्ता भजंते मां दृढव्रताः ॥"
गी० अ० ७. श्लो० २८.

अर्थ—धर्मके भले काम करनेसे जिन मनुष्योंके पाप कट गये हैं वे सुख दुःखसे छूटकर दृढ निश्चयपूर्वक मुझे भजते हैं.

प्रभुको भजना प्रभुको पहँचानना और प्रभुमें तन्मय होनाही ज्ञान है. यह ईश्वरीय ज्ञान पाप छोडदेनेसे मिलताहै और भले काम करनेसे पाप जलते हैं. इस लिये पापका नाश करनेके लिये जैसे वनै वैसे अधिक २ धर्मके कर्म करते जाना चाहिये.

भाइयो ! पापकी भयंकरता तो देखो कि, पवित्र ज्ञानका असरभी पापियोंके हृदयमें नहीं पहुँचसकता तव और तो कौनसी चीज असर करैगी ? मनुष्यजातिको सुधारनेके लिये संसारमें उत्तमसे उत्तम और पवित्रसेभी पवित्र वस्तु ज्ञान है. यह ज्ञानभी पापकी कठोरताके आगे कुछ देरके लिये हार खाजाता है. देखो पापकी भयंकरता ? भाइयो ! जैसे वनै वैसे पापसे वचनेका उपाय करो ! जो पापसे वचनेमें जरा भी सुस्ती या देर की तो तुरंतही पापमें फँसजाओगे, और जो जराभी पापमें फँसे तो तुम्हारी सारी चतुराई चूल्हेमें पडजायगी और तुमको उलटाही उलटा मार्ग सूझ पडेगा इस लिये भाइयो ! खूब सँभाल रक्खो जिसमें कभी भूले चूकेभी पाप न हो !

२२६ बंदर जैसे हीरेकी कीमत नहीं समझते, वैसेही पापी ज्ञानकी कीमत नहीं समझसकते !

किसी बंदरके हाथमें कहींसे एक वढिया हीरा पडगया. उसे उसने मुँहमें रक्खा परंतु कुछ स्वाद न आया, मुँहमें फिराया परंतु

वह पिघला नहीं, और दांतोंसे चवाया परंतु वह टूटा नहीं तव तो क्रोधमें आकर वंदरने उसे मुँहसे निकालकर दूर फेंकदिया. यह देखकर एक कविने उस हीरेसे कहा " ऐ हीरा ! वंदरने तेरी कीमत न समझी इससे तू उदास मत हो ! उसने पत्थरसे फोडकर तेरा चूरा न करडाला सोही तेरा वडा भाग्य समझ ! "

इसी तरह पापीजन ज्ञानकी कीमत न समझें तो क्या ज्ञानकी कीमत कम होसकती है ? कभी नहीं. वंदर हीरेको फैंकदे तो क्या हीराकी कीमत कम हो सकती है ? कभी नहीं ! वैसेही पापीजन अपने हृदयमें भरेहुए पापके कारण ज्ञानको न लेसकें तो इससे ज्ञानकी शक्ति कम नहीं होसकती किंतु पापियोंकी नालायकी प्रकट होती है. पवित्र मनुष्यको प्रभुके प्रियभक्तोंको ज्ञान अच्छा लगताहै परंतु नीचलोगोंको ज्ञान अच्छा नहीं लगता. कहा है कि:—

दोहा—जाको जामें स्वाद नहिं, सो ताको न सुहाय ।
दोष लगाके दाखको, काक नीमफल खाय ॥

इस लिये भाइयो ! पापके लिये पवित्र ज्ञानको मत छोडदो ! ज्ञानको मत दवादो ! और ज्ञानका उलटा उपयोग मत करो ! परंतु अपने पवित्र आत्माके लिये और अपने समर्थ प्रभुके लिये पाप छोडदेनेमें ज्ञानका उपयोग करो !

४२ पद ।

जाने भज्यौ नहिं भगवान, सो नर जीवतहू शव जान ॥ टेक ॥ पेट भरिबे पापकरि वहु भइ न मनमें ग्लानि । पुण्य पाडोसियनको हू वरजि भो सो महान ॥ १ ॥ करत लोकाचार इत उत अस्त होवे भान । निंदरिया विषयनके संगहु वीते रैन महान ॥ २ ॥ रामजीवन जीवनको फल लह्यो न वढ्यो अभिमान । एक दिन सव छार होवै जावैं जव शमशान ॥ ३ ॥

२२७ ईश्वरके बडे दंडकी पापियोंको खबर नहीं है, इससे वे पाप करते हैं.

छोटे लडके छतपर खेलनेमें जब दौडते हैं तो यह नहीं जानते कि, हम गिरजायँगे तो हाथ पैर टूटजायँगे. वैसेही पापियोंकोभी खबर नहीं रहती कि, पापका कितना भारी दंड मिलैगा. जो लोगोंको पापका दंड मिलनेकी याद रहे तो वे इतने भारी पाप कदापि न करें.

पापकी खराबी, पापियोंकी नीचता, नरककी भयंकरता और कालके भी काल महान् ईश्वरकी कल्याणकारी आज्ञाओंको भंग करनेसे होनेवाला बुरा परिणाम लोग अच्छी तरह नहीं जानते इसका बडा दुःख है. जो मनुष्योंके हृदयमें पापकी भयंकरता और नरककी हजारों प्रलयकालकीसी उग्र अग्निका खयाल बराबर बनारहै तो पापका नाम सुनतेही कपकपी आये विना न रहै और पापका मनमें विचार आतेही भय लगे विना न रहै, परंतु छतपर बेफिकर दौडते हुए बालकोंकी तरह मनुष्यभी अपनी स्वार्थतामें पापके फलका नरककी भयंकर वेदनाका विचार नहीं रखते. इसीसे मनुष्य पापमें फँसजाते हैं. इसलिये भाइयो ! अपने जरासे स्वार्थका नहीं, परंतु पापके भयंकर दंडका विचार करो ! नरककी प्रज्वलित अग्निका विचार करो ! और पवित्र पिता समर्थ परमेश्वरकी आज्ञाका अनादर होनेका खयाल करो ! तथा हमारे शिरपर सदा काल फिररहाहै उसका ख्याल करो ! तो पापसे बचसकोगे !

कवित्त ।

तारो पतित जानके, सुधारो बिरद आपके,
काढो भुजा तानके, कहां देर डारी है ।
सुदामा यार तारचो है, प्रह्लादतैं उगारचो है,
द्रौपदीकी लाज राखी, सभा देख सारी है ॥

गजने जो ध्यायो, प्रभु वैनतेय छोडि धायो,
ब्रजको बचायो, ताते नाम गिरिधारी है ।
दास तो पुकारै, प्रभु काटिये कष्ट कोटि भारे,
अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी है ॥ १ ॥

२२८ अपने धर्मका ज्ञान हो परंतु आचरण अच्छे न हों वे गुरु अंधेके हाथमें दीपक समान हैं.

मनुष्यमात्रको गुरुकी जरूरत है, उत्तमसे उत्तम गुरुकी जरूरत है, परंतु वैसा गुरु न मिले तो साधारण गुरुकीही जरूरत है. साधारण गुरुभी शिष्यके तो कामकाही है. कहावत प्रसिद्ध है कि " न होनेसे काना मामाही अच्छा है. " इसी तरह बिलकुल गुरु न होनेसे तो साधारण गुरुही अच्छा है, वे अपने उपदेशके अनुसार न चलते हों तबभी शिष्योंके लिये तो उनका उपदेश बडे कामका है. इसपर एक दृष्टान्त है:—

एक अंधा आदमी हाथमें लालटैन लिये किसी अँधेरी गलीमें होकर जारहाथा. उससे किसीने पूँछा "सूरदास! यह लालटैन तेरे किस कामका है? तू तो इससेभी नहीं देखसकता!"

अंधेने जवाब दिया " बाबा! यह मेरे कामका तो नहीं है परंतु दूसरे आंखवालोंके कामका तो है? जो मेरे पास लालटैन न हो तो दूसरे आदमी मुझसे टकराजांय!"

इसी तरह आजकलके वे कलियुगी गुरुभी, जो कहते हैं ठीक और चलते हैं गैर ठीक, उस अंधेके समान हैं, परंतु उनका उपदेश उस लालटैनके समान है. उस लालटैनका प्रकाश उस अंधेके कामका नहीं होता परंतु दूसरे आंखवालोंके कामका होताहै, वैसेही अंतःकरणमें विना भीगे और ऊपरसे मिथ्याचार करनेवाले हमारे कितनेही साधु संन्यासी और दूसरे धर्मगुरुओंके उपदेश उनको सुधारनेमें तो काम नहीं आते, परंतु वे विश्वासु हरिजनोंके बहुत कामके हैं. भाइयो!

जो गुरु निर्बल हों तबभी हमको हमारी भलाईके लिये उनको निवाहलेना चाहिये, क्योंकि वे चाहे अंधे हों परंतु हम जो आंखवाले हैं तो उनके हाथका लालटेन हमको प्रकाश दिये विना नहीं रहेगा. इस लिये जो गुरु अंधे हों और उनका अंधापन न छूट सकने योग्य हो तबभी हमको गुरु विना नहीं चलसकता. इससे हमको आँखवाले होजानेकी जरूरत है.

४३ पद।

तैं कहा करयो गीता गाय, तैं कहा करयो गीता गाय ॥ टेक ॥ तजि प्रपंच न गोविंदके गुन, रटे नहिं मन लाय ॥ १ ॥ पाय संपति दान न कीनो, भयो न कोउको सहाय ॥ २ ॥ संत संग निमिषहु नहिं कीनो, रह्यो कुसंग लुभाय ॥ ३ ॥ रामजीवन जीवनको फल यह, रहै गोविंद गाय ॥ ४ ॥

२२९ जीवनका कर्तव्य. देनेको टुकडा भला, लेनेको हरिनाम!

जीवनके पवित्र कर्तव्यके लिये जुदे २ विद्वानों और जुदे २ साधुओंने जुदी २ रीतिसे जुदे २ रूपमें एकही एकही वात सैकडों और हजारों रीतिसे कही है. वहुतसे मनुष्य ऐसा मान लेते हैं कि, धर्मका बोझा ऐसा भारी है कि उठ नहीं सकता. वे लोग कहते हैं कि हमारे वापका वाप आजाय तवभी इतना किया नहीं जा सकता. उनको धर्म इतना कठिन जान पडताहै, इसका कारण यही है कि, वे धर्मके सूक्ष्मसे सूक्ष्म सूत्रकोभी नहीं जानते. महात्मा तुलसीदासजीने धर्मका सार कहा है किः—

दोहा—तुलसी या जग आयके, करलीजे दो काम।
देनेको टुकडा भला, लेनेको हरिनाम ॥

जीवनके कर्तव्योंका और धर्मकी हजारों तथा लाखों वातोंका सार यही है कि, वनसके उतनी गरीवको सहयता देना और प्रभुका

नाम भजना. महात्मा लोग कहते हैं कि, देनेके योग्य तो दान है और लेनेके योग्य केवल ईश्वरका नाम है. भर्तृहरिनेभी कहाहै कि, सव धर्मोंका सार यही है कि, किसीभी प्राणीको दुःख पहुँचा सो पाप है और दूसरोंकी भलाई करना सो पुण्य है. इसलिये भाइयो! लंवी लंवी और टेढी सीधी गलियोंमें न फँसकर केवल सारवस्तुको- तत्त्वको पहँचान लो! तत्त्वको पकडलो! वह तत्त्व यही है कि, अपने भाई वंधुओंकी सहायता करो और प्रभुका नामस्मरण करो!

दोहा--सवकी बातैं छोडके, दो बातें लिख ले।
कर साहवकी वंदगी, भूखेको कछु दे॥

२३० हमारी प्रार्थनाएँ सफल क्यों नहीं होती?

वहुत गरज पडती है तव हम वहुत जरूरतके समय ईश्वरकी प्रार्थना करने लगते हैं और कुछ न कुछ माँगनेलगते हैं. स्त्री, पुत्र, धन, मान, विजय, विद्या, वशीकरण आदि वस्तुओंमेंसे एक न एककी तो हमारी माँग वनीही रहती है. कईवार इनमेंसे हमको एकभी वस्तु नहीं मिलती जिससे हम निराश होजाते हैं, परंतु निराश होना चाहिये नहीं, क्योंकि इस वातका कारण तो हम जानतेही नहीं हैं कि, हमारी प्राथना क्यों नहीं स्वीकार होती? जो हम इन कार- णोंको समझलें तो फिर हमको निराश न होना पडे और न हम ऐसी अयोग्य वस्तु मागैं. देखोः—

१ कईवार तो हमारी प्रार्थना केवल ऊपरी मनसे होती है, सच्चे अंतः- करणसे शुद्धमनसे नहीं होती. इससे वह ईश्वरतक नहीं पहुँचती.

२ कईवार हमारा माँगना विना जरूरतका तथा अयोग्य होता है. जो ईश्वर हमको हमारे वैसे माँगनेकेही अनुसार देदे तो उसमें हमारी वुराई हुए विना न रहे. इस लिये वह सर्वज्ञ प्रभु हमपर दया करके हमारी अयोग्य माँगको पूरा नहीं करता.

३ हमारे योग्य माँगनेके अनुसार ईश्वर हमको देनेको तैयार हो, उससे पहलेही हम प्रार्थना करना छोडदेते हैं और दूसरे विषयोंमें लगजाते हैं. इस तरहपर जब अपने कामकी हमही चिंता नहीं करते तब उसकी चिंता ईश्वर क्यों रक्खै ? ऐसे समयमें हमारी प्रार्थनाएँ आकाशहीमें लटकती रहजाती हैं. इस लिये जो अपनी प्रार्थनाएँ ईश्वरके दरबारमें स्वीकार करानी हों तो उनमें अंततक लगेही रहना. बीचबीचमें भक्तिको छोड नहीं देना चाहिये.

४ किसी २ समय हमारी माँग बहुतही छोटी होती है अर्थात् हलकी वस्तुओंकी होती है, और परमकृपालु परमेश्वरकी इच्छा हमको बहुतसा देनेकी होती है इससे वह हमारी छोटीसी माँगको स्वीकार नहीं करता.

हमारी प्रार्थनाएँ स्वीकार न होनेके ऐसे २ अनेक कारण हैं इस लिये ऐसी २ माँग रद्द होजानेसे हरिजनोंको उदास नहीं होना चाहिये. सच्चे भक्त वेही हैं जो अपने स्वार्थके लिये ईश्वरसे कुछभी नहीं मांगते, परंतु भगवदिच्छाके अधीन होकर रहते हैं और निष्काम भक्ति करते हैं. महान् ईश्वरसे जरा जरासी चीजें माँगना मूर्खता है और यह नीचे दरजेकी भक्ति है. हम अच्छे धर्ममें रहकर भक्त बनकर ऐसी हलकी २ चीजोंके लिये ईश्वरको श्रम दें सो कितनी बुरी बात है ? अपनी बनते हम कीडी मकोडीतकको दुःख देना नहीं चाहते और अपनी स्त्री पुत्र आदिकोभी दुःख नहीं होने देते यहांतक कि कितनेही मनुष्य ऐसे जो अपनी स्त्रीको घरमें झाडू लगाते देखलें तो उसके हाथमेंसे झाडू छीनकर खुद आप अपने हाथसे झाडू लगाने लगते हैं और स्त्रीको बिठला रखते. अब देखना चाहिये कि, घरधंधा करना जिसका नित्यका काम है उसकोभी जो आदमी करनेका श्रम नहीं देते, वे अपने हलकेसे स्वार्थके लिये सबसे बडेमें बडे ईश्वरको वारवार श्रम देनेको तैयार होते हैं सो क्या थोडे दुःखकी बात है ?

भाइयो ! प्रभु सर्वव्यापी है ? हमारे मांगे विनाभी वह हमारी जरूरतोंको समझता है. केवल समझताही नहीं है, किंतु उनको पूरा कर-

नेके लिये भी वह सर्व शक्तिमान् विश्वंभर समर्थ है. इसलिये हमको मोहक अच्छी दीखनेवाली वस्तुओंको मांगकर ईश्वरको श्रम नहीं देना चाहिये, परंतु निष्काम भक्ति करना चाहिये. यही संसारके महान् भक्तोंका सिद्धांत है.

२३१ बच्चे जो जो मांगते हैं वे वे सबही पिता उनको नहीं दे देता, परंतु उचित होता है सो देता है, वैसेही ईश्वर हमारा कल्याण होनेवालीही वस्तुएँ देता है.

एक बालक रोरहाथा उससे किसी भक्तने रोनेका कारण पूँछा लडकेने उत्तर दिया "मैं जो कुछ मांगताहूं वह मेरा पिता मुझे नहीं देता."

भक्तने पूँछा "तू क्या मांगता है ?"

बालकने कहा "चाकू"

वहींपर एक दूसरी छोकरी बैठीथी उसने कहा "मैं दियासलाईकी पेटी मांगती हूं परंतु माता मुझे देती नहीं."

तीसरे बालकने कहा "मैं फटाके मांगताहूं परंतु बाप मुझे नहीं देता."

चौथे बालकने कहा "मैं इस कुत्तेके साथ खेलना चाहताहूं परंतु माता नहीं खेलने देती."

पांचवेंने कहा "सबक याद न होनेसे मुझको गुरुने मारा."

एक महोल्लेमें खेलते हुए पांच बालकोंकी यह बातें सुनकर भक्तने समझ लिया कि इसमें मातापिताका या गुरुका कुछभी दोष नहीं है, वे तो बालकोंके भलेके लिये उनकी माँगीहुई वस्तु नहीं देते हैं, परंतु बालक इस बातको नहीं समझते, इससे बुरा मानते और रोते हैं. इसी तरह हमकोभी अपनी प्रार्थनाओंके लिये समझना चाहिये, इतनाही नहीं परंतु उस बालकको गुरुने जैसे माराथा वैसेही हमपरभी कभी २ किसी बातपर ताडना होती है, वहभी हमको सुधारनेकेही लिये होतीहै

अथवा हमारी किसी भूलकाही वह परिणाम होता है. इस लिये हमारी प्रार्थनाएँ जो कभी निष्फल हो जाय तो भी निराश नहीं होना, परंतु अधिक २ उत्साहसे प्रेमपूर्वक भक्तिमें लगजाना चाहिये.

भाइयो ! याद रखना कि, हमारा माँगना प्रायः अयोग्यही होता है, क्योंकि हम हमारे अहंभावमें लिपटे रहते हैं इस लिये ऐसी तुच्छ और अयोग्य माँगकी निष्फलतासे ईश्वरके लिये बुरे विचार मत करो ! और तुममें जो कुछ थोडा बहुत विश्वास है उसको जाने मत दो !

कोई बालक कुएपर खेलना चाहे, अथवा साँपको पकडनेका हठ करे तो बाप उसको करने थोडाही देगा ? पेट अच्छी तरह भरा होनेपरभी जो बालक फिर खाना मांगे तो क्या उसकी भली माता बारबार खाना देकर अपने बच्चेको बीमार होने देगी ? किसी बच्चेको कोई बीमारी हो उसे मिटानेके लिये माता दवा पिलावे परंतु दवा कडवी होनेसे बालक रोवे तबभी उसकी परवाह न करके माता उसको दवा पिलादे तो क्या वह बुरा करती है ? यदि कोई बालक केवल अपने खेलनेके लिये चंद्रमा लेना चाहे और पिता उसे चांद न दे सकै तो इसमें पिताका क्या दोष ? हम अज्ञानी और अशक्त हैं तबभी अपने बच्चोंकी इतनी खबरदारी और चिंता रखते हैं तब सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान् ईश्वर अपने भक्तोंके लिये कितनी चिंता रखता होगा ? इसका विचार तो करो ! महान् ईश्वरकी असीम कृपाको जो हम अच्छी तरह समझलें तो फिर हमको उससे माँगनेकी कोई चीजही बाकी न रहै. ईश्वरकी दया, ईश्वरका बडापन और ईश्वरका सर्व शक्तिमान् होना हम समझते नहीं हैं इसीसे हल्की २ चीजोंको ईश्वरसे माँगकर हम उसपर अपना अविश्वास दिखलाते हैं.

जसे बालकको साँपकी दुम पकडना अयोग्य नहीं लगता, वैसेंही हमकोभी ईश्वरसे बारबार माँगना अयोग्य नहीं लगता, परंतु उसमेंही अपना भला मानकर अपने भविष्यत्को ईश्वरकी इच्छापर छोड सच्चे भक्तोंको कृपाभिलाषी ही बनना चाहिये.

२३२ भले आदमीसे माँगना खाली नहीं जाता, तब ईश्वरसे सच्चे दिलसे कीहुई प्रार्थना कैसे खाली जायगी ?

एक गरीब मनुष्यने किसी रास्ते चलते मनुष्यसे नम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि एक पाई दीजिये. उसको उसपर दया आगई इससे उसने आठ आने देदिये. भिखारीने कहा " महाराज ! मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं. आप पैसा हो तो दीजिये ! "

इतना कहकर वह आठ आनी उसको पीछी देने लगा. तब उस उदार मनुष्यने कहा " भाई ! हम अपने पास पाई या पैसा नहीं रखते हम तो रुपये और रेजगारीही पास रखते हैं और जब देना होता है तो रुपया रेजगारीही देते हैं, पाई पैसेका देनाही क्या ? तेरा तो इतनेहीसे संतोष होगया परंतु इतनासा देनेमें हमारी बडाई क्या ? "

भाइयो ! साधारण मनुष्यही जब ऐसे विचारवाले और ऐसे उदार होते हैं तब ईश्वर कितनी शुभेच्छा और कितनी उदारता रखता होगा ? इसका विचार तो करो ! लोग कहते हैं कि, " अजी हम भक्ति तो करते हैं परंतु कुछ लाभ नहीं होता ! "

भाइयो ! लाभ न होना तो तुम कहते हो परंतु कभी अस्पतालमें जाकर तो देखो कि कितने आदमी कैसे २ भयंकर रोगसे दुःखित होकर पडे हैं और तुम कैसे अच्छे भले हो ! तुमको दीखता है कि, दूकानमें अभी वृद्धि नहीं हुई परंतु उसके बदलेमें घरमें वृद्धि होगई उसे नहीं देखते ? तुमको दीखता है कि, प्रार्थना करनेपरभी हमको बच्चे नहीं होते परंतु हैजा, प्लेग आदि भयंकर रोगोंसे तुम्हारे देखते २ सैकडों हजारों आदमी मरगये और तुम अभी मौज उठाते बैठे हो सो नहीं देखते ? तुम कहतेहो कि, हम बीमारीसे अच्छे नहीं होते परंतु इस बीमारीकेही कारण तुम अनेक प्रकारके पापमेंसे बचते हो और कुछ २ सुधरतेभी जाते हो सो तो देखो ! तुम कहते हो कि हमको मान पान और खिताब नहीं मिलते परंतु लाखों अकाल पीडितोंकी ओर तो देखो ! उनकी अपेक्षा तुमको प्रभुने कैसा आनंद

देरक्खा है सो तो विचारो ! तुम कहतेहो कि, ईश्वर हमको कुछ देता नहीं, जो दे तो हम औरोंको वहुत कुछ दिया करें परंतु यह तो देखो कि, वह जो तुमको अधिक नहीं देता तो तुमसे कुछ लेताभी तो नहीं है, क्या यह उसकी थोडी कृपा है ? अपने कर्मोंकी ओर देखो और तव ईश्वरकी दयाकी ओर देखो. हम तो पापमें डूवेपडे हैं तवभी वह हमपर इतनी कृपा करता है सो क्या कम है ?

भाइयो ! हमारी माँग वहुत छोटी होती है परंतु उसकी उदारता वहुत वडी होती है इस लिये जो वह हमारे माँगनेके अनुसार न दे और उसके वदलेमें कोई वडी कृपा करदे तो उस भेदको हम कहाँ विचारते हैं ? हमारा जो समय निकलता है और हम जो अनेक प्रकारके सुख भोगते हैं यह सव उस समर्थ ईश्वरकी दयाही है, इसमें हमारा कोई हक नहीं है, यह तो केवल उसकी कृपाही है, इस लिये मनुष्यको सदा अपनी स्थितिमेंही संतोष रखना चाहिये, और यह समझकर कि ईश्वरने हमको जो कुछ दिया है वह हमारी योग्यतासे अधिक है, सदा ईश्वरकी इच्छाकेही अधीन रहना चाहिये. हमारा उचित माँगना कभी खाली नहीं जाता, किसी न किसी रूपमें उसका फल मिलही जाता है इससे हमको सदा ईश्वरभक्तिमें आगेही आगे वढते जाना चाहिये और शनैः२ निष्काम भक्तिसे ईश्वरकी इच्छाके अधीन होना सीखना चाहिये, तथा कहना चाहिये कि:—

राग कानडा ।

मैं भरोसे अपने रामके, मैं भरोसे अपने रामके ॥ टेक ॥ और न है कछु कामके, मैं भरोसे अपने रामके ॥ मैं भरोसे० ॥ १ ॥ जो माँगै सो देत पदारथ, वारी जाऊं उस नामपे ॥ मैं भरोसे० ॥ २ ॥ दोऊ अक्षर हैं कुल तारक, अंत देत सुख धामके ॥ मैं भरोसे० ॥ ३ ॥ तुलसीदास प्रभु नाम दयाघन, और देव सव नामके ॥ मैं भरोसे० ॥ ४ ॥

२३३ ताला खोलनेके लिये जैसे चावीवालेकी जरूरत है वैसेही हमारे अंतःकरणका ताला खोलनेको सद्गुरुकी जरूरत है.

हमारी चावी खोगयी हो अथवा हमको एक नया ताला खोलना हो परंतु उसकी चावी हमारे पास न हो तो हमको उदास होकर न बैठ रहना चाहिये, क्योंकि गांवमें चावीवालेभी बहुत हैं और उनके पास चावियाँभी कई प्रकारकी हैं. जो हम उस चावीवालेको ढूँढ लावै तो वह हमको कामके लायक चावी देसकताहै. चावीवालेको ढूँढनेके लियेभी हमको चीन, जापान अथवा अमेरिका नहीं जानापडता, जहां हम घरसे बाहर निकले कि,चावीवाला गली गलीमें फिरताहुआ अथवा अपनी दूकानपर बैठा हुआ मिला. दूसरोंके ताले खोल देनाही उनका धंधा है परंतु बुलाना तो एकबार तुमकोही पडेगा. घरमें बैठे २ ही जो तुम कहते रहो कि, ताला खुलता नहीं, ताला खुलता नहीं तो क्या ताला आपहीआप खुलजायगा ? उसमें तो चावीवालेकी मदद लियेही काम चलैगा. उसमेंभी जो कोई अटपटा या नई सूरतका ताला होगा तो वह साधारण चावीवालेसेभी नहीं खुलैगा. उस समय अधिक चतुर चावीवालेको बुलानेकी जरूरत होगी. हमारे लोहे या पीतलके साधारण ताले खोलनेके लियेही जब इतनी खटपट करनेकी जरूरत पडती है और चावीवालेका काम पडता है तब हमारे अंतःकरणका ताला खोलनेके लिये और स्वर्गका ताला खोलनेके लिये कैसे होशियार चावीवालेकी जरूरत पडैगी सो तो विचारो ! ऐसे सच्चे ताले खोलनेके लिये सद्गुरुकी जरूरत है. अच्छी २ खूबसूरत चांदीकी चावियोंके गुच्छे तो हमारी बहुतसी सेठानियोंके पास रहते हैं परंतु उन झूँठी चावियोंसे सच्चे ताले नहीं खुल सकते. वैसेही सच्चे गुरु बिना और पूरी लौ लगे बिना धर्म और स्वर्गके ताले नहीं खुलसकते. इस लिये हमको ऐसे सद्गुरुकी आवश्यकता है

जो हमारे अंतःकरणके तालेको खोल दे ऐसे महान् गुरु विना मोक्षका द्वार नहीं खुलसकता यह निश्चय है. इस लिये भाइयो! श्रीसद्गुरुकी शरण जाओ सद्गुरुकी शरण जाओ!

२३४ महात्मा दुःखका अर्थ क्या करते हैं? वे कहतेहैं कि, परमार्थके लिये दुःख उठानाभी देवपूजाके समान है.

तुम जानते हो महात्माओंके शब्दकोशमें दुःखका क्या अर्थ लिखाहै भगवदिच्छासे आया हुआ दुःख है सो प्रभुकी दया और हमारा कल्याण है. इसके लिये बडे २ संत वारंवार कहा करते हैं कि, बहुत दिनसे हमपर दुःख क्यों नहीं आया? प्रभु हमको भूलगया क्या? हमसे कुछ अपराध बनगया होगा नहीं तो ईश्वर हमको भूल नहीं जाता! दुःख विना प्रभुकी प्रीति कैसे मालूम हो? दुःख सहे विना जल्दी कल्याणभी तो नहीं होसकता! इसलिये भक्तोंपर भगवदिच्छासे आये हुए दुःख तो होनेही चाहिये! ऐसे दुःखसे दुःखित हो वह संत काहेका.?

भगवदिच्छासे आये हुए दुःखोंको शांतिपूर्वक सहन करना सो ईश्वरकी सेवा करनेके समान है और परमार्थके लिये दुःख सहना सो देवपूजाके समान है. इसलिये महात्माओंके शब्दकोशमें दुःखशब्दका अर्थ लिखा है 'प्रभुकी दया और हमारा कल्याण' दुःखका ऐसा अर्थ समझे पीछे दुःखसे उदास क्यों होना चाहिये? संतलोग दुःखको मांगते हैं अर्थात् तप करते हैं और हमलोग संसारी जीव ठहरे इससे दुःख नहीं मांगते अर्थात् तप नहीं करते, परंतु इतना धैर्य तो हमको रखना चाहिये जिसमें भगवदिच्छासे आयाहुआ दुःख तो हम शांतिसे सहन करसकें. जो हम इतना धैर्यभी न रखसकें तो हममें और पशुओंमें अंतर ही क्या? हममें धर्मका बल होनेका प्रमाण क्या? और ईश्वरके निमित्त हम अपनी इच्छाओंका कुछ भोग देसकते हैं वह दुःख सहे बिना दिखानेमें कैसे आवे? इसलिये

जिनको धर्म और ईश्वरकी परवाह हो उनको भगवदिच्छाके आयेहुए दुःख शांतिपूर्वक सहन करही लेने चाहिये.

२३५ साधु लोग ईश्वरसे किस प्रकारके दुःख मांगते हैं?

साधु संत ईश्वरसे दुःख मांगते हैं इसका क्या कारण ? वे किस प्रकारके दुःख मांगते हैं सो तुम जानते हो ? वे विना प्रयोजन उपवास करके दुःख पाना नहीं मांगते, वे बाहरी धूनी तापना नहीं मांगते, वे गांजा पीपीकर कलेजा जलाना नहीं मांगते ! वे विना प्रयोजन बरसातमें भीगना और श्मशानोंमें पडेरहना नहीं मांगते ! वे काशी करोत लेना नहीं मांगते ! वे यह नहीं मांगते कि बीमारीमें पडे रहने परभी इलाज न कराना ! वे उलटे शिर लटकना नहीं मांगते ! वे पास पैसा न होनेपरभी यज्ञ करना और सदाव्रत बांटना नहीं मांगते ! वे यह नहीं मांगते कि धर्मका अडंगा लगाकर औरोंको नाहक हैरान करना और वे यहभी नहीं माँगते कि, उजाड जंगलमें अँधेरी गुफामें पडा रहना, इस तरहके विना काम जानबूझकर खरीदेहुए दुःख वे नहीं माँगते, परंतु वे इस तरहके दुःख माँगते हैं जो परमार्थके लिये हों, जो धर्मके लिये हों, अपने गरीब भाई बंधुओंको मदद देनेको हों, अपने जीवनको अधिक उपयोगी बनानेको हों और ईश्वरके निमित्त हों इसपरसे हमको यह बात समझनी चाहिये कि, वे अपनी तुच्छ इच्छाओंकी तृप्तिके लिये अथवा अपनी मूर्खतासे भरे हुए हठके लिये दुःख नहीं मांगते परंतु परमार्थके लिये मांगते हैं. इस बातको अच्छी तरह समझलेनेसे हमको उनका दुःख मांगना अयोग्य नहीं जान पडैगा. संतोंकी तरह हमको ईश्वरसे दुःख मांगनेकी जरूरत नहीं है, परंतु प्रभुकी इच्छासे जो दुःख आन पडैं, उनको प्रभुका स्मरण करते २ शांतिपूर्वक सहलेना हमारा कर्तव्य है, इसीमें हमारी योग्यता है, यही हमारा धर्म है और इसीसे प्रभु प्रसन्न होते हैं.

२३६ दुःखमें ऐसा क्या गुण है ? जिसके लिये संतजन उसे प्रभुसे माँगते हैं.

संतजन कहते हैं कि, दुःख सहना देवपूजनके समान है. आज हमारे यह बात गले नहीं उतरती, परंतु जो गहरे पैठकर विचार करें तो उसमेंभी खूबी है. ईश्वरकी इच्छासे आन पडेहुए दुःख सहनेसे, तथा अपने धर्मका पालन करते दुःख सहनेसे ईश्वरकी सेवा क्योंकर होती है सो समझानेके लिये एक संतने कहा है कि, किसी दिन भिक्षा न मिलनेसे भूखा रहना पडे तबभी उसकी परवाह न करना, परंतु योंही समझना चाहिये कि, एक वार भूखे रहनेसे शरीरकी शुद्धि और विकारोंकी कमी होगी सोभी एक प्रकारका कल्याणहीका मार्ग है. आश्रममें कोई बीमार आपहुँचै और उसकी सेवा शुश्रूषा करनेमें रातभर जागना पडे तो उसकोभी प्रभुसेवाही समझना चाहिये. किसी गाँवसे हम आतेहों और मार्गमें हरिकथा होती हो वहाँ थोडी देर बैठजायँ परंतु सत्संगके रसमें लीन होजानेसे वहांसे उठनेमें देर होजाय और अपने मुकाम पर न पहुँचसकें तो मार्गमें रहजानेसे होनेवाला दुःखभी प्रभुसेवाही है, भिक्षा कम मिली हो और उसेभी खानेको बैठते समय कोई अतिथि आपहुँचै और उसे उसमेंसे टुकडा देना पडे तो उस भूखको सहलेनेका दुःखभी प्रभुसेवाही है. अपनी कम्मल किसी गरीबको देदेना और दूसरी कम्मल न मिलनेतक जाडेसे दुःख पानाभी प्रभुसेवा है. अपना कोई स्वार्थ न होनेपरभी मूर्ख लडकोंको पढानेमें शिरफोडी करना और उनके कोमल हृदयमें पवित्र धर्मका अंकुर जमानाभी प्रभुसेवा है. अपना समय और आनंद खोकरभी दूसरोंको उपदेश करनेका श्रम उठाना और लोगोंको उनके दोष समझाकर उनसे उन दोषोंका पश्चात्ताप कराकर उनके प्रभुके मार्गमें लगानाभी प्रभुसेवा है. वर्षोंके श्रमसे साधुसंतोंके पास रह सीखी हुई जडी बूटियोंको जंगलमेंसे खोदलानेका श्रम उठाकर उनका गरीबोंको मुफ्त फायदा पहुँचानाभी प्रभुसेवा है. और अपने धर्मके लिये प्राण

ध्यान करते, तीर्थ करते, शास्त्र पढते, ब्रह्मचर्य पालते और संसारकी अनेक मोहक वस्तुओंसे मनको खींचते तथा दुनियांदारीको छोडते विचित्र संयोगोंसे जो जो कष्ट हो उनको ईश्वरकी इच्छा जानकर शांतिपूर्वक सहन करलेना प्रभुसेवा है. इस तरहपर ईश्वरकी इच्छासे प्रसंगोपात्त आपडे हुए दुःखोंको शांतिसे सहन करलेना सोभी प्रभु-सेवा है और प्रभुसेवाकेही लिये संतजन ईश्वरसे दुःख माँगते हैं. उनको दुःखभी सुखरूप होजाते हैं. इस लिये दुःखसे कायर मत हो ! परंतु यही समझो कि ईश्वरकी इच्छासे आयेहुए दुःखोंको सहना देवपूजा करनेके समान है.

२३७. चाहे तो थोडी देर दुःख सहलो चाहे स्वर्ग छोडदो !

संतलोग दुःख क्यों मांगते हैं सो तुम जानतेहो ? वे कहते हैं कि पिता अपने प्यारे बच्चोंकोही जरूरतपर लात मारताहै सो इस लिये कि वे सुधरें कुछ द्वेषभावसे नहीं ! वैसेही ईश्वर हमको दुःख देनेके लिये दुःख नहीं देता परंतु हमको सुधारने और हमारा कल्याण करनेहीके लिये थोडे बहुत दुःख कभी २ देताहै. दूसरेके बच्चोंको कोई नहीं मारता और तो क्या परंतु पिताही अपने बिगडे बैठे पुत्रका आगे जाकर मारना छोडदेताहै और उसको उसकी इच्छापर चलने देताहै. वैसेही प्रभुभी अपने प्यारे भक्तोंकोही दुःख देताहै, क्योंकि उसको तो उनका कल्याण करना है और कल्याण होताहै पाप कटनेसे, परंतु पाप तबही कटते हैं जब दुःख सहन कियाजाय. इस तरह प्रभु अपने भक्तोंको दुःख देता है, परंतु बिगडे बैठे लोगोंसे और उसकी आज्ञासे विपरीत चलनेवाले लोगोंसे कुछभी नहीं कहता, क्योंकि साधारण थप्पड मारनेसे उनकी शुद्धि नहीं होगी, परंतु गहरे नरककी अग्निमें पडनेसे उनकी शुद्धि होनेवाली है. इसलिये भाइयो ! आजसे याद रखना कि जो बापकी थप्पड खालेता है अर्थात् ईश्वर-इच्छासे आयेहुए दुःखोंको शांतिपूर्वक सहलेताहै वही पिताका वारिस होताहै अर्थात् स्वर्ग पाताहै, और जो वह थप्पड नहीं खाता अर्थात्

दुःखको शांतिपूर्वक सहन नहीं करता वह वारिस नहीं हो सकता. अब तुम चाहो सो करो! या तो थप्पड खालो या वारिस होना छोड दो! अर्थात् या तो थोडा दुःख सहलो या स्वर्ग छोड दो! ईश्वरने तुमको बुद्धि और धर्म दोनों दिये हैं अब समझकर जो करना हो सो करो! जो अच्छा लगे सो करो!

२३८ विश्वास रक्खो कि, दुःखमेंभी ईश्वरका कुछ अच्छाही हेतु है!

लोग अनाजको मलते कूटते हैं सो किस लिये? क्या अनाजसे द्वेष होनेके कारण? नहीं भाई! अनाजने हमारे साथ कोई बुराई नहीं की और हम अनाजके वैरी नहीं हैं! अनाजके आधारसे हम अच्छे लगते हैं और हमारे आधारसे अनाजकी शोभा है! वैसेही प्रभुके आधारसे हम टिकसकते हैं और हमसे प्रभुकी महिमा है. हम प्रभुके वैरी नहीं हैं और प्रभुको हम पर वैर नहीं है. परंतु जैसे छिलकोंसे चावल दूर करनेके लिये हम धानको ऊखलमें डालकर ऊपरसे मूसलकी मार मारते हैं वैसेही हमारे पुराने पाप दूर करने और हमको पवित्र करनेके लियेही प्रभु कभी २ हमपर दुःख डालताहै. इस लिये दुःखका उलटा अर्थ करके उदास मत हो, परंतु उसमेंभी ईश्वरका कुछ न कुछ अच्छाही हेतु समझकर भगवदिच्छासे आये हुए दुःखोंको शांतिसे सहन करो!

दोहा—जितने तारे गगनमें, शत्रू उतने होय।
कृपा होय रघुनाथकी, बाल न बाँका होय॥

२३९ अधिक सुख देनेके लिये ही प्रभु हमको थोडा दुःख देता है!

डाक्टर लोग आ बला उठाते हैं और नश्तर मारते हैं सो क्यों तुमने कभी नहीं देखा? वे ऐसा क्यों करते हैं? प्रथमही मनुष्य

बीमार हो और उसपर इस तरहका कष्ट डाला जाय सो क्यों? क्या यह डाक्टरोंकी निर्दयता नहीं है? इसके उत्तरमें तुमही कहोगे कि " नहीं! यह डाक्टरोंकी निर्दयता नहीं है वरन् यह तो उनकी होशियारी है, क्योंकि रोगीको कष्ट देने या मारडालनेकी इच्छासे डाक्टर लोग नश्तर नहीं मारते किंतु उनका दर्द मिटानेके लिये नश्तर मारते हैं. "

इसी तरह प्रभु हमपर दुःख डालता है सो हमपर द्वेषभावसे नहीं किंतु हमको पवित्र करने और हमारा कल्याण करनेहीके लिये. इस लिये भाइयो! दुःखसे उदास मत हो! परंतु प्रभु जिस स्थितिमें रक्खे उसी स्थितिमें सुखपूर्वक रहना सीखो! इस तरह रहना सोई ईश्वरकी इच्छाके अधीन होना है, और यही सब कर्मोंका सार और प्रभुको पानेका उत्तम मार्ग है.

२४० याद रक्खो! दुःखका सामना करनेसे कुछ लाभ नहीं होगा, परंतु उसको भगवदिच्छा समझकर शांतिसे भोगलेनेमेंही मजा है.

कोई मनुष्य घरमें बंद कर रक्खाहो और वह बाहर निकलनेके लिये दीवारपर शिर देदे मारै तो उसके शिर दे मारनेसे दीवार नहीं टूटैगी किंतु उसका शिरही फूटैगा, इसी तरह ईश्वर जो दुःख डालै वे हमको सहन करलेने चाहिये उनको सहन करने सिवाय दूसरा कोई उपायही नहीं है. उनका सामना करनेसे अर्थात् उदास होनेसे दुःख छूट नहीं जाते वरन् और बढते हैं. दुःखसे दुःखित होना और हिम्मत हारजाना दीवारपर शिर देमारनेके और कांटोंकी वाडपर हाथ पैर पछाडनेके समान है, ऐसी मूर्खता मत करो! अपने हाथसे अपनेही पैरपर कुल्हाडी मत मारो! परंतु प्रभुकी इच्छासे आये हुए दुःखोंको परमेश्वरका स्मरण करते २ शांतिके साथ सहन करलो! अंतःकरणके पाप छूटने और बाहरके पापसे बचनेहीके लिये हमपर दुःख डाले जाते हैं. इस लिये दुःखोंको चुप चाप सहन करलेना चाहिये.

दुःखसे दुःखित होना घावपर नमक डालनेके समान है. भाइयो ! अपनेही हाथसे अपने घावपर नमक मत डालो ! मत डालो !

राग काफी ।

दयानिधि ! तेरी गति लखि ना परै ॥ टेक ॥ अधरम धर्म, धर्मसे अधरम, अकरम कर्म करै ॥ दयानि० ॥ १ ॥ एक गऊ जिन दानहि दीनी, सो सुरलोक तरै । कोटि गऊ राजा नृग दीनी, गिरगिट ह्वै कूप परै ॥ दया० ॥ २ ॥ पिता वचन टारै सो पापी, सो प्रहलाद करै । ताको कष्ट निवारनको प्रभु, नरसिंह रूप धरै ॥ दया० ॥ ३ ॥ वेदविदित मुनिवर यश गावैं, सोइ वलि यज्ञ करै । ताको बाँधि पताल पठायो, किस विधि सूर तरै ॥ दया० ॥ ४ ॥

२४१ सिपाहियोंको जैसे कपतानकी आज्ञा मानना पडता है, वैसेही हमभी ईश्वरके सिपाही हैं, इसलिये ईश्वरकी इच्छानुसार हमको चलना चाहिये.

सिपाहियोंका कर्तव्य क्या है सो तुम जानतेहो ? कपतान कहै सोही करना सिपाहियोंका कर्तव्य है. कपतान दौडनेकी आज्ञा दे तब दौडना, खडे रहनेकी आज्ञा दे तब खडे होना, बंदूक रखनेकी आज्ञा दे तब बंदूक रखदेना, बंदूक चलानेकी आज्ञा दे तब बंदूक चलाना, मारनेकी आज्ञा दे तब मारना, मरनेकी आज्ञा दे तब मरना, पीछे फिरनेकी आज्ञा दे तब पीछे फिरना, लडनेकी आज्ञा दे तब लडना, किसी अपराधके लिये मित्रको मारनेकी आज्ञा दे तब मित्रकोभी मार डालना और शत्रुको बचानेकी आज्ञा दे तब शत्रुकोभी बचाना आदि जैसे सिपाहीका कर्तव्य है और जो अपना कर्तव्य पूरा

न करै उसको जैसे कडी सजा भुगतना पडता है, वैसेही हमभी प्रभुके सिपाही हैं इससे जैसे वह रक्खै वैसेही हमको रहना चाहिये. हमको वह सुख दे तो सुख सहना चाहिये, दुःख दे तो दुःख सहना चाहिये, बीमारी दे तो बीमारी सहनी चाहिये, बुरा कुटुंब दे तो वह जंजालभी भुगतना चाहिये, बच्चे न दे तो उसमेंभी संतोष रखना चाहिये, गरीबी दे तो उसमेंभी चलाना चाहिये और मौत दे तो उसकेभी शांतिपूर्वक अधीन होना चाहिये, क्योंकि हम सिपाही ठहरे, कपतान तो वही है, इसलिये जैसे जैसे प्रभु रक्खे तैसेही आनंदमें रहना चाहिये. याद रक्खो कि जो सिपाही अच्छी नौकरी बजाता है उसका दरजा बढता है और उसको अधिक रोजगार मिलता है, इसी तरह हमभी प्रभुकी इच्छाके जितने अधीन होकर रहैंगे उतनाही सुख पावैंगे इस लिये जैसे बनै वैसे प्रभुकी इच्छाके अधीन होनेका यत्न करो !

२४२ पानी जैसे बर्तनमें भराजाता है वैसेही आकारका होजाताहै वैसेही हमकोभी ईश्वर जिस स्थितिमें रक्खे उसी स्थितिके अनुसार होजाना चाहिये.

कितनेही काम तो ऐसे होते हैं जो उनका समय आनेपरही होते हैं और कितनेही काम ऐसे होते हैं जिनमें हमारा कुछभी चल नहीं सकता, ऐसे कामोंमें नाहक चिंता करना प्रभुके सामने होने समान है. काम मिले बिना बढई कितनेही हथोडे पीटा करै परंतु उससे कुछ काम नहीं चलता. मरेके पीछे मनुष्य चाहे जितना रोवै पीटै परंतु वह जीवित हो नहीं सकता. वैसेही बिना काम चिंता करते रहनेसे ऊपरसे धन आकर नहीं गिरता. लाख यत्न क्यों न किये जायँ परंतु बैलसे दूध नहीं निकलसकता. माली चाहे जितना पानी क्यों न सींचै परंतु ऋतु आये बिना फल नहीं लगते. वैसेही दुःखभी उनके कारण दूर हुए बिना, अवधि पूरी हुए बिना और परमेश्वरकी शरण

लिये विना दूर नहीं हो सकते. दुःखको दूर करनेका सुगम उपाय यही है कि, जैसे पानी जिस वरतनमें भरा जाय उसी आकारका होजाता है अर्थात् नलीमें भरनेसे नलजैसा, थालीमें भरनेसे थाली-जैसा, झारीमें भरनेसे झारीजैसा और घडेमें भरनेसे घडेजैसा हो जाताहै, वैसेही हमकोभी जैसे प्रभु रक्खे वैसेही रहना चाहिये. वैसे रहनेहीमें हम सुखसे रहसकते हैं जवतक हम भगवदिच्छाके अधीन नहीं होंगे तवतक याद रक्खो कि, दुःख दूरही नहीं होंगे इस लिये भाइयो ! दुःख दूर करनेके लिये जैसे वने वैसे भगवदिच्छाके अधीन हो ! अधीन हो !! अधीन हो !!!

२४३ जो ऐसा करना हो कि तुमको स्वर्गमें न जाना पडे परंतु स्वर्गही तुम्हारे पास आजाय तो भगवदि-च्छाके अधीन हो !

भाइयो ! हंडियाको कुम्हारके सामने यह कहनेका अधिकार नहीं है कि, तूने मुझको हंडिया क्यों वनाया घडा क्यों न वनाया ? वैसेही हमकोभी हमारे वनानेवाले परमेश्वरके आगे यह कहनेका अधिकार नहीं है कि तूने हमको अमुक देशमें अमुक कालमें अमुक गांवमें या अमुक जातिमें क्यों न उत्पन्न किया ? अथवा अमुक काम हमको क्यों दिया ? हमारा तो ईश्वरकी इच्छाके अधीन होनाही धर्म है. भगवदिच्छाका आदर करनेहीमें हमारा सच्चा सुख है. प्रभुकी इच्छाविरुद्ध होनेमें हमारा कल्याण नहीं है. भाइयो ! अपनी इच्छाका विचार मत करो ! अपनी इच्छामेंसे होनेवाले सुखदुःखका विचार मत करो ! परंतु जिसकी ओरसे वे सुखदुःख मिले हैं उसकी इच्छाका विचार करो ! उसकी इच्छाके अधीन होनेसे तुम्हारे दुःख घटेंगे और अंतमें विलकुल जायँगे और मरनेपर तुमको स्वर्गमें नहीं जानापडेगा परंतु जीते हुए ही तुम्हारे घरहीमें अंतःकरणमेंही स्वर्ग स्वयं चलाआवेगा, परंतु शर्त

इतनीही है कि, सुखदुःखकी कुछ परवाह न कर ईश्वरकी इच्छाके अधीन होजाओ !

कुंडलिया ।

बंदा बडबड क्या करै, ले साहबका नाम ।
यह तमाशा दो घडी, आखर धूल तमाम ॥
आखर धूल तमाम, राव रंकादिक जावै ।
कर संतनकी सेव, राह तोहि अगम बतावै ॥
कहता रमताराम, भजन कर छांडके धंधा ।
ले साहेबका नाम, करै क्यों बडबड बंदा ॥

२४४ दुःखको आनंदके रूपमें बदल डालनेका उपाय क्या है ? भगवदिच्छाके अधीन होना !

सब लोग अपनी २ घडियोंकी सुई अपनी २ इच्छाके अनुसार रक्खैं तो समय जाननेमें गडवड पडे विना नहीं रहसकती, इससे उचित यही है कि नगरमें जो सबसे बडी और सबसे उत्तम घडी हो उसीके अनुसार सबको अपनी २ घडियां रखना चाहिये. वैसेही हम सब लोग जो अपनी २ इच्छाके अनुसार चलैं तो संसारमें अनथोंका पार न रहै. जो हमारी इच्छाके अनुसार काम होता हो तो हम थोडी देरमें सब मटियामैदान करडालैं और फिर न तो इतने जीसकैं और न थोडा बहुतभी सुख भोग सकैं. जो हमारे ही हाथमें सारा कारवार हो तो घडीभरमेंही बारह बजजाँय अर्थात् सर्वस्व नष्ट हो जाय. हमको अपने कल्याणके लिये और संसारके लाभके लिये प्रभुकी इच्छामेंही हमारी इच्छा रखना चाहिये. प्रभुकी इच्छासे अपनी इच्छा जुदी रखकर हम सुखी नहीं होसकते. इस लिये जैसे बनै वैसे अपनी इच्छाओंको प्रभुकी इच्छामें मिलादो ! बस फिर तुम्हारे दुःखभी सुखरूपमें और प्रभुकृपाके रूपमें बदल जायँगे !

२४५ हम तो एंजिन हैं और प्रभु एंजिनियर है, इस लिये वह जैसे कल दबावै वैसेही हमको चलना चाहिये.

दोहा--हंसा ज्यों सरवर चहै, घनको चहै ज्यों मोर।
हम तुमको ऐसे चहैं, जैसे चंद्र चकोर॥
मेरे तो तुम एक हो, तुमको और अनेक।
सरवरको हंसा बहुत, हंसहि सरवर एक॥

हम एंजिन हैं परंतु एंजिनियर भगवान् है. एंजिनियर जैसे कल दबावै वैसेही एंजिनको चलना चाहिये. वह आगे चलावे तो आगे, पीछे चलावे तो पीछे, धीरे चलावे तो धीरे, और दौडावे तो दौडना चाहिये. अधिक गाडियां जोडदे तो उनको भी खैंचना चाहिये, खाली दौडावे तो खाली दौडना चाहिये और सडकपरसे उतारदे तो उतरभी जाना चाहिये एंजिनको तो किसीभी बातमें उजर नहीं करना किंतु जैसे एंजिनियर चलावै वैसेही चलना चाहिये. जो वह एंजिनियरकी इच्छाके अनुसार न चलै तो एंजिन काहेका ? तो वह अच्छा एंजिन नहीं कहला सकता ! वैसेही हमकोभी ईश्वरकी आज्ञाके अधीन होजाना चाहिये. जो हम पूर्ण प्रेमसे और सर्वात्मभावसे अधीन न होयँ तो हमारी नालायकी है और प्रभुसे विमुख होने समान है. भगवान्ने गीतामें कहा है:--

"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया॥"

अ० १८. श्लो० ६१.

अर्थ--हे अर्जुन ! सब प्राणियोंको कलसे फिरनेवाली पुतलीकी तरह सबके हृदयमें स्थित ईश्वर चलाता है.

भाइयो ! हम तो कलमें लगीहुई पुतलीके समान है, हमको चलानेवाला तो अनंत ब्रह्मांडका नायक स्वयं विश्वंभरही है, तब फिर

अपने सुखदुःखकी हमको चिंता क्या रही ? इस लिये भाइयो ! पूरा विश्वास और पूरा प्रेम लाकर प्रभुकी इच्छाके अधीन हो !

२४६ नाटकपात्रोंको उनका मालिक जो वेष बनावै वही वेष उनको अच्छी तरह कर दिखाना चाहिये. वैसेही प्रभु हमको जिस स्थितिमें रक्खे उसीमें हमको आनंदसे रहना चाहिये.

दुःखसे डरे कैसे काम चलसकताहै ? हमारे डरनेसे क्या दुःख हमको छोडदेगा ? कभी नहीं ! हम जाडेसे डरैं तो क्या जाडेकी मौसिम आये विना रहसकती है ? हम आगसे डरैं तो क्या आग संसारमेंसे नष्ट होसकती है ? हम रोगोंसे डरैं तो क्या ईश्वरीय नियम पाले विना रोग मिट सकते हैं ? हम गरीबीसे डरैं तो क्या उद्योग किये विना सोनेकी खानें हमको मिलजायंगी ? हम मौतसे डरैं तो क्या हमको अमरपट्टा मिल जायगा ? हमको जन्म मरणके चक्रमें पडना नहीं पसंद तो क्या प्रभुको जाने विना प्रभुकी इच्छाके अधीन हुए बिना हमको मोक्षपद मिलजायगा ? कभी नहीं. ऐसे २ अनेक दुःख संसारमें सब लोगोंको हैं, इन सब दुःखोंका सुगम उपाय यही है कि, भगवदिच्छाके अधीन होजाना और जैसे ईश्वर रक्खै वैसेही आनंदसे रहना.

जैसे नाटकके पात्रोंको जो वेष मिलै उसीको अच्छी तरह कर दिखाना पडता है, वैसेही प्रभु हमको जिस तरह रक्खै उसी तरह हमको आनंदसे रहना चाहिये, जो सबही नाटकपात्र कहैं कि हमको तो राजाका वेष चाहिये. सिपाही, वेश्या, साधु आदिका वेष नहीं चाहिये, तो नाटकका काम चल नहीं सकता. पात्रोंको वेष देना मालिककी इच्छापर निर्भर है, नाटकपात्रकी खूबी कुछ बढिया पोशाक पहननेमें नहीं है, परंतु अपना पार्ट अच्छी तरह कर दिखानेमें है. घटिया या बढिया वेषका विचार करना ऐक्टरका काम नहीं है क्योंकि उसकी योग्यताका विचार करकेही मालिकने उसको वेष दिया है. ऐक्टरका

काम यह है कि, अपना वेष अच्छी तरह करदिखावे और उसीमें उसकी योग्यता है, इसी तरह हमकोभी ईश्वर जिस स्थितिमें रक्खे उसीके अनुसार हो जाना चाहिये और उसीमें आनंद मानना चाहिये. इसीका नाम ईश्वरकी इच्छाके अधीन होना है और यही प्रभुको प्रिय है इसलिये हमको ऐसेही बनजाना चाहिये कि:—

४४ छंद।

प्रभू दियो सुख दुःख शिर धारि लेनो!
सदा हर्षसों हृदय मध्ये रहेनो॥
कभों धैर्यकों हृदयसो मत विसारो।
पडे कष्ट ज्योंही त्योंही धैर्य धारो॥ १ ॥

२४७ इससे मनुष्य कहते हैं उतना करते नहीं हैं, परंतु अच्छी २ बातें सुनना छोडदेनेकी जरूरत नहीं है.

एक स्त्री नित्य मंदिरमें जातीथी, और बडे प्रेम तथा भक्तिसे प्रभुकी महिमा सुनती थी. एक दिन उसके पतिने कहा "कथा कहनेवाला जैसा कहता है वैसा करता नहीं है इससे वहां जानेमें क्या लाभ है? पुस्तक तो पढै बडी २ और करै कुछभी नहीं तब लाभ क्या? नित्य २ वहां जाकर धक्के क्यों खाती है?"

स्त्रीने उत्तर दिया "करना और मरना तो बराबर होता है. जब जब तुमको क्रोध आता है तब २ तुम मुझको 'रांड! रांड' कहकर पुकारतेहो परंतु मुझको रांड करके दिखाओ तो खबर पडे कि, रांड कैसे होती है. रांड कह देना तो सुगम है परंतु रांड कर दिखाना सुगम नहीं है. वैसेही मनुष्य कहते हैं उतना करते नहीं सो सत्य है परंतु इसपरसे अच्छी २ बातें सुनना छोडदेनेकी जरूरत नहीं है. नित्य २ अच्छी बातें सुनते रहनेसे किसी न किसी दिन तो अवश्यही उसका अच्छा असर हुए विना नहीं रहता. इस लिये

हरिकथा सुननेमें प्रभुके यश सुननेमें और धर्मकी महिमा सुननेमें तो लाभही है ! लाभही है ! ! लाभही है !!!

२४८ बच्चेको दूध पिलानेवाली माताके लिये अच्छे २ खानेकी जरूरत है. इसी तरह गुरुलोगोंको बहुत उत्तम ज्ञानकी जरूरत है.

जो माता बच्चेको दूध पिलाती हो उसको अच्छे २ खानेकी जरूरत है, क्योंकि जो उसको अच्छा खाना न मिलै तो वह निर्बल हो जाय और उसका बच्चाभी निर्बल होकर बीमार पड जांय. ऐसा न होनेके लिये दूध पिलानेवाली माताको अच्छा २ खाना मिलनेकी आवश्यकता है. गुरुलोगभी दूध पिलानेवाली माताके समानहैं. शिष्य हैं सो उनके बच्चे हैं और उपदेश है सो दूध है. गुरुओंको अच्छा खाना न मिलै तो वे निर्बल होजायँ और शिष्यभी उनके निर्बल होजायँ. दूध पिलानेवाली माताको जैसे घी, दूध आदि पौष्टिक खानेकी जरूरत है वैसे गुरुलोगोंके लिये सत्संग, ज्ञान, भक्ति, वैराग्यकी आवश्यकता है. गुरुलोगोंके लिये यही अच्छा खाना है इस प्रकारका खाना जो नित्यप्रति उनको न मिलै तो उनके बच्चे उनके शिष्य निर्बल पडजायँ इसमें संदेह नहीं, इसलिये गुरुओंको इस प्रकारका उत्तम खाना अपने लिये पसंद करनेकी पूरी सावधानी रखनी चाहिये. तबहीं वे शिष्योंका कल्याण कर सकते हैं.

जो माता स्वयंही उपवास किये है वह बच्चेको दूध पिलाकर उसका पेट कहांसे भरसकैगी ? वैसेही जो गुरु आपही ज्ञान भक्तिमें न्यून हैं वे अपने शिष्योंमें धर्मका ईश्वरीय ज्ञान कहांसे भरसकैंगे ? ईश्वरीय ज्ञान विना कल्याण नहीं होसकता. इससे लोगोंको अच्छेसे अच्छे गुरु ढूँढने चाहिये और गुरुओंको महान् ईश्वरका अलौकिक ज्ञान प्राप्त करनेके लिये अपने आचरणोंको सुधारकर पवित्र अंतःकरणसे ईश्वरीय मार्गमें चलना चाहिये ।

२४१ गुरुकी आवश्यकता.

वहुतसे लडके एक नावमें वैठकर किसी वडी नदीमें सैर कर रहे थे अकस्मात् वह नाव डूवने लगी तव तो वहुतसे लडके नदीमें कूदपडे और किनारे लगनेका यत्न करने लगे. यह देखकर सामनेके किनारेपरसे एक भले आदमीने नदीमें एक रस्सी फेंकी और चिल्लाकर कहा कि इसको पकडलो. जिन लडकोंने उस रस्सीको पकडलिया वे वच गये और जिन्होंने अपने पैरजानेके अभिमानमें आकर उसे नहीं पकडा वे डूवगये.

हमभी अज्ञानी हैं अर्थात् उन लडकोंजैसेही हैं. हमारी नाव है सो संसार है, नदी है सो कालका प्रवाह है, किनारेसे रस्सी फेंकने वाला सो गुरु है और रस्सी सो धर्म है. नदीमें रस्सी न पकडनेवाले जैसे डूवगये वैसेही हमभी सद्गुरुका वतायाहुआ धर्म न पालें तो जन्ममरणके चक्रमें पडजायँ इसलिये डूवतेको वचाने योग्य सद्गुरुकी आवश्यकताहै. ऐसे वडे ब्रह्मज्ञानी गुरुकी महिमामें सूरदासजीने कहा है:-

दोहा—गुरु गोविंद दोनों खडे, किनके लागों पाय ।
वलिहारी गुरुदेवकी, जिन गोविंद दीन्ह वताय ॥

कवित्त ।

गोविंदके किये जीव जात है रसातलको,
गुरु उपदेशे सो तो छूटे यमफंदते ।
गोविंदके किये जीव वश परे कर्मनके,
गुरुके निवारे सो फिरत स्वच्छंदते ॥
गोविंदके किये जीव डूवत भवसागरमें,
सुंदर कहत गुरु काढे दुख द्वंद्वते ।
औरहू कहालों कछु मुखते वनाय कहूं,
गुरुकी महिमा तो अधिक है गोविंदते ॥

२५० सडकपर पानी छिडकनेवाले भिश्तीको पहलेही जलाशय ढूँढ रखना चाहिये, वैसेही संसारमें धर्म फैलानेकी इच्छावाले गुरुओंको ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करलेना चाहिये.

औरोंको ठंडक पहुँचानेके लिये सडकपर छिडकाव करनेवाले और औरोंको पानी पिलानेवाले परवालिये, भिश्ती तथा पानीपांडे लोगोंको पानी पास करनेके लिये पानीका अच्छा तालाव, नदी, कुँआ या कोईभी जलाशय पहलेसे ढूँढकर अपने अधिकारमें कररखना चाहिये. जो कोई अच्छा जलाशय उनके हाथमें न होगा तो वे अच्छी तरहसे पानी पिलाने या सडकपर छिडकाव करनेका काम नहीं करसकेंगे. वैसेही जो गुरुलोगभी भक्ति तथा परमार्थका अखूट खजाना अपने हृदयमें न रक्खें तो दूसरोंको लाभ नहीं पहुँचासकते. गुरु बन दूसरोंको सुधारनेका विचार करनेसे पहले उनको स्वयंही सुधारना चाहिये. तवही उपदेशका सच्चा असर होसकता है और तवहीं गुरु-पदकी सार्थकता है. जो खुद तो खाली है और दूसरेको भरना चाहता है वह 'आपही मियां माँगते और वाहर खडा दरवेश' वाली कहावतको सिद्ध करता है, इस लिये शिष्योंको सुधारनेसे पहले गुरुलोगोंको स्वयं सुधर जाना चाहिये. तवहीं उनका गुरुपन शोभा देता है और तवही उनको मान मिलता है. वाकी भक्तिज्ञानरहित गुरुपन तो संसारमें हँसी, नरककी फाँसी और ईश्वरके यहाँ अपराध है.

२५१ धोबी आप मैले रहतेहों तवभी औरोंके कपडे तो साफ करदेते हैं, वैसेही निर्बल गुरु आप मलीनतामें पडे रहते हों तवभी औरोंका तो कुछ न कुछ लाभ करही देते हैं.

दोहा—परजनको उपदेश दे, निजमें कोटि कुफैल।
धोबि धोय पट औरके, निज पटमें मन मैल ॥

हमारे कपडे धोबी साफ करदेता है और उन साफ कपडोंसे हम संसारमें अनेक काम निकाल सकते हैं. धोबी हमारे कपडे अच्छी तरह साफ करदेता है परंतु वह अपने कपडे कभी ठीक साफ नहीं रखता. हमको उसके कपडोंसे कोई काम नहीं है, हमको अपने कपडोंसे काम है. हमको केवल इतनाही देखना है कि, वह हमारे कपडे ठीक धोता है या नहीं, इसी तरह जो गुरु औरोंको उपदेश देते हैं परंतु वे स्वयं उसके अनुसार नहीं चलते वेभी मैले कपडोंको साफ कर देनेवाले परंतु स्वयं मैले रहननेवाले धोबीजैसे हैं. वे धोबीजैसे तो हैं परतु हमारे कामके हैं. दुनियां गुण और दोषसे भरी हुई है, और हमभी उस गुणदोषवाली दुनियांमेंही रहनेवाले हैं इसलिये हममेंभी गुण दोष तो आवैंहीगे. हमारे गुरु हैं वेभी हमारेजैसे मनुष्यही हैं, वेभी कुछ गुणातीत तो हैं ही नहीं. वेभी मनुष्यस्वभावके अधीन होनेवाले और मनुष्यके स्वाभाविक दोषवालेही होते हैं. इतना अवश्य है कि, उनमें मनोनिग्रह और धर्मका ज्ञान हमसे अधिक होना चाहिये. परंतु समय अनुसार ये दोनों गुण होनेपरभी इतना तो हमको अवश्य समझ रखना चाहिये कि, वे कुछ देवता तो हैंही नहीं. वेभी मनुष्यही हैं और भूलके पात्र हैं इसलिये जो हम उनके दोषही ढूँढा करैं तो काम नहीं चलनेका. दोषरहित गुरु हमको इस समयमें इस दुनियांमें मिलभी सकता है या नहीं इसीमें संदेह है. इसी लिये महात्माओंने कहा है कि, बुद्धिमान् मनुष्योंका यह काम है कि, दूध और पानी मिलाहुआ हो उसमेंसे हंस दूध दूध पीलेता है और पानी पानी छोडदेता है वैसेही सज्जनोंको दोषदृष्टि छोडकर निर्बल गुरुओंमेंसे भी सार सार निकाल लेना चाहिये.

२५२ कुएमें हो तो घडेमें आवैं.

अज्ञानी भिखारियोंकी यही इच्छा रहती है कि, हमको कहींसे धेला पाई मिलै तो अच्छा ! उनको दूसरोंको देनेकी तो इच्छा ही नहीं होती और थोडी देरके लिये जो मानभी लें कि, किसी भिखारीकी

इच्छा हुई कि मैं अमुक मनुष्यको एक लाख रुपया दूं तो वह देभी कहांसे सकता है ? क्योंकि ' मूलं नास्ति कुतः शाखा " अर्थात् जब जडही नहीं है तब शाखा कहांसे हों ? इसी तरह जो खुद गुरुही ज्ञान, शक्ति, परमार्थ और इंद्रियनिग्रहमें भिखारी हो तो वह शिष्योंको गुण कहांसे देसकता है ? कहावत है कि, ' कुएमें हो वैसा घडेमें आवैं' परंतु जो खुद कुआही खाली खडंग पडा हो तो घडेमें क्या आवै ? वैसेही जो गुरु खुदही सूखे हों और भिखारियोंके पाई धेला मिलनेकी आशा रखनेकी तरह मान, पान, सुविधा और धन पानेकी इच्छा रखते हों वे अपने शिष्योंको ईश्वरीय धन धर्मका धन कहांसे दे सकते हैं ? इस लिये गुरुओंको भिखारी न रहना चाहिये परंतु धर्मका धन अपने हृदयमें भरलेना चाहिये. खुद वे भरे होंगे तवहीं दूसरोंको देसकेंगे, परंतु वेही जब खाली खीसे होंगे तो शि-ष्योंको देनेका कहां ठिकाना ? प्रभु ! हमारे गुरुओंको सद्बुद्धि दें ! धर्मका धनदें !

२५३ ईश्वरने हमको जीभ छोटी और हाथ लंबे दिये इसका कारण क्या ?

एक कविने कहा है कि, ईश्वरने हमको हाथ दो दिये और वे भी बहुत लंबे लंबे, पैर दो दिये और वे भी बहुत लंबे लंबे, कान दो दिये, आंख दो दीं, नथने दो दिये, परंतु जीभ एकही दी और वहभी बहुत छोटी बनाई इसका सबब क्या ? यह एक बडा रहस्य भरा हुआ प्रश्न है. मनुष्यके कामोंपरसे उसकी इच्छाका अनु-मान करलिया जाता है, वैसेही ईश्वरके कामोंसे ईश्वरकी इच्छा बता-नेकी कविने यह युक्ति निकाली है. वह कहताहै कि मनुष्य लाभ उठाने या कमाई करनेके लिये जहां जाना चाहै वहांही जासकै इसी विचारसे परमेश्वरने दो लंबे २ पैर दिये हैं, अपनी इच्छाके अनुसार अच्छी २ वस्तु प्राप्त कर सकने और दूसरोंके दे सकनेके लिये दो मजबूत हाथ दिये हैं और दो बार देखकर तथा दोही बार सुनकर

एक वार बोल सकनेके लिये दो आँख और दो कान तथा एक जीभ दी है, परंतु हम इससे बिलकुल उलटे चलते हैं. हम पूरा सुने विना और पूरा देखे विनाही अपनी राय जाहिर करदेते हैं सो बुरी बात है. इससे विना कारण हम कितने वडे पापमें पडते हैं और इससे ईश्वर कितना अप्रसन्न होता है सो हम नहीं विचारते.

ईश्वरने बहुत सोच विचारकरही हमारी जीभ छोटी बनाई है और उसको वैसे रखनेहीमें लाभभी है. जीभको अधिक बढानेमें लाभ नहीं है. इसी लिये प्राचीन ऋषि मुनिलोग मौनव्रत धारण करतेथे और इसीसे पुराणोंमें मौनव्रतका वडा मोहात्म्य लिखा है कहावत है कि, " न बोलनेमें नौ गुण " यद्यपि बोले विना काम नहीं चलसकता परंतु जीभको वशमें रखनेसे जीभद्वारा होनेवाले अनेक पाप बचसकते हैं. इस लिये भाइयो ! प्रभुकी इच्छाके अनुसार प्रभुने हमको प्रत्यक्षमें दियाहै उसीके अनुसार जीभको छोटा रक्खो. और हाथको लंबा रक्खो अर्थात् अधिक बकबक मत करो ! जरूरत लायक बोलो ! निश्चय करके बोलो ! और परमार्थ करो ! यही ईश्वरकी इच्छा है और यही हमारा कर्तव्य है.

२५४ हमारा मन भटके तो प्रभु रुष्ट हो।

हमारा प्रियमित्रभी, जो उससे हम बेपरवाही करें तो, थोडेही दिनमें हमसे मित्रता छोडदेता है. वैसेही ईश्वरके साथभी जो हम बेपरवाही रक्खें और हमारे मनको दूसरी जगह भटकने दें तो प्रभुभी हमसे रूठजाता है. गायको दुहते २ जो हम बीचमें छोडकर दूसरे काममें लगजायँ तो गाय भडकजाती है और फिर पूरा दूध नहीं देती इसी तरह ईश्वरसे हम लाभ उठानेकी—स्वर्ग पानेकी मोक्ष पानेकी इच्छा करें और उसी समय दूसरी हलकी २ बातोंमेंभी मन लगावें तो प्रभु कैसें हमसे रुष्ट न हो ? यह विचारनेकी बात है.

आशक माशूक अर्थात् प्रिय प्रियतमा जो एक दूसरेपर मरे जाते हों और जो जमीन आसमानको एक किये डालतेहों वेभी जो अपने

पात्रका मन किसी दूसरेकी ओर लगा देखलें तो पलभरमें प्रेम तोड डालते हैं, वैसेही प्रभुके लिये भी समझना चाहिये क्योंकि हम प्रेम-लक्षणा भक्ति करना चाहते हैं. हमारा मन हमारे आशक एक प्रभु-मेंही लगारहना चाहिये. जो दूसरी जगह मन गया तो वह आशक माशूकभी किस कामके ? वह प्रेमभी किस कामका ? और उसका फलभी क्या अच्छा होसकता है ? इस लिये हमारा मन एक प्रभुमें ही लगा रहना चाहिये तबहीं स्वर्गके अलौकिक आनंद मिलसकते हैं.

घुडदौडके मैदानमें दौडते हुए पवनवेग घोडेपर सवारी करनेवाला मनुष्य जो अपना मन दूसरी जगह लगावे तो तुरंतही घोडे परसे नीचे गिरजाय. जो वह बहुतही होशियार हो और गिरनेसे बच जाय तवभी बाजी तो हारही जाय. वैसेही भक्ति करते २ जो हमारा मन किसी दूसरी जगह चलाजाय तो हम नीचे अर्थात् दुनियांदारीके मोहमें जन्म मरणके चक्करमें गिरजाते हैं और मोक्ष पानेकी बाजी हारजाते हैं. इससे प्रभुको छोडकर अन्यत्र कहींभी मनको नहीं जाने देना चाहिये. परीक्षा देते समय जो विद्यार्थी अपना मन कहीं दूसरी जगह लगादे तो वह अवश्य फेल होजाता है, वैसेही ईश्वरभजनके समय जो हमारा मन दूसरी जगह जाय तो हमभी भक्तिकी परीक्षामें फेल होजाते हैं. परीक्षाके समयमेंभी जो हम मनको इधर उधर भट-कने दें तो कितनी नालायकीकी बात है ? इससे इस बातकी सँभाल रक्खो कि, इस तरहकी बेपरवाही मनमें जमने न पावै.

भाइयो ! अधिक भीडवाली सडकपर बाइसिकल चलानेमें कितनी सावधानी और कितना ध्यान रखना पडताहै ? और जो जरा ध्यानमें चूके तो कैसे धमसे गिर पडते हैं सो तुमने देखाही है ! ऐसी स्थूल बातहीमें जब इतना ध्यान देना पडताहै तब भक्ति जैसे अद्भुत रह-स्यवाले विषयमें ध्यान जैसे सूक्ष्म विषयमें और मन वाणीसे परे ऐसे अगम्य ईश्वरको पहँचाननेमें कितना ध्यान रखना और मनको कितना एकाग्र करना चाहिये सो तो विचारो ! इतनी एकाग्रता विना ईश्वर

कैसे प्रसन्न हो सकता है ? और जबतक ईश्वर प्रसन्न न हो तबतक हमारी भक्ति किस कामकी ? तबतक हमारा कल्याण कैसे हो ? इस लिये जैसे बनै वैसे एकाग्रता करके मनको प्रभुहीमें पिरो रखनेका यत्न करो ! तो शनैः २ प्रभु तुमको सफलता देगा.

दोहा—परमेश्वरसों प्रीति अरु, परनारिनसों हँसना ।
तुलसी दोनों ना बनै, चून खाय अरु भसना ॥

२५५ काँचके टुकडेको सच्चा हीरा माननेवाले और सच्चे हीरेको गधेके पैरमें बांधनेवालेका उदाहरण.

एक कुम्हार मट्टी खोदने गया. वहांपर उसे मट्टीके खानमेंसे एक सच्चा हीरा मिला परंतु वह उसकी कीमत नहीं समझताथा इससे उसने उसे गधेके पैरमें बांधदिया. दूसरे एक आदमीको काँचका टुकडा मिला. उसने उसे सच्चा और कीमती हीरा समझकर घरमें ला रक्खा और उसके भरोसेपर खूब खर्च करना शुरू किया. यहांतक कि वह कर्जदार होगया और चारों ओरसे रुपयोंका तकाजा होनेलगा. तब तो उसने एक दिन वह काँचका टुकडा अपने एक बोहरेको दिखलाया और पूँछा " इस सच्चे हीरेका क्या मोल है ? "

बोहरेने कहा " भाई ! यह तो हीरा नहीं है केवल काँचका टुकडा है. "

इतना सुनतेही वह चौंक उठा और बोला " हाय हाय ! यह तुम क्या कहते हो ? यह हीरा नहीं है ? मैं तो इसको बढिया हीरा समझताथा और इसीके भरोसेपर अनापशनाप खर्च करता था ! हाय हाय ! मैं तो कर्जदार बनगया ! अब क्या करूं ? "

बोहरेने कहा " तू इसे हीरा समझ चाहे हीरेसेभी कोई दूसरी कीमती चीज समझ परंतु यह तो काँच है ! तेरे समझनेसे यह हीरा थोडाही हो जायगा ? "

इसके वाद वोहरेने उसपर नालिश की और डिगरी कराकर जेलखानेमें कैद करा दिया.

हमकोभी यह वात ठीकही जँचती है. काँचके टुकडेको हीरा समझकर उसके भरोसे इतना खर्च करनेवालेको और गधेके पैरमें हीरा वांधनेवाले दोनोंहीको हम मूर्ख वताते हैं तव हमकोभी तो यह सोचना चाहिये कि, हम क्या करते हैं ? ईश्वर जो हमारे मुकुटपर रखने योग्य है, सहस्रदलकमलमें ब्रह्मरंध्र ध्यान करने योग्य है, और सर्वभावसे सर्वकालमें हृदयमें धारण करने योग्य है उसको भूलकर हम झूंठे व्यवहारको शिरपर धारण करते हैं और हृदयमें गहरे भावसे भर रखते हैं इसका अर्थ गधेके पैरमें हीरा वांधना नहीं तो और क्या है ? जहां ईश्वरको रखना चाहिये वहां हम व्यवहारको रखते हैं सो क्या मूर्खता नहीं है ? और व्यवहार, जो काँचके टुकडे समान है, हम सच्चा मानते हैं और उसके भरोसेपर माल मारते हैं अर्थात् मौज उडाते हैं सो क्या इसका उत्तर नहीं देना पडैगा ? काँचके टुकडेको हीरा माननेवालेका तो कभी न कभी जेलसे छुटकाराभी हुआ परंतु हम जो झूंठी मायाको सच्ची समझरहे हैं और उसीके भरोसेपर कूदते फाँदते हैं, नरकमें गये विना कभी छूटही नहीं सकैंगे !

भाइयो ! मायाको त्यागना कुछ सुगम काम नहीं है ! उसमें तो वडे २ महात्माभी चक्कर खाचुके हैं ! माया त्यागनेके झगडेमें न लगो परंतु ईश्वरके पवित्र नामको पकड रक्खो, इस नामकी महिमा ऐसी है और इस नाममें ऐसा वल है कि, जैसे २ नामस्मरण बढता जायगा वैसे २ माया आपही आप घटती चली जायगी. इस लिये संसारको थोडी देरका सपना समझो और सुखदुःखमें ईश्वरकी इच्छाके अधीन हो नामस्मरण करो ! नामस्मरण करो !

कवित्त।

नाम लिये पूतको पुनीत किये पातकीश, आरति
निवारी प्रभु पाहि कहे फीलकी । छलिनकी छोडीसी

निगोडी छोटी जाति पांति, कीनी लीन आपमें भामिनी भोडे भीलकी ॥ तुलसी औतारिबो बिसारिबो न अन्त, मोहुँ नीके है प्रतीति रावरे सुभाव शीलकी । देव तो दयानिकेत देत दाद दीननकी, मेरी बार मेरेही अभाग नाथ ढील की ॥ १ ॥

२५६ शास्त्रोंका पार नहीं पाया जासकता, इस लिये उनमेंसे तुम ले सको उतना तत्त्व लेलो !

मिठाईकी दूकानमें सैकडों प्रकारकी मनों मिठाई होती है, जैसे लड्डू, जिलेबी, खाजा, खुरमा, मोहनभोग, बरफी, पेडा, गुलाबजामुन आदि परंतु उन सबको हम खरीद नहीं सकते, खरीदलें तो खा नहीं सकते और जो खा भी लें तो पचा नहीं सकते. हां ! इतना हम करसकते हैं कि उसमेंसे जिस प्रकारकी मिठाई हमको अधिक प्रिय लगती हो उस प्रकारकी मिठाई आवश्यकताके अनुसार खरीदकर खालें और वह बिना किसी प्रकारके व्याधि सहे पाचनभी होसकती है, इसी तरह हमारे शास्त्र हैं, सो भी मिठाईकी दूकानहीके समान हैं जुदी २ प्रकारकी मिठाईकी तरह शास्त्रोंमेंभी ज्ञान, भक्ति, कर्म, योग, अतिथिसत्कार, व्रत, दान, तप, यज्ञ, तीर्थ, देशसेवा, दीनसेवा, नामस्मरण, कुटुंबपालन, संन्यास आदि सैकडों प्रकारके धर्म वर्णित हैं. यद्यपि ये सारेही धर्म हमको अच्छे लगते हैं परंतु एक मनुष्य इन सबको पाल नहीं सकता और न सबका रहस्यही समझमें आसकता, इस लिये देश, काल, संयोग, साधन और अपनी रुचिके अनुसार तुम जिसको सुगमतासे करसको उसी मार्गको ग्रहण करलो. तात्पर्य यह कि मिठाईकी सारी दूकान खरीद लेनेकी झंझटमें न पडो परंतु उसमेंसे जो तुम अच्छीसे अच्छी समझो वही अपनी आवश्यकताके अनुसार खरीद लो तो तुम्हारा काम बनजायगा

क्योंकि उनमेंसे सबहीमें स्वादिष्ट होने, भूख मिटाने और जीवनको टिका रखनेका गुण है वेसेही धर्मकी कोईभी मिठाई खानेसे आनंद तृप्ति और अनंत जीवन मिलता है इसलिये भाइयो ! जो लंवे झग-डेमें न पडकर थोडेहीमें काम बनाना हो तो अपने स्वभाव और संयोग तथा साधनके अनुसार तुमको रुचे और तुम जिसे ले सको वही मिठाई पसंद करो तो तुम्हारी भूखभी मिट जायगी और कामभी बन जायगा.

शास्त्रोंके समुद्रमें गोता मारनेका काम चाहे जिस मनुष्यसे नहीं हो सकता. यह तो किसी भाग्यशाली साधु संन्यासीका और पंडितका काम है ! हम तो गृहस्थ हैं और कुटुंबजाल और दुनियांदारीमें फँसे-हुए हैं इससे उस समुद्रके किनारेपर खडे रहकर अच्छी २ सीपें चुनलें तबहीं बहुत है. हम दूकानभरकी मिठाई खरीद नहीं सकते और शास्त्रके समुद्रमें गोता नहीं मारसकते ! हमको तो अपने काम लायक मिठाई मिलजानेसे संतोष करलेना चाहिये जो धीरजके साथ भक्ति और सत्संगमें लगे रहोगे तो प्रभुकृपासे इतना पालेना कुछ कठिन नहीं है.

दोहा—रामनाम मणि दीप धर, जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहरे, जो चाहत उजियार ॥

२५७ पापसे बचनेके लिये सदा परमेश्वरको याद करते रहो !

एक युवा पुरुष अपने पिताका चित्र जेवमें सदा साथ लिये फिरता और जवतव उसे देखा करताथा. एक दिन उसके एक मित्रने पूँछा "भाई ! यह चित्र किसका है और इसे तू वारवार क्यों देखाकरता है ?"

उसने उत्तर दिया " मित्र ! यह मेरे पिताका चित्र है मेरे पिता बहुतही भले और प्रतिष्ठावाले हैं और मुझपर बडा प्रेम रखते हैं मैं वारवार चित्रको इसीलिये देखताहूं कि जिसमें उनकी याद बनी रह-नेसे मेरे हाथसे कोई ऐसा काम न हो जो उनको बुरा लगे. "

इसी तरह हमकोभी हमारे महान् पवित्र पिता दयालु ईश्वरका प्रतिपल स्मरण रखना चाहिये, जिसमें उसके नामके बलसे बुरे कामों और बुरे विचारोंसे बचसकें. भाइयो! पापसे बचनेके लिये पवित्र ईश्वरके नामको अपने हृदयमें पूर्णप्रेमसे भर रक्खो! पूर्ण विश्वास-पूर्वक भर रक्खो!

२५८ कमलके पत्ते पानीमें रहते हैं तबभी उनपर पानीका असर नहीं होता, वैसेही भक्तलोग जगत्में रहते हैं तबभी उनपर जगत्का मोह असर नहीं करता.

साधारण लोगोंमें और भक्तोंमें क्या अंतर है? जैसे और लोगोंको खाना पीना पडता है, बातचीत करनी पडती है, चलना फिरना पडता है और दुनियांदारीका कामधंधा करना पडता है वैसेही भक्तोंको भी वे सारे काम करने पडते हैं. तब भक्तमें और जगतमें अंतर क्या? अंतर इतनाही है कि, व्यवहारी लोग जो काम करते हैं वह अपने अहंकारसे और अपने स्वार्थसे करते हैं, परंतु भक्तजन जो कुछभी करते हैं वह ईश्वरके अर्पण करके ईश्वरकेही लिये करते हैं. इससे भक्त-जन तो निर्लेप आसक्तिरहित रहते हैं और व्यवहारी लोग आसक्त होकर काम करनेसे बंधनमें पडते हैं. भक्तमें और जगत्में इतना अंतर है कि, जीभ जैसे नाना प्रकारके चिकने पदार्थ खाती है तबभी उसपर चिकनापन असर नहीं करता, मगर पानीमें रहने परभी सदा सूखाही रहता हैं, कमल पानीमें होता है तबभी उसपर पानीका असर नहीं होता, सूर्य भगवान् अच्छी और बुरी सबही वस्तुओंपर प्रकाश करता है तबभी उसपर उनका गुणदोष नहीं लगता और आग सर्वभक्षी होनेपरभी पुण्यपापसे अलग है वैसेही भक्तजन जगत्में रहते हैं तबभी वे जगतके मोहसे दूर रहते हैं,क्योंकि वे अपनी आ सक्तिसे काम नहीं करते हैं और जो करते हैं वह भी ईश्वरके निमित्त करते हैं अर्थात् देखनेमें वे हमारेजैसेही हैं और रहतेभी हमारेही पास हैं परंतु तबभी वे आचरणमें हमसे श्रेष्ठ हैं और हमसे न्यारे हैं.

भाइयो ! ऐसे उत्तम भक्तोंको प्रभुके प्यारे जनोंको अपनी और उनकी योग्यताके अनुसार मान दो और वैसे उत्तम बननेका यत्न करो वैसी उत्तमता धर्मसे, भक्तिसे और प्रभुकी आज्ञा पालनेसेही आसकती है. इस लिये जैसे बने वैसे ईश्वरकी आज्ञा पालनेका पूरा २ ध्यान रक्खो ! तुम ज्यों ज्यों ईश्वरकी आज्ञा अधिक २ पालते जाओगे त्यों त्यों दुनियांदारीका मोह तुमको कम होता जायगा और काल पाकर जगत्में रहते हुएभी भक्तजनोंकी तरह दुनियांसे न्यारे रहसकोगे !

२५९ भक्तिमें लगे रहो ! फलकी उतावली मत करो !

भक्तिका जवाब मिलनेमें देर लगे तब समझो कि अभी हमारी भक्ति बालकअवस्थामें है जैसे पिताका वारसा पुत्रको योग्य उमरका हुए बिना नहीं मिलता वैसे प्रभुकी ओरसे मिलनेवाला शांतिरूपी इनाम पानेके लिये हमारी भक्तिभी बडी उमरकी होनी चाहिये जैसे पुत्र पिताको वारसा पानेका हकदार है वैसेही हमभी जबसे ईश्वरकी भक्ति करने लगे तबसे ईश्वरी आनंद पानेके हकदार होचुके परंतु मिलैगा तबहीं जब हम योग्य उमरके होजायँगे. इनाम पानेकी हडबडी मत करो, परंतु भगवत्सेवा करके साबित करदिखाओ कि हम ईश्वरीय कृपा, ईश्वरीय आनंदके हकदार हैं. जो हमारा सेवा करना बराबार जारी रहैगा, जो हमारी आंतरिक प्रार्थना निरंतर जारी रहैगी तो समय आनेपर हमको उसका बदला मिले बिना नहीं रहैगा. इसलिये भाइयो ! धीरजसे सत्संगमें, परमार्थमें, मनोनिग्रहमें, भक्तिमें लगे रहो ! इसका फल बहुत बडा है. तुम अनुभव करसकते हो मानसकतेहो और कल्पना करसकतेहो उससेभी भक्तिका आनंद अधिक है. इसलिये धीरजसे भक्तिमें लगे रहो ! भक्तिमें रंगे रहो ! ! फल पानेकी हडबडी मत करो ! ! !

२६० मैं ज्ञानीका गुरु हूं परंतु अज्ञानीका दास हूं.

किसी गांवमें एक भला आदमी रहता था वह प्रसंगोपात्त सब लोगोंको अच्छे उपदेश दिया करता था और इसीसे बहुत आदमी

उसका बडा मान करते थे. एक मूर्ख मनुष्यको यह बात अच्छी न लगी. वह मनमें कहने लगा कि " ये लोग इसका इतना मान क्यों करते हैं ऐसे तो संसारमें सैकडों आदमी पडे हैं मुझे तो कोई पूँछ-ताही नहीं है और यह सबका गुरु बन बैठा यह क्या बात है ? इसका गुरुपन भुलादूं तबही मैं सच्चा ! एकही ऐसी तजवीज निकालूं कि बच्चाराम अपने आपही रास्ता पकडैं ? "

बस ! एक दिन वह रास्तेमें जा बैठा ज्योंही वह भला आदमी उस मार्गसे निकला कि उस मूर्खने लाठी उठाकर उससे पूँछा " क्या सब लोगोंका गुरु तू ही है ?

उसने उत्तर दिया " क्यों भाई ! तुझको क्या काम है ? "

उस मूर्खने कहा " काम क्या है ? मुझे उसकी खबर लेनी है ! मुझे उसकी पूजा करनी है ! "

गुरुजी चेत गये और बोले "भाई मैं तो ज्ञानीका गुरु हूं और अ-ज्ञानीका दास हूं ! तेरा तो मैं दास हूं. गुरु नहीं हूं. मुझे तू क्यों मारता है?"

जब इस तरहकी अनेक बातें नम्रताकी कहीं तब गुरुजी उस मूर्खके हाथसे छूटने पाये.

इसी तरह अच्छे गुरु हैं सो उनहींके लिये हैं जो नया जाननेकी इच्छा रखते हैं, धर्मपर प्रेम रखते हैं और जिनको प्रभुके नामसे नेह है, आसुरी वृत्तिके लोगोंके लिये वे गुरु नहीं हैं, ऐसे अदेखे, नास्तिक लुचे और आधे भ्रष्ट लोग गुरुओंपर पत्थर फेंकैं तो क्या उनका गुरुपन मिटसकता है ? कदापि नहीं वरन् ऐसा होनेसे तो लोगोंका उनपर औरभी अधिक प्रेम बढता जाता है, क्योंकि वे ऐसे लुचोंकी कुछभी परवाह नहीं करते, वरन् दिन २ सुधरते जाते हैं, दिन २ अपना अभ्यास बढाते जाते हैं और दिन रात अपना औरोंको सुधारते तथा प्रभुके मार्गपर लानेहीमें लगाते हैं, इससे समर्थ प्रभु उनकी सहायता करता है इस लिये याद रखो कि, अज्ञानियोंके लाभ न उठा सकनेसे गुरुओंका गुरुपन कम नहीं हो सकता, क्योंकि उनको

गुरुपन महत्त्वका आधार ऐसे आसुरी वृत्तिवालोंके कहनेपर नहीं है परंतु उस महत्त्वका संबंध तो ईश्वरके नामके साथ जुडा हुआ है, इस लिये जबतक गुरुजन ईश्वरके पवित्र नामको पकडे रहैं और ईश्वरकी आज्ञाके अनुसार देश कालका विचार करके चलैं तबतक ईश्वर उनकी सहायता करता है, और जबतक उनका चलन बरताव ठीक रहै तबतक उनको गुरु माननेको और उनको उचित सहायता देनेको हम हमारे धर्मसे बँधे हुए हैं.

२६१ हमारा बडप्पन वैभव भोगनेमें नहीं है, परंतु धर्म पालनेमें है.

अपने सुख और अपने स्वार्थको तो पशुभी समझते हैं. पक्षी हमसे अधिक विषय भोगते हैं. कीडे अच्छा २ खाना पाते हैं. कुत्ते बढिया गाडीमें बैठकर सैर करते हैं मक्खियां सेंट और पोमेटमसेभी बढिया सुगंध सूंघती हैं. चिऊंटियां नित्य प्रति शक्कर खाती हैं, कबूतर हमसे अधिक विषय भोगसकता है. गायको सब लोग पूजते हैं और सिंहसे सब डरते हैं जो इस तरहपर स्वार्थ साधनेसे और वैभव भोगनेसेही सच्चा महत्त्व हो तो हमारी अपेक्षा वह और प्राणियोंमें अधिक है, परंतु नहीं ! इसका नाम सच्चा महत्त्व नहीं है सच्चा महत्त्व परमार्थमें है ! हमारा बडप्पन तो धर्ममें है ! अपने स्वार्थ तो हलके प्रकारके पशु पक्षीभी समझते हैं और जो हमभी वैसे स्वार्थमें फँसे रहैं तो फिर हममें और पशुओंमें अंतरही क्या ? कवि कहते हैं:—

४६ दोहा ।

काम क्रोध निद्रा क्षुधा, भय पशूनकेहु होय ।
धर्म अधिक मानुषविषै, ताबिन पशुसम जोय ॥

२६२ दुःखके समयमेंभी प्रभुको नहीं भूलते वेही सच्चे भक्त हैं.

जब पत्ते गिरजाते हैं तबहीं वृक्षोंपर रहनेवाले पक्षियोंके घोंसले दिखाई देने लगते हैं, परंतु जबतक पत्ते सघन रहते हैं

तवतक घोंसले स्पष्ट दिखाई नहीं देते वैसेही जब दुःख पडता है तबहीं मनुष्यकी परीक्षा होती है. आस पासके वैभवरूपी पत्ते गिर-जानेसे दुःखके समय हमारे हृदयके भाव अधिक स्पष्टरूप पर दिखाई देने लगते हैं अर्थात् धर्मकी उस समय सच्ची परीक्षा सुगमतासे हो सकती है. जबतक सब प्रकारकी सुविधा हो, एकको बुलानेमें तीन नौकर दौडतेहों, और एक वस्तु मँगानेमें ग्यारह वस्तु आपहुँचतीहों, तबतक धर्मकी सच्ची परीक्षा नहीं होसकती किंतु दुःखमें सच्ची परीक्षा होस-कती है. इसलिये दुःखके समयमेंभी जो भक्ति न छोडे परंतु अधिक २ प्रभुमें लीन हों वेही सच्चे भक्त हैं. सुविधाके समय अथवा किसी लोभ लालचमें आकर मंदिरमें हरएक मनुष्य दौडकर जासकता है परंतु दुनियांदारीके तथा शरीरके दुःखके समय भी जो प्रभुको न भूले और अपने धर्ममें न चूकें वेही सच्चे भक्त हैं.

भक्तिमेंभी धनका महत्त्व तो लगाही रहता है. जैसे व्यापारमें अच्छा नफा मिलाहो तब तो चांदीके पलने, फूलके हिंडोले, नई २ पिछवाइयें अर्थात् पीठपरके परदे और उत्सवोंपर न्योते बुलावोंकी बडी धूमधाम चलती है और बहुतसे सेवक हों तथा सब प्रकारकी सुविधा हो तब तो यह छूगया और वह मिटगया आदि बातें होती हैं, परंतु जब तंगी हो, आपत्ति हो अथवा दुःख हो तबभी ईश्वरका स्मरण बनारहै तो मनुष्यकी बलिहारी है. परंतु ऐसा बनता उनहीं लोगोंसे हैं जो सच्चे भाग्यशाली हों, प्रभुके कृपापात्र हों और पूर्ण प्रेमी भक्त हों. नहीं तो बडे २ सेठ साहूकार जब बीमार पडते हैं तब जितनी बार डाक्टरोंको याद करते हैं उतनी बार प्रभुको याद नहीं करते. इसीसे महात्माओंने कहा है कि धर्मकी परीक्षा दुःखहीके समयमें होती है और उस परीक्षामें जो ठहरता है वही प्रभुको प्रिय है ।

२६३ प्रभुका नाम लिखकर गलेमें बाँधनेसे कुछ लाभ नहीं होता, परंतु हृदयमें धारण करनेसे लाभ होता है.

हमारे बहुतसे भाई श्रीरामका नाम और श्रीनाथजीका नाम लिख-कर गलेमें लटकाया करते हैं परंतु यह केवल जेवरकी तरह बाहरी

शोभाहीके लिये पहनते हैं परंतु उस पवित्र रामनामका असर न तो वे अनुभव करसकते हैं और न कुछ अच्छे काम करके लोगोंपरही उसका अच्छा असर करसकते हैं. इस तरह अपनेतईं अच्छा बतानेके लिये अथवा औरोंको अच्छा दिखानेके लिये प्रभुके नामके तावीज गलेमें लटकाना परंतु उसके अनुसार चलना बिलकुल नहीं, बडी लज्जाकी बात है. यह तो लोगोंको और प्रभुकोभी धोखा देना है, क्योंकि इस तरहपर तावीज गलेमें लटकानेका अर्थ यही दिखाना है कि हम प्रभुके सच्चे भक्त हैं और प्रत्येक काममें प्रभुको याद करते हैं, तथा जिस तरह हमारे गलेमें प्रभुका नाम लटकता है वैसेही प्रभुका पवित्र नाम हमारे हृदय-मेंभी अंकित होरहा है अर्थात् उस नामके बलसे हम कभी पापकर्म नहीं करेंगे. अपनी भक्तिके लिये लोगोंको ऐसा विश्वासपात्र दिखाना और प्रभुके आगे इस प्रकारका स्वीकारपत्र पेश करनाही प्रभुके नामको गलेमें लटकानेका अर्थ है. जो इस अर्थके अनुसार आचरण न हों तो ऐसे २ सैकडों तावीज लटकानेसेभी कुछ लाभ नहीं. इस लिये रामनामी जैसे सोने और हीरेमें जडवाकर गलेमें लटकाई जाती है वैसेही प्रभुका नाम परमार्थ और मनोनिग्रहमें जडकर हृदयमें धारण करना चाहिये तबहीं प्रभु प्रसन्न होसकताहै और बाहरी बुरे असर रुकसकते हैं. केवल सुंदर २ कंठियां और अच्छे २ तावीज लटकानेसे प्रभु प्रसन्न नहीं होता और बाहरी बुरे असर नहीं रुकसकते परंतु सर्व शक्तिमान् एकमात्र परमेश्वरके महान् नामको सर्वभावसे हृदयमें धारण करनेसेही वैसा हो सकता है. इस लिये दयालु प्रभुके नामके तावीज और अनंत ब्रह्मांडके नायकके नामकी कंठियां लोगोंको ठगनेके लिये और अपने आपको ठगकर ईश्वरके अपराधी बननेके लिये मत बांधो! किंतु उसके हेतुके अनुसार आचरण करो! तात्पर्य यह कि, तावीज कंठी भलेही बांधो परंतु सचमुच भक्त बनो मनमें कपट रखकर बांधोगे तो उसका कुछ फल नहीं. वह तो उलटा पाप है, क्योंकि ऐसा करना धोखा देनाही है. इस प्रकारकी धोखा-

देही न होसकनेका उपाय यही है कि सर्वात्मभावसे प्रभुके शरण जाना और जितनी बनसके उतनी दुनियांमें भलाई करना.

४७ पद ।

नाना रूप नाना जाके रंग । नानाभेप कराहि इक रंगरंग ॥
नानाविध कीनो विस्तार । प्रभु अविनाशी एकंकार ॥
नाना चरित करे छिनमाहीं । पूरिरह्यो पूरन सबठाहीं ॥
नानाविधिकर बनत बनाई । अपनी कीमत आपे पाई ॥
सबघट जिसके सबतिसके ठाउँ। जपजप जीवै नानक हरिनाउं॥

२६४ हमपर ईश्वरकी अनंत दया है उसका पहले उपकार मानकर तब दूसरी अधिक कृपा मांगो !

एक स्त्री जबतक कहाकरती " मैंने पुरुषोत्तम मासमें एक बार भोजन किया, श्रावण महीनेके सोमवार किये, चार महीने चौमासकी एकादशी की, डाकोरजीकी मनौती मानी, महादेवपर रुद्री कराई, अंबाजीपर घाट (चुनरी) चढाई, सत्यनारायणका व्रत किया ताजियोंपर नारियल चढाया, पीपलमें पानी डाला, ब्राह्मण भोजन कराया और नित्यप्रति माला फेरी परंतु तबभी ईश्वरने मुझपर कृपा नहीं की. "

उसकी यह बात सुनकर एक भक्तने पूँछा " बाई ! तुम ईश्वरसे क्या मांगती हो ? "

बुढियाने कहा " महाराज ! मेरे एकही पुत्र है. उसका विवाह हुए आज दश बरस होगये और बहूकी उमरभी पूरे उन्नीस बरसकी होगई तबभी महाराज ! उसके कोई लडका वाला नहीं हुआ, मैं बूढी होगयी और चाहतीहूं कि पोतेको गोदमें खिलालूं तो कलेजा ठंढा होजाय परंतु प्रभु कृपा नहीं करता. "

बुढियाकी यह बात सुनकर भक्तको कुछ हँसी आई और साथहीमें ईश्वरके लिये लोगोंके विचार जानकर उसको कुछ दुःखभी

लगा. उसने कहा माजी ! वगलमें बचा और गांवमें ढिंढोरावाली बात क्यों करतीहो ? ईश्वरकी कृपा विना एक पलभरभी तो रहा नहीं जासकता. तुम कहती हो कि ईश्वरकी कृपा नहीं है क्या यह सच है ? ईश्वरकी कृपा विनाही क्या तुमको इस पुण्यभूमिमें जन्म मिलगया ? ईश्वरकी कृपा विनाही क्या तुम इतनी उमर भोगरही हो ? ईश्वरकी कृपा विनाही क्या तुम भली चंगी वनीहुईहो ? ईश्वकी कृपा विनाही क्या तुमको पुत्र प्राप्त होगया ? ईश्वरकी कृपा विनाही क्या तुम्हारे पुत्रका विवाह होगया ? ईश्वरकी कृपा विनाही क्या वहू वेटा तुम्हारी सेवा करता है ? ईश्वरकी कृपा विनाही क्या तुम मंदिरमें भक्ति करने जासकतीहो ? और ईश्वरकी कृपा विनाही क्या तुम सव जीते जागतेहो ? ईश्वरकी इतनी वडी कृपा है सो तो तुम्हारे किसी गिनतीमेंही नहीं है ? तुम्हारे पुत्रके पुत्र हो तवही क्या ईश्वरकी कृपा समझी जावे ? किसीकी मन विचारी वात क्या कभी हुई है ? प्रभुने इतनी वडी कृपा रक्खी है उसका तो क्या कुछभी नहीं ? वह तो क्या मुफ्तही ? इसमें तो क्या तुम्हारा हकही होगा ? जिसने तुमपर इतनी वडी कृपा की है उस दयालु ईश्वरको तुमने क्या कभी धन्यवाद दिया है ? जो ईश्वरका उपकार मानै वह क्या कभी ईश्वरकी शिकायत करताहै ? वाई ! तुमपर ईश्वरने जो पहले कृपा की और अवभी कृपा कररक्खी है प्रथम उसके लिये ईश्वरका उपकार मानो और फिर दूसरी कृपा माँगो तो ईश्वर अवश्य तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करैगा ! ”

जरा इस वातको तो विचार करो कि, ईश्वरनें हमपर जितनी कृपा पहलेहीसे कररक्खी है वह कितनी वडी है ! हमको ऐसे उत्तम वर्णमें जन्म देनेके वदले जो ईश्वरने नीच वर्णमें अथवा पशुपक्षीमें जन्म दिया होता तो हम क्या करलेते ? इस पुण्यभूमिमें जन्म देनेके वदले भगवान् हमको अरवस्थानके रेतीले मैदानमें, अफ्रिकाके मनुष्यभक्षी जंगलोंमें या यूरोपके उत्तरीय वर्फवाले देशोंमें

जन्म देदेता तो हम कैसी बुरी दशामें जा पडते ? कितने मनुष्य अंगहीन होते हैं ? कोई अंधे होते हैं, कोई लंगडे होते हैं, कोई बहरे होते हैं और कोई टूटे होते हैं, परंतु हम वैसे नहीं हैं सो तो देखो ! कितने आदमी कोढी क्षय रोगवाले और अन्य रोगोंसे पीडित होते हैं परंतु हम वैसे नहीं हैं सो भी तो देखो ! प्लेगसे हैजेसे, ज्वरसे और दूसरे रोगोंसे हजारों लाखों आदमी हमारे देखते २ फुँकगये और हम वैसेके वैसे जीते जागते बैठे हैं इस उपकारको तो देखो, हजारों मूर्ख मनुष्योंकी अपेक्षा हमको परमेश्वरने अच्छी समझ शक्ति दी है इसका तो विचार करा ! दुनियांमें कितने आदमी अन्न विना मरते हैं और हम कैसे माल उडाते हैं. क्या यह ईश्वरकी कृपा नहीं है ? बहुतसे मनुष्य पुत्रको तरसते हैं परंतु हम हमारे मावापके पुत्र हैं. हमारे मावापको पुत्रके लिये नहीं तरसना पडा सो क्या ईश्वरकी कम कृपा है? हमारे कुटुंबमें संप है सो क्या ईश्वरकी कृपा नहीं है ? हमको जल, वायु, अग्नि आदि सब पदार्थ हमारी आवश्यकताके अनुसार मिलते हैं सो क्या थोडी बात है ? भाई ईश्वरकी कृपा विना हम एक श्वासभी नहीं लेसकते ! एक मिनिटभी नहीं जी सकते ! जरा विचार तो करो कि, हम घरमें बैठे हों और ऊपरसे छत टूट पडे तो हम क्या करसकते हैं ? मार्गमें चलते २ ऊपरसे बिजली टूट पडे तो हमारा क्या जोर है ? रेलगाडीमें बैठकर कहीं जाते हों और अकस्मात् रेल लडजांय तो हमारा कुछ वश चलसकताहै ? कहीं भोजन करने जांय और खानेसे हैजा हो जांय तो क्या वश है ? कहीं नाच तमाशे देखने जायँ और आग लग उठे तो हम उसका क्या करसकते हैं ? रातको बिछौनेमें सोते २ ही सांप काटखाय तो हमारा क्या वश चलसकता है ? हवा खाने जाते समय रास्तेमें घोडे भडक उठें और गाडी टूटकर हमारी हड्डियां चूरचूर होजायँ तो क्या जोर है ? ऐसी २अनेक आपत्तियोंमेंसे ईश्वरने हमको आजतक बचाया है सो क्या कम कृपा है ? इस तरह ईश्वरकी कृपा हममें भरीहुई है और हमारे सन्मुख छाई हुई है उसको भूलकर

दूसरी कृपाकी खोजकरना तो ' बगलमें बच्चा और गाँवमें ढिंढोरा ' करनां है. इसलिये भाइयो ! ईश्वरकी विशेष कृपा माँगनेकी इच्छा रखनेसे पहले अखंड वर्तमान कृपाके लिये सच्चे मनसे उपकार मानो ! केवल मुँहसे थोडे शब्द कहडालनेमें ही ईश्वरका उपकार नहीं माना जाता, परंतु उस उपकारको क्षण क्षणमें अपने जीवनमें अनुभव करनाही सच्चे भक्तका लक्षण है.

२६५ धर्मका सार जीवमें दया और नाममें भक्ति.

धर्मके लिये शास्त्रोंमें इतनी बातें लिखी हैं, इतने नियम बांधे हैं और इतनी बारीकियां की हैं कि जिसका किसीभी दिन पार नहीं आसकता. नीतिशास्त्र इतना लंबा है और कर्मकांड इतना बडा है कि, जमाने निकलजाँय तबभी पूरा नहीं होसकता, परंतु महात्माओंने विश्वासू जीवन व्यतीत करनेवालोंके लिये बहुतही सूक्ष्ममार्ग बताये हैं. महात्मा बुद्धदेवने कहा है कि, जीवमें दया और नाममें भक्तिही धर्मका सार है. प्राणीमात्रमें दया रखना और प्रभुका स्मरण करते २ प्रभुमय बनजानाही सब धर्मोंका तत्त्व है. वेदांतीभी इसी तरह बहुत थोडेसेमें सारा तत्त्व बतादेते हैं. महात्मा शंकराचार्यने कहा है कि—

' ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या '

ईश्वर सत्य है और जगत् मिथ्या है इसलिये सत्यको सोधो और मिथ्याको मिथ्या मानो ! तात्पर्य यह कि, संसारकी आसक्ति छोडकर ईश्वर पर प्रेम बढाओ ऐसा करनाही धर्म है. सब पुराणोंका, सब शास्त्रोंका, सब स्मृतियोंका और सब वेदोंका सार यही है कि, भक्ति और परमार्थ करना. हजारों विषयों और लाखों पुस्तकोंका यही तत्त्व है इन दोनों विषयोंको पकड अपने जीवनमें जो इनका अनुभव करताहै उसीको यह दुस्तर संसारसागर पार करना सुगम होता है. इसलिये भाइयो ! प्रभुके नाममें भक्ति और दुनियाके साथ भलाई इन दोनों बातोंको पकड रक्खो ! पकड रक्खो ! !

२६६ अपनी हलकी इच्छाओंको पार पाडनेके लिये अपनी अमूल्य भक्तिको मत बेचो ।

अपनी हलकी इच्छाओंको पूरा करनेके लिये और तुच्छ वस्तुओंको पानेके लिये अपनी अमूल्य भक्तिको ईश्वरके नामको बेच देना क्या लज्जाकी बात नहीं है ? बहुतसे साधुओंको हमने ऐसे कहते सुनाहै कि, ' हे रामजी ! थोडा गांजा तँबाकू भेजदे ! ' वैसेही बहुतसे ब्राह्मण कहते सुनाई पडते हैं कि ' प्रभु इस समय लड्डू नहीं भेजता. ' क्या यह दुःखकी बात नहीं है ? गाँजा फूंकने और लड्डू खानेके लिये भक्ति करना और प्रभुका नाम बेचना कितना बुरा है ? सो विचार करो ! पडोसियोंके साथ अथवा किसी दूसरेके साथ लडाई होजाय तब बहुतसी स्त्रियाँ कहाकरती हैं कि, ' रांड डाइनको प्रभु लेताभी नहीं है ! हे नाथ ! इस रांडका तो सत्यानाशही करदेना । '

हमारी प्रार्थनाएँ ऐसी होनी चाहिये क्या ? तब राक्षसोंमें और हममें अंतरही क्या ? हमारे बहुतसे भाई कहते हैं कि, " हे प्रभु ! हमारी तनख्वाह बढाना ! " क्या प्रभुको हमारी चिंता नहीं है ?

ऐसी हलकी २ और खराब वस्तुएँ मांगनेवालेकी हलकाई है और ईश्वरपर अविश्वास है, क्योंकि ऐसा करनेसे हमारेही मुँहसे हमारा प्रभुपर अविश्वास प्रगट होताहै. ऐसी २ तुच्छ और बुरी वस्तुएँ मांगना एक प्रकारसे प्रभुका अपमान करनाहै. किसी बडे राजाके पास जाकर यदि कहाजाय कि ' आप कृपा करकेमुझे कोई फटा पुराना कुरता दीजिये ' तो क्या यह ठीक है ? इससे राजाका अपमान होता और मांगनेवालेकी मूर्खता प्रगट होती है ! क्योंकि फटाटूटा कुरता तो किसी गरीब मनुष्यके पाससेभी मिलसकताहै ! राजासे तो कोई अच्छी और बडी वस्तु मांगना चाहिये. वैसेही सर्वशक्तिमान् प्रभुसे तो हमको निष्काम भक्तिही मांगनी चाहिये. थोडी तनख्वाह बढानेके लिये अथवा थोडे गांजे तंबाकूके लिये अपनी अमूल्य

भक्तिको नहीं वेचदेना चाहिये, और ऐसी हलकी वस्तु मांगकर ईश्वरका अपमान नहीं करना चाहिये.

४८ दोहा।

माँग चाहे मत माँग प्रभु, देइ हैं समय विचार।
चतुर्मास आये जलद, बरसै वारि अपार॥

२६७ अच्छे उपदेशका प्रभाव कभी खाली नहीं जाता.

साधुलोग कहते हैं कि, उपदेश है सो वीजसमान है. जो अच्छी जमीनमें बीज गिरजांय तो समय आनेपर उसमेंसे अंकुर फूटे विना नहीं रहता. वैसेही गुरुके उपदेशभी सदा खाली नहीं जाते. कहते हैं कि:—

कहींपर एक व्यास पंडित कथा कहताथा, कथामें उसने दूसरोंके अपराध क्षमा करनेके लिये अच्छा उपदेश किया. उस उपदेशसे प्रसन्न होकर कथा समाप्त होनेपर लोग उसके पास बहुत कुछ भेट रखने लगे उनमेंसे एकने लाकर पंडितके पैरोंके पास दो पत्थर धरे. तब किसीने उससे पूँछा "भाई! और लोग तो पंडितकी कथासे प्रसन्न होकर पैसे चढाते हैं और तू पत्थर रखता है इसका कारण क्या?"

उसने उत्तर दिया "पंडितजीने आज मेरा एक अपराध किया है इससे उनके शिरपर मारनेको मैंने दो पत्थर रक्खेथे परंतु अपराधको क्षमा करनेका उनका उपदेश सुननेसे मेरा क्रोध शांत होगया. इससे मैंनेभी उनका अपराध क्षमा करनेका विचार करलिया और जो पत्थर उनके शिरपर मारनेको इकट्ठे किये थे वे उनके पैरोंमें धर दिये."

भाइयो! उपदेशका प्रभाव ऐसा प्रबल है. इससे योग्य गुरुओंके मुखसे सदा अथवा जब बने तब जरूर धर्मका उपदेश सुनना चाहिये ऐसा करनेसे प्रथम तो हमारे दोष हमारेही समझनेमें आतेजाते हैं, फिर वे छूटते जाते हैं, फिर धर्ममें प्रवृत्ति होती जाती है और अंतमें सद्गुरुके उपदेशके प्रभावसे प्रभुमय होना बनसकता है. इस लिये अच्छा उपदेश सुननेका अवसर जहाँतक बन सकै वहाँतक कभी हाथसे नहीं जानेदेना चाहिये.

२६८ हमारी विजय कैसे हो ? धर्मकी तलवार और परमार्थकी देग चलानेसे ।

सिक्ख लोगोंके धर्मगुरु गुरु गोविंदसिंहसे उनके एक शिष्यने पूँछा " गुरु महाराज ! हमारी विजय कैसे हो ? "

तब उन ज्ञानी, भक्त और अनुभवी गुरुने कहा "तेग और देग चलाते रहो तो तुम्हारी विजय होसकती है. "

तात्पर्य यह कि तेग अर्थात् तलवार और देग अर्थात् खाना पकानेकी देगभी जन जारी रखना चाहिये. कोईभी मनुष्य किसीभी समय आवे तो उसको खाना खिलाना इसका नाम देग है. तेग और देगसे सिक्खोंकी तथा औरोंकी विजय हुई है. इतिहास जाननेवाले इस बातको स्वीकार करते हैं परंतु हमको अपनी आत्माकी विजयके लिये लोहेकी तलवार चलानेकी जरूरत नहीं है. हमको तो धर्मकी तेग और परमार्थकी देग चलाना चाहिये. जो यह तेग और यह देग चले तो हमारीभी विजय होसकती है इसमें कुछभी संदेह नहीं है. हमारी लडाई पापके साथ है. हमारी लडाई आसुरी वृत्तिके साथ है. हमारी लडाई हमारे अंतःकरणमें स्थित अहंकार तथा नीचताकी ओर ढुलकते हुए मनके साथ है. यह लडाई धर्मकी तलवार प्रभुके नामस्मरणरूप तलवार और परमार्थरूप देग चलती रखनेसे जीतनेमें आसकतीहै, इसलिये पापरूप शत्रुके साथ अधर्मरूप शैतानके साथ विजय प्राप्त करनेके लिये और प्रभुसे इस विजयका फलरूप मोक्ष प्राप्त करनेके लिये धर्मकी तेग और परमार्थकी देग सदा चलातेरहो ! विजय प्राप्त करनेका यही उत्तमसे उत्तम और छोटेसे छोटा मार्ग है.

२६९ जिसके हृदयमें भगवदावेश भरजाता है उसको घर खो देना भी खटकता नहीं है.

भक्तजन प्रभुके लिये गाते हैं:—

घर खोया नहीं खटके, साधो ! घर खोया नहीं खटके ।

धन्य है ! ऐसा अनुभव लेनेवालोंको धन्य है ! जिसको प्रभुके नामकी लगन लगगई है, जिसने भगवद्रस चख लिया है, जिसने भक्तिके सुखोंका स्वाद पालिया है उसको तोः—

घर खोया नहीं खटकै, साधो ! घर खोया नहीं खटकै।

इतनाही नहीं परंतु त्रिभुवन खोयाभी नहीं खटकता इसीलिये वैष्णव गाते हैंः—

४९ पद।

ब्रज प्यारो वैकुंठ नहीं जाऊं नहीं जाऊं नहीं जाऊं
नहीं जाऊं ब्रज प्यारो रे वैकुंठ नहीं जाऊं ॥ टेक ॥
कालिंदीजल स्नान करूं नित, नंदनंदन जूंठन खाऊं॥ १ ॥
रासविलास लखूं निशिवासर, गोविंदके गुन गाऊं॥ २ ॥
रामजीवन जीवन इमि बीतै, तो पुनि जग नहीं
आऊं ॥ ३ ॥

तात्पर्य यह हमको जो प्रभुसेवा करनेको मिलतीहो तो स्वर्गकाभी काम नहीं है और मोक्षकाभी काम नहीं है, भाइयो ! यह केवल मुँहसे कहडालनेकी बात नहीं. भर्तृहरि गोपीचंद बुद्ध आदि सैकडों महात्मा प्रभुके नामपर अपना राजपाट छोडकर चले गये हैं. केवल हमारेही देशमें यह बात हुई हो सो नहीं है परंतु भिन्न भिन्न देशोंमें और भिन्न २ धर्मोंमें भी ऐसा होता आया है. यूरोपमें बहुतसे राजाओंने और सैकडों राजकुमारियोंने प्रभुके नामपर अपना २ वैभव छोडकर साधु बन मठोंमें अपना जीवन व्यतीत किया है और राज्यकी सुखकी अपेक्षा अलख जगानेके सुखमें उनको अधिक आनंद मिला है.

प्रभुके नामपर घर छोडदेना नहीं खटकता सो बिलकुल सत्य है। क्यों कि प्रभुप्रेम सब प्रेमसे बढकर है. छोटी २ वस्तुके प्रेमसेही हम कैसे मत्त होजाते हैं ? देखो तो सही एक बालकको खिलानेमेंही माताको कितना आनंद आता है ? वह आनंद बच्चे पर उत्पन्न होने-

वाले अपने हृदयके प्रेमसे होता है. एक स्त्रीको अच्छी साडी और अच्छे गहने पहननेमें कैसा आनंद होताहै ? सुंदर स्त्रीको अपना रूप देखनेसे कैसा आनंद होता है और वह कैसी वारवार अपना मुँह कांचमें देखती है और जो कोई उसकी सुंदरताकी प्रशंसा कर देताहै वह अपने मनमें कैसी पागलसी वनजाती है ? स्त्रीको औरोंको हाव भाव कटाक्ष दिखानेमें कैसा मजा आता है ? अपने प्रियपतिको मिलने जातेसमय स्त्रीके पैरोंमें कितनी ताकत आती है और मनमें कैसा आह्लाद होता है सो तुम जानतेहो ? प्रशंसा पानेसे स्त्री तथा पुरुषको कैसी खुशी होती है सो तुमको खबर है ?

ऐसी छोटी २ बातोंका प्रेम मनमें भरजानेसे जब मनुष्यको इतना आनंद होता है और मनुष्य इतना बदल जाताहै तब जिसके हृदयमें पूरा २ भगवदावेश भरजाय उसकी कैसी उत्तम स्थिति हो जाती होगी सो तो विचारो ! जिसने ऐसे भक्तिरसका आनंद लूटा हो, जिसने ऐसे हरिरसका रस चाखा हो उसको घर खोना कैसे खटकै ? वैसोंको तो त्रिभुवन खोनाभी नहीं खटकता इस लिये जिस आनंदमें सब आनंदोंका समावेश होजाताहै उस प्रभुके आनंदको उस प्रेमको प्राप्त करनेका यत्न करो तो संसारके दुःख नहीं उठाने पडेंगे और घर खोना नहीं खटकैगा, इतनाही नहीं परंतु अंतमें प्रभुप्रेमके कारण माया अपने आपही छूटती जायगी और प्रभुके आनंदसे व्यवहारमें रहनेपरभी और घरमें रहते हुएभी जीवन्मुक्त होजाताहै इस लिये भाइयो ! अहर्निश प्रभुप्रेम और प्रभुआनंद पानेकीही भावना रक्खो !

राग कानडा ।

मैं तो हरिगुण गावत नाचूंगी ॥ टेक ॥ नाचूंगी मैं तो
नाचूंगी, मैं तो हरिगुण गावत नाचूंगी । अपने महलमें
बैठ बैठकर, गीता भागवत बाचूंगी ॥ मैं तो० ॥ १ ॥
ज्ञान ध्यानकी गठरी बांधकर, हृदयकमलमें राखूंगी ॥

मैं तो० ॥ २ ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर, सदा प्रेमरस चाखूंगी ॥ मैं तो० ॥ ३ ॥

२७० मायाको जीते विना प्रभु पहँचाना नहीं जाता और भक्ति बिना माया जीती नहीं जाती इसलिये भक्ति करो !

प्रभुको पहँचाननेके लिये मायाको जीतना चाहिये, परंतु मायाको जीतना कुछ सुगम बात नहीं है, क्योंकि माया स्त्री जाति है इससे स्वभावसेही स्त्रियोंकी तरह मोहिनरूप है ऐसी दैवी मोहिनी और आकर्षण करनेवाली शक्तिरूप मायाको हम ज्ञान वैराग्यसे जीतना चाहते हैं परंतु ज्ञान और वैराग्य पुरुषरूप हैं और पुरुषरूप होनेसे स्त्रीजाति मायाके आगे विजय प्राप्त नहीं करसकते, क्योंकि समय आनेपर वे मायामें अवश्य फँसजाते हैं. यद्यपि ज्ञान और वैराग्य बहुत जबर-दस्त हैं परंतु मायाके आगे बहुत समय तक ठहर नहीं सकते, मायाके शत्रु हैं और ऋषि मुनियोंने इनका आश्रय लियाहै तबभी ज्ञान और वैराग्य दोनों मायाके स्त्रीचारित्रसे कईबार हारगये हैं, हारजाते हैं और हारजायँगे. इस लिये हमारा सूखा ज्ञान और थोडा बहुत वैराग्य मायाको जीतलेगा ऐसा विश्वास रखकर चुपचाप बैठेरहना हानिकरता है. अकेले ज्ञान और वैराग्यसे माया जीतनेमें नहीं आसकती क्योंकि माया स्त्रीजाति है. इससे इसके सामने तो कोई दूसरी स्त्रीही होनी चाहिये, क्योंकि स्त्रीपुरुष तो एक दूसरेकी मोहिनीमें दबजाते हैं परंतु स्त्रीके तेजसे स्त्री नहीं दबसकती. इस लिये मायाको जीतनेके लिये भक्ति चाहिये. भक्ति स्त्रीजाति है इससे उसपर मायाका असर नहीं चलसकता इस लिये तुमको जो प्रभु पहँचानना हो और मोक्षका सुख पाना हो तो मायाको जीते बिना काम नहीं चलसकता और भक्ति बिना माया जीतनेमें नहीं आसकती इस लिये ज्ञान वैराग्यको एक एक ओर रख-कर भक्ति करो ! भक्ति करो !! भक्ति करो !!!

९० पद।

प्रभु म्हारो माया ना छोडै लार, मैं कस उतरूँ भवपार॥ टेक॥ धन दौलत सुत कामिनी जी, राजपाट सरदार। जा दिन कूंच नगारा बजि है, कोउ नहीं चालै लार॥ १॥ ना कुछ ल्यायो लेय जाय ना, ना कुछ पायो सार। शमशाना डेरा हुयांजी, उडि जावै है छार॥ २॥ रामजीवनकी बीनती, जी सुनिये अबकी बार। नेक निहारो कृपा करि तो बहुरि न आऊँ संसार॥ ३॥

२७१ ज्ञान और वैराग्य भक्तिके पुत्र हैं, इस लिये जो तुममें सच्ची भक्ति होगी तो उसके पुत्र तुम्हारे पास आये बिना न रहैंगे.

हमारे शास्त्रमें लिखा है कि, ज्ञान और वैराग्य दोनों भक्ति माताके पुत्र हैं, और इन दोनों पुत्रोंको अपनी मातापर इतना बडा प्रेम है कि ये अपनी माताके पीछे २ ही फिरा करते हैं तात्पर्य यह कि, जहां सच्ची भक्ति होती है जहां पूरी भक्ति होती है वहां ज्ञान और वैराग्य अवश्य होते हैं. ज्ञान वैराग्य जैसे योग्य पुत्रोंके बिना जहां केवल भक्तिही हो, रूखी सूखी भक्तिही हो वहां वह बांझ स्त्रीकी तरह बिना पुत्र शोभा नहीं देती क्योंकि योग्य पुत्रसेही स्त्रीकी शोभा है योग्य पुत्रसेही स्त्रीका सन्मान है, योग्य पुत्रसेही स्त्रीकी रक्षा है और योग्य पुत्रसेही स्त्रीकी सार्थकता है, वैसेही भक्ति माताभी अपने भाग्यशाली पुत्र ज्ञान वैराग्यसे शोभा पाती है, ज्ञान वैराग्यसेही मान पाती है ज्ञान वैराग्यसेही रक्षित रह सकती है, और ज्ञान वैराग्यसेही भक्तिकी सार्थकता होसकती है, अर्थात् ज्ञानवैराग्यवाली भक्तिही ईश्वरको बतासकती है और मोक्षका सुख दिला सकती है, रूखी भक्ति कुछभी कर नहीं सकती. जो भक्तिके साथ उसके पुत्र ज्ञान वैराग्य

न हों तो भक्तिमें अंधश्रद्धा मिथ्याचार और स्वार्थीपन आजाता है ऐसा न होनेके लिये भाइयो ! भक्तिके साथ उसके पुत्र ज्ञान वैराग्यको मिलानेका यत्न करो ! सच्ची भक्तिमें तो ये स्वाभाविक रीतिपरही अपने आपही होते हैं परंतु जो वे तुमको अपनेमें न मालूम हों तो अपनी भक्तिको फीकी समझो और उसमें इनका मिलानेका यत्न करो !

२७२ ज्ञान और वैराग्य भक्तिकी आँखें हैं इनके विना भक्ति अंधी है.

साधु कहते हैं कि, भक्ति माताकी दहनी आँखका नाम ज्ञान है और वार्यीं आँखका नाम वैराग्य है. ये दोनों आँखें बराबर काम करतीहों तबहीं भक्तिकी खूबी है. जो उसमेंसे एक आंख खराब हो जाय तो भक्ति कानी होजाती है और दोनों आँखें फूटजायँ तो भक्ति अंधी होजाती है. ज्ञान और वैराग्यरूपी आंखोंके बिना भक्ति जी तो सकतीहै परंतु आंख विना सारा जीवन जाता वृथाहीहै. हम देखते हैं कि, बहुतसे साधुओंमें भक्ति और वैराग्य होताहै परंतु ज्ञानरूपी आँख विना वे होते हैं कानेही. इससे वे संसारमें किसीकेभी कामके नहीं होते और न अपनीही सार्थकता करसकते हैं, परंतु उलटे हवाई खयालातों और जंगलीपनेमेंही रह जाते हैं, हमारे कितने ही संन्यासियोंमें ज्ञान और थोडासा वैराग्यभी होता है परंतु इतने परभी वे अंतःकरणसे रंगेहुए नहीं होते, क्योंकि उनमें भक्ति नहीं होती. अर्थात् भक्ति बिनाका कर्म विना किया केवल मुँहसे कहनेकाही ज्ञान उनको शांति नहीं देसकता. इतनाही नहीं किंतु भक्तिबिनाके रूखे ज्ञानसे उलटी खराबी होतीहै. इससे ऐसा होताहै किजैसे होलीमें लडके अश्लील शब्द बकते हैं परंतु उनका अर्थ नहीं समझते, वैसेही कलियुगी वेदांती मुँहसे तो 'अहं ब्रह्मास्मि' कहते हैं परंतु वैसे आचरण नहीं रखते और उसका आनंद नहीं पासकते, क्योंकि भक्तिसे उनका हृदय भीगाहुआ नहीं होता अर्थात् उनका आचरण अच्छा नहीं होता इससे 'अहं ब्रह्मास्मि' कहने परभी आत्मिक शांति नहीं मिलती.

हमारे वैष्णवभाई भक्ति बहुत करते हैं परंतु ज्ञान वैराग्यसे तो उनको द्वेष रहता है जिससे उनकी भक्ति विचारी अंधी हो जाती है और अंधी भक्ति सच्चा समय आनेपर उनको शांति नहीं देसकती. इस तरह ज्ञान विनाकी भक्ति और भक्ति विनाका ज्ञान वैराग्य है सो अधूरा साधन है और अधूरे साधनसे फूटे हुए तुंबांसे पैरना वन नहीं सकता इस लिये भाइयो ! वातोंके ज्ञानमें और अंधी भक्तिमें पडे मत रहो परंतु ईश्वरको पहँचाननेके लिये धर्मका ज्ञान प्राप्त करके दुनियांदारीके सुखदुःखको वादलकी छायाकी तरह क्षणिक और किसीके रोकनेसे न रुक सकनेवाले समझकर और अपने आचरणको सुधारकर ईश्वर-भक्तिमें लग जाओ तवहीं वेडा पार हो सकता है. वाकी अंधी भक्तिसे अथवा रूखे ज्ञानसे कुछभी नहीं हो सकता ! इसे पक्का समझो ।

२७३ भगवदावेश जबतक हृदयमें न भरे, तवतकही वाहरी क्रियाओंकी आवश्यकता है; वह हृदयमें जमजाने वाद क्रियाओंकी आवश्यकता नहीं रहती.

एक पतिव्रता स्त्रीका पति कहीं गाँव गया था. स्त्री वडी प्रेमवाली और धर्मवाली थी. पति विना उसका समय वडी कठिनाईसे निक-लता था. पानी विना जैसे मछली तडपती है वैसेही वह पति विना तडपती थी. उसके मनमें यही भावना थी कि, पति जैसे जल्दी घर आवे वैसेही अच्छा. पतिकी खवर सुननेके लिये वह जहां तहां जाती थी. पति उसकी परीक्षा लेना चाहता था इससे वह कुछ दिन कहीं छिप रहा और अपनी खवर नहीं जाने देता. खवर न पाकर वह विचारी वडी दुःखित हुई. अंतमें उसने वहुत कुछ यत्न किया तव पतिके मित्रद्वारा उसको एक दिन पतिका पता मिला. उस पतेपर उस स्त्रीने पतिको पत्र लिखा और उत्तर पानेकी आशामें वह नित्यप्राति डाकखाने जाने लगी. उत्तरमें पतिने लिखा कि, अव मैं जल्दीही आता हूं. इसपरसे तो वह औरभी अधिक २ राह देखने लगी और

अगुवानीके लिये नित्य गाडी आनेके समयपर रेलके स्टेशनपर जाने लगी. अंतमें पति आया वह सुखी हुई और अपने घरमें रहने लगी.

इसके बहुत दिन पीछे एक वार उसको उसकी एक सखी मिली उसने पूँछा " सखी ! पहले तो मैं तुझको डाकखाने और रेलवे स्टेशनकी ओर जाते आते देखा करतीथी परंतु अब तो तू घरसे बाहरही नहीं निकलती इसका क्या कारण है ? "

उसने उत्तर दिया " मैं अपने प्रियपतिकी खबर पानेके लिये पोस्ट आफिस जाया करतीथी और उनकी अगवानी करनेके लिये स्टेशनपर जाया करतीथी परंतु अब वे घर आगये तब मैं वहां जाकर क्या करूं ? "

भाइयो ! उस स्त्रीकी तरह परमेश्वर हमारा पति है. वह हमारे घरमें अर्थात् हमारे अंतःकरणमें नहीं है इसीसे सारी दौडधूप करनी पडती है. उस स्त्रीको जैसे पतिकी खबर पतिके मित्रसे मिलीथी, वैसेही हमको अपने समर्थ पति ईश्वरकी खबर ईश्वरके मित्र संतजनोंसे मिलसकती है. उस खबरको पानेके लिये हमें संतजनोंमें घूमना फिरना चाहिये. उनका सत्संग करना चाहिये और उनकी सेवा करना चाहिये. ऐसा करनेसे हमको पतिका पता लगसकैगा और पता मिलजानेपर ऊपरी प्रार्थना करके पतिको घरमें बुलाते बनसकैगा. उसके घरमें अंतःकरणमें आजानेवाद् बाहर भटकते फिरनेकी आवश्यकता नहीं होगी. हमारे अंतःकरणमें ईश्वर अच्छी तरह न भरजाय तबतकही कितनीही प्रकारकी बाहरी क्रिया करनेकी जरूरत है, परंतु जब वह हृदयमें भरगया, जब स्थित अज्ञता नष्ट होगयी, जब विदेहपन होगया तब कोईभी जातिकी बाहरी क्रिया करनेकी जरूरत नहीं रहती. जबतक हम ऐसे न हों, उस दरजेतक न पहुचैं तबतक तो हमको अपने समर्थ प्रियपतिको घरमें लानेके लिये अपने पवित्र धर्मकी सारी अच्छी क्रियाएँ करनी चाहिये क्योंकि क्रियाओंके निमित्त क्रियाएँ करनेकी जरूरत नहीं है ईश्वरके निमित्त क्रियाएँ करनेकी जरूरत है. इसलिये

पूर्ण विश्वास और पूर्ण प्रेमसे धर्मके पवित्र कार्य प्रभु अंतःकरणमें न आवे तवतक खुशी और उत्साहके साथ करना चाहिये. यही सव धर्मोंका सिद्धांतहै, यही महात्माओंका उपदेशहै और इसीमें कल्याण है. इस लिये जैसे वने वैसे शुद्ध मनसे धर्मके पवित्र कर्तव्य अच्छीसेभी अच्छी रीतिसे पूरे करने चाहिये.

२७४ तुंबा जैसे पानीमें नहीं डूवता, वैसेही भक्त और भक्तिभी संसारमें छिपी नहीं रहती.

संसारमें वहुतसी चीजें छिपसकती हैं परंतु भक्ति नहीं छिपसकती और वैसेही सच्चे भक्तभी कभी अँधेरेमें रह नहीं सकते. हम जानते हैं कि, अनुकूल साधन न मिलनेसे वहुतसे गुणी जन अँधेरेमें रहजाते हैं और उनकी विद्या, उनकी सत्ता, उनकी वीरता और उनका मानसिक तथा व्यावहारिक धन उनकेही साथ नष्ट होजाताहै, परंतु भक्तिके विषयमें न कभी ऐसा हुआ है न होगा. दूसरे गुणोंको तो साधनोंकी जरूरत पडती है इससे जवतक अनुकूल साधन न मिले तवतक उनका प्रकाश नहीं होता, इतनाही नहीं परंतु प्रतिकूलतासे वे डरजाते हैं, परंतु भक्तजनोंमें इससे उलटा होताहै. उनको अच्छे साधनोंकी जरूरत नहीं है और वुरे संयोगोंका कभी भय नहीं है. इतनाही नहीं परंतु वे चाहे जितने लजीले हों, और चाहे जितने विरक्त हों तवभी प्रकट हुए विना और मान पाये विना नहीं रहते. वे मान और नामका तिरस्कार करते हैं तवभी ये तो उनको आपही मिल जाते हैं. वे कहते हैं कि, " नाम तो प्रभुका चाहिये और मानभी जगत्के कर्त्ता स्वामी परमेश्वरकोही देना चाहिये. हमारा नाम कैसा ? और हमारा मान कैसा ? हम तो प्रभुके कुत्ते हैं. " इतना होनेपरभी प्रभुके नामके साथ उनकेभी नाम जमानेतक प्रसिद्ध रहते हैं. नानक, रामदास, तुकाराम, तुलसीदास, कवीर, सुंदरदास, सूरदास, नरसीमेहता, मीरावाई आदि प्रभुके कृपापात्र भगवज्जनोंको नामकी अथवा मानकी परवाह कव थी तवभी उनका नाम आजतक पृथ्वीपर प्रसिद्ध हो रहा है सो तो देखे

याद रक्खो कि, जैसे खांसीके रोगमें खों खों हुआही करता है और रोग छिप नहीं सकता, जैसे अत्यंत अँधेरेमेंभी दीपक छिपा नहीं रहता, जैसे तुंबा अपने आप पानीमें कभी डूबही नहीं सकता और जैसे तेल पानीके ऊपरके ऊपरही बना रहताहै, वैसेही हरिभक्त कभी छिपे नहीं रहते, वे तो सबसे ऊपर मुकुट बने रहते हैं, और इसी दुनियाँमें नहीं परलोकमें भी उनकी महिमा गाई जाती है, ये सब और इनसेभी बढकर प्राप्ति भक्तिसे अर्थात् धर्मके नियम पालनेसे, परमार्थ करनेसे और प्रभुके पवित्र नामकी लगन लगनेसे होती है, परंतु जानबूझकर यत्न करके खडे किये हुए झूंठे मानपत्रोंसे, पैसा खर्च करके अथवा खुशामद करके पायेहुए खितावोंसे और समाचारपत्रोंमें नाम छपानेसे दुनियांमें नाम नहीं रहता. इसलिये जो दुनियांमें और प्रभुके दरबारमें सच्चा नाम रखना हो और सच्चा मान पाना हो तो जैसे बने वैसे भक्त बननेका यत्न करो ! भक्त बननेका यत्न करो ! !

२७५ भाई भाईमें तकरार होजानेसे कुछ पिता छोडा नहीं जाता वैसेही धर्मके बाहरी झगडोंके कारण प्रभु छोडा नहीं जासकता.

जुदे २ धर्मके झगडे तो सृष्टिके आरंभसेही चले आते हैं और जबतक सृष्टि रहेगी तबतक मिटनेवालेभी नहीं हैं, क्योंकि झगडा करनेवाले शब्दकी लडाई करने और बाहरी क्रियाओंपर लडनेवाले हैं परंतु भीतरसे जाँच करनेवाले नहीं हैं. इससे वह लडाई मिट नहीं सकती. एक कहता है कि हमारा धर्म सच्चा है और सब धर्म झूंठे हैं. दूसरा कहता है कि, हमारा धर्म सबसे पुराना और उसीमेंसे दूसरे सब धर्म निकले हैं इससे हमारा मूलधर्म मानने योग्य है. तीसरा कहता है कि, पहलेके सब धर्मोंको रद्द करके ईश्वरने हमारेही गुरुको सच्चा धर्म बताया है. चौथा कहताहै कि और सब धर्म आसुरी हैं

केवल हमाराही धर्म देवी है. पांचवां कहता है कि, हमारा धर्म जैसा ईश्वरका शुद्ध और स्पष्ट स्वरूप सिखलाता है वैसा और कोईभी धर्म नहीं सिखाता. छठा कहताहै कि, हमारा धर्म पालना जैसा सुगम है वैसा दूसरा कोई भी धर्म सुगम नहीं है. सातवां कहता है कि, हमारा धर्म पालनेवाले संसारमें सबसे अधिक हैं इससे हमाराही धर्म सचा है. आठवां कहता है कि, हमारे गुरुने जैसे चमत्कार दिखाये हैं वैसे दुनियामें और किसीनेभी नहीं दिखाये. नववां कहता है कि, कुदरतके नियमोंको फिलासफीको और लोगोंको जैसे हमारे शास्त्र अनुकूल हैं वैसे संसारमें दूसरे कोईभी शास्त्र अनुकूल नहीं है और दशवां कहता है कि, चाहे जैसा हो परंतु एकही धर्म सचा होसकता है, सारे धर्म तो सचे होही नहीं सकते.

इस तरहपर ऊपरी बातोंके लिये सगे भाई भाईभी बिना कारण आपसमें लडते हैं. भाई भाई दोनों चाहे जितने लडैं परंतु आपसमें यह तो नहीं कह सकते कि मेरा बाप है सो तेरा नहीं है. पिता तो दोनोंका एकही है. हम अपनी मूर्खतासे भीतर २ चाहे जितने लडैं और धर्मके नामपर एक दूसरेसे वैर रखकर प्रभुसे दूर भागैं परंतु तबभी पिता तो हमारा है सो बदल सकताही नहीं और हमारा पिता जो हमारे दूसरे भाइयोंका पिता है सो तो उनकाभी पिता रहेगाही. हमको अपने मनकी निर्बलतासे अपने दूसरे भाइयों अर्थात् दूसरे देश और दूसरे धर्मवालोंपर वैर है परंतु प्रभुको तो उनपर वैर नहीं है. हम जैसे पवित्र प्रभुके पुत्र हैं वैसेही वेभी प्रभुके पुत्र हैं. इस लिये हमारे धर्मके बाहरी झगडोंके लिये हम अपने पिताको थोडेही छोडसकते हैं? अथवा अपने सगे भाईसे थोडाही कह सकते हैं कि मेरा बाप है सो तेरा नहीं है? इस लिये भाइयो! हम सब एकही पवित्र पिताके पुत्र हैं और अलग २ मार्गसे एकही प्रभुको भजते हैं. ऐसा समझकर जैसे बने वैसे परस्परके धर्मकी दुश्मनीसे दूर रहो!

जैसे जुदी २ छोटी मोटी नदियाँ जुदे २ मार्गसे चलकर अंतमें एकही समुद्रमें पहुँचती हैं वैसेही सब धर्म जुदे २ देश काल और

लोकस्थितिके अनुसार बने हैं और सबही धर्मोंका हेतु एक प्रभुको पहँचानना और प्राप्त करना है. प्रभुनेभी कहा है कि:—

"ये यथा मां प्रपद्यंते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वर्त्मानुवर्त्तंते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥"

अ० ४. श्लो० ११.

अर्थ—जो मनुष्य जिस तरहसे मुझे भजते हैं उनको मैं उसी प्रकारसे भजता हूं, अर्थात् जैसी जिनकी भावना है वैसाही रूप मेरा उनको दीखता है और वैसाही फल मैं उनको देताहूं. हे अर्जुन! मनुष्य सब तरहसे मेरेही मार्गके अनुसार चलता है.

भाइयो! इसमें यह बात कहाँ आई कि, मेरा धर्म सच्चा और तेरा धर्म झूँठा है? प्रभुकी ऐसी स्पष्ट आज्ञा होते हुएभी हम बिना कारण आपसमें लडकर क्यों वैर बांधें? और क्यों प्रभुसे विमुख हों? इस लिये आजहीसे पक्का ठहराव करलो कि, अपने धर्मसे चिपटे रहना और दूसरे सब धर्मोंको उदार दृष्टिसे देखना. इसीसे संसारमें शांति रहती है. यह प्रभुको प्रिय है और यही प्रभुकी आज्ञा है इससे अपना धर्म अच्छी तरहसे पालो और दूसरोंके धर्मको उदार दृष्टिसे देखो!

९१ भुजंगप्रयात ।

विरंची महादेव भैरो भवानी, सबै पूर्ण ब्रह्मेशकी ज्योति जानी । पुजाई भई काहुकी ब्रह्म मानी, न जाने भला क्यों वृथा बाद ठानी ॥ १ ॥ अहो मित्र कोऊ चढो है अँबारी, चढो है कोऊ जाय ऊंची अटारी । नहीं भूमिसो बाहिरी कोउ भयो है, तऊ बाद काहे वृथाहू ठयो है ॥ २ ॥

२७६ जो डुबकी मारै और लगारहे उसको मोती मिलता है. वैसेही भक्तिमें जातपांत नहीं देखीजाती जो लगेरहते हैं वे प्रभुको पाते हैं.

भक्तिमें जातपांत कुछभी देखी नहीं जाती जिसके हृदयमें भक्ति लगगयी और जो उसमें लीन होगया वही पार लग गया. क्योंकि प्रभु दयालु है. उसके यहां जातपांत नहीं है, काली गोरी चमडीका भेद नहीं है, वहां तो समानता है, वहां तो अभेद है. प्रभुके लिये अपने सब बालक समान हैं. उसको कोई प्रिय नहीं है, कोई अप्रिय नहीं है, परंतु जो भेद है सो भक्तिका ही है. जैसे जो अग्निके पास बैठते हैं उनका जाडा मिटजाता है और जो अग्निके पास नहीं जाते उनको जाडा लगा करता है. वैसेही जो प्रभुभक्तिमें लगजाते हैं वे तर जाते हैं और जो भक्तिमें नहीं लगते वे चौरासी लाखके चक्करमें फिरा करते हैं. उसमें जातपांतका, देशका या कुलका कुछ भी काम नहीं हैं. प्रभुनेभी कहा है कि, जो मुझको भजता है सो मुझमें है और मैं उसमें हूं. इसीसे वैष्णव गाते हैं कि:-

"हरिको भजे सो हरिका होय."

हम गुरु हैं इससे ऊंचे हैं, हम ब्राह्मण हैं इसलिये ऊंचे हैं, अमुक राजाने हमारा सन्मान किया इसलिये हम ऊंचे हैं, अमुक ऊंचे कुलमें उत्पन्न हुए हैं इससे हम ऊंचे हैं, हमारी जातवालोंने अमुक २ काम अच्छे किये हैं इससे हम ऊंचे हैं, हम पुरानोंमेंभी पुराने हैं इससे ऊँचे हैं, हमारे कुलमें अमुक भक्त होगया है इससे हम ऊंचे हैं, हम दान नहीं लेते इससे ऊंचे हैं, हम अमुकदेशमें उत्पन्न हुए हैं इससे ऊंचे हैं और हम अमुक धर्म पालते हैं अथवा अमुक गुरुके शिष्य हैं इससे ऊंचे हैं. ये सब बातें पोलकी हैं. ऐसी पोल यहांपर भलेही थोडे दिन चलालो परंतु प्रभुके दरबारमें वह चलनेकी नहीं है. वैसी पोल चलानेका समय अब नहीं रहा. अब तो बहुत स्पष्ट रीतिपर प्रभुकी आज्ञा लोग अच्छी तरह समझते जातेहैं कि, जो समुद्रमें

डुवकी मारेंगे, और उसीमें लगे रहेंगे वे मोती पावेंगे. जो मार्गमें खडे २ इस तरह वातें कियाकरते हैं कि, हमारे दादाको वहुत अच्छी डुवकी मारना आताथा, अमुक राजाके समयमें डुवकी मारनेका स्वत्व केवल हमारी जातवालोंहीको था, और मेरे मामाके मामाके मामाको अवभी अच्छी डुवकी मारना आता है, वे डुवकी मारे विना केवल ऐसी वातें कहनेहीसे मोती नहीं पा सकते. वैसेही प्रभुके निमित्त दान पुण्य किये विना, मनको रोके विना, शुभेच्छा रक्खे विना, और धर्मके ज्ञान विना केवल जात पांतसे या काली गोरी चमडी-सेही काम नहीं चलसकता, किंतु आचरण सुधारनेसे और प्रभुके मार्गमें लगे रहनेसेही स्वर्गके मोती मिलसकते हैं और तवही इंद्रकी अप्सराएँ हमपर अलौकिक मोती न्योछावर करसकती हैं. इस लिये भाइयो ! जो ऐसे स्वर्गके मोती लेने हों तो सव प्रकारके अभिमान छोडकर सर्वात्मभावसे प्रभुकी शरण लो ! प्रभुकी शरण लो !! प्रभुकी आज्ञा पालो !!!

राग ठुमरी ।

राम न जाने सो जाने तो क्या हो ॥ टेक ॥
राम अमीरस है जिन माहीं ।
और दूजा रस पीनेसे क्या हो ॥ राम न जाने० ॥ १ ॥
भक्त वही जो हरिगुण गावत ।
और दूजा गुण गानेसे क्या हो ॥ राम० ॥ २ ॥
जापक वही गुरुमंत्र जपै नित ।
औरको जाप जपेसे क्या हो ॥ राम० ॥ ३ ॥
देखे सोहि गुरु मूर्ति अखंडित ।
और ठाठ ठगवाजीसे क्या हो ॥ राम० ॥ ४ ॥

जन्म लियो हरिके गुण गावत ।
और गपाष्टक गानेसे क्या हो ॥ राम० ॥ ५ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो ।
वृथा बहुत दिन जीनेसे क्या हो ॥ राम० ॥ ६ ॥

२७७ माया चाहे जितनी बढजाय परंतु भक्ति विना संतोष नहीं होता, इस लिये पवित्र प्रभुके नामको पकडलो तो तुमको थोडेहीमें बहुत होजायगा.

इतिहास पढनेवाले बादशाह सिकंदरके नामसे नावाकिफ नहीं होंगे. सिकंदर बडा पराक्रमी था, उसने अपनी सेनाके बलसे पृथ्वीका बहुतसा भाग जीत लियाथा, जब वह मरने लगा तो शोकातुर होकर बोला " अभी थोडा भाग पृथ्वीका जीतना और बाकी है. मैं उसेभी जीतलेता तब संतुष्ट होता. "

यह सुनकर उसके एक योग्य दीवानने कहा " गरीब परवर ! अब यह तृष्णा छोड दो ! इतनी पृथ्वी जीत लेनेसेही जब संतोष नहीं हुआ तब थोडासा भाग और जीतनेसे संतोष कैसे होता ? सारी पृथ्वी जीतलेनेपरभी आपको संतोष नहीं होता. इस लिये इस तृष्णाको छोडकर अब प्रभुको याद कीजिये ! "

भाइयो ! जिसने आधी पृथ्वी जीतली उसकोही जब मरनेतक संतोष न हुआ तब हमको मायासे संतोष क्योंकर होसकता है ? मायासे आजतक किसीको संतोष नहीं हुआ. और न कभी होगा. ज्यों ज्यों माया बढती जाती है त्यों त्यों आशा तृष्णाभी बढती जाती है. ज्यों ज्यों अग्निमें घी पडताजाता है त्यों त्यों उसकी ज्वाला बढती जाती है, वैसेही ज्यों ज्यों माया बढती जाती है त्यों त्यों विकारभी बढते जाते हैं, इससे कभी तृप्ति नहीं होती इस लिये ' ऐसा हो तो मैं ऐसा करूं और वैसा हो तो वैसा न करूं ' इस तरहके वादे और विश्वासपर तुम्हारेही मनको तुम मत ठगो ! मत ठगो ! परंतु प्रेम-

पूर्वक प्रभुकी शरणमें जाओ तो शांति आपही तुम्हारे पास चली आवैगी और थोडेहीमें वहुत होजायगा तथा उस थोडेहीमेंसे तुमको प्रभुके नामसे आत्मिक शांति मिलजायगी. भाइयो ! शांति पानेके लिये मायाको नहीं किंतु सर्वशक्तिमान् प्रभुके नामको पकडो ! प्रभुके नामको पकडो !!

२७८ मायाके छोडनेका वृथा हठ मत करो ! परंतु उसको प्रभुकी ओर झुकानेका यत्न करो !

शास्त्रोंमें लिखा है और महात्मालोगभी वारंवार यही कहते हैं कि, मायासे कभी शांति नहीं मिलनेकी ! इतनेपरभी हम मायाको छोड नहीं सकते, क्योंकि वह छूट सकनेवाली वस्तु नहीं है और उसे छोडनेकी जरूरतभी नहीं है, परंतु जरूरत इस वातकी है कि माया हमको अपनी ओर खींचे जाती है जिसके स्थानमें हम मायाको ईश्वरकी ओर खींचलेजांय. मायाका नाश करना हमारा काम नहीं है परंतु मायाको प्रभुमें लगाना हमारा काम है. मायाके प्रवाहके रोकनेकी हमको शक्ति नहीं है, और वैसा करनेकी हमारे लिये जरूरतभी नहीं है परंतु उसका प्रवाह वदलदेना हमारा काम है और वह हमारी सामर्थ्यमेंभी है.

नदीका प्रवाह वृथा समुद्रमें जाता है परंतु जो उस प्रवाहको वंद वांधकर रोकादिया जाय तो वडी खेती होसकती है और लाखों फल लगसकते हैं. अभी तो मायाका प्रवाह मायाहीमें चलाजाताहै और वहभी निकम्मा तथा खराव करनेवाला होता है. परंतु जो उसमें भक्तिका वंद वाँध दिया जाय तो वह प्रवाह प्रभुकी ओर झुकजाताहै और उसका पानी हमारे भाई वंधुओंके खेतमें फैलजाताहै जिससे इस लोक और परलोक दोनोंमें काम आने योग्य उत्तम फल लगते हैं. इस लिये भाइयो ! मायाको छोडनेका झूँठा हठ छोडकर मायाको प्रभुमें लगानेका यत्न करो ।

२७९ दयालु परमेश्वरसे की हुई हमारी प्रार्थनाएँ कभी खाली नहीं जातीं, परंतु उसकी ओरसे मिलेहुए अलौलिक लाभकी खूबी हम नहीं समझते इससे बडबडाया करते हैं.

किसी तीर्थस्थानमें बैठाहुआ एक सूरदास भजन गाता और भीख माँगताथा. कोई उसे फल देजाता, कोई पाई देजाता और कोई पैसा देजाताथा जिससे उसको बडी खुशी होतीथी. इतनेहीमें वहाँपर एक धनवान् आपहुँचा, सूरदासके भजनसे बहुत प्रसन्न होकर उसने एक पांच रुपयेका नोट निकालकर उसके हाथमें दिया. सूरदासने कभी नोट देखा नहीं था. वह गाँवका रहनेवाला बिचारा यह नहीं जानताथा कि कागजके टुकडेसेभी रुपये मिलते हैं. वह यहभी नहीं देखसकताथा कि, इस कागजमें क्या लिखा है, इससे एक धनवान्के हाथसे कागजका टुकडा पाकर वह बडा उदास हुआ. उस धनवान्ने सूरदाससे दोचार भजन गवाये और उसके गानेकी बहुत कुछ प्रशंसा की थी इसपरसे उसे उससे दोचार पैसे पानेकी आशा थी और जब वह जाते समय बोला कि, 'लो सूरदास' उस समय सूरदासने मनमें प्रसन्न होकर खुशीके साथ हाथ फैलाया परंतु जब हाथमें नोट पडा तो उसे कागजका टुकडा समझकर उसके चित्तको उदासी आगयी. वह बडबडाने लगा " वाह! मैं तो समझता था कि दो चार पैसे मिलेंगे परंतु वह तो बडा सूखा निकला. दोचार भजन भी सुनगया और गाँठकी मेरी दिल्लगी करगया. "

इस तरह बडबड करताहुआ वह उस कागजको फैंकने लगा तब एक पासवाले भले आदमीने कहा " सूरदास! यह खाली कागजका टुकडा नहीं है! यह तो पांच रूपयेका नोट है नोट! "

रुपयेका नाम सुनकर वह बोला " क्या है नोट? भाई! तुमभी मेरी हँसी करतेहो क्या? "

भला आदमी कहने लगा " नहीं नहीं ! तुम्हारी कोई हँसी करता है क्या ? तुम जैसेकी हँसी तो कोई अभागा हो सो करै ! यह तो नोट है ! इसे सहेजकर रक्खो तो पांच रुपये मिलैंगे. "

सूरदासने पूँछा " वावा ! मैं नोट नहीं समझता ! नोट क्या होता है ? " तव भला आदमी वोला " यह सरकारी कागज है ! सरकारी राज्यमें जहाँ जाओ वहाँ तुम इसके पांच रुपये पासकते हो ! "

तव तो सूरदास वडा प्रसन्न हुआ और उस नोटको अपनी धोतीमें वांधकर वोला " मैं तो दोचार पैसे पानेकी आशा करताथा परंतु वह सेठ तो वडाही भला आदमी निकला कि, मुझ अंधेको पांच रुपये देगया, अहो ! अभी संसारमें ऐसे भलेभी मौजूद हैं, वावा ! तुमनेभी मुझपर वडी दया की नहीं तो मैं इसे अभी फेंक ही देता. "

भाइयो ! हमारी प्रार्थनासे प्रसन्न होकर प्रभु हमको वहुत कुछ देताहै परंतु हम उस सूरदासकी तरह अंधे हैं, अज्ञानी हैं, इससे प्रभु जो अलौकिक वस्तु देता है उसकी हम कीमत नहीं समझते. प्रभु हमको और कुछ न दे परंतु पापसे वचावै और अंतःकरणसे शुद्ध रक्खे तो क्या यह थोडा है ? पैसेके तीन चार मिलनेवाले अमरूद या केला आदि फल न दे और उसके वदलेमें अंतःकरणकी शुद्धि दे कि जिससे ज्ञान उत्पन्न होसकताहै तो क्या कम है ? अथवा पापकी क्षमारूप नोट दे कि जिससे नरकसे वचाव हो तो क्या कम है ? इस लिये याद रक्खो कि, हमारी प्रार्थना एकभी खाली नहीं जाती वरन् उन प्रार्थनाओंसेभी प्रभु हमको अधिक देता. परंतु हम दुनियांदारीके स्वार्थमें पडकर इतने अंधे होगये हैं कि, प्रभुकी उस अलौकिक वखशीशकी कीमत नहीं समझसकते, इसलिये भाइयो ! विना कारण प्रभुको दोष मत दो, परंतु अपनाही दोष समझना सीखो !

२८० याद रक्खो कि, यहांका हमारा वडप्पन स्वर्गमें काम नहीं आवेगा.

हम सवको वडप्पन अच्छा लगता है, और उसके लिये हम रात-दिन दौड धूप मचाया करते हैं. किसीको धनका वडप्पन अच्छा

लगता है, किसीको नौकरीका वडप्पन अच्छा लगताहै, किसीको पटे-लाईका वडप्पन अच्छा लगताहै, किसीको रूपका वडप्पन अच्छा लगताहै, किसीको कुलका वडप्पन अच्छा लगताहै, किसीको विद्वत्ताका वडप्पन अच्छा लगताहै, किसीको वलका वडप्पन अच्छा लगता है, किसीको व्यापारका वडप्पन अच्छा लगताहै, किसीको शिल्प और कारीगरीका वडप्पन अच्छा लगताहै, और किसीको किसीभी गुण विना तथा किसीभी कारण विना ' हमभी नवावजादे हैं ' कहना अच्छा लगताहै. इस तरह सवहीको किसी न किसी प्रकारका वड-प्पन अच्छा लगता है इसमें कुछभी संदेह नहीं है परंतु इस वातका विचार कोईभी नहीं करता कि, यह वडप्पन सच्चा है या झूंठा और यह वडप्पन कवतक काम देगा ? हमको समझना चाहिये कि हम तो इस संसारमें दोचार दिनके मुसाफिर हैं फिर तो हमको अवश्यही दूसरे देशमें जाना पडेगा. जिस जगह हमको जाना है उस जगह यह वडप्पन काम देगा या नहीं सो तो विचार करना चाहिये जो वहांपर यह वडप्पन काम न आया तो हमारी सारी मेहनत वृथाही है और हमारी सारी समझदारी मट्टीमें मिलगयी. इसके लिये पंडित लोग एक उदाहरण दिया करते हैं:—

एक सेठ वडा धनवान् था. वह यात्रा करने निकला. फिरते २ वह एक दिन रातको एक गाँवमें जाकर ठहरा. वहाँ उसने अपने नौकरोंसे कहा " गाँवमें जाकर सीधा सामान ले आओ। "

आदमी सीधा सामान लेने गाँवमें गया. दूकानदारने पैसे मांगे, आदमीने निकालकर नोट दिये. दूकानदारने कहा " हम नोटका क्या करें ? हमारे राज्यमें तुम्हारे नोट वोट नहीं चलते. यहाँ तो नकद रुपयोंसे काम चलेगा. "

आदमीने कहा "अरे भाई ! तू दूकानदार होकर ऐसी वात करता है ! यह नकद रुपया नहीं तो और क्या है ? देख तो सही इसमें गवर्नरके दस्तखत हो रहे हैं. "

दूकानदारने कहा " तुम कहते हो सो सब ठीक! परंतु हमारे यहाँ तो इस राज्यमें चले वैसा रुपया होना चाहिये. "

भाइयो! पास पैसा होते हुए नोटोंके ढेर होते हुए भी उस देशमें चलनेवाला पैसा पास न होनेसे उस सेठको उस दिन रातको भूखेही पडना पडा. इसी तरह हमारा बडप्पन, हमारे खिताब और हमारे खजाने मरनेपर स्वर्गमें कुछभी काम नहीं आते. वहां तो सब देशोंमें चलनेवाला प्रभुनामका नकद पैसा चाहिये. इस लिये भाइयो! झूँठी बडाईमें मत पडे रहो परंतु धर्मका धन संग्रह करो! प्रभुका नाम-स्मरणरूप नकद दाम इकठे करो!

२८१ हम सबको पंडिताई बहुत अच्छी लगती है, इसलिये इस बातकी पूरी सँभाल रक्खो कि, पंडिताईके झूंठे झगडोंमें फँसकर अंतःकरण खाली न रहजाय.

खाली बरतनमें दूसरी वस्तु जलदी भरी जा सकती है परंतु भरे हुए बर्तनमें दूसरी वस्तु नहीं भरी जा सकती. मूर्खमनुष्य हैं सो खाली बर्तनके समान हैं इससे कोईभी अच्छी या बुरी बात उनके मनमें जल्दी बैठजाती है परंतु जो पंडित हैं उनके हृदयमें दुनियांदारीकी खटपटकी टेढी सीधी अनेक बातें भरी रहती हैं इससे वे ईश्वरीय सत्यज्ञानको जल्दी ग्रहण नहीं करसकते वे तो 'अमुक पंडितने ऐसा कहा है, न्यायशास्त्रमें ऐसा कहा है, योगशास्त्रमें ऐसा लिखा है, कर्म-कांडमें ऐसी आज्ञा है और मनुस्मृतिमें ऐसा लिखा है परंतु ऐसा करें तो यों होता है और वैसा करें तो वैसा होता है' आदि कल्पनाके जालमेंही फँसे रहते हैं. गाँवके भोले भाले लोग श्रद्धासे और सरलतासे जैसे प्रभुके मार्गमें सुगमतासे चल सकते हैं वैसे पंडित नहीं चल सकते. वे तो अपनी अकलके अजीर्ण और शब्दोंकी लडाईमेंही पडे रह जाते हैं.

भाइयो! हम सबको पंडिताई बहुत अच्छी लगती है इससे पंडि-ताईके झगडेमें न फँसजांय और अंतःकरण खाली न रहजाय इसकी

पूरी संभाल रखना हमने देखा है कि, बहुतसे शास्त्री केवल बातें करनेहीमें कुशल होते हैं परंतु उनके अंतःकरण प्रभुकी ओरसे ऐसे शुष्क होते हैं कि, जो हम उनके भीतरी आचरणोंको जानलें तो हमको उनपर घृणा हुए विना न रहै. जो विद्या हमको तारनेवाली है वही विद्या हमको नरकमें न लेजाय इसकी सँभाल रखना. हे प्रभु ! जिस पंडिताईसे हम तुझसे विमुख होजायँ उस पंडिताईसे तो हमको वैसी मूर्खताही देना जिसमें हृदयकी सरलता हो और आत्मिक विश्वास हो !

२८२ याद रक्खो कि धर्मसंबंधी विचार सहजमें सुधरते नहीं हैं, इस लिये पूरी सँभाल रक्खो कि कोईभी बुरा विचार चित्तमें न जमने पावै !

कोई एक अंग्रेज मुसाफिर और लोगोंका धर्म सीखने पराये देशमें गया. वहांके एक धूर्त धर्मगुरुने उसको अपने धर्मके नामसे कितनीही झूँठी बातें सिखला दीं. उस मुसाफिरको यह नहीं मालूम था कि, यह झूँठी बातें सिखलाता है. वह तो बडी श्रद्धाके साथ सीखताथा इससे उसने वे सब बातें सचीही समझी और मनमें विचारा कि, इन लोगोंका धर्म ऐसा है. थोडे समय पीछे उसकी एक भले आदमीसे भेट हुई जब धर्मसंबंधी चरचा चली तो उस भले आदमीने उस मुसाफिरसे कहा कि तुम जो कुछ कहते हो सो सब झूँठा है, हमारा सच्चा धर्म तो यहहै, इतना कहकर उसने अपना सच्चा धर्म बताया परंतु उस मुसाफिरके मनमें जो पहले झूंठे संस्कार जमगये थे वे मुद्दततक न गये वैसेही हमारे मनमेंभी जो धर्मसंबंधी अच्छे या बुरे संस्कार एक बार जम जाते हैं वे सहसा निकल नहीं सकते हैं, इससे इस बातकी पूरी संभाल रखना चाहिये कि, धर्मसंबंधी वैसी कोई मिथ्या बात मनमें न जमने पावै.

विद्या हुनरके, धंधे रोजगारके, कला कौशलके या सुधारे बिगाडेके जो २ विचार हमारे मनमें आते हैं उनमें शीघ्रही सुधार तथा लौट

फेर हो सकता है, क्योंकि उस विषयमें हमारा कोई खास आग्रह नहीं होता अथवा उसको माननेका हमपर कोई खास दबाव नहीं होता, परंतु धर्मके विचारोंको मानना तो हमारा मुख्य कर्तव्य है और इस विषयमें हमारा हठभी जबरदस्त होता है इससे हमारे मनमें जो धर्मसंबंधी संस्कार एक बार जम जाते हैं वे सहसा निकल नहीं सकते. इस लिये जैसे बनै वैसे धर्मसंबंधी ईश्वरसंबंधी कोईभी बुरे विचार हमारे या हमारे बच्चोंके मनमें न जमने पावें इसकी पूरी सावधानी रक्खो !

विद्या हुनरमें या धंधे रोजगारमें हम औरोंके विचारभी ले सकते हैं परंतु धर्मके संबंधमें विधर्मियोंके विचार चाहे जैसे अच्छे हों तबभी हम उनको कदापि स्वीकार नहीं करते. इस तरह धर्मके विषयमें हम सबकेही मनमें थोडा बहुत पक्षपात होताहै. इस लिये धर्मसंबंधी कोईभी बुरे विचार मनमें न ठसजानेकी पूरी सँभाल रखना ! जो ऐसा कोई भी बुरा विचार मनमें जमगया तो वह जन्म तो बिगडेहीगा परंतु दूसरा जन्मभी उस विचारको निकाल डालनेहीमें खो देना पडेगा ऐसा न होने पावे इसका खयाल रक्खो और अभी हाथमें समय है तबतक चेतो ! चेतो ! ! भूल भरेहुए विचारोंमें पडे मत रहो किंतु पवित्र परमेश्वरके सत्य वचनोंमें मस्त रहो !!!

२८३ धोबीके पास धोनेको आये हुए कपडे धोबीके नहीं होसकते, वैसेही पंडितोंके अपनी पंडिताई दिखानेके लिये इकट्ठे कियेहुए लोगोंके विचार उनको स्वर्गमें नहीं पहुँचा सकते.

सोनारको लोग जेवर बनानेके लिये सोना देजाते हैं परंतु वह सोना सोनारका नहीं कहलासकता और धोबीके यहाँ जो कपडे धोनेको आते हैं वे धोबीके नहीं हो सकते, वैसेही पंडित दूसरे लोगोंके और शास्त्रोंके विचार इकट्ठे करते हैं वे उनके नहीं होसकते अर्थात्

जैसे धोबीके यहां धोनेको आये हुए कपडे धोबीके उपयोगमें नहीं आसकते तैसेही भक्तिरहित पंडितोंके मनमें आयेहुए शास्त्रोंके अच्छे विचारभी विचारे उन बोझा उठानेवालोंके काममें नहीं आते, क्योंकि जिनको प्रभुके नामकी लगन नहीं लगी है और ऊपरसेही जो पंडिताई दिखाते हैं वे केवल शास्त्रोंका बोझाही उठानेवाले हैं. ऐसे लोग तो केवल विवाद करनेमें, शब्दोंकी लडाईमें, मानमर्तबेकी हौंसमें और चेलाचेली करनेहीमें रहजाते हैं. वैसे लोग केवल गधेकी तरह दूसरोंके विचारोंका नाहक बोझाही उठाते हैं, परंतु कुछ सार्थकता नहीं करसकते. जो प्रभुमें प्रेम लगावे, अपने आचरण सुधारे और अपने भाई बंधुओंको किसी न किसी तरहसे सहायता करे उसीकी पंडिताईकी सार्थकता है. जो ऐसा कुछभी न हो और केवल पाखंडही पाखंड हो तो ऐसी पंडिताईसे तो दिहाती लोगोंका जंगलीपनही अच्छा है कि जो भूखेको खाना देते हैं और रातमें इकट्ठे होकर सारंगी तँबूरे और झाँझ पखावज बजाते प्रभुका भजन करते हैं.

भाइयो ! याद रक्खो कि, पंडिताई कुछ फेंक देनेकी वस्तु नहीं है, पंडिताई एक बडा गुण है, पंडिताई प्रभुकी कृपाका फल है, परंतु है तबहीं जब वह प्रभुको साथ रखके की जाय. प्रभुप्रेम विनाकी पंडिताई पंडिताई नहीं परंतु लुचाई है, राक्षसीपन है. हम सबको पंडिताई बहुत अच्छी लगती है परंतु इस बातकी पूरी सावधानी रखना कि, कहीं ऐसे राक्षसीपनमें फँस न जाओ !

२८४ मौज उडाते समय तो बडा मजा आता है, परंतु हिसाब चुकाते समय खबर पडैगी.

चार मित्र सैर करनेको निकले. उनमेंसे एक मित्र किसी बडे नगरमें जाकर सरायमें ठहरे और भठियारीसे कहने लगे हमारे लिये खीर पूडी बना !'

थोडी देरमें आप बोले ' चा लाओ ' थोडी देरमें कहा ' पकोडी ला ! ' फिर थोडी देरमें कहा कि, ' फल लाओ ! ' थोडी देरमें कहा कि, ' आइसक्रीम ला ! ' और फिर थोडी देरमें कहा कि, 'काफी बनाओ ! ' इस तरह वह एकपर एक नई वस्तु माँगते गये और भठियारी देती गयी. बातकी बातमें तीन दिन निकलगये. जब वह चलने लगा तो भठियारीने पचीस रुपयेका हिसाब बनाकर पेश किया. पचीसका हिसाब देखतेही वह घबराया. साथवाले एक आदमीने पूँछा " तीन दिनके पचीस रुपये कैसे जुडते हैं ? "

भठियारीने उत्तर दिया " कैसे क्या जुडते हैं हिसाबसेही जुडते हैं ! मनचाहा माल उडाते समय तो इसका कुछ विचार न किया और अब पूछते हो कि, इतने रुपये कैसे जुडगये ? क्या मेरा माल मुफ्तका था ? "

उनके पास इतने रुपये निकले नहीं भठियारीने अदालतमें नालिश की अंतमें उसको जेलकी हवा खानी पडी.

भाइयो ! हमभी परमेश्वरको भूलजाते हैं और दुनियांदारीकी झूंठी मौज मारनेमें कुछभी कसर नहीं रखते. इस समय तो हम यह सोचते कि, हमारी हैसियत कितनी है. परंतु याद रक्खो कि, प्रभुके आगे जब हिसाब चुकाया जायगा तब रकम बहुत बडी मालूम पडेगी, और हम हिसाब चुकता न करसके तो अवश्यही जेलमें जाना पडेगा. ऐसा न होने पावै इसका थोडा २ विचार पहलेहीसे रखना ! क्योंकि यहाँके दयालु अँग्रेज सरकारकासा हवा, प्रकाश और बागबगीचावाला यमराजका जेल नहीं है, वहां तो ब्रह्मांडोंको पिघलादेनेवाली अग्नि और सहन न हो सकने योग्य तथा वर्णन करनेहीमें त्रासदायक और भयंकर दुःख हैं. इसलिये इस दुनियांकी क्षणिक और रूखी मौजके लिये लाखों बरसतक नरकमें न पडना पडे. इसकी सँभाल रखना ।

८२ घनाक्षरी ।

पूर्व वोह पुण्य कीयो अरु हरिनाम लीयो,
ताहीके प्रतापसों प्रताप खरो पायो है ।
जीते जीय भोग भोग जौलौं नाहीं व्यापै रोग,
ऐसो तो न कोई जोई काल नाहीं खायो है ॥
रामजीवन यों भाखै जौन विषै रस चाखै,
सो न बुद्धिवंत ताहि तंत विसरायो है ।
नरकनमध्य पीडा भोगे ताहि काटैं कीडा,
त्यौंही कर मीजि मीजि वोह पिछतायो है ॥ १ ॥

२८५ कपडे और जेवर बचानेके लिये अपनी आत्माको मत डुबाओ ! आत्माको मत डुबाओ !

एक सेठने नौकरके साथ अपने पुत्रको तालावमें नहाने भेजा. भेजते समय उसने नौकरसे कहा " देख ! कपडे लडकेके कीमती हैं. ऐसा न हो कि, कोई उन्हें उठालेजांय. "

जब दोनों तालावपर पहुँचे तो नौकर कपडोंकी रखवाली करने लगा और लडका तालावमें नहाने लगा. नहाते २ लडकेका पैर फिसला और वह डूबने लगा. नौकर खडा २ यह सब बात देखता रहा परंतु सेठने उसको कपडोंकी रखवाली करनेकी आज्ञा दीथी. तब वह कपडोंको कैसे छोड जाता ? परिणाम यह हुआ कि नौकर खडा २ कपडोंहीकी रखवाली करतारहा और उधर लडका डूबकर मरगया. राम ! राम ! !

यह बात सुनकर हमको दुःख होता है और हम उस नौकरकी मूर्खतापर धिक्कार डालते हैं परंतु भाइयो ! यह तो देखो कि, हम स्वयं क्या करते हैं ? यह बात तो हुई हो या न भी हुई हो अथवा न जाने

कब हुई हो, परंतु हम तो अबभी वैसाही करते हैं. अपने गहने कपडोंको हम सँभालते हैं, चावीके गुच्छे और कागजोंकी वहियोंको हम सँभालते हैं, और अपने आत्माको हम डुवाते हैं. ऊपर लिखी वातपर तो हम शोक प्रगट करते हैं परंतु खास हमही वैसा काम कररहे हैं सो कैसा ?

भाइयो ! शुद्ध अंतःकरणसे प्रार्थना करो कि, हे प्रभु ! दुनियांदारीके हमारे मोहको कम कर ! और हमको ऐसी बुद्धि दे जिससे हमारे पवित्र कल्याणके लिये तेरा यथार्थ स्वरूप समझमें आसकै. नित्यप्रति सच्चे दिलसे जो परमेश्वरसे इस तरह प्रार्थना की जाय तो वह अवश्य सहायक होगा, उसकी सहायता विना उसकी कृपा विना यह मोह, माया छूट नहीं सकती और पुरुषार्थ विना अर्थात् लगे रहे विना प्रभुकृपा प्राप्त नहीं हो सकती. इस लिये कपडे गहनेके लिये अपनी आत्माको मत डुवाओ ! मत डुवाओ ! ! किंतु आत्माके कल्याणके लिये प्रभुमें लगे रहो ! प्रभुमें लगे रहो !.!

२८६ भले आदमियोंमें जैसे लुच्चे मिलजाते हैं, वैसेही भक्तोंमें ढोंगीभी मिलैंगे तो सही, परंतु वे पहचानमें आये विना नहीं रहते !

बंबईके पालवाबंदरपर, बेंडस्टेंडपर अथवा चौपाटीपर कभी सैर करने, हवा खाने गये हो ? वहां बहुतसे इज्जतदार गृहस्थ स्त्री और पुरुष सुवह शाम सैर करने जाया करते हैं. वहां केवल इज्जतदार लोगही सैर करने नहीं जाते परंतु बहुतसे लुच्चे लफंगे और रंडियांतक जाती हैं. उनमें कितनेही तो जेव कतरनेवाले होते हैं. कितनेही बुरी नजरसे आनेवाले होते हैं और कितनेही खास सोनेरी टोलीवाले होते हैं. वे लोग प्रायः ऊपरी भवका बनाकर वहाँ जाते हैं, उस भवकेको देखकर कितनेही अजाने लोग धोखा खा सकते हैं, कि ये धनवान् और सुखी लोग हैं तथा आवरूदार हैं परंतु अनुभवी लोग धोखा नहीं खाते. वे तो जानते

होते हैं कि, इनमेंसे किसीपर तो मकानका किराया वसूल करनेको कुरकी आनेवाली है, किसीने अपने पहननेके कपडोंके दामही नहीं चुकाये हैं, किसीसे सिलाईके दाम वसूल करनेको दरजी पुकारते हैं, किसीके बूट चोरबाजारसे खरीदे हुए हैं, किसीने घडी गिरवी रखकर रुपये उधार निकलाये हैं और कितनेहीके घरोंमें चूहेतक भूखे मरते चाकियोंको चाटते हैं तबभी किसी कारणसे या लोभलालचसे वे फिरने सैर करने आये हैं. ऊपरीभी भवका कैसाही हो परंतु वैसे लोग रीति भांतिमें, चालचलनमें, बोलचालमें और सूरत शकलमें भले आदमियोंसे भिन्नही होते हैं. वैसेही जो सच्चे भक्त हैं उनमें ऊपरसे लंबी २ मालाएँ पहननेवाले, चौडे २ तिलक छापे लगानेवाले और बडे २ जयगोपाल करनेवाले परंतु अंतःकरणमें विना रँगे भगवद्रसमें विना डूबे हुए ढोंगी भक्त मिले विना नहीं रहते, परंतु वे उन लुच्चे लफंगोंकी तरह जल्दीही पहँचानमें आजाते हैं. ऐसा झूंठा वेष बनाना सदा काम नहीं आसकता वरन् इससे तो और कीमत कम हो जाती है. इस लिये भाइयो ! इसकी पूरी सँभाल रक्खो कि, व्यवहार और भक्तिमें तुममें झूंठा ढोंग न आ घुसै ! क्योंकि प्रथम तो ढोंगही बुरा होता है जिसमेंभी प्रभुके साथ ढोंग करना तो पापकाभी पाप है इस लिये अपनी भक्तिमें ढोंगीपर न आने देनेकी पूरी सावधानी रखना !

२८७ धर्मका उपदेश करनेवालोंकी अपेक्षा हरिजनोंमें ज्ञान अधिक होता है.

अच्छे चित्रकार अनेक मनुष्य, पशु तथा वस्तुओंके ज्योंके त्यों चित्र उतारसकते हैं परंतु उन मनुष्यों, पशुओं तथा वस्तुओंके गुणदोषोंको नहीं जानसकते. इसी तरह जो उपदेश करनेवाले हैं. पुस्तक बनानेवाले हैं और सभाओंमें बडे २ व्याख्यान देनेवाले हैं वेभी उन चित्रकारोंहीजैसे हैं. चित्रकार जैसे चित्र खींचताहै वैसेही वे अपनी बुद्धिके बलसे और अभ्याससे सब बातें कह देते हैं. परंतु जो उन्होंने कहा है उसीका रहस्य समझनेवाले उनमेंसे थोडेही होते हैं और उन

थोडोंमेंसे उसका अनुभव करनेवाले औरभी थोडे होते हैं, परंतु हरि-जन भक्त तो उन सब बातोंको जाननेवाले, और उन सबकाही अनुभव करनेवाले होते हैं अर्थात् बाहरसे लंबी चौडी बातें करनेवाले परंतु भीतरसे कोरेके कोरे उन उपदेशकोंकी अपेक्षा प्रत्यक्षमें मूर्खसे दीख-नेवाले भक्तोंमें ज्ञान अधिक होता है, क्योंकि धर्मका उपदेश करने-वाले केवल धर्म और प्रभुकी बात कहसकते हैं परंतु भक्तजन तो उन सब बातोंका इसी जीवनमें अनुभव करसकते हैं. कहने और भोगनेमें जितना अंतर है उतनाही अंतर पौराणिकों और भक्तोंमें हैं. उपदे-शक कहते हैं कि, अब भोजन करना चाहिये परंतु अभीतक वेही भूखे पडे हैं और भक्तजन तो पेट भरके बैठे हैं. इस लिये भाइयो! बाहरका क्षणिक नाम पानेके लिये बतौनी बननेकी अपेक्षा भीतरी आनंद लूटनेके लिये भक्त बनना पसंद करो और भक्तको मूर्खता समझो, मत समझो, परंतु अपने आपहीको मूर्ख समझो, क्योंकि धर्मके लिये, अपने आत्माके लिये और प्रभुके लिये जो कुछ करना है सो हमने आजतक किया नहीं है परंतु भक्तजन उसे करते हैं. इससे अधिक नहीं तबभी एक सीढी तो वे हमसे ऊपर चढ चुके हैं. इतनेही वे हमसे श्रेष्ठ हैं इसलिये भाइयो! उनका आदर करो और वैसे बननेका यत्न करो!

२८८ हरिकथा करनेवालों और भक्तजनोंके ज्ञानमें कितना भेद है?

अँगरेज और दूसरे यूरोपियन लोग जब हिंदुस्थानमें सैर करने आते हैं तब पालवा बंदर पर बढिया स्टीमुलांचमें उतरकर अव्वल नंबरके होटलमें ठहरते हैं. फिर दो तीन दिन बंबईमें रहकर एक आधा व्याख्यान दे, थोडी भेट पूजा इकट्ठी करके वे कलकत्तेको रवाना हो जाते हैं. वहांसे मद्रास होकर मैसोरकी सोनेकी खान देख, निजाम सरकारकी महमानदारी ले, आगरेका ताजमहल देख; गंगामें नावकी सैर करते २ काशीके घाट देख, अमृतसरका सिक्ख लोगोंका

सोनेका मंदिर देख, देशी राजाओंके यहाँ हाथियोंकी लडाई देख, शिमलेका सरकारी महल देख, सीमाप्रांतकी पहाडी रेल्वे और कराचीका डाक देख, किसी सरकारी नौकरकी मेहर्वानीसे एक आधा जलसा देखते, लोगोंकी तालियां और विना पैसेके हुर्रेकी चिल्लाहटमें वे महीने दो महीनेकी सफर करके पीछे घर लौट जाते हैं और वहां पहुँचकर हिंदुस्थानके अनुभवके लंबे २ व्याख्यान देते हैं, बडे २ पुस्तक लिखते हैं आर समाचार पत्रोंमें वडी धामधूम मचा देते हैं.

परंतु यह सब ऊपरी वातें हैं. हमारे साधुओंकासा कि जिन्होंने पैरों चलकर अनेक गांव देखे हैं, अनेक दिहातियोंके भिक्षाके लिये घर देखे हैं, और सब जातियोंके लोगोंके रीत रिवाज और आचार विचार देखे हैं, हमारे देश और लोकसंबंधी पूरा २ अनुभव उन यूरोपियन मुसाफिरोंको कभी नहीं होता. वैसेही हमारे व्यास और भक्तोंके लियेभी समझना चाहिये. कथा कहनेवाले शास्त्रीवावा लोग धर्मके नियम पालनेके संबंधमें और ईश्वरीय मानसिक आनंदका अनुभव लेनेके विषयमें ट्रेनमें बैठकर मुसाफिरी करके पूरे दो सप्ताहमें सारे हिंदुस्थान भरके अनुभव करलेने और विलायतमें जाकर अपनेको हिंदुस्थानका अनुभवी प्रकट करनेवाले यूरोपियन मुसाफिरोंके समान हैं और भक्त लोग हिंदुस्थानके अनुभवी साधुओंके समान हैं कि, जो प्रभुके मार्गमें रमण करते हैं और अपने हृदयमें शुद्धप्रेमसे प्रभुको धारण करते हैं. यूरोप और अमेरिकाके लोग, जो हिंदुस्थानकी सच्ची स्थितिको नहीं जानते, उन मुसाफिरोंकी बातोंको सच्चा मानें तो मान सकते हैं परंतु हिंदुस्थानके घर घरसे जानकर साधु तो उन रेलमें बैठकर चार दिनमें लौटजानेवाले मुसाफिरोंकी वात नहीं मान सकते, वैसेही व्यवहारिक लोगोंमें वे व्यास चाहे वडे वन वैठे, परंतु सच्चे भक्तोंके आगे उनकी कुछभी कीमत नहीं है. इसलिये भाइयो ! बहुत बतौनी नहीं, परंतु प्रभुके सच्चे भक्त बननेकीही भावना रक्खो ! इसीमें कल्याण है !

२८९ जिसको रुचि न हो उसको बोध कराना वृथा है, इससे योग्य अधिकारीकोही उपदेश करो !

उत्तर हिंदुस्थानमेंसे रोजगार धंधा करनेको एक भैया बंबई गया. वह भैया कई प्रकारकी मिठाइयां बहुत अच्छी तरह बनाना जानता था. वह बंबईसे अजान था इससे उसने अपने एक परिचितसे पूँछा " भाई ! मुझे मिठाईका खूमचा लगाना है. जहाँ मिठाई अधिक बिके वह स्थान बताइये तो मैं वहांपर जाकर बैठूं. "

उसने कहा "भाई ! पालवाबंदर और बैंडस्टेंडपर नित्य सायंकालको बडे २ सेठ साहूकार जाया करते हैं. तुम अपना खूमचा वहीं जाकर लगाओ तो अच्छी विक्री होगी. "

दूसरे दिनसे उस भैयाने वहां जाना जारी करदिया बहुत रात्त जानेतक विचारा वहां खूमचा लिये बैठारहता परंतु कोई भी सेठ उससे एक पैसेका माल न खरीदता, इससे खाली हाथ उसे पीछा लौटना पडता. दो चार दश दिनतक जब यही दशा रही तो एकदिन उसने एक दूसरे आदमीसे वही बात पूँछी उस भले आदमीने कहा " पहले आदमीने तुमको सलाह देनेमें भूल की जिसको खानेकी कुछभी जरूरत न हो उसके पास खाना लेजानेसे क्या लाभ ? पाल्वाबंदरपर फिरनेवाले जिन सेठ साहूकारोंके लिये तुम मिठाई लेजातेहो उनको भूखही कहां लगती है ? जो उनको ठीक २ भूखही लगती हो तो वहांपर जानेकी जरूरतही उन को क्यों पडे ? उनके पेटमें पडाहुआ माल हजम नहीं होता तबही तो वे उसे पचानेके लिये हवा खाने जाते हैं. वे तुम्हारी मिठाई लेकर करें क्या ? उनके घरमें मिठाईकी क्या कमी है सो तुमसे खरीदकर सडकपर खडे २ खाँय ? पाल्वाबंदरपर मिठाई ले जानेसे तुम्हारा काम नहीं होनेका ! तुम समझते हो कि, सेठ साहूकार मेरी मिठाई बहुत खरीदेंगे परंतु उनको मिठाई खानेकी भूखही कब लगती है ? इस लिये जो मेरा कहना मानो तो खूमचा लेकर गोदीपर अर्थात् समुद्रके उस घाटपर जहाँ जहाजोंमें माल चढता उतरता है और मिलोंमें अर्थात्

कारखानोंमें जाओ कि जहाँपर मजदूर लोग शरीर तोडकर परिश्रम करते हैं और शिरका पसीना पैरतक उतारते हैं जिससे उनको भूख लगती है और गरीब होने परभी वे दोचार पैसे खर्च करदेते हैं. अथवा किसी स्कूलके पास अपना खूमचा लगाओ कि जहाँपर प्रभुकी कृपासे निर्दोष बालकोंको भूख लगती है. भाई ! जिनको भूख लगती है उनकेही पास तुम्हारी मिठाई विकसकती है, परंतु जिनके पेट भरे हैं और जिनको खाया हुआही नहीं पचता उनके पास जाकर तुम क्या करोगे ? ”

दूसरेही दिनसे वह गोदीपर मजदूरोंके पास जानेलगा और वहाँ उसकी मिठाई जोरशोरसे विकनेलगी.

भाइयो ! इसी तरह धर्मका उपदेश और प्रभुकी महिमाकी बातें भी जिनको धर्मका रंग कुछ २ लगजाताहै उनही भक्तों हरिजनोंके पास शोभादेती हैं. परंतु सुधरनेके नामसे उलटे विगडेहुए और आधे भ्रष्टोंके आगे वह उपदेश किसी कामका नहीं. इस लिये पात्र देखकर उसकी योग्यता देखकर उचित उपदेश करो ! सबको एकही लकडीसे मत हाँको ! क्योंकि घोडोंके लिये तो इशाराही बस है और गधोंकी पीठपर लगलगकर कई लकडियां टूट जाती हैं तबभी कुछ फल सिद्ध नहीं होता. इसलिये भाइयो ! उपदेश करनेमें सँभाल रखना, धर्मका उपदेश सुननेमें और प्रभुकी महिमा हृदयमें धारण करनेमें गधे न रहजाओ, पूरी सावधानी रखना, इस विषयमें जितना थोडा बनाजाय उतनाही कल्याणकारक है !

२९० दुःखके समयमें भक्तोंकी परमेश्वर खास सँभाल रखता है.

हमने देखा है कि, जहाँ मार्ग अच्छा होता है वहाँ पिता अपने बालकोंको छुट्टा छोडदेता है और उनको उनकी इच्छाके अनुसार स्वतंत्रतासे चलनेदेता है; परंतु जब खराब रास्ता आता है तब वह बच्चोंके बिना कहेभी उनको सँभालसे अपने पास खींचलेता है. वैसेही

जब हम अच्छी स्थितिमें हों और अपनी इच्छाके अनुसार सुगमतासे चलसकतेहों तब परमेश्वरको हमारी चिंता कम रहती है, परंतु जब हम किसी दुःखमें आपडते हैं तब परमेश्वर हमारी विशेषरूपपर सँभाल रखता है. इसलिये हरिजनोंको दुःखमें दुःखी नहीं होना और हिम्मत नहीं हारजाना चाहिये, परंतु ऐसा विचार रखना चाहिये कि, हमारे मातापिताही जब हमारे लिये इतनी चिंता करते हैं तब दयालु परमेश्वर कितनी चिंता रखताहोगा? इसमेंभी हरिजनोंके लिये तो उसको औरभी अधिक चिंता रहती है.

भक्तजनोंके चरित्र पढनेवाले और सुननेवाले जानते हैं कि, किसी भी सच्चे भक्तको सच्ची भीडके समय प्रभु कभी नहीं भूला है और भूलसकताभी नहीं है. इसलिये अपने धर्मपर विश्वास रखकर ईश्वरकी आशाओंको पालते रहो तो प्रभु दुःखमें तुम्हारा सहायक बने विना कभी न रहैगा, क्योंकि प्रभुने हमसे प्रण करलिया है कि,—

"न मे भक्तः प्रणश्यति।"

अ० ९. श्लो० ३१.

अर्थ—मेरे भक्तका कभी नाश नहीं होता.

इस लिये भाइयो! घडीभरके दुःखसे हारकर पवित्र धर्मके अच्छे कर्तव्योंको कदापि मत छोडदेना! जो तुम धर्मके कर्तव्योंको पूरा करनेमें लगे रहोगे तो प्रभु तुमको अवश्य सहायक होगा! अवश्य सहायक होगा!! इसे निश्चय समझो!!!

ठुमरी।

जो जन ऊधव! मोहिं ना बिसारै, ताहि न बिसारूं मैं छिन एक घडी रे॥ टेक॥ मोकों भजे जो भजों मैं वाकों, कल न परत छिन एक घडी रे। जन्ममरणको मैं संकट काटों, राखों सुख आनंदभरीरे॥ जो जन०॥१॥

सुमिरन कीनो द्रौपदी रानी, चीर बढाये प्रभु आप हरी रे।
महाभारत भरुईके अंडा, राखलिये गजघंट धरी रे ॥ जो
जन० ॥ २ ॥ ध्रुव प्रहलाद रैनदिन ध्यावैं, नृसिंहरूपसों
प्रकट करी रे। खंभ फाड हिरणकश्यप मारचो, रक्षा भक्त
प्रहलाद करी रे ॥ जो जन० ॥ ३ ॥ अंबरीष घर गये
दुर्वासा, चक्र पठाइ प्रभु सार करी रे। भजनहार भजों, तज-
नहार तजों, ऐसी हमारी परापरी रे ॥ जो जन० ॥ ४ ॥
पाँच पांडवकी रक्षा कीनी, लाक्षागृहमें सहाय करी रे।
सूर कहै गजराज उधारचो, दयासिंधु यदुनाथ हरी रे ॥
जो जन० ॥ ५ ॥

२९१ समय पडनेपर प्रभुके लिये सारी दुनियाँभी छोडदेनी पडे तोभी उसमें कुछ बडी बात नहीं है.

मुसलमान बादशाहोंके समयमें लोगोंको धर्मका बडा भारी आग्रह था उस आग्रहके मारे मुसलमान बादशाहोंके सूबे जहाँ तहाँ बडा त्रास दिखातेथे. उस समय पंजाबके सूबेने किसी बहानेसे एक भक्तको फाँसी देनेकी आज्ञा दी. फाँसीकी आज्ञा सुनकर लोग बहुत घबराये और नम्रतापूर्वक सूबेसे कहने लगे "यह भक्त बडा भला आदमी है. इसको फाँसी देनेसे प्रजाका चित्त बहुत बिगडैगा. इससे इसको और चाहे जैसी सजा दीजिये परंतु फाँसीसे तो बचाइये!"

लोगोंका ऐसा कहना सुनकर सूबेने काजीकी ओर देखा. काजी बोला "इस काफिरके लिये फांसीके सिवाय दूसरी कोई सजा नहीं है! हां एक बातसे वह छूटसकता है और वह बात यही है कि, वह मुसलमान बन जाय तो बस फिर उसकी जिंदगी बनजाय."

सूबेने उस भक्तसे यही बात कही. तब भक्तने उत्तर दिया "आप जो चाहे सो करैं! मैं मौतसे डरकर अपना धर्म नहीं छोडसकता."

लोगोंने उसे बहुत कुछ समझाया और कहा " नाहक अपना प्राण क्यों खोता है ? सूवा अपनी आज्ञाको लौटेगा नहीं ! मुसलमान बनजानेमें तेरा जाताही क्या है ? अंतःकरणमें तू चाहे जैसा धर्म पालना परंतु इस समय तो कहदे कि मैंने हिंदू धर्म छोडा. "

भक्तने उत्तर दिया " नहीं साहब ! ऐसा कदापि नहीं होसकता, प्रभुके साथ धोखेबाजी नहीं चलसकती. इस तरह डरजानेसे मौत पीछा थोडीही छोड देगी ? पांच वरसमें या दस वरसमें कभी तो मरना हेही तब अपने धर्मके लिये इसी समय मरना पडे तो क्या डर है ? "

इसके पीछे उसके बचे और स्त्री आदि उसके पास आये और उसका प्राण बचानेके लिये आँखोंमें आंसू भरकर बडे प्रेमपूर्वक हाथ जोडकर बोले " तुम चाहे मुसलमान हो जाओ परंतु अपना प्राण बचाओ, और नहीं तो हमारेही लिये तुम अपना प्राण तो बचाओ ! "

भक्तने उत्तर दिया " तुम्हारे लिये मैं सारी दुनियांको छोड सकता हूं. सब कुछ तुम्हारे नामपर मैं त्याग सकता हूं परंतु प्रभुके नामपर मैं तुमकोभी त्याग सकता हूं. मेरे प्रभुको छोड देना पडे, मेरी भक्तिको छोडदेना पडे इससे तो मैं अपनी स्त्री और पुत्र परिवार तथा देहतक छोडदेना पसंद करताहूं. पहले प्रभु, पहले धर्म, पहले अपनी आत्मा और फिर दूसरा सब कुछ. अंतमें उस अत्याचारी सूबेने उस भक्तको फाँसीपर लटकादिया परंतु उसने तबभी अपना धर्म नहीं छोडा * धर्मके संबंधमें

---

* प्राचीन समयमें धर्मके लिये प्राण देनेवाले हमारे देशमें हजारों भक्त हो गये हैं परंतु हमारे यहां इतिहास लिखनेकी चाल नहीं है इससे व्यौरेवार, सालवार और नामवार उदाहरण नहीं मिल सकते. तबभी पंजाबमें गुरुमुखी भाषामें लिखे हुए सिक्ख धर्मके पुस्तकोंमें वैसे बहुतसे उदाहरण मिलते हैं.

प्राचीन लोगोंमें इतनी दृढता थी तवहीं हजारों आपत्तियां सहनेपरभी हमारा धर्म आजतक टिका हुआ है, परंतु अव वह दृढता टूटती जाती है. अव तो जरा अधिक तनख्वाह मिलनेके लिये, मलिन, अपवित्र पदार्थ खानेपीनेके लिये, अंगरेजोंकी खुशामदके लिये मौज मजा उडानेके लिये गोरी २ वीवियोंके लिये और टुकडा रोटीके लिये लोग अपना धर्म छोडते जाते हैं हमारे पवित्र धर्मपरसे हमारी श्रद्धा इतनी घटगयी है और जो यही दशा रही तो अंतमें क्या परिणाम होगा सो विचारते वडा भय लगता है. प्रभु ! ऐसी अधम स्थितिमेंसे हमको वचा ! हमको वचा ! ! और हमारे पवित्र धर्मपर उत्तम आर्यधर्मपर हमारा विश्वास दृढ करके धर्मके निमित्त, प्रभुके निमित्त कभी हमपर कष्ट आ पडे तो उनको सहन करनेकी हमें शक्ति दे कि, जिससे हम तेरे पवित्र नामपर सारी दुनियांको न्योछावर कर सकें !

९३ पद ।

मन वच कर्म भजो भगवाना, त्यागहु विघ्न करै जो आना ॥ टेक ॥ प्रह्लादहि हिरणाकुश त्यागे जिन हरि-भक्ति विघ्न बहु ठाना । भयो उधार पुत्रके कारन जब प्रभु नरसिंहरूप दिखाना ॥ १ ॥ भरतभक्ति जग जानी सवहीं भजे राम जिन कृपानिधाना । त्यागिदई कैकेयी माता नेक न मोह चित्त निज आना ॥ २ ॥ ऋषि-पत्नी निजनिज पति तजिके कृष्णचंद्रपद जाय लुभाना । पति अरु पितरनको उद्धारे भई ज्योतिमहँ ज्योति समाना ॥ ३ ॥ रामजीवन प्रभुकृपा निहारै जासों मिटै मोह मद माना । करि वनवास आश इक प्रभुकी भजो पदारविंद सुखखाना ॥ ४ ॥

२९२ अपने हृदयके पुराने पाप और बुरी आदतें छोडे विना सच्ची भक्ति हो नहीं सकती.

हमको अपने पुराने मकानपर नया मकान बनाना होता है तब पहले पुराने मकानका सारा सामान उस जगहसे हटादेना पडता है. पुराना सामान हटाये विना क्या उसीके ऊपर नया घर बनाया जा सकता है ? कभी नहीं ! वैसेही हमारे अंतःकरणमें जो पहलेके पाप घुसे हुए हैं और जो बुरी आदतें पडगयी हैं तथा जो बुरी सोहबतें लगगयी हैं उन सबको बदले विना भक्तिका नया मकान बन नहीं सकता. पुराना सामान निकाल डालना ही बस नहीं है. परंतु उसके स्थानमें नया सामान भरना जरूरीहै. अंतःकरणके पापोंके बदले अंतःकरणकी पवित्रता, बुरी आदतोंके बदले सद्गुण और बुरी सोहबतके बदले सत्संग और हरिजनोंकी सेवा हृदय और मास्तिष्कमें आना चाहिये. जो ये नयी वस्तुएँ आवैं तो ही हमारे हृदयमें भक्ति माताका नया मंदिर बन सकता है और तोही उसमें प्रभु आसकते हैं इस लिये भाइयो ! जो समर्थ प्रभुको अपने हृदयमें लाना चाहो तो पहलेके कचरेको दूर करो ! और उसके बदले भक्तिके मंदिरमें परमार्थके पत्थर, सत्संगका चूना, दयाका दरवाजा और प्रार्थनाके शब्दोंका घंटा रक्खो तो प्रभु आपही उस मंदिरमें पधारैगा !

२९३ प्रभुके निमित्त साधुओंका और भक्तोंका उनकी योग्यताके अनुसार आदर करो !

सबही साधु और भक्तजन आदर करने योग्य हैं क्योंकि अपनी शक्तिके अनुसार प्रभुके निमित्त उन्होंने हमारी अपेक्षा अपने व्यवहारी सुख और इच्छाओंका अधिक भोग दियाहोता है अर्थात् त्याग कियाहोताहै. इतनाही क्यों ? हमारी अपेक्षा वे ईश्वरीय मार्गमें अधिक आगे बढे होते हैं इससे वे मान पाने योग्य होते हैं. यों तो सबही साधु मान पाने योग्य हैं परंतु अपने २ गुणोंके अनुसार, भक्तिके

अनुसार, त्यागके अनुसार, ज्ञानके अनुसार और उमरके अनुसार न्यूनाधिक मानके योग्य होते हैं. यद्यपि ये सबही राजाकी छापवाले सिक्केकी तरह हैं, परंतु उस सची और सबपर एकसा छाप होनेपरभी प्रत्येक जातिके सिक्कोंकी कीमत अलग २ होती है, जैसे मोहरकी कीमत सबसे अधिक होती है, रुपयेकी कीमत उससे कम होती है, पैसेकी कीमत उससेभी कम होती है और पाईकी कीमत सबहीसे कम होती है परंतु तबभी महारानीकी महाराजाकी छाप तो सबहीपर होती है तैसेही सब साधुओंके लिये राजाओंके भी महाराजा प्रभुकी छाप है और तबभी अपने २ अधिक या न्यून गुणोंके अनुसार वे अधिक या न्यून सन्मानके पात्र हैं.

यों तो सच्चे २ मोती सबही मोती हैं परंतु ज्यों ज्यों उनमें पानी अधिक और आकार बडा होताहै त्यों त्यों कीमत भी बडी होती जाती है और थोडे पानीदार तथा छोटे मोतीकी कीमत थोडी होती है. तैसेही साधु सारे साधुही हैं परंतु ज्ञानमें भक्तिमें, अनुभवमें और धर्म पालनेमें जो बडे होते हैं वे अधिक मान पानेके योग्य हैं. ऐसे भले साधु और भक्तोंको मान देना सो प्रभुको मान देने समान है, क्योंकि वे अपने आत्माका और सारे जगत्का कल्याण करनेवाले हैं और प्रभुकी आज्ञा पालनेवाले हैं इसलिये वे हमारी अपेक्षा और दूसरी किसीभी वस्तुकी अपेक्षा प्रभुको अधिक प्रिय हैं वे प्रभुको कितने प्रिय हैं स्वयं भगवान्ने ही गीतामें कहा है:—

"परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥"

अ० ४. श्लो० ८.

अर्थ—साधुओंकी रक्षा करनेको, पापियोंका नाश करनेको और धर्मको अच्छी तरह बढानेको मैं युगयुगमें अवतार लेताहूं.

भाइयो! सुनो! प्रभुके ये वचन खास याद रखने योग्य हैं. साधु, भक्तजन, हरिजन तथा सत्पुरुष जैसे भाग्यशाली पुरुषोंको जिनके

लिये स्वयं भगवान् अवतार लेते हैं, हमको कितना मान देना चाहिये ? और उनकी कितनी सेवा करना चाहिये ? इसका तो विचार करो ! याद रक्खो कि, जब ऋषि मुनियों और ब्राह्मणोंका अर्थात् विद्वानोंका मान था और जब उनको खाने पीनेकी चिंता नहीं करनी पडतीथी तबहीं हिंदुस्थानमें सच्चा धर्म था और तबहीं हिंदुस्थान ठीक था, और आज यूरोप, अमेरिकाके राज्य ठीक हैं इसके मूलकारणोंमें सत्पुरुषोंका सन्मान, उनकी मिलनेवाली उत्तेजना और उनके धर्मको फैलानेके लिये राज्योंकी ओरसे पादरियोंको मिलनेवाली बडी मददही मुख्य है. इस लिये भाइयो ! साधुओंका तिरस्कार मत करो ! उनको भीख मांगनेवाले लँगोटिये बाबाजी मत कहो ! उनको मुफ्त खव्वा मत समझो ! परंतु उनको हमारे धर्मके थंभ समझो ! उनको सुधारनेका परिश्रम करो ! और उनकी तथा तुम्हारी योग्यताके अनुसार उनको ईश्वरके निमित्त सन्मान करना सीखो !

९४ पद ।

जे जन ऊधो मोहिं न बिसारैं, ताहि ना बिसारूं छिन एक घरी ॥टेक॥ जो मोहिं भजैं भजूं मैं वाकों, कल न परत मोहिं एक घरी । काटूं जन्म जन्ममें फंदन राखों सुख आनंदकरी ॥ १ ॥ चतुर सुजान सभामैं बैठे दुःशासन अनरीत करी । सुमिरन कियौ द्रौपदी जबहीं खैंचत चीर उबार धरी ॥ २ ॥ ध्रुव प्रहलाद रैन दिन ध्यावै प्रगट भये वैकुंठपुरी । भारतमैं भरुहीके अंडा तापर गजको घंट दुरी ॥ ३ ॥ अंबरीष गृह आये दुर्वासा चक्रसुदर्शन छांह करी । सूरके स्वामी गजराज उबारे कृपा करी जगदीशहरी ॥ ४ ॥

२९४ नक्शेमें विलायत देखलेनेसे विलायतका अनुभव नहीं हो सकता. वैसेही केवल शास्त्र पढलेनेसे धर्मके नियम पाले विना उद्धार नहीं होसकता.

स्कूलमें छोटे लडके नक्शा देखना सीखते हैं और गुरुजी पूँछते हैं "बंबई कहां है? गंगा नदी कहां है? लंदन बताओ! पेरिस बताओ! चीनकी दीवार कहां हैं? हिमालयकी सबसे ऊंची चोटी कौनसी है?"

तब लडका अंगुली रखरखकर तुरंत बताता जाताहै परंतु जो उससे पूँछा जाय कि, तेरा 'घर कहाँ है? तेरे मामाका घर कहाँ है?' तो वह कुछभी नहा जानता. जो उससे पूँछाजाय कि 'सिकंदरबादशाह कहाँ मराथा?' तो वह तुरंत बतादेताहै परंतु जो पूँछाजाय कि 'तेरा दादा कहां मराथा' तो वह कुछभी नहीं बतासकता. जो उससे पूँछा जाय कि, 'अकबरका जन्म कहां हुआथा?' तो वह बतादेगा, परंतु जो उससे पूँछाजाय कि तेरे पिताका जन्म कहां हुआथा?' तो वह नहीं बतासकता. जो उससे पूँछाजाय कि, 'नूरजहांका विवाह कब हुआथा?' तो वह ठीक साल बतादेताहै, परंतु जो उससे पूँछाजाय कि 'तेरी माताका विवाह कब हुआ था?' तो वह कुछभी नहीं बतासकता. वैसेही पेटके लिये शास्त्र पढनेवालेभी स्कूलके लडकोंके नक्शेम नगर नादियोंके नाम बतानेकी तरह शास्त्रसंबंधी बातें बतादेते हैं परंतु रहस्य तो उसका कोईसा भाग्यशालीही समझता होगा. और उसके अनुसार आचरण रखनेवाले महात्माभी विरलेही निकलते होंगे.

लडके नक्शेमें जैसे तुरंत ईरानकी हद बतादेते हैं परंतु असली ईरानकी हद तो उन्होंने कभी स्वप्नमेंभी नहीं देखी होती, वैसेही पुस्तकोंमेंसे शास्त्री लोग जविनका हेतु कहे देते हैं परंतु स्वयं वेही जविनके मूलहेतुको नहीं समझते. जैसे लडके अपनी होशियारी दिखानेके लिये अंगुली रखकर चट सहारेका भारी जंगल बतादेते हैं, वैसेही पौरा-

णिक बाबा जगत्की उत्पत्ति और नाशकी बडी २ बातें माराकरते हैं परंतु वे स्वयंही जगत्की उत्पत्ति और लयके कारणको समझते नहीं. लडके तुरंत नक्शेमें दीवार बतादेते हैं परंतु असली दीवार तो उन्होंने कभी स्वप्नमेंभी नहीं देखी. वैसेही भट्टजी हमको मायाका मिथ्यापन समझाते हैं परंतु उन्होंने उस मिथ्यापनका कुछभी अनुभव नहीं कियाहै तो लडके नक्शेमें जैसे जापानका ज्वालामुखी पर्वत दिखाते हैं परंतु वे पहाड देखनेका उनको कभी अवसरही नहीं आया. वैसेही शास्त्र पढे हुए पंडित जीवका स्वरूप बताते हैं परंतु जीवके सच्चे स्वरूपको खुद वेही नहीं समझते और जैसे लडके एकही अंगुलीसे एकही सेकंडमें हिमालयका ऊंचेसे ऊंचा शिखर दिखादेते हैं परंतु जैसे आज. तक उन शिखरोंको किसीने नहीं देखा, वैसेही कथा कहनेवाले प्रभुके स्वरूपकी बातें करते हैं परंतु उस स्वरूपको उन्होंने कभी समझा नहीं है, क्योंकि कहदेना कुछ और वस्तु है और समझलेना कुछ और वस्तु है. बातें करने और अनुभव लेनेमें जमीन आसमानकासा अंतर है. ऐसा अनुभव तो भाग्यशाली भक्तोंकोही होताहै और प्रभुके नामकी लगन लगे विनाके पंडित छोटे बालकोंकी तरह नक्शे देखनेहीमें रहजाते हैं.

इस परसे यह नहीं समझ लेना चाहिये कि शास्त्र जानना निरर्थक है, परंतु कहनेका तात्पर्य यह है कि केवल पेट भरनेके लिये, बातें करनेकी लिये, बडप्पन पानेके लिये, अथवा विवाद करनेके लियेही शास्त्रका पाठ करनेसे लाभ नहीं होता, परंतु पढे हुएको हृदयमें धारण करना चाहिये और उसका प्रत्यक्ष अनुभव करना चाहिये तबही वह कामका है, और वह भक्तिसे प्रभुसेवासे हो सकता है. इस लिये जैसे बनै वैसे प्रभुपरका प्रेम बढाओ! प्रभुप्रेमकेही लिये शास्त्र हैं, उसीके लिये हमारा जीवन है, उसीके लिये यह संसार है और उसीमें प्रभुप्रेममेंही मोक्ष है. भाइयो! नक्शेमें विलायत देखतेही न रहजाओ परंतु धर्मके रहस्यको अनुभवमें लाने और प्रभुप्रेम बढानेका यत्न करो! प्रभुप्रेम बढानेका यत्न करो!!

राग कालिंगडा ।

सुमिरन बिन सुख नहीं पावैगा, नहीं पावैगा, नहीं पावैगा ॥ टेक ॥ भवसागरमें भटक मरैगा, जो गुरु वाक्य विसारेगा ॥ सुमिरन० ॥ १ ॥ भक्ति ज्ञान विना शठ तोकू, जमडा मुखमें चावैगा ॥ सुमिरन० ॥ २ ॥ कुंभीपाक आदि नरकनमें, यमकिंकर ले जावैगा ॥ सुमिरन० ॥ ३ ॥ अजपा जाप नाव भव जलतें, पलमें पार लगावैगा ॥ सुमिरन० ॥ ४ ॥ भाव धरी भज निर्गुण चेतन, फेर जन्म नहीं आवैगा ॥ सुमिरन० ॥ ५ ॥ विमल विशद नित श्रीसद्गुरुका, देव कृष्ण यश गावैगा ॥ सुमिरन० ॥ ६ ॥

२९५ भक्तिका टीला और मायाका बगीचा.

एक साधु किसी ऊंचे टीलेपर छोटीसी झोपडीमें बैठा भजन करताथा वहां भोग विलासकी कोई सामग्री मिलती नहीं थी, जाना आनाभी कठिन था, पानीका झरना भी दूर था. थोडी २ ठंड पड़तीथी और किसी २ दिन खाने विना उपवासभी करना पडताथा. टीलेके नीचे एक सुंदर नदी बहतीथी और नदीके किनारेपर एक सुंदर बाग लगाथा. बागमें भोगविलासकी सर्व सामग्री थी, बहुतसे आदमी उस बागमें भोगविलास करतेथे. उस साधुका एक चेला टीले परसे सब बातें देखा करताथा जिससे कभी २ भोगविलासके लालचमें आकर यह गुरुसे कहता कि:—

" महाराज ! नीचे बागमें चलोना ! आराम तो वहीं है ! यहां तो धूनीके लिये पूरी लकडीभी नहीं मिलती ! मैं तो जाडे मरता हूं ! वहां खाने पीनेका कैसा सुख है ? आप देखो तो सही ! टीलेपरसे

जाते आते जरा चूकजांय तो सब कुछ हो चुके परंतु वहां बागमें किसी बातकी चिंता नहीं है. वैसा सुख छोडकर आप इस उजाडमें क्यों बैठे हैं ? "

गुरुने उत्तर दिया " बच्चा ! यहांही आनंद है थोडे दिनमें उनके भोगविलासका फल देख लेना । "

गुरुजीकी बात सच्ची निकली. थोडे दिनोंमें बरसातका मौसम आया खूब पानी बरसा. नदीमें बाढ आई और उस बाढमें भोगविलासका वह बाग, बागके भीतरके कमरे और कमरोंमेंकी सामग्री तथा आदमी सब कुछ बहगया, परंतु गुरुजीकी भक्तिकी टेकरीतक तथा पानी नहीं पहुँचा. वहां तो गुरु और चेला दोनोंही सकुशल बचगये. तब गुरुने पूँछा "क्यों बच्चा ! भोगविलासके लिये नीचे जाना है ?" चेलेने दोनों हाथ जोडकर कहा "नहीं महाराज ! मेरी भूल हुई !"

भाइयो ! पापियोंका भोगविलास तो नदीकिनारेके बागकी तरह घडीभरमें नाश हो जानेवाला है. इस लिये उसके लालचमें पडकर भक्तिकी निर्भय टेकरी प्रभुके प्यारे टीलेको छोड मत देना ! छोड मत देना ! !

२९६ गाँवमें जब राजा आनेको होता है तब कितनी सफाई रखनी पडती है ? तब प्रभुको हृदयमें लानेके लिये कितनी पवित्रता रखनी ? इसका तो विचार करो !

कलकत्तेका गवर्नर आनेवाला था तब बंबईमें शहरसफाईकी बडी धूमधाम मची थी. सडकें साफ की जाती थीं, मकानोंपर रंग और वारनिश होता था, सडकोंपर लोग ध्वजा पताकाएँ लगाते थे, कोई कागजके फूल लगाते थे, कोई अपनी दूकानोंपर जरीके थान लटकाते थे, कोई सोनेरी रूपेरी बडे २ अक्षरोंमें स्वागत लगातेथे, कोई फूल और पत्तोंकी सुंदर मिहराब लगातेथे, और कितनेही जौहरियोंने अपने मकान और दूकानमें मोतियोंकी झालर लटकाईथी. समुद्रके किनारे बंदरपर लोगोंके झुंडके झुंड इकट्टे हुएथे; सडकके दोनों ओर

बडे दबदबेसे सेना खडीथी और लाटसाहबके सत्कारमें तोपोंकी दना-दनी होतीथी.

बंबईमें जब इस तरहकी धामधूम मचरहीथी तब काठियावाडका एक भक्त बंबई आयाथा और किसीकी सिफारिशसे एक सेठके मकानमें ठहरा हुआथा. वह सेठ सुधराहुआथा, आधा भ्रष्ट था, इससे उसको उस भक्तकी रीति रिवाज पसंद नहीं आतीथी और बात २ में वह भक्तकी चेष्टा किया करताथा. वह भक्त दिनमें तीन बार नहाता, बहुत माला कंठी रखता, तिलक छापे लगाता, बहुतसे व्रत उपवास करता, बहुत धर्मकी बातें किया करता, दूसरे भक्तोंके पास जाया आया करता और सेवा पूजामें बहुत समय लगाता था सो उस सेठको अच्छा नहीं लगताथा. इससे वह कहता " भक्त ! तुम भक्त तो हुए परंतु अभी ढोंग न छोडपाये ! इन सब ढोंगोंमें क्या लाभ है ? प्रभु तो अंतःकरणमें चाहिये इन बाहरी दिखावटोंसे क्या काम ? "

इस तरहकी बातें होरहीथीं इतनेहीमें तोप छूटी. तोप छूटतेंही सेठने कहा " भक्त ! चलो चलो ! देर मत करो ! आजकी धामधूम देखने योग्य है. "

भक्तने पूँछा. " आज क्या है ? "

सेठने कहा " अरे महाराज ! इतनीभी खबर नहीं है ? आज विला-यतसे लाटसाहब आते हैं ! "

भक्तने कहा " लाटसाहेब आते हैं तो क्या हुआ उसमें इतनी धूमधाम क्यों ? "

सेठ बोला " वाह महाराज ! यहभी क्या प्रश्न है कि, लाटसाहब आते हैं तो क्या हुआ ? तुम बाबा बैरागी दुनियांदारीके मजेमें क्या समझो ? इतना बडा हाकिम आवै उसका सन्मान नहीं करना ? जो उनको इतना सन्मान न करें तो सरकारको हमारी वफादारी कैसे मालूम हो ? "

भक्तने कहा " सेठ साहब ! ऐसी वफ़ादारी दिखानेकी जरूरतभी क्या है ? "

यह सुनकर सेठ जामेसे बाहर होगया. वह बोला " भक्त तुम तो निरे पशु हो ! तुम कहते हो कि, सरकारको वफादारी दिखानेकी जरूरत क्या है ? ऐसा कहनेवालेको तो मुश्कें बांधकर कोडोंसे पीटना चाहिये. जिसके राज्यम हम सुखसे रहें, जो हमारी अच्छी तरह रक्षा करै, जो हमको नये स्वत्व दे, जो हमको चोरोंसे, लुटेरोंसे और विदेशियोंके आक्रमणसे बचावै, जो हमारे लिये सडकें, पुल, अस्पताल और मदरसे बनावे, जो हमारे धंधे रोजगारको, खेती वाडीको और व्यापारको बढावै, जो अकाल, रेल, आग आदिकी आपत्तियोंके समय हमारी सहायता करै, और जो हमारे धर्मकी रक्षा करै उस सरकारका जो वफादार न रहे और उसके भले हाकिमोंका सन्मान न करै उसके बराबर निमकहराम दूसरा कौन है ? "

भक्तने कहा " सेठ साहब ! तुम्हारा कहना सब सच है परंतु इसपरसे तो सबसे अधिक निमकहराम आपही जान पडते हो ! "

सेठने जवाब दिया " तुम्हारे मगजमें गरमी चढगयी दीखती है. यह तो बताओ कि मैं निमकहराम कैसे हूं ? "

भक्तने कहा "गवर्नर और गवर्नरोंके राजाकेभी राजा जिसके चरणोंमें हजारों बार शिर झुकाते हैं, जिसकी आज्ञासे सूरज चमक रहा है, जिसकी आज्ञासे समुद्र सदा चढता उतरता रहता है, जिसकी आज्ञासे तारे फिरा करते हैं, जिसकी आज्ञासे मेह बरसा करता है, जिसकी आज्ञासे वृक्ष फल देते हैं, जिसकी आज्ञासे तुम, सारी दुनियां और अनंत ब्रह्मांड उत्पन्न हुए हैं, उस सर्वशक्तिमान् प्रभुकी ओर तुम बेपरवाही दिखाते हो इससे तुम सब नमकहरामोंसेभी बढकर नमकहराम हो ! क्योंकि और नमकहराम तो दुनियांके साथ नमकहरामी करते हैं परंतु तुम तो खास परमेश्वरके साथ नमकहरामी करते हो ! अब तुम विचार करो कि एक हाकिमके आनेके लिये जब इतनी

धामधूम करनी पडती है तब अनंत ब्रह्मांडके नायक परमेश्वरको हमारे हृदयमें लानेके लिये क्या तैयारियां नहीं करनी चाहिये ? ”

भाइयो ! भक्तिके बाहरी चिह्न हैं सो प्रभुकी ओर वफादारीके निशान हैं और प्रभुको अंतःकरणमें लानेकी तैयारियां हैं. इस लिये जो पूर्ण प्रेमसे सर्वशक्तिमान् परमेश्वरको अंतःकरणमें लाना हो तो आरंभमें भक्तिके बाहरी चिह्नोंकीभी कितनेक अंशमें आवश्यकता है.

२९७ भक्तिके दो अंग, प्रभुकी ओरका कर्तव्य और दूसरा दुनियांकी ओरका कर्तव्य.

ईश्वरने भक्तिके दो अंग कहे हैं (१) प्रभुकी ओरका कर्तव्य और (२) दुनियांकी ओरका कर्तव्य. प्रभुकी ओरका कर्तव्य पूरा करनेमें हमारे देशके भक्त बहुत ध्यान देते हैं परंतु दुनियांकी ओरका कर्तव्य पूरा करनेमें वे बिलकुलभी ध्यान नहीं देते. इससे उनकी भक्ति एक अंगकी ओर अधूरी होती है. हमारे देशके लोगोंकी झोंक निवृत्तिकी ओर होती है इससे प्रभुकी ओरका कर्तव्य पूरा करना सुगम जान पडता है, क्योंकि उसमें अपने स्वार्थका अहंकारका भोग थोडा देना पडताहै, परंतु दुनियांकी ओरका कर्तव्य पूरा करनेमें अर्थात् भले काम करनेमें और लोगोंके साथ भलाई रखनेमें बडा परिश्रम होताहै इसलिये यह अंग तो आजकल हमलोगोंने छोडसा दिया है.

प्रभुकी ओरका कर्तव्य पूरा करनेवाले दुनियांकी ओरका कर्तव्य किस तरह पूरा नहीं करते सो हमने देखाहै कि, बहुतसे भक्त सारा दिन भगवत्सेवाहीमें लगे रहते हैं परंतु अपने पास बडी संपत्ति होने परभी कभी गरीबोंको सहायता नहीं करते. ऐसा देखाहै कि, जो हरिकथा कहनेहीमें अपना जीवन व्यतीत करनेवाले हैं वे अपने पास बडे २ मकान होते हुएभी गरीब मुसाफिरोंको घडीभर ठहरने नहीं देते. हम ऐसे बहुतसे आदमियोंको पहचानते हैं कि, जिन्होंने प्रभुके निमित्त अपने घरबार छोडदिये हैं, स्त्री पुत्र छोडदिये हैं, अनेक

प्रकारके सुख छोडदिये हैं, और प्रभुके नामका जप करनेहीमें अपना जन्म गँवाना निश्चय कररक्खाहै, परंतु वे औरोंकी जरासी भूलकोभी क्षमा नहीं कर सकते और जरासी बातमें क्रुद्ध होजाते हैं. जो योगाभ्यास करनेमें अपना बहुत समय लगाते हैं उनकोभी हमने देखा है कि, मनुष्यजातिके सहायक बननेमें वे भी ढीलेही होते हैं और जिनका बाहरी त्याग बहुत बढाहुआ होता है वे भी दुनियाँकी ओरका कर्तव्य पूरा करनेमें बेपरवाह होनेसे अंतःकरणमें पक्षपाती रह जाते हैं. ऐसा होनेका कारण यही है कि, हमारे भक्त प्रभुकी ओरका कर्तव्य पालन करनेका अंग सँभालते हैं परंतु दुनियांकी ओरके कर्तव्यका अंग नहीं संभालते. वे तो यही कहते हैं कि, संसार झूठा है, संसारसे हमको क्या काम है, जनसमाजकी सेवा करनेको वे लोग दुनियाँदारीमें पडा रहना समझते हैं, मनुष्योंके साथ भलाई करनेको खुशामद समझते हैं और फक्कड बनके मनमाने वहाँ फिरनेको वे भक्ति समझते हैं, तथा इस प्रकारकी भक्ति करनेके लिये अर्थात् अपने भाई बंधुओंको धिक्कारकी नजरसे देखना सीखनेके लिये वे गांजा और चरसकी मदद लेते हैं. प्रभु दया कर! दया कर !! दया कर!!!

इस तरह भक्तिके एक अंगको ग्रहण करके दूसरे अंगको त्याग देनेसे मनुष्य अर्धांगवायुके रोगीकी तरह होजाता है और उसकी गाडी एक पहियेवाली तथा उसका विमान एक पंखवाला होजाता है. इससे वह उस ठौरका उसी ठौर पडा रहजाता है और जितना वह परिश्रम करता है उतना फल नहीं पासकता. हमारे धर्ममें जैसे एक अंगी भक्ति बनगयी है वैसेही व्यवहारमेंभी समझो! मनुष्य बुद्धिबलमें आगे बढते जाते हैं परंतु स्त्रीशिक्षामें तो शून्यही हैं. इससे हमारा संसारसुख अधूरा हो गया, क्योंकि जिस रोगीका आधा अंग खराब हो जाय वह सुख थोडाही भोगसकता है? इसी लिये हम संसारका सुधार नहीं करसकते और यह अर्धांग रोग लग-

जानेसेही आजकल हमारी भक्ति पूरा फल नहीं देसकती. प्राचीन भक्तोंकी भक्तिमें बडे २ अद्भुत चमत्कार होगयेहैं इसका कारण यही है कि, उनकी भक्ति दोनों अंगोंसे पूर्ण थी. इस लिये जहांतक हम भक्तिके साथ परमार्थको न जोडें और संसारके साथ प्रेमभाव तथा भलाईसे वर्ताव करना न सीखें तबतक याद रक्खो ! कि हमारी भक्ति अधूरी है ! अधूरी है ! ! इससे ऐसी अधूरी भक्तिमें न रहजानेकी सँभाल रखना.

२९८ दोनों पंख बिना पक्षी उड नहीं सकता. वैसेही एकअंगी भक्तिसे उद्धार नहीं होता.

उत्सवके समय हम वारवार और दौड २ कर दर्शन करने जाते हैं, क्योंकि उस समय वहां कुछ देखने योग्य रचना होती है, फूलके हिंडोरे होते हैं, काँचके पलने होते हैं, कुंजकी बहार होती है, रंग उडता होताहै, महापूजा होती है, तथा हवन आदिकी शोभा होती है. येही सब बातें देखना हमको अच्छा लगता है. इसके सिवाय वहांपर हमारे यार दोस्त आते हैं. उनसेभी मिलना हो जाता है. इस लिये हम ऐसे अवसरपर दौड २ कर दर्शनोंको जाते हैं, परंतु हमारा कोई सगासंबंधी मर जाता है तब हम अपने रोने पीटनेको रोक नहीं सकते. जैसे दर्शन करना प्रभुकी ओरका कर्तव्य है वैसेही मोह कम रखना और अधिक हर्ष शोकके अधीन न रहना दुनियांकी ओरका कर्तव्य है. अब तुम देखो कि, पहले कर्तव्यको हम थोडा बहुत पूरा करते हैं परंतु दूसरे कर्तव्यमें तो बिलकुलही पीछे पडे हैं.

किसी २ समय हम कथा सुनने जाते हैं, क्योंकि वहां अच्छा २ सुननेको मिलता है और समय बडे आनंदमें निकल जाता है. गोपियोंकी रासलीला, रुक्मिणीहरण, राम रावणका युद्ध, शिव और पार्वतीका विवाह, द्रौपदीका चीरहरण, हरिश्चंद्रकी कथा, पांडवोंका वनवास, सावित्र्युपाख्यान और शबरीके जूँठे बेर खानेकी कथा हमको सुनना बहुत अच्छा लगता है. इतनाही नहीं परंतु श्रीकृष्णकी मधुर

मुरलीके नादको और गोपीगीतको व्यासजी ऐसी सरस रीतिसे वर्णन करते हैं कि, उनके मुखकी चटकमटक देखने और चटकीली वाणी सुननेहीके लिये वहां जानेका हमारा मन हो जाता है. इसीसे हम जब तब कथा सुनने जाया करते हैं परंतु किसीने हमारा अपमान किया हो अथवा नुकसान किया हो तो उसको हम शुद्ध अंतःकरणसे प्रभुके निमित्त क्षमा नहीं करसकते. अब देखो कि, धर्मकी कथा सुनना ईश्वरीय कर्तव्य है और दूसरोंके अपराधोंको क्षमा करना संसारी कर्तव्य है, परंतु इन दोनों कर्तव्योंको समान रूपपर हम पूरा नहीं करते इससे हमारी भक्ति अधूरी रह जाती है.

हवन, संध्या, गायत्री तथा माला फेरना हममेंसे कोई २ थोडा बहुत करता है, परंतु पडोसीके साथ हलकी बातमें झगडा हो जाय तब अथवा नौकरोंसे या लडकोंसे कोई सहजकी भूल हो जाय तब वे अपने मनको वशमें नहीं रखसकते. संध्या गायत्री और माला फेरना ईश्वरीय कर्तव्य है और मनुष्यमात्रकी भूलोंपर क्षमाकी दृष्टिसे देखना संसारी कर्तव्य है. पहला कर्तव्य पूरा करना तो किसी २ से बन सकता है परंतु दूसरा कर्तव्य पूरा करना अच्छे २ साधुओंसेभी नहीं बनता. हमारी भक्ति इतनी एक अंगी होगयी है.

रेलवे, जहाज आदिकी सुविधासे, मुसाफिरीके शौकसे, देखादेखीसे, पैसेकी उडाईसे और कुछ २ भीतरकी रुचिसे हम तीर्थयात्रा कर सकते हैं परंतु समधिनोंके टेढे बोलनेकी और बिनाकारण दूसरोंकी निंदा करनेकी आदत हम छोड नहीं सकते. जबतक ऐसा है तबतक हमारी भक्ति फलीभूत कैसे हो सकती है ? यात्रा करना ईश्वरीय कर्तव्य है और किसीका द्वेष न करना संसारी कर्तव्य है. ईश्वरीय कर्तव्य पूरा करनेमें हम कुछ २ उमंग दिखाते हैं परंतु संसारी कर्तव्यमें तो बिलकुल शून्यही है. जरा विचार तो करो कि इस तरह एक पंखसे हमारा आत्मारूपी पक्षी मोक्षमार्गमें कैसे उड सकैगा ? प्राचीन भक्त इन बातोंको अच्छी तरह समझते थे इसीसे उनकी

भक्ति फलीभूत हुईथी और वे प्रभुके कृपापात्र बनेथे. इसके लिये महान् भक्त तुकारामका चरित्र जानने योग्य है.

तुकाराम एकबार पंढरपुर विठोबाकी यात्रा करने जातेथे. मार्गमें एक खेत आया उसमें पक्षी चुगरहेथे. ज्योंही तुकाराम उधरसे निकले कि पक्षी उडगये. हम जानते हैं कि पक्षी डरपोक होते हैं और मनुष्यके पास आनेसे डरकर उड जाया करते हैं इसमें कोई नई बात नहीं है. परंतु तुकारामको उनका उडजाना एक नई बात मालूम हुई. उन्होंने मनमें विचार किया " अभी मुझमें पाप शेष रहगये हैं. अभी मेरी भक्ति अधूरी है. अभी मुझमें समदृष्टि नहीं आई. जो मुझमें समदृष्टि आगई होती तो पक्षी मुझसे डरते क्यों ? जब पक्षीही मेरा विश्वास नहीं करते तब परमेश्वर मेरा विश्वास कैसे करेगा ? इससे अब तो इन पक्षियोंका विश्वास संपादन करके ही यहांसे चलना चाहिये. "

बस ! तुकाराम उसी ठौरपर विट्ठल ! विठ्ठल !! करते खडे हो गये. तीन दिन और तीन रात विना अन्न और विना जलके उसी जगह विठ्ठल ! विठ्ठल ! करते निकलगये. चौथे दिन आपहीआप पक्षी आये और जैसे निर्भय होकर वृक्षपर बैठते हैं वैसेही निर्भय होकर तुकारामके शिरपर कंधोंपर और हाथोंपर सुखपूर्वक बैठगये. तब तुकारामने अन्न जल लिया और अपनी यात्रा प्रारंभ की.

जबतक संसारी कर्तव्य पूरा करनेमें इतनी दृढता न हो अपनेसे किसीभी प्राणीको हानि न पहुँचने देनेका पक्का ठहराव न करलिया जाय, और अंतःकरणमें इतनी भलाई न हो तबतक भक्ति अधूरीही है और ऐसी अधूरी भक्तिसे बेडा पार नहीं होसकता. इस लिये ईश्वरके निमित्त औरोंके दोष न देखनेकी आदत डालो ! परस्पर क्षमा करना सीखो ! और परस्पर सहायता करनेका ठहराव करो ! तो दयाळु प्रभु तुम्हारी भक्तिको स्वीकार करैगा.

२९९ हमारी सामग्री प्रभु कब स्वीकार करेगा?

राग विहागरा।

तजी मसूरकी दाल, कथा सुनि, तजी मसूरकी दाल।
काम न विसरयो, क्रोध न विसरयो, विसरयो न मोह-
जंजाल॥ कथा०॥१॥ अभ्यागत कोउ आँगन आवै,
ताहि वतावत काल। घरमें आय वडाई करत हैं,
कैसे दियो है निकाल॥ कथा०॥२॥ लकडी धोयके
चौके धरत हैं, काढै तिलक विशाल। सूर कहैं ऐसे
कपटिनको, कैसे मिलै गोपाल॥ कथा० ॥३॥

एक भगवद्भक्ता स्त्री थी. वह अपने ठाकुरकी सेवामें बहुत ध्यान देतीथी और वडा लाड लडातीथी. वह ठाकुरजीके लिये नित्य नये आभूषण, नये वस्त्र, और नयी सामग्री बनाकर अर्पण करतीथी. ठाकुरजीके लिये उसके यहां इतना ठाठ बाठ था और ठाकुरजीपर उसको इतना प्रेम था कि, देख २ कर बहुतसे आदमी आश्चर्य करतेथे. यह तो सब कुछ था परंतु वह स्वभावकी वडीही अभिमानी और पाजी थी, वह बात २ में लडपडती और हलकी २ बातोंमेंभी अपना जी जलाया करतीथी ठाकुरजीकी माला बनाते २ भी वैरीसे लडनेके मनसूबे उसके मनमें बँधाही करतेथे. ठाकुरजीका शृंगार करते २ भी वह आदमियोंको धमकाती रहतीथी, आरती करते २ भी औरोंकी ओर मुँह बिगाडा करतीथी और भोग लगाते २ भी औरोंसे लडनेको विषय ढूँढा करतीथी.

ऐसा होनेका कारण यह था कि कुटुंबकी रीतिके अनुसार बचपनसे ही उसमें प्रभुप्रेमके संस्कार जमगयेथे इससे वह ठाकुरजी संबंधी कर्तव्य पूरा करसकतीथी, परंतु संसारी कर्तव्यमें वह बिलकुलभी नहीं समझतीथी क्योंकि धनवानपनेका अभिमान उसके मिजाजमें भर-

गयाथा. इतनाही नहीं परंतु छोटेपनसेही धनवान् होनेके कारण हुक्म चलानेकी आदतमें, अपना विचाराहुआ काम करनेकी इच्छामें और दूसरोंकी परवाह न करनेकी रीति रिवाजमें वह इतनी वडी हुई थी. इससे प्रभुपरका प्रेम दृढ होनेपरभी संसारी कर्त्तव्यमें वह वहुत पीछे रहगयीथी.

एकवार उसके यहां कोई वैष्णव आ निकला. उसने उसकी सारी चाल, ढाल, रीति रिवाज और स्वभाव आदि देखकर मनमें विचार किया कि, ' स्त्रीका प्रभुपर तो प्रेम पूर्ण है परंतु संसारी वातोंका ज्ञान बिलकुलही नहीं है. योंही रहा तो इसकी भक्ति निष्फल जायगी, इससे इसको कुछ समझाना चाहिये. '

एक नयी युक्ति निकालकर उसने उस वाईसे कहा " आज तो तुम्हारे ठाकुरजी मेरे स्वप्नमें आयेथे. "

वाईने चौंककर कहा " हें ! मेरे ठाकुरजी और तुम्हारे स्वप्नमें ? मेरे स्वप्नमें तो वे कभी आतेही नहीं ! तुम्हारे धन्य भाग्य हैं ! कहो तो वे क्या कहगये ? "

वैष्णवने कहा ' ठाकुरजीने यह कहा कि, ' मैं वहुत दिनका भूंखा हूं इससे तू मुझे अपने घर ले चल ! ' तब मैंने उत्तर दिया ' कृपानाथ ! आप भूखे हैं ! यह क्या वात ? यहां आपके लिये नित्य नयी २ सामग्री वनती है, नित्य छः छः भोग लगते हैं और फिरभी आप भूखे कैसे ? ' ठाकुरजीने आज्ञा की ' इस घरमें नित्य कुटुंबक्लेश होताहै इससे मैं प्रसाद नहीं आरोगता. उस बाईके हाथका प्रसाद मैं अंगीकार नहीं करता, कारण वह मेरे वालकोंसे लडकर तब मुझे भोग लगाने आती है. परंतु मैं ऐसा भोला नहीं हूं जो इस तरहपर छलनेमें आजाऊँ. ' तव मैंने कहा ' प्रभुनाथ ! लडनेकी तो उस बाईकी आदत है परंतु आपपर उसका प्रेम कम नहीं है ? ' ठाकुरजीने आज्ञा की ' वह प्रेम किस कामका ? ऐसा प्रेम तो फूटे वर्तनमें पानी भरने समान है. ऊपरसे पानी डालते जाओ और नीचेसे निकलता-

जाय ! ऐसा प्रेम किस कामका ? जो मुझपर उसका सच्चा प्रेम हो तो मेरे लिये उसको दूसरोंका भला करना चाहिये और दूसरोंको क्षमा करना चाहिये. तू कहताहै कि उसका लडनेका स्वभाव है, परंतु ऐसे स्वभावसे क्या कोई स्वर्गमें गया है ? और क्या कोई ईश्वरका प्यारा हुआ है ? जब स्वभावके अधीन होकर भक्तही पडे रहें तब उनकी भक्ति किस कामकी ? मैं बडा या स्वभाव बडा ? वैष्णवोंको मेरे लिये अपना स्वभाव बदलना चाहिये. वैसाका वैसा स्वभाव रखनेसे कोई मोक्ष धामको नहीं पहुँचसकता ! तू उस बाईसे कहना कि, मैं तुमारी प्यारी लडकीको खिडकीमेंसे नीचे डालदूं और फिर मिठाई खानेको दूं तो तुम उसको पसंद करोगे ? और उस मिठाईसे लड़की फेंकनेका बदला भुगतजायगा ? ' मैंने कहा ' कृपानाथ ! आपकी वाणी सत्य है ! इसका बदला इस तरह नहीं भुगतसकता. ' तब ठाकुरजीने आज्ञा की ' दुनियांके सब मनुष्य हैं सो मेरे प्यारे बालक हैं, उनमेंसे किसी एकके साथभी द्वेष करके उनके चित्तको दुःखित करके मेरे आगे प्रसाद धरो तो मैं कैसे स्वीकार करसकताहूं ? मेरे बालकोंको जो दुःख देतेहो उसे मैं तुम्हारे मक्खन मिश्री या छप्पन भोगके लिये थोडाही भूलजाऊंगा ? मुझको अपने बच्चे प्यारे हैं, खाना प्यारा नहीं है ! सवेरे जल्दी उठकर उस बाईसे कहना कि पहले मेरे बच्चोंकी सेवा करै और फिर मेरी सेवा करै ! ' मैंने उत्तर दिया ' कृपा नाथ ! अबसे वह बाई आपकी आज्ञाके अनुसार करेगी परंतु आज तो आप कृपाकरके भोग आरोगलो ! ' तब श्रीठाकुरजीने कहा ' नहीं ! वैसा नहीं होसकता ! मुझको बहुत भूख लगी है तबभी अभी मैं उसके हाथका भोग ग्रहण नहीं करसकता, मैंने कहा ' जो आपकी आज्ञा हो तो कल मैं भोग धराऊं ? ' तब ठाकुरजीने कहा ' नहीं इस घरमें तो मैं तेरे हाथकाभी ग्रहण नहीं करसकता, क्योंकि तू अतिपवित्र है तबभी सामग्री तो उसी लडाकू बाईके घरकी है ! तेरे घरपर चलूं तबही तेरे हाथका भोग स्वीकार करूं ! ' मैंने प्रार्थना की ' कृपानाथ ! आप मेरे घर पधारें तो मेरे अहोभाग्य ! परंतु

बाई आपको मेरे यहां पधारने कैसे देगी ? तब ठाकुरजीने आज्ञा की. ' मैं उस बाईका बंदीवान थोडाही हूं ? जो मुझको रखना हो तो वह अपना स्वभाव सुधारे, नहीं तो मैं चला जाऊंगा इस तरह मैं भूखा प्यासा कबतक बैठा रहूंगा ? ' मैंने प्रार्थना की ' कृपानाथ ! आप तो दीनदयालु हो ! हम पामर वैष्णवोंपर इतना क्रोध नहीं चाहिये, हमपर तो आपकी कृपाही चाहिये. कृपानाथ ! अब उस बाई पर कुछ अनुग्रह कीजिये ! वह आपके चरणमें पडी है. ' तब श्रीठाकुरजीने आज्ञा की ' आज तू उस बाईसे कहना कि जिस २ के साथ वह लडी है उस २ से क्षमा माँगे और उनको उचित बदला दे. वे लोग जब उसे क्षमा करदेंगे तब मैं उसके घरका और उसके हाथका प्रसाद अंगीकार करूंगा. दूसरे उससे यहभी कहना कि, तेरे लडाकूपन और खटपटी स्वभावसे तो तेरी खराबी कभीकी होगयी होती परंतु तेरे अंतःकरणमें प्रभुप्रेम है इसीसे तू आजतक टिकसकी है. इस लिये अब जो तू नहीं चलैगी तो मैं तेरे हृदयमें और तेरे घरमें कदापि नहीं रहूंगा. ' इतना कहकर श्रीठाकुरजी महाराज अंतर्धान हो गये और मेरी नींद खुलगयी. "

वैष्णवके स्वप्नकी यह बात सुनकर वह बाई थोडी देरतक चुप होकर बैठरही. फिर उसने ठाकुरजीके आगे बहुतसी प्रार्थनाएँ की और वह रोपडी. उसको सच्चा पश्चात्ताप हुआ इससे प्रभुने उसकी प्रार्थना सुनी. और उसके हृदयमें नया बल आगया, उसी दिनसे उसका जीवन ढंग बदल गया. उसका स्वभाव एकदम बदलगया, समय पाकर उसने सबसे क्षमा माँगी और उसी समयसे वह सबके साथ इस तरहका बर्त्ताव करने लगी जिसमें किसीका दिल न दूखै. इसके बाद थोडे दिनमें उसको स्वप्न आया कि ठाकुरजी उसके हाथकी सामग्री बडी खुशीके साथ आरोगरहे हैं.

२०० संसारमें भक्त बहुत थोडे हैं और भक्ति न करनेवाले बहुत हैं, इससे भक्ति बुरी नहीं कहलासकती.

एक बदमाश आदमीने कारणवश किसी मनुष्यको मारडाला. तब पुलिसने उसको पकडा और अदालतमें हाजिर किया. वहाँपर मुक-

दमा चला. पुलिसने चार गवाह पेश किये. गवाहोंने कहा कि, इसने जो खून किया है सो हमने आँखोंसे देखा है. साक्षियोंपरसे जज-साहवने उसे फाँसीकी आज्ञा दी. तब उस अपराधीने अपने बचा-वमें कहा " साहब ! आप मुझको अनुचित सजा देते हैं, क्योंकि मुझे खून करते देखनेके तो केवल चारही गवाह हैं परंतु मुझे खून करते न देखनेवाले हजारों आदमी हैं. अदालतमें इस समय हजारों आदमी मौजूद हैं उनसे पूँछ लियाजाय कि क्या किसीने मुझे खून करते देखा है ? साहब ! इन हजारों आदमियोंकी बातको झूंठा मान केवल चार आदमियोंकी बातपर विश्वास कर आप मुझे फाँसीकी आज्ञा देते हैं सो अनुचित है. "

जजसाहबने कहा " यह तेरी सब चालाकी है. जिन लोगोंने तुझे खून करते देखा उन चारही आदमियोंका कहना बस है ! तुझको खून करता न देखनेवाले हजारों आदमियोंकी बात मैं नहीं मानता. "

इसी तरह भक्तिके विषयमेंभी समझना चाहिये. संसारमें भक्त चाहे थोडे हों परंतु वे अपने अनुभवकी बात कहते हैं इससे उसे मानना चाहिये और भक्ति न करनेवाले चाहे संसारमें लाखोंही हों परंतु उन-की बात मानी नहीं जा सकती, क्योंकि जिसने देखा है उसकी बात मानी जाती है. जिसने आपहीने नहीं देखा उसका कहना कैसे माना जा सकता है ? जिसने शास्त्रोंमें विश्वास नहीं किया, जिसने सत्सं-गका आनंद नहीं लूटा, जिसने प्रपंच करना छोडा नहीं है, जिसने हरिजनोंकी और संसारकी सेवा नहीं की, जिसने अंतःकरणमें संतोष नहीं प्राप्त किया, जिसने भक्तिका आनंदरस नहीं चाखा और जिसने प्रभुके नामकी लहरें नहीं लीं, उसकी बात कौन मानै ? जिन्होंने ऐसे उत्तम अनुभव नहीं किये वैसे अभागे जीव चाहे एक ओर हजारोंही हों और दूसरी ओर जिसने ऐसे अलौकिक लाभ लिये हों वैसा भाग्य-शाली भक्त चाहे एकही हो तबभी उस एककी बात सची है और उसके प्रतिपक्षी हजारोंकी बात झूंठी है. क्या इसमें तुमको कुछ संदेह

है ? भाइयो ! आजहीसे ठहराव करलो कि भक्त बहुत थोडे हों और भक्ति न करनेवाले मनुष्य चाहे बहुत हों तब भी भक्ति बुरी नहीं कहला सकती, और भक्तका महत्त्व कम नहीं हो सकता. इस लिये जैसे बनै वैसे भक्तिमें लगे रहो ! और भक्त बननेकी इच्छा करो !

३०१ बकरोंके झुंड होते हैं, सिंहके झुंड नहीं होते वैसेही संसारमें ढोंगी बहुत होते हैं परंतु भक्त बहुत नहीं होते.

गायके, भैंसके, बकरीके, ऊंटके, बैलके, घोडेके, खच्चरके और गधे आदिके झुंड होते हैं, टोले होते हैं और घेर होती है, परंतु सिंहके झुंड कहीं देखनेमें नहीं आये. वैसेही संसारमें धर्मकी निंदा करनेवाली मंडालियां होती हैं, भक्तोंकी बुराई करनेवाली सभाएँ होती हैं, प्राचीन धर्मोंको तोडनेवाले समाज होते हैं, दूसरोंको भ्रष्ट करनेवाले दूसरोंका जीवन बिगाडनेवाले स्वार्थीभी होते हैं, अपनेही शास्त्रोंको झूंठा करनेवाले फरिश्तेभी होते हैं, अपने लिये भीख मँगवानेको चेले मूँडनेवाले महात्मा भी होते हैं, और अपनेही मंदिरमें धर्मके नामसे गोलमाल करनेवाले महापुरुषभी बहुत होते हैं, परंतु भक्तोंके झुंड कहीं नहीं होते, क्योंकि भक्त होना कुछ सुगम नहीं है.

अपने स्वार्थका त्याग करना कुछ हँसी खेल नहीं है, पवन बिजलीसेभी चंचल मनको जीतना कुछ दालभातका खाना नहीं है, संसारके भोग विलास और लोभ लालचको प्रभुके नामपर छोड देना कुछ सीधीसी बात नहीं है, ईश्वरकी अलौकिक मायाको जीतना कुछ छोटा मोटा काम नहीं है, विश्वासरूपी अदृश्य रस्सीपर जीवन व्यतीत करना कुछ लपसी खाना नहीं है, और बिगडी हुई दुनियांके बीचमें रहकर अंतिम श्वासतक स्वर्गीय खयाल और देवताई विचार रखके प्रभुके प्रेममें और प्रभुके आनंदमें मग्न रहना कुछ ऐसी वैसी बात नहीं है. ये तो बहुत बडे भाग्यशालियोंके काम हैं, ये तो देवताओंकोभी दुर्लभ हैं. भक्ति ऐसी कठिन है, ऐसी अलौकिक है, इसीसे

भक्तोंका महत्त्व है और इसी लिये भक्तोंके झुंड नहीं होते. इस लिये भाइयो! जो उत्तममें उत्तम रीतिसे पवित्र जीवन व्यतीत करना हो, उत्तम मनुष्य अवतारकी सार्थकता करना हो और मोक्षके सुख प्राप्त करने हों तो प्रभुके प्रिय भक्त बनो! भक्त बनो!!

३०२ अपने घरमें आग लगजानेपर एक छोटा बच्चा खुशीके मारे दूसरे छोकरोंको सैर दिखानेके लिये बुलालाया, वैसेही हमभी अपनी जिंदगीको जलती देख खुश होते हैं.

किसी मनुष्यके घरमें आग लगी. आग बहुत बढ निकली तब तो घरका मालिक दूर बैठकर रोनेलगा, उस समय उसका एक छोटा बच्चा दौडकर मुहल्लेमें पहुँचा और अपने बराबर २ वाले सब बच्चोंको इकट्ठा करके बोला " चलो! चलो! मेरे घर चलो! वहां बडा मजा है!"

लडकोंने पूँछा " भाई! बता तो सही क्या मजा है?"

उसने उत्तर दिया " हमारे घरमें आज बहुत बडी आग लगी है. वह देखने योग्य है."

यह सुनकर सब लडके दौडते कूदते वहां जा पहुँचे और बडे शौकसे आगकी ज्वाला और धुएंको देखने लगे. इससे खुश होकर वह लडका तालियां बजा २ कर नाचने लगा, परंतु यह न समझा कि, यह मेराही घर जला जाता है और यह सब हानि मेरीही हो रही है.

इसी तरह मायाके मोहमें, भोगविलासके रंगमें प्रभुका नाम लिये बिना हमारी जिंदगी जलीजाती है तबभी उस बालक अज्ञान छोकरेकी तरह बहुमूल्य जीवनको व्यर्थ जाते देख, अरे! भस्मीभूत होते देख हम खुश होते हैं. इसीका नाम मोह है और ऐसा मोह हम जगत्को मिथ्या नहीं समझते इससे होताहै. जैसे वह घरका मालिक अपने मूल्यवान् घरको जलता देखकर शोक करता और रोताथा वैसे हमकोभी अपने अमूल्य जीवन और उत्तम उत्साहोंका नाश [illegible]

देखकर तथा प्रभुको भूल जानेके लिये शोक मनाना चाहिये और पश्चात्ताप करना चाहिये. इतनाही नहीं वरन् अबसे ऐसा न होने देनेके लिये मायाको मिथ्या जान, जगत्को क्षणभंगुर समझ, जिंदगीको पानीका बुदबुदा मान, नाते रिश्तेवालोंको धर्मशालामें इकट्ठे हुए मुसाफिर समझ और सुखदुःखको प्रारब्धकर्मके भोग समझकर, हर्ष शोच न कर दीनतासे प्रभुकी शरण गहलेना चाहिये. इसके विना कोई उपाय नहीं ! इसके विना कोई शांति नहीं ! इस लिये भाइयो ! प्रभुकी शरणमें जाओ !! प्रभुकी शरणमें जाओ !!!

३०३ किसी भी मनुष्यको यह नहीं समझना चाहिये कि, मैं पापी नहीं हूं.

महात्मा, साधु और ऋषि मुनियोंने वारवार कहा है कि ' हम पापी हैं, हमारे कर्म पापसे भरे हैं और जबतक इस संसारमें हैं तबतक पाप बनना संभव है. '

इसीसे वे अपने प्रत्येक कामके समय प्रार्थना करते थे कि,

"सर्वपापहरो हरिः "

स्वयं भगवान्ने भी कहाहै कि,—

" सर्वारंभा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः । "

अ० १८. श्लो० ४८.

अर्थ—जैसे अग्निके साथ धुआँ रहताही है वैसे सब कर्मोंमें दोष लगाही रहता है.

किसीकोभी ऐसा न समझना चाहिये कि, सृष्टिका क्रमही ऐसा है तब मैं पापी क्योंकर होसकताहूं ? मैं पापी नहीं हूं ऐसा समझलेनेसे पापसे बचनेकी परवाह नहीं रहती जिससे किसी समय पापमें फँसजानेका भय रहताहै और ऐसा मानना अभिमानकी बात भी है, परंतु जो ऐसा मानते हैं कि, सबही कामोंमें पाप होनेकी संभावना रहती है वे पापसे बचनेका यत्न करते रहते हैं और उनमें दीनता

तथा प्रभुप्रेम आता जाता है. यह तो स्पष्टही है कि, बेपरवाही करनेकी अपेक्षा यत्न करना लाखों गुणा अच्छा है. इससे जो अपनेको पापी नहीं समझते उनकी अपेक्षा जो परमेश्वरके नामके सिवाय सबही कामोंमें पापकी संभावना मानते हैं वे पापसे अधिक बचसकते हैं, क्योंकि वे सचेत हुए रहते हैं और अपनेको पापरहित समझनेवाले बेपरवाह रहते हैं इससे वे पापमें अधिक पडसकते हैं इसके लिये एक जानने योग्य उदाहरण है.

दो राजाओंमें लडाई हुई. उनमेंसे. एक हारगया तब उसने मरनेका ढोंग किया, उसके आदमियोंने उस जीते हुए राजाके पास जाकर कहा " हम हारगये और हमारा राजा मरगया. इससे अब लडाई बंद करो ! और हमारे मृतक राजाकी लाशको कृपाकरके अपने नगरमें होकर श्मशानमें लेजानेकी आज्ञा दो । "

उसने इस बातके भेदको कुछ न समझा और नगरमें होकर लेजानेकी आज्ञा देदी. शवको लेकर जब लोग नगरमें घुसे और ठीक राजमहलके पास पहुँचे तब वह ढोंगी राजा बैठा होगया और बोला अब देखते क्या हो ? लडाई शुरू करो ! "

लडाई शुरू हुई. उधर वह नया राजा तो था बेखबर और इधर इन्होंने चलाई लडाई. बस ! वह हाराहुआ राजा फिर जीत गया.

भाइयो ! यह लडाई आसुरी और दैवी संपत्तिकी है. आसुरी संपत्ति जब हारजाती है तब उसका पापरूपी राजा मरजानेका ढोंग करता है परंतु वास्तवमें वह मरता नहीं है. इससे समय पाकर फिर जी उठता है. इस लिये पापकी ओर बेपरवाही करनी नहीं, तथा यहभी समझना नहीं कि, हम तो बिलकुलही पापसे बचेहुए हैं, परंतु ऐसा समझकर कि हम तो सदा पापहीमें पडे हैं सदा दीनतासे प्रार्थना करते रहो कि,

" सर्वपापहरो हरिः "

पद।

मैं हरि पतित पावन सुने ॥ टेक ॥ मैं पतित तुम पतित पावन, दोऊ बानक बने ॥ मैं हरि० ॥ १ ॥ व्याध गणिका गज अजामिल, साख निगमही भने। और पतित अनेक तारे, जात कापै गने ॥ मैं हरि० ॥ २ ॥ जान नाम अजान लीने, जान यमपुर मने। दास तुलसी शरण आयो, राखिये अपने ॥ मैं हरि० ॥ ३ ॥

३०४ प्रभुमें विश्वास रक्खोगे तो प्रभु दया किये विना नहीं रहैगा.

किसी मनुष्यके घरके पास एक पडोसीका एक कुत्ता था. वह रातको भोंका करताथा. इससे उस मनुष्यको नींद नहीं आने पातीथी. दुःखित होकर उसने एक दिन उस कुत्तेको खूब मारनेका विचार किया. सवेरा होतेही वह लकडी लेकर घरसे निकला और ज्योंही वह कुत्ता उसकी नजरमें आया उसने जोरसे लकडी फेंकी परंतु दैव कृपासे लकडी दूसरी जगह जागिरी और कुत्ता वचगया. उस लकडीको मुँहमें दवाकर वह कुत्ता उसी मारनेवाले मनुष्यके पास पहुँचा और लकडी उसके पैरोंमें रखकर नीचा शिर किये खडा होगया. कुत्तेकी यह योग्यता देखकर उस मारनेवालेको भी उसपर दया आगई. उसके मनमें विचार आया कि "जिस लकडीसे मैं इसे मारना चाहता हूं उसी लकडीको वह मेरे पैरोंमें लाकर रखता है ? तब मैं उसे कैसे मारूं ? उसके भोंकनेसे मुझे रातको नींद नहीं आती इससे मैं इसपर इतना नाराज हुआ था परंतु इसकी इस योग्यताने तो मेरा क्रोध शांत करदिया."

दयाके मारे उसकी आँखोंमें पानी आ गया और वह मारनेके बदले उलटा उसको प्यार करने लगा.

भाइयो ! अधीनतामें दीनतामें इतना गुण है, इतना बल है और इतनी निर्भयता है सो वह जानता नहीं था. यह तो वह उस कुत्तेसेही सीखा ! भाइयो ! मनुष्य और कुत्तेके बीचमेंही जब अधीनताका इतना प्रभाव होता है, राक्षसता बदलकर दैवी वृत्ति होजाती है, तब प्रभुकी ओर दीनता करनेमें कितना गुण होगा और कितना सुख होगा ? सो तो विचारो !

कुत्तेके भोंकनेसे जैसे वह आदमी क्रुद्ध हुआथा वैसेही हमारे लोभसे, हमारे निंदक स्वभावसे, हमारे दंभसे, हमारे अहंकारसे और हमारे अयोग्य विषयभोगके पापसे प्रभु हमपर क्रुद्ध होता है, और क्रुद्ध होकर जैसे उस आदमीने उस कुत्तेपर मारनेको लकडी फेंकीथी वैसेही प्रभु हमपर किसी तरहका दुःख डालता है. लकडी फेंकनेपर भी जैसे वह कुत्ता दीनतासे उस आदमीके अधीन होगया वैसेही जो दुःखके समयभी हम दीनतासे भगवदिच्छाके अधीन न हों तो प्रभुकी हमपर दया कैसे होसकती है ? याद रक्खो कि, अधीनतासेही दया संपादन होसकती है, सामना करनेसे इनाम नहीं मिलता. इसलिये जो प्रभुकी दया चाहते हो और प्रभुसे मोक्षरूपी इनाम लेना हो तो जैसे बने वैसे शुद्ध अंतःकरणसे प्रभुकी आज्ञा पालो और जैसे प्रभु रक्खे वैसे आनंदसे रहो !

५५ पद । राग कलिंगडा.

तो सम कोउ न दयानिधि दूजो, सब जग हेऱ्यो नहीं सूझो ॥ टेक ॥ जगप्रतिपाला दीनदयाला २ जानिहु चरनन पूजो ॥ १ ॥ छुद्र विषयसुख लागि भ्रम्यो मैं सद्गुरुज्ञान न बूझो ॥ २ ॥ स्वारथलागि साधु संतापे २ धर्म अधर्म न सूझो ॥ ३ ॥ रामजीवन कर जोरि पुकारै २ अब कृपाल मोपै हूजो ॥ ४ ॥

३०५ पाप करना बहुत सुगम है, घरमें बैठे बैठे तथा सोते सोते भी बुरे विचार करके पाप किये जासकते हैं इसलिये पापसे बचनेका बहुतही यत्न करो !

पाप करना बहुत सुगम है इससे पापसे बचनेकी सबसे अधिक चिंता रक्खो ! पाप करनेके लिये कुछ कठिनाइयाँ नहीं उठानी पडतीं, पाप तो घरमें बैठे २ भी, सोते २ भी, धंधा रोजगार करते २ भी और बीमारीके बिस्तरेमें पडे २भी हो सकते हैं. इस लिये भाइयो ! पापसे बचनेका यत्न करो, क्योंकि पाप करना बहुत सुगम है, परंतु पापसे बचना बहुत कठिन है. सोते २ भी विषयभोगके विचार होसकते हैं, काम धंधा करते २ भी दूसरेको कष्ट पहुँचानेका विचार होसकता है, भोजन करते २ भी अदेखाईके खयाल आजाते हैं, खेलते २ भी अभिमान आसकता है, चलते फिरतेभी दृष्टिपाप होसकता है, और मृत्युकी अंतिम घडी तक भी तृष्णा बढसकती है. ये सब मानसिक पाप हैं ? ऐसे मानसिक पापोंसे बचनाही उत्तमता है, और उसीका नाम भक्ति है. इस पापसे बचनेका उपाय यही है कि सदा शुभेच्छा रखना. शुभेच्छा ईश्वरीय ज्ञानकी पहली सीढी है. इस लिये बुरे विचार या दुष्ट संकल्प कभी न करना चाहिये, परंतु प्रतिक्षण ऐसी भावना रखना चाहिये कि,—

"सर्वत्र सुखिनः संतु सर्वे संतु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ॥"

अर्थ—सब जीव सुखी हो ! किसी भी जीवको कोई दुःख न रहैं. सबका कल्याण हो ! और किसी भी जगह किसी प्रकारका दुःख न हो ! प्राचीन आर्य ऋषियोंकी प्रातःकालकी पहली प्रार्थना यही थी. कि, 'हे प्रभु ! सबका कल्याण करो !' ऐसी भली इच्छासेही पापसे बचना बनसकता है. इस लिये जो प्रभुके मार्गपर चलना हो तो सदा शुभेच्छा रक्खो ! शुभेच्छा रक्खो ! !

३०६ पापियोंको परमेश्वर तुरंत दंड क्यों नहीं देता? उनको किसी दिन अच्छा हो जानेकी आशासे प्रभु उनको बचाता है.

ईश्वर सर्व शक्तिमान् है. वह चाहे तो एक पलमें सब पापियोंको मार डाले. उसके पास बचानेके तथा नष्ट कर डालनेके हजारों मार्ग हैं. अतिवरसातसे, अकालसे, पृथ्वीकंपसे, ज्वालामुखी पर्वत फटनेसे, समुद्रसे, बिजलीसे, अग्निसे, पवनके तूफानसे, हवा बिगडनेसे, प्लेगसे, हैजेसे और वैसेही दूसरे अनेक कारणोंसे पलभरमें वह हमको मार सकताहै, परंतु प्रभु दयालु है इससे पापियोंकोभी उसी समय दंड देना नहीं चाहता. वह चाहता है कि पापी किसी दिन अच्छे हो जायँ. इसी भली इच्छासे वह उनकोभी बचाता है. वह केवल बचाताही नहीं है वरन् उनको सुधरजानेका अवकाश देता है, परंतु खेद है कि, मनुष्य प्रभुकी उस दयाका उलटा उपयोग करके अपने पैरपर आपही कुल्हाडा मारता है, अपनी रोटीमें आपही धूल डालता है और अपने बैठनेकी डारको आपही काटता है. प्रभुकी इच्छा तो ऐसीही है कि, जीव मेरे पास आवैं और मुझजैसे बनैं, परंतु हम ऐसे अभागे हैं कि, समर्थ प्रभुकी दयाको नहीं समझते, प्रभुके दिये हुए बहुमूल्य साधनोंसे कुछ लाभ नहीं उठाते वरन् उनका उलटा उपयोग करते हैं, परंतु याद रखना कि, प्रभुके यहां पीपाबाईका राज नहीं है. इतने पापोंके बीचमेंभी हम बच जाते हैं और भोगविलास करते हैं सो कुछ हमारे पराक्रमसे नहीं, हमारे छल कपटसे प्रभुको धोखा देकर नहीं. परंतु प्रभुकी कृपासेही बचते हैं. ऐसीही आशासे ऐसीही इच्छासे कि, किसी दिनभी हम अच्छे हो जायँगे, परंतु जो अंततकभी हम अच्छे न हुए, पवित्र नहीं हुए तो फिर हमारे लिये नरक तो बनाही है उसके लिये किसी जोशीसे पूँछनेकी जरूरत नहीं है. जिसको जो चाहिये सो लो, चाहे दया और चाहे दंड.

३०७ प्रभुकी दयाका मनुष्य उलटा उपयोग करता है.

हम जानते हैं कि, प्रभु कालका भी काल है. वह हमारा एक पल-भरमें नाश कर सकता है. केवल हमाराही नहीं किंतु अनंत ब्रह्मांडोंका एक पलमें नाश कर डालनेका उसमें अद्भुत पराक्रम है, परंतु हम केवल उसकी दयाहीसे बचे हुए हैं और तब भी हमारी मूर्खता तो देखो कि, हम उसकी दयाका कैसा उलटा उपयोग करते हैं? प्रभु जिनको धन देता है वे अभिमानी बनते हैं, जिनको रूप देता है वे व्यभिचारी बनते हैं, जिनको विद्या देता है वे वाचाल, वक्रू और विवाद करनेवाले होते हैं, जिनको बल देता है वे अत्याचार करते हैं, जिनको अधिकार देता है वे दूसरोंको दबाते हैं, जिनको बडा कुटुंब देता है वे आपसमें लडते मरते हैं, जिनको जवानी देता है वे दीवाने बनते हैं और जिनको लंबी उमर देता है वे अधिक पाप करते हैं. इस तरहपर प्रभुकी दी हुई कृपाका पापी लोग उलटा उपयोग करते हैं. जैसे बबूलका पेड ज्यों२ बडा होता जाता है त्यों त्यों उसमें कांटेभी बढते जाते हैं और ज्यों ज्यों उसकी डारी मोटी होती है त्यों त्यों कांटेभी मोटे होते जाते हैं, वैसेही पापियोंको ज्यों ज्यों अनुकूलता मिलती जाती है त्यों त्यों वे अधिक पाप करते जाते हैं परंतु यह नहीं समझते कि, पाप कितनी बुरी वस्तु है और इससे कितनी खराबी होती है. हमारे शत्रुसे लड-नेके लिये हमको जो कृपाकरके बारूद और गोला दिया गया है उसी बारूद गोलेको अफसोस है कि, हम उसे देनेवालेहीके विरुद्ध काममें लाते हैं.

भाइयो! प्रभुके काममें आडे आनेवाले काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओंको जीतनेके लिये प्रभुने कृपाकरके हमको विद्या, धन, बल, अधिकार, आयु आदि दिये हैं. ईश्वरी मार्गमें बाधक राक्ष-सोंको जीतनेके लिये यह बारूद गोला है परंतु हमारी नालायकी तो देखो! हमारी निमकहरामी तो देखो कि, जो राक्षसोंका सामना

करनेके लिये, जो राक्षसोंको जीतनेके लिये, राक्षसोंसे लडनेके लिये बारूद गोला हमको मिला है उस राक्षसोंकेही साथ हम मिलजाते हैं और बारूद गोलेका उपयोग प्रभुके साथ करते हैं. इससे बढकर नीचता और क्या होगी ? प्रभुने कृपा करके जो शक्ति दी है उस शक्तिका उपयोग प्रभुके ही विरुद्ध करना पाप कहलाता है. ऐसा न होनेकी सँभाल रक्खो !

३०८ जिसमें इतनी नम्रता हो कि, शिष्यके पैर धोलेवै वही गुरु होनेके योग्य है.

एक भक्त महात्मा थे. लोगोंने उनसे कहा कि, आप हमारे गुरु बनिये, क्योंकि आप गुरु बनने योग्य हैं और आपपर हमारी श्रद्धा है. तब उन महात्माने कहा कि, गुरु बननेसे पहले मुझे तुम लोगोंपर प्रमाणित करदेना चाहिये कि, मैं गुरु बननेके योग्य हूं या नहीं. लोगोंने कहा " नहीं महाराज ! हमको इस बातकी जरूरत नहीं है. हमको आपके वचनकाही विश्वास है. "

महात्माने कहा " नहीं भाइयो ! ऐसा नहीं होसकता. बिना पूरा विश्वास किये किसीको गुरु नहीं बनाना चाहिये. "

लोगोंने कहा " तो आप इस बातको किस तरह प्रमाणित करना चाहते हैं ? "

महात्माने कहा " मुझे पहले तुम्हारे पैर धोने दो ! जो मैं तुम्हारे पैर धोसकूं तो तुम मुझको गुरु बनाने योग्य समझना. "

लोगोंने कहा " महाराज ! ऐसी उलटी बात कैसे बने ? हम शिष्योंको आपके पैर धोना चाहिये न कि आपको हमारे पैर धोना चाहिये. "

तब महात्माने कहा " भाइयो ! जिसमें इतनी दीनता हो कि, जो शिष्योंके पैर धोसके वह गुरु होनेके योग्य है. जो अपने वैभवके अभिमानमें जो अपने ज्ञानके अभिमानमें, जो अपनी भक्तिके अभिमानमें, जो अपनी पवित्रताके आडंबरमें और जो अपने कुलके

अभिमानमें रहते हों वे गुरु होनेके योग्य नहीं हैं. जिसमें शुद्ध अंतःकरणसे सच्ची दीनता हो, और चेलोंको अपने बराबर बनानेकी शक्ति हो वही गुरु बननेके योग्य है. शिष्योंको मार्ग बतानेहीके लिये गुरु नहीं होता परंतु शिष्योंका बोझा उठानेमें सहायता देनेको गुरु है. केवल मोहनभोग और खीर खानेको तथा हुकूमत चलानेकेही लिये गुरु नहीं है. सब गुरु लोगोंको यह बात अच्छी तरह समझ रखना चाहिये.

३०९ औरोंको भला करनेमें अपना भी भला हो जाता है.

इसके लिये जाडेमें दुःखित दो मनुष्योंका उदाहरण.

हिमालय जैसे ठंढे देशमें एक मनुष्य ठंढसे दुःखित होकर मार्गमें गिरगया, उसी मार्गसे एक दूसरा मनुष्य निकला. उससे उसने कहा " भाई ! दया करके मेरे पैरोंको जरासा रगड दे तो मुझको गरमी आजावे. मैं ठंढसे बडा दुःखित हूं. "

उसने उत्तर दिया " भाई ! मेरीभी अंगुली ठंढसे कडी पडरही है मैं तेरे पैर कैसे मल सकता हूं ? "

उसने बडी नम्रतासे कहा " भाई ! देख तो सही ! इसमें मजा है. तुझको भी फायदा होगा. "

जैसे तैसे धीरे धीरे वह उसके पैर घिसने लगा, ज्यों ज्यों वह पैर घिसता गया त्यों त्यों उसके पैरमें तथा खास उसी घिसनेवालेके हाथमें गरमी आती गयी और अंतमें दोनोंकी ठंढ मिटगयी, जिससे दोनोंही चलदिये और दोनोंही आपसमें मित्र बन गये !

चलते २ मार्गमें उस पैर घिसनेवालेने पूँछा " मैंने तुम्हारे पैर मले उसमें मेरी ठंढ कैसे मिटगयी ? "

दूसरेने जवाब दिया " यही तो ईश्वरकी खूबी है कि, दूसरेका भला करनेमें अपनाभी भला होजाता है, परंतु मनुष्य इस बातको ठीक २ समझते नहीं, इसीसे परमार्थ करनेमें पीछे रहजाते हैं. बुद्धिमान् मनुष्य तो यही समझते हैं कि, परमार्थ है सोही स्वार्थ है. स्वार्थमें

परमार्थ बहुत थोडा है परंतु परमार्थमें स्वार्थ बहुत है. इसलिये और कुछ नहीं तो अपने स्वार्थहीके लियेभी परमार्थ तो करनाही चाहिये.

३१० ईश्वर कहताहै कि, सारा संसारही तुम्हारे लिये है, केवल एक पापको छोडकर और चाहे कुछ करो !

हम मानते है कि, धर्म पालना तो बहुतही कठिन विषय है, भक्ति करना उससेभी कठिन है, और नीति रखना तो लाखों आदमियोंमें एकही आधेसे बनता होगा. सब आदमी यही कहते हैं, बहुतसे धर्म गुरुभी ऐसाही कहते हैं और हमारा मनभी इसे स्वीकार करलेता है, परंतु परमेश्वर कहता है कि, यह तुम्हारी भूल है. केवल एक पापको छोडकर और किसीभी कामको करनेको मैं तुम्हें रोकता नहीं, तुम किसीकी जान बारातमें जाओ तो मैं रोकता नहीं, तुम नयी २ जातिका अच्छा २ खाना खाओ तो मैं रोकता नहीं, तुम नित्यप्रति खीर पूरी और आमका रस उडाओ, नित्य मोहनभोग और मोहन-थाल खाओ, नित्यप्रति गरम गरम जलेबी चक्खो, नित्यप्रति मसा-लेदार गरम दूध पिओ, नित्यप्रति पकोडी और सेव पकाओ, नित्य-प्रति चटकीली मसालेदार चटनियां बनाओ, और नित्यप्रति नये नये शरबत बनाकर पिओ तो मैं नहीं रोकता. सुंदर कपडे पहनो वहभी मुझे पसंद है. बहुमूल्य जेवर वाजबी रीतिसे पहनो तो वहभी मुझे पसंद है. तुम्हारे इतर फुलेलसे भी मैं चिढता नहीं हूं. तुम्हारा छाता, रूमाल और चश्माभी मुझे बुरा नहीं लगता. तुम्हारे बडे खट छप्पर और जालीदार परदेभी भलेहीसे रहैं. सुंदर खुदाईके कामवाले कोच, और नयी २ किस्मकी आराम कुरसियांभी खुशीसे रक्खो. तुम सभाओंमें खडे होकर व्याख्यानबाजी करो और मंडलियोंमें मान पाओ उसमेंभी मुझे कुछ अडचन नहीं है. तुम विवाह करो और खूब संसार सुखभोगो तो मैं देखकर प्रसन्न होता हूं, तुमको अपने बच्चोंपर प्रेम करते देखनेसे मुझे तुमपर प्रेम आताहै. तुमको निर्दोष खेल खेलते और हँसते बोलते देखकर मैं संतुष्ट

होताहूं. तुमको अच्छी तरह धंधा रोजगार चलाते देखकर मुझे आनंद होता है, क्योंकि मेरे उद्देशमें तुम सहायक होतेहो. तुमको " क ख ग घ ङ " पढते देखकरभी मुझे हर्ष होता है इस आशासे कि, तुम किसी दिन संसारमें उपयोगी बनोगे और किसी दिन मुझे पहचानोगे. तुम्हारे ऊंचे २ महल चाहे रहें मैं उनसे अप्रसन्न नहीं होता. तुम्हारे फूलोंके गमले और सुंदर २ बाडियें आबाद रहें मैं उनसे खुश हूं. अपने हौज और फुँआरे अपने प्रिय तोते, काकातुए, बंदर, पानीदार घोडे, नमकहलाल कुत्ते और दूसरे प्राणी जिनको देखकर तुम प्रसन्न हो और मेरी महिमाको जानो, खुशीसे रक्खो. तुम्हारे फोनोग्राफ और बाइसिकलसेभी मैं कुछ भ्रष्ट नहीं होता. तुम गरमागरम चाय और काफी भलेही पिओ, मैं इससे तुमपर गरम नहीं होता. तुम्हारे भवकेदार फोटोग्राफ, हीरेकी अँगूठियां, चमकतीहुई कानकी बालियाँ, फेशनेबल लाकिट लटकतीहुई जेबघडियोंकी चेन (जंजीर) और रबरटायरकी दौडतीहुई फिटनगाडियोंसेभी मैं नाराज नहीं होता. तुम्हारी उचित भोग विलासकी सामग्री चाहे नित नयी बढती जाय तो मुझे कुछ बुरी नहीं लगतीं. मुझे तो केवल एक पापही बुरा लगता है एक पापको छोडकर और चाहे जिस वस्तुका तुम उचित उपयोग करो. सारा संसार तुम्हारेही लिये है, केवल शर्त एक यहही है कि मुझको अपने साथ रखकर मुझे याद करके मुझे अपने हृदयमें धारण करके तब तुम सब कुछ भोगो ! सारा संसार और उसके वैभव तुम्हारेही लिये हैं. तुमको एक पापके सिवाय दूसरी किसीभी वस्तुसे डरनेकी जरूरत नहीं है. इस लिये भाइयो ! पापको छोडकर और चाहे सो करो ! चाहे जैसे हो परंतु पापको छोडो !

३११ ऐसा अवसर बारबार नहीं मिलैगा इससे चेतो !

भाइयो ! याद रक्खो कि, ऐसा उत्तम अवसर फिरफिरकर नहीं मिलैगा. ऐसी भगवत्कृपा बारबार नहीं मिलैगी. इस पुण्यभूमिमें

अर्थात् इस भरतखंडमें तथा इस ईश्वरके कृपापात्र देशमें वारवार जन्म नहीं मिलेगा. ऐसा हमारा पवित्र उत्तम आर्यधर्म फिरफिरकर नहीं मिलेगा. यह जवानी सदा ठहरनेकी नहीं है. यह तो देखतें २ चली-जायगी. भक्ति करनेके लिये ईश्वरके पवित्र मंदिर मिले हैं. हमारी भूलें समझानेवाले उत्तम उपदेशक मिले हैं. हमको प्रभुकृपासे आरोग्यता मिली है. चाहिये जितना समय मिलताहै. आवश्यकताके योग्य ज्ञानभी मिला है. खर्च करनेको कुछ पैसा भी मिला है. दान करनेके लिये चाहिये जैसे पात्र भी मिलते हैं. और भक्ति करनेके लिये अंतःकरणसे प्रेरणा भी होती है इतनेपरभी हम कुछ करते नहीं सो क्या थोडी भूलकी वात है ? ऐसे २ उत्तम साधन और ऐसे उत्तम अवसर क्या फिर भी वारवार मिलेंगे । नहीं ! कभी नहीं ! इसी लिये भक्त-जन प्रेमपूर्वक गाते हैं.

राग विहाग ।

भजनको परमान, ऐसो भजनको परमान । नीच पावै
ऊंच पदवी, जल तरे पाखान ॥ ऐसो० ॥ १ ॥ चलत
तारे चलत मंडल, चलत शशि अरु भान । दास
ध्रुवको अविचल भक्ति, रामके दीवान ॥ ऐसो० ॥ २ ॥
रावणके दशशीश छेदे, कर गहे सारंगपान । विभीष-
णको लंक दीनी, भक्त अपनो जान ॥ ऐसो० ॥ ३ ॥
निगम जाकी साख पूरे, सुनो संत सुजान । दास तुलसी
शरण आयो, राखिये भगवान ॥ ऐसो० ॥ ४ ॥

३१२ भाइयो डरो मत ! भक्तिको प्रभु नंगी नहीं रक्खेगा ! उसके साथ योग-क्षेमका ढक्कन अवश्य देगा !

हम मिठाई लेने हलवाईकी दूकान पर जाते हैं तब जितनी चाहिये उतनी मिठाई माँगते हैं और उसकी कीमत दे देते हैं, परंतु उस

मिठाईको बांधनेके लिये कागज, पत्ता, दोना, डलिया आदि जिस वस्तुकी आवश्यकता होती है उसकी कीमत हम नहीं पूँछते और वह माँगतेभी नहीं परंतु तब भी हलवाई मिठाईके साथही उसकी रक्षा करनेका सारा सामान अपने आप दे देता है और कीमत उसकी मिठाईके साथही गिन लेता है. इसी तरह हमको परमेश्वरसे केवल भक्तिही माँगना चाहिये, भक्तिका रखनेके साधन तो वह उसके साथ अपने आपही दे देगा. उसे माँगनेकी कोई जरूरत नहीं है क्योंकि भक्तोंका योगक्षेम करनेको तो वह बँधा हुआही है. मिठाईवालाही जब मिठाई खुली हुई नहीं देता, पंसारी जब दवा पुडिया बांधे विना नहीं देता और विलायतसे आनेवाला कपडाभी जब बारदान विना नहीं आता, तब प्रभु भक्तिको नंगी कैसे देगा ? छदामके अजवाइनकीही जब पुडिया बांधीजाय और पुस्तकोंपर भी जब पुट्ठा बांधाजाय तब तुम विचार तो करो कि प्रभु भक्तिको नंगी कैसे रक्खेगा ? भक्तिको बनाये रखनेके लिये भक्तकी रक्षा करना तो भक्तिका बारदान है, इसे अलग माँगनेकी कोई जरूरत नहीं है. इस लिये भाइयो ! प्रभुसे निष्काम भक्ति माँगो तो सब अच्छी वस्तु अपने आपही चली आवेंगी. हलकी २ वस्तुओंको मत मांगो !

३१३ भक्तिका बदला मिलनेमें देर लगै तब समझलो कि, ईश्वर हमारा अधिक कल्याण करनेवाला है ।

हमारी भक्तिको बदला मिलनेमें जब देर हो तब समझलो कि हमारा कल्याण होनेवाला है. हमारे यहां कोई भिखारी गीत गाता २ माँगनेको आवै तब हमको उसका गाना पसंद आ जावै तो हम उसे भिक्षा देनेमें देर लगा देते हैं और उसका गाना सुना करते हैं. अंतमें हम उसे खुश कर देते हैं. परंतु जो हमको उसका गाना अच्छा नहीं लगता तो हम कह देते हैं माफ करो अथवा पाई धेला चटपट उसकी ओर फेंक देते हैं. वैसेही प्रभुको भी जो हमें अधिक नहीं देना होता तो जल्दीही थोडा बहुत देकर टाल देता है, परंतु कुछ अधिक देनेकी

उसकी इच्छा होती है तबहीं वह देनेमें देर लगाता है इस लिये बहुत प्रार्थना करनेपरभी जब जरूरी वस्तु मिलनेमें देर लगे तब भक्तोंको समझ लेना चाहिये कि, ईश्वर हमको कुछ अधिक देना चाहता है. इस लिये जो भक्तिका बदला मिलनेमें देर लगे तो हिम्मत हारकर भक्तिको छोड नहीं देना चाहिये, परंतु ईश्वरकी अधिक देनेकी इच्छा समझ उत्साहपूर्वक दृढतासे अधिक २ प्रार्थना और भक्ति करना और सर्वभावसे ईश्वरमय बनते जाना चाहिये तो ईश्वर हमको कदापि नहीं छोडदेगा. याद रखना कि, भक्तिका बदला तुरंतही मिल जाय तो थोडेहीमें निपट जाता है परंतु देर लगे तो अधिक मिलनेकी आशा होती है. इस लिये देर लगनेपर न मिलनेका संदेह करके निराश नहीं हो जाना चाहिये.

३१४ बच्चोंकी तुतलाती वाणी जैसे माता पिताको अच्छी लगती है, वैसेही प्रभुको हमारी प्रार्थनाएँ अच्छी लगती हैं इससे वह हमसे अधिक प्रार्थना करना चाहता है.

तुमको छोटे २ निर्दोष बालकोंपर प्रीति है ? तुमने तुम्हारे माता पिताओंका अपने प्यारे बच्चोंपरका प्रेम देखा है ? तुतलाते बालकोंके नये शब्दोंकी आवाज माता पिताको कैसी अच्छी लगती है सो तुम जानते हो ? उन्हीं शब्दोंको बारबार कहलाकर माता पिता कितने आनंदित होते हैं सो तुम जानते हो ? बच्चेके तुतलाते हुए और टूटे फूटे शब्दोंकी भी कीमत मातापिताके मनमें कितनी बडी होती है सो तुम समझ सकते हो ? और उस बालकका तुतला २ कर बोलना, पिताकी आज्ञाकी परवाह किये बिना स्वभावसेही इधर उधर खेलना और समय २ पर पिताके पास जानेके लिये उचकना और जल्दी २ हाथ फैलाकर पिताके पास जानेकी इच्छा प्रगट करना और मंद २ हँसीके साथ कूदना क्या तुमने कभी देखा है ? इस दृश्यसे पिताको कैसा आनंद

आता है और बारबार उसी आनंददायक दृश्यको देखनेको पिता कैसी इच्छा रखता है सो तुम समझ सकते हो ? जो इसको समझते हो तो तुम जान सकते हो कि, हमारे पवित्र समर्थ पिताके हम बालक हैं और हमारी प्रार्थनाएँ तुतलाकर बोलते हुए छोटे बच्चोंके शब्दकी तरह अपूर्ण और अस्पष्ट हैं, परंतु हमारे परम दयालु पिताको वह बहुत प्यारी लगती हैं इसीसे वह बारबार वेही शब्द हमारे मुखसे कहलाना चाहता है. इस लिये हमको बारबार वही प्रार्थना करनेमें हार नहीं जाना चाहिये, क्योंकि हमारी प्रार्थनाएँ प्रभुको बहुत अच्छी लगती हैं इसीसे वह उनको हमसे बारबार कहलाना चाहता है. इस लिये ऐसी प्रार्थनाएँ जितनी बार हमारे मुखसे निकलें उतनाही अधिक हमारा अहोभाग्य है. भाइयो ! सर्व शक्तिमान् प्रभुकी प्रार्थना करनेमें कभी मत ऊबो ! वह तो जितनी अधिक होगी उतनाही लाभ है !

३१५ हमारी चतुराईका कैसा बुरा परिणाम होता है सो तुम जानतेहो ?

किसी प्रसिद्ध होशियार वकीलके पास एक जरूरी मुकद्दमा आया. उस मुकद्दमेकी फीस दश हजार रुपये ठहरे. थोडे समयमें मुकद्दमा फैसला होगया और वकीलसाहबको दश हजार रुपये मिलगये. दूसरे दिन मुकद्दमा जीतनेवाला वकीलके पास आया वकील उस समय अपनी स्त्रीके पास बैठाथा. उसे आता देखकर वकील बोला "तुम्हारा मुकद्दमा तै होगया. कहो अब क्या काम है ?"

उसने उत्तर दिया " आपके दश हजार रुपये देने आयाहूं." इतना कहकर उसने जेबमेंसे एक दश हजार रुपयेका नोट निकाला तब वकील बोला "साहब ! मुझे तो फीस कलही मिलगयी ! क्या आपको खबर नहीं है ?"

उसने कहा " दश हजार रुपये तो मैंनेही भेजेथे. मैं अच्छी तरह जानताहूं, परंतु वह तो आपकी फीस थी. इस समय मैं आपको इनाम देने आयाहूं."

वकीलने पूँछा " इतनी इनाम क्यों ? "

उसने कहा " साहब मेरा मुकद्दमा बिलकुल झूँठा था उसमें एक भी शब्द सच्चा नहीं था परंतु आपकी चतुराईसे उनके साक्षी उडगये वकील दबगये और जजसाहबके चित्तपर आपके भाषणका ऐसा असर पडा कि उन्होंने मुझे जितादिया. आपकी होशियारीसे मैं झूंठे मुकद्दमेको जीतगया इससे आपको इनाम देना जरूरी है. "

इतना कहकर उसने दश हजार रुपयेका नोट वकीलके हाथमें दिया. वकील साहब नोट लेकर मुसकुराये और अपनी स्त्रीकी ओर देखने लगे. उस भोली स्त्रीने कहा "कृपानाथ ! आप अपनी होशियारीको बुरे काममे लाते हैं तबही इतना कमाते हैं सो जरा विचार तो करो कि, जो उसको अच्छे काममें लगाओ तो कितना बडा लाभ उठासको ! "

भाईयो ! उस वकीलकी तरह हम सब लोगभी अपनी होशियारीको बुरेही काममें लाते हैं. हमारी युक्तियां, हमारे प्रपंच, हमारी दौडधूप और हमारी चालाकियां खासकरके बुरे कामोंके लिये होती हैं और इसीसे हम ईश्वरसे विमुख होते हैं. भक्तराज तुलसी दासजी कहते हैं:—

दोहा—जैसी नीति हराममें, तैसी हरमें होय ।
चलाजाय वैकुंठमें, पला न पकडे कोय ॥

भक्ति करनेके लिये प्रभुके प्यारे बननेके लिये केवल इतनाही करनेका है कि, जो प्रवाह खारे समुद्रमें जाता है उसी प्रवाहको सुंदर बागमें मोड दो, जो वृत्ति झूँठमें लगी है उसे सत्यमें लगाओ, व्यवहारमें जैसी प्रीति है वैसी प्रभुमें करो, इसीका नाम भक्ति है और इसीमें मोक्ष है. सब चतुराईकी एक चतुराई यही है.

हम जब झूँठेमेंही इतना करसकते हैं तब सच्चाईमें कितना कर सकेंगे सो तो विचार करो ! भाइयो ! सत्यको पकडो ! सत्यको पकडो !! यही तरनेका मार्ग है ! प्रभुका नामही सत्य है और तो सब

क्षणभंगुर हैं ! झूठेको पकडनेमें बहुत मेहनत करनेपर भी थोडाही इनाम मिलता है परंतु सत्यको पकडनेमें तो अलौकिक वस्तुकी प्राप्ति होती है, जैसे पापोंकी क्षमा अंतःकरणकी पवित्रता सत्संगमें प्रीति और परमार्थवृत्ति आदि उत्तम तत्त्वोंकी प्राप्ति होती है. इसलिये जो वृत्ति बुराईमें लगी है उसको ईश्वरकी ओर झुकाओ ! यही सब तत्त्वोंका तत्त्व है और यही सब धर्मोंका धर्म है ।

५६ पद ।

भज मन रामचरण दिनराती । काहेको भ्रमत फिरत हो निशदिन भजन करत अलसाती ॥ १ ॥ बिरथा जन्म गँवायो मूरख सोवत रह्यो दिनराती । रामसियाको नाम अमीरस सो काहे नहिं खाती ॥ २ ॥ संवत सोलहसौ इकतीसा जेठमास छठि स्वाती । तुलसिदास यह विनय करत हैं प्रथम अरजकी पाती ॥ ३ ॥

३१६ वैद्य, शूर, जहाज चलानेवाले आदि लोगोंकी तरह गुरुलोगोंको भी अपने कामकी शिक्षा लेना चाहिये.

जो जहाज चलाना नहीं जानता वह कपतान बनजाय तो अवश्य जहाजको डुबादे. जो वैद्यविद्या नहीं जानता वह वैद्य बनवैठे तो अवश्य रोगियोंको यमपुरीकी सैर करावे. जो रसोई बनाना नहीं जानता वह रसोइया बनजाय तो अवश्य रसोईकी धुआं उडादे. जिसको खाता रोजनामा नहीं आता वह मुनीम बनजाय तो अवश्य दूकानको रसातलमें पहुँचादे. जो लडाईका काम नहीं जानता वह लडाईमें जाय तो अवश्य अपनेही हाथ पैर काटकर घर आवे. वैसेही जिस गुरुका हृदय भक्तिमें रँगाहुआ नहीं है, जिस गुरुका हृदय श्रद्धामें भीगाहुआ नहीं है और जिस गुरुकी वाणी उपदेशके समय अमृतकी धाराकी तरह गंगाके प्रवाहकी तरह स्वतंत्रतासे नहीं चल-

सकती वह भी अपने शिष्योंको सच्चा लाभ नहीं पहुँचासकता. इस लिये जैसे सब लोगोंको अपने २ धंधे रोजगारकी शिक्षा लेनी पडती है वैसेही गुरुलोगोंको भी अपने धर्मका, जनस्वभावका, देशकालके रीतिरिवाजका और आसपासके संयोगोंका पूरा अभ्यास करना चाहिये. इस तरहकी जमानेके अनुसार धर्मकी शिक्षा लिये बिना वे अपने काममें सफलता नहीं पासकते क्योंकि पोल चलानेका समय बदल गया है. यह बात सबही गुरुलोगोंको अच्छी तरह समझ रखना चाहिये. जो गुरुलोग इस तरह समझकर काम करेंगे तो वे अपने धर्मकी, देशकी और अपने आत्माकी उन्नति कर सकेंगे, और अपने शिष्योंका कल्याण करसकेंगे, परंतु जो अपने पवित्र धंधेकी शिक्षा नहीं लेंगे तो लोग उनको मानेंगे नहीं, इसमें कुछ नई बात नहीं है अपने धंधेकी कीमत आपही नहीं जानताहो तो दूसरे उसकी कदर कैसे करें ? ऐसा न होने देनेके लिये गुरुलोगोंको जमानेके अनुकूलरीतिसे पवित्र धर्मकी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये और शिष्योंको गुरुलोगोंके लिये इस बातकी विशेष सुविधा कर देनी चाहिये.

५७ कवित्त।

गुरु बिन ज्ञान नाहिं गुरु बिन ध्यान नाहिं, गुरु बिन आतमविचार ना लहत है। गुरु बिन प्रेम नाहिं गुरु बिन प्रीति नाहिं, गुरु बिन शीलहू संतोष न गहत है॥ गुरु बिन बास नाहिं बुद्धिको प्रकाश नाहिं, भ्रमहूको नाश नाहिं संशय रहत है। गुरु बिन बाट नाहिं कौडी बिन हाट नाहिं, सुंदर प्रगट लोक वेद यों कहत है॥ १॥

३१७ प्रभुकी कृपाकी कमी नहीं है वह तो सदा मदद देनेको तैयार ही रहता है. कमी केवल हमारे पुरुषार्थकी है.

एक तीन चार बरसका छोटा लडका था. वह नीचे खेलरहाथा. और माता उसकी ऊपर काम करनेमें लगीथी. थोडी देरमें जब

लडका माताके पास जानेकी इच्छा करने लगा और रोरोकर ' मा !' ' मा ! ' करनेलगा तब माताने कहा " आती हूं. "

लडकेने तब भी उतावली मचाई तो माताने ऊपरसे एक खिलौना डाल दिया और कहा " इससे खेल ! मैंभी आती हूं. "

इतने पर भी बचेने न माना वह ' मा !' ' मा !' करके रोनेलगा तब माताने कहा ' बेटा ! धीरा रहै ! मैं अभी आती हूं. "

थोडी देरतक फिर भी माता न आई तब तो बचा जल्दीके मारे सीढी चढने लगा वह दोही तीन सीढी चढा होगा कि, माताको उसके गिरपडनेका भय हुआ. वह अपना काम छोडकर दौडी और बालक दो तीन सीढी भी नहीं चढने पाया होगा कि, वह आठ दश सीढी उतरकर उसके पास आगयी और उसे गोदमें ले छातीसे दबा प्रेमपूर्वक चुंबन करने लगी.

उस बालककी तरह हम भी अपने पिता परमेश्वरके पास जाना चाहते हैं, परंतु जबतक केवल बातोंहीसे प्रभुको बुलाना चाहैं तब-तक वह पास थोडाही आसकता है ? छोटा बालक जैसे अपनी शक्ति न होनेपर भी सीढी चढनेका श्रम करनेलगा वैसे हमको भी अपने देशकाल और आसपासके संयोगोंके अनुसार प्रभुको पानेके लिये यत्न करना चाहिये. जबतक हम वैसा न करें तबतक प्रभु नहीं मानता कि हम उसके बिना नहीं जी सकते, और जबतक ऐसा विश्वास न होजाय तबतक प्रभु हमारे पास आ नहीं सकता, कारण माता जैसे अपने पुत्रको रोताहुआ देखना नहीं चाहती, वैसेही प्रभु अपने बाल-कोंको दुःखित देखना नहीं चाहता. वह तो हमसे पुरुषार्थ चाहता है और पुरुषार्थसे ही प्रसन्न होता है. हम प्रभुके लिये पुरुषार्थ कर-नेलगे कि, उसी समय उसकी सहायता तैयार है. उसकी मदद्में देर नहीं है, देर केवल हमारे पुरुषार्थमेंही है. इस लिये भाइयो ! आलस्य छोडकर प्रभुके मार्गमें आओ. प्रभुके मार्गमें आनेके लिये तुमको तो केवल दो तीन सीढीही चढनी पडैगी, परंतु प्रभु ऐसा दयालु है

और तुमपर उसकी इतनी कृपा है कि वह आपही बहुतसी सीढियां उतरकर तुमको लेनेके लिये सामने आजायगा.

३१८ भक्त हुए पीछे लोभ नहीं रखना.

एक गरीब घरकी लडकीका किसी साहूकारके पुत्रसे विवाह हुआ साहूकार बहुत भला और उदार था और स्त्रीको प्रसन्न रखनेका यत्न करता रहताथा. प्रतिमास, सेठ हाथखर्चके लिये बहुतसे रुपये दिया करताथा परंतु वह सेठानी तो गरीबघरकी थी और बचपनसेही हाथ रोककर खर्च करनेकी आदतवाली थी इससे अधिक खर्च नहीं करती थी. पिताके घरमें वह दोचार रुपयेमें महीनेभरमें काम चलातीथी इससे यहां पर उसको पचास रुपये महीना खर्च करना भी अधिक जान पडताथा.

एक दिन सेठने पूँछा " खर्चके लिये रुपये पैसे क्यों नहीं मांगती ? मैं तुझको दोसौ रुपये महीना हाथखर्चके लिये देता हूं उसमें पूरा पडजाता है ? तू हाथ मत रोकना !, महीनेभरमें पाँचसौ रुपये तक तू खर्च कर देना ! "

स्त्रीने उत्तर दिया " मुझको तो पचास रुपयेभी अधिक होपडते हैं. आप मुझे दोसौ रुपये महीना देते हैं परंतु बाकी रुपये तो मेरे पासही धरे हैं. इतना खर्चा मैं काहेमें करसकतीहूं ? अपने पिताके घरमें तो मैं पांचरुपये महीनेमें काम चलालेती थी. "

सेठने कहा " तेरा पिता तो गरीब आदमी है इससे वहांपर पाँच रुपये महीनेमें काम चलानाही ठीक था परंतु मेरे यहां वैसे काम नहीं चलसकता. मुझको प्रभुने बहुत कुछ दिया है, इससे तुझे उसका लाभ उठाना चाहिये. मेरी आबरूके योग्य तू खर्च न करे तो मुझे बुरा लगै. तेरे बापके यहां तू जैसे रहती वैसे मेरे यहां रहना बन नहीं सकता क्योंकि वह तो गरीब आदमी ठहरा, और मैं बडा धनवान् हूं. मुझजैसे सेठके घरमें आकर भी जो तू भिखारिनही रही तो फिर

तेरा सेठानीपन किस कामका ? मेरे बडप्पनके लिये खुला मन रख-कर तुझको अब खूब खर्च करना चाहिये. ”

पतिके इस उपदेश पीछे वह धीरे २ अधिक २ दान धर्म करने लगी.

भाइयो ! भक्त लोग अपना माल लुटादेते हैं उसका भेद अब तुमने जाना ? भक्तोंका विवाह ईश्वरके साथ होजाताहै इससे अपने माथेपर एक बडा धनी होनेसे बेफिकर होकर माल लुटादेते हैं, परंतु हम वैसा नहीं करसकते, क्योंकि हम सच्चे भक्त नहीं हुए तबतक गरीब मनुष्यकी उस लडकीके समान हैं अर्थात् थोडेहीमें काम निकाल लेतेहैं, परंतु धर्मके मार्गमें जाकर भी जो उदारता न रक्खें और बडा मन न रक्खें तो उस स्त्रीका सेठानीपन जैसे किसी कामका नहीं वैसे हमारी भक्ति भी किसी कामका नहीं. धनवान्से व्याह होजानेपर भी जो पहलेका गरीबीका स्वभाव बना रहै तो वह हलकापन कहलाता है और जैसे वह सेठको नापसंद होताहै वैसेही भक्त हुए पीछे हरिजन हुए पीछे प्रभुके साथ लगन लगे पीछे भी जो मन संकु-चित रहा और मुट्ठी बंदही रहीतो वह हमारी नालयकी है और प्रभुको बुरा लगनेवाला है. इस लिये तुम्हारा जी नहीं चलताहो और तुम थोडेहीमें काम चला सकतेहो तब भी अपने समर्थ पतिकी आबरूके निमित्त और उसके पवित्र प्रेमके निमित्त अपने भाईबंधुओंके साथ उदारतासे बरताव करो !

३१९. सच्चे भक्त कलकी चिंता नहीं करते, और जो कलकी चिंता करते हैं वे सच्चे भक्त नहीं हैं.

एक गुरु और चेला दोनों किसीके यहां भोजन करने गये. भोज-नके पीछे सेठका आदमी मुट्ठीभरके सुपारीके टुकडे लाया और उसने चेलेके हाथमें दे दिया. चेलेने उनमेंसे एक दो टुकडे तो खाये और बाकीको अपने ओढनेकी चद्दरमें बांध लिया.

जब वे वहांसे चल दिये तो मार्गमें गुरुकी नजर उस पुटरियापर पडी तब गुरुने पूँछा " चेला ! इस गांठमें क्या बँधा है ? "

चेलेने कहा " महाराज ! सुपारीके टुकडे हैं. "

गुरुने पूंछा " क्यों बांध रक्खा है ? "

चेलेने उत्तर दिया " कलके लिये "

गुरुने कहा " अरे ! इतना अविश्वास ! जिसने आज तुझको खीर पूडी दी वह क्या कल सुपारी भी नहीं देगा ? जिसने तुझको इतने वर्षतक जीता रक्खा सो क्या एक सुपारीका टुकडा भी नहीं देगा ? और जो सुपारी न भी मिली तो भगवदिच्छा ! उसकी और परवाह क्या ? जब इतनीही परवाह है तब साधु क्यों हुआ ? बेटा ! घर छोडते तुझे कठिन न लगा, माता पिताको छोडते तुझे दुःख नहुआ स्त्रीको छोडते तुझको विचार न आया, जात जमात और मान मर्तबा छोडते तुझको चिंता न हुई, धन दौलत और भोग विलास छोडते तूने परवाह नहीं की और अब सुपारीके टुकडेकी इतनी परवाह करता है ? ठंढ धूप और तीर्थ करनेमें थकावटसे तू डरा नहीं, और भूख प्यासकी परवाह न कर अपने आत्माके कल्याणके लिये तू भक्त हुआ, इतने पर भी भगवद् आसरेका बल छोडकर अभी तू सुपारीके टुकडे गांठमें बाँधता है ? लज्जा ! लज्जा ! ! ऐसा साधुपन तो लोगोंको और अपने आपको ठगनेहीके लिये हो सकता है. सच्चे भक्त तो कभी कलका फिकर नहीं करते ! बेटा ! तू देख तो सही कि, हिरनोंके पास कहां खजाना होता है ? मछलियोंके लिये बीज बोने कौन जाता है ? मेंडक कहां नौकरी करने जाते हैं ? कबूतरोंके भंडार कहाँ भरे हैं ? और सांपके खेत कहां हैं ? उनके लिये मनुष्योंकीसी कोई भी सुविधा न होनेपरभी वे भूखे नहीं मरते तब यह तो विचार कर कि, मनुष्य क्यों भूखे मरेगा ? मनुष्य उनसे कितने उत्तम हैं ? कितने बुद्धिमान् हैं ? कितने साधनवाले हैं ? और ईश्वरके कितने कृपापात्र हैं ? इसका तो विचार कर ! ऐसे

उत्तम मनुष्य और उनमेंभी हरिभक्त भूखे कैसे मरेंगे ? क्या इतना भी विश्वास नहीं है ? "

गुरुका यह उपदेश सुनकर शिष्यने सुपारीके टुकडे फेंक दिये. और उनको बांध रखनेकी भूलपर पश्चात्ताप किया, सच्चे भक्त ऐसे निस्पृही होते हैं और ऐसा विश्वासी जीवन व्यतीत करनेवाले होते हैं. ऐसे महाभक्तोंका सन्मान करना सीखो! और ब्रह्मार्पण कर्म करके ऐसे निस्पृही बनना सीखो ! तथा भगवद् आसरेका बल रखना सीखो !

इंद्रविजय छंद ।

जादिनते नर गर्भ तज्यो तू, आयके अहार कियो तबहींको ।
खातही खात भये इतने दिन, जानत नाहिं न भूखो कहींको ॥
दौरत धावत पेट दिखावत, तू शठ कीट सदा अन्नहीको ।
सुन्दर क्यों विश्वास न राखत, सो प्रभु विश्व भरै सबहीको ॥

३२० सच्चे भक्त चाहे जैसी स्थितिमें हों तब भी सदा आनंदमेंही रहते हैं.

प्राचीनकालमें किसी नगरका राजा मरगया. उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं था इससे प्रधान लोगोंने इकट्ठे होकर ठहराव किया कि, एक भारी सभा भरना और नगरभरमेंसे जिस किसी मनुष्यके गलेमें हथिनी फूलमाला डाल दे उसीको राज्यका अधिकारी बना देना. सब लोगोंने इस बातको स्वीकार किया. एक बडे मैदानमें नगरनिवासियोंकी भारी सभा हुई और हथिनीको खूब सिंगार करके फूलमाला देकर छोडा गया. कईवार इधर उधर फिरनेपर हथिनीने एक संन्यासीपर माला डाली. तब तो सब लोगोंने संन्यासीसे कहा "महाराज ! अब आप हमारे राजा हो गये. इस कौपीन और भगवा (गेरुए) वस्त्रोंको उतारकर राजमुकुट धारण कीजिये और इस बांसके दंडके बदलेमें राजदंड हाथमें लीजिये. "

संन्यासीने कहा " बाबा ! मुझे राज्य नहीं चाहिये मैं राज्य लेकर

क्या करूंगा ? मैं तो मेरे वैराग्यसेही राजाओंका राजा हूं. मुझे राजपाटकी जरूरत नहीं है मैं ऐसी उपाधिमें क्यों पडूं ? "

प्रधान लोगोंने कहा " महाराज ! आपको राज्यकी जरूरत नहीं है सो तो ठीक परंतु परमेश्वरने आपको राज्य दिया है सो तो भोगनाही चाहिये. हथिनीने आपके गलेमें फूलमाला डाली है सो खाली थोडीही जासकैगी ? भाग्यदेवी आपपर प्रसन्न हुई है. उसको आप कैसे लौट सकैंगे ? अब आपकी कुछ चल नहीं सकती. अब तो आपको भगवदिच्छाके अधीन होनाही पडैगा, "

संन्यासीने वहुतही कुछ नाहीं कही परंतु किसीने न मानी और उसको राजा बनाही दिया.

इसके कितनेही वर्ष पीछे किसी दूसरे स्थानका राजा अकस्मात् चढ आया और उसने संन्यासी बाबाको गादीसे उतारदिया. संन्यासीको इसमें कुछ भी दुःख न लगा. उसने अपने संन्यास समयके गेरुआं कपडोंकी गांठ बांध रक्खी थी उसे खोला और हर हर महादेव कहकर प्रसन्नतापूर्वक उनको पहना तथा सबसे ' नमो नारायण ' कहकर ईश्वरीय लीलाके चमत्कारपर हँसता २ जंगलको चलदिया.

अपनी इच्छाको प्रभुकी इच्छामें मिलादेना और प्रभुकी इच्छाके अधीन होजाना ही संन्यास है. ऐसी वृत्ति रखकर पीछे जो प्रारब्धयोगसे सुख या दुःख मिलै उसे प्रभुको याद करते २ शांतिसे भोगलेनाही भक्तका लक्षण है, यही भक्तकी खूबी है. यही भक्तका रहस्य है, और यही भक्तकी उत्तमता है. गीतामें भगवान्ने कहा है:—

"अनाश्रितं कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ॥"

अ० ६. श्लो० १.

अर्थ—कर्मके फलकी इच्छा रक्खे विना आवश्यक और करने योग्य कार्योंको जो करता है वही संन्यासी है और वही सच्चा योगी है. केवल जिसने अग्निको छोड दियाहो अथवा व्यवहारमें काम काज छोडदियेहों वह सच्चा संन्यासी या योगी नहीं है.

भाइयो ! प्रभुकी ऐसी स्पष्ट आज्ञा है. इसलिये बाहरी ढोंग धतूरे और टीमटामहीमें न पडे रहकर सच्चा संन्यासी और सच्चा योगी बनना हो तो शुद्ध अंतःकरणसे भगवदिच्छाके अधीन हो अर्थात् जैसे प्रभु रक्खे वैसे आनंदसे रहो और संयोगवश जो कुछ अच्छा या बुरा आमिले उसे प्रभुका स्मरण करते २ शांतिसे सहन करो !

कवित्त ।

धूल जैसो धन जाके शूलसो संसार सुख,
भूल जैसो भोग देखे अंत जैसी यारी है ।
पाप जैसी प्रभुताई शाप जैसो सनमान,
बडाई बिच्छुन जैसी नागिनसी नारी है ॥
अग्नि जैसो इंद्रलोक विघ्न जैसो विधिलोक,
कीरति कलंक जैसी सिद्धिसी ठगारी है ।
बासनाने कोई बाकी ऐसी मति सदा जाकी,
सुंदर कहत ताहि बंदना हमारी है ॥

सवैया ।

कोउक निंदत कोउक बंदत, कोउक देतहि आइ जु भच्छन ।
कोउक आय लगावत चंदन, कोउक डारत धुरी ततच्छन ॥
कोउ कहै यह मूरख दीसत, कोउ कहै यह आहि विचच्छन ।
सुंदर काहुसों राग न द्वेष न, ये सब जानहु साधुके लच्छन ॥

३२१ मनमें हलकी इच्छाएँ रखकर समाधि चढाओ तब भी कुछ फल नहीं होनेका ! इसलिये भाइयो ! अपनी इच्छाएँ सुधारो ! और शुभेच्छा रखना सीखो !

किसी राजाके दरबारमें, एक भांड आया. वह सब प्रकारके वेष बनानेमें बडा चतुर था. उसका तमाशा करना ऐसा बढकर था

कि देखनेवाले ज्योंके त्यों रहजातेथे. राजाको रिझाने और उससे मतलब गांठनेके लिये वह वडे २ तमाशे और खेल करने लगा कव्वा, मुरगा, वंदर आदि जानवरोंकी वोली वह वहुत अच्छी तरह वोलना जानताथा. सभामें जव उसने कुत्तेकी आवाज लगाई तो वाहर कुत्ते भोंकने लगे और कव्वेकी वोली वोली तव सैकडों कव्वे इकट्ठे होगये. इसके वाद उसने वंदरोंके चीखनेकी आवाज सुनाई, हवशी जैसे मोटे होंठकर दिखाये, वहुत तेज मिजाज फौजी अफसरकासा स्वभाव और सूरत कर दिखायी, कुभारजा (कुभार्या) के अत्याचार और चिड-चिडे गुरुओंका फारस कर दिखाया, और अंतमें सव साधन होते हुए भी थोडी वेपरवाहीसे राजा लोग कैसे अंधे होजाते और कर्म-चारी लोग कैसे लूटखाते हैं सो भी वहुतही अच्छी तरहसे कर दिखाया. भांडकी होशियारीसे राजा और उसकी सारी सभा वहुतही खुश होगयी और सव लोग शावाश ! शावाश ! पुकारने लगे इसके पीछे राजाने भांडसे पूँछा " वह कौनसा वेष है जिसे तू नहीं करसकता ? "

भांडने उत्तर दिया " महाराज ! प्रभुकृपासे ऐसा कोई भी वेष नहीं है जिसे मैं न करसकता होऊं. "

राजाने पूँछा " अच्छा तो मैं कहूंगा वही वेष तू करैगा ? "

भांडने कहा " महाराज ! आप आज्ञा करैं वही वेष मैं कर दिखाऊं आपका कहा हुआ वेष न करसका तो मैं भांड काहेका ? "

यह सुनकर कर्मचारियोंके लूट खानेवाले ऊपरी दृश्यसे चिढे हुए लोगोंमेंसे एक कर्मचारीने कहा " महाराज ! भांड अपनी झूंठी प्रशंसा करता है ऐसा क्योंकर वन सकता है कि वह सवही वेष वना सकता हो ? "

भांड वोला " महाराज ! यहां कुछ उधार खाता तो है ही नहीं ! यहां तो नकद चुकानेका हिसाव है ! आप आज्ञा करैं वह वेष मैं न कर सकूं तो आजसेही भांडपना छोडदूं ! "

कर्मचारीने राजासे कहा " महाराज ! इससे योगीका वेष कराइये तो अभी इसकी चतुराई मालूम होजायगी. "

राजाने भांडसे आज्ञा की " योगीका वेष बना और समाधि चढा तबही तू सच्चा भांड है ! "

भांडने कहा " पृथ्वीनाथ ! इसमें क्या बडी बात है ? आप राजाओंसे मनमाना इनाम पानेके लिये मैं यह भी सीखाहूं. समाधि लेना भी मुझसे छिपा नहीं है. "

इतना कहकर उसने योगीका वेष बनाया और सिद्धासन,पद्मासन, मयूरासन, कुक्कुटासन, दृढासन, वीरासन आदि अनेक प्रकारके आसन, और कई प्रकारके प्राणायाम और अनेक मुद्राएं करदिखायीं. इसके पीछे उसने एक घंटेतक समाधि चढाई. समाधि देखकर राजा और दूसरे सब लोग बडेही आश्चर्यमें पडे और उसकी प्रशंसा करते हुए उसीकी ओर देखने लगे. ऐसे करते २ घंटाभर पूरा होगया. सब लोग राह देखने लगे कि अब समाधि खुलेगी ! अब समाधि खुलेगी ! परंतु समाधि खुली नहीं. एक घंटा पूरा होकर दूसरा भी पूरा हो गया परंतु समाधि खुली नहीं. फिर तो तीसरा और चौथा घंटा भी बीत गया परंतु समाधि न खुली इसी तरह रात पूरी होगई, दिन पूरा होगया, दो दिन हुए और तीन दिन होगये परंतु समाधि न खुली तब तो सब लोग डरगये. वैद्योंने कहा " महाराज ! यह तो परम धामको पहुँचगया. घंटेभरकी समाधिमें दो घंटे होसकते हैं, तीन होसकते हैं, और कदाचित् चार भी होजायँ परंतु तीन दिन तो कदापि नहीं हो सकते. अब आप इसकी समाधि खुलनेकी आशा न रखिये ! यहां तो लंबी समाधि लगगयी. अब इसको ठिकाने लगवानेकी तजवीज कीजिये. "

राजाने कहा " भांड बडी विचित्रशक्तिका आदमी था. वह समाधि लेनेमें मरगया इससे उसको जलाना नहीं चाहिये परंतु साधुओंकी तरह उसे गाडना चाहिये, फिर उसका हमपर इनाम बाकी है. उस इनाममें उसकी समाधिके ऊपर चबूतरा बनवा देना चाहिये. "

सब लोगोंने राजाकी सलाहको पसंद किया. अंतमें नदीके किना-

रेपर एक मैदानमें उसको गाडागया और ऊपरसे एक चबूतरा बनवा दिया गया.

उस बातको कई वर्ष होगये. शनैः २ लोग उस बातको भूलगये दोसौ वर्षके बाद नदीमें ऐसा बाढ आया कि पानी उस मैदानतक पहुँचा और वह चबूतरा गिरकर निशानतक मिटगया. समय पाकर वहां मट्टी जमगयी और उसमें खेती बारी होनेलगी. आगे जाकर किसी समय वह जमीन खोदी गयी तो भीतरसे चौक निकला. होते २ बात फैली कि अमुक मनुष्यके खेतमें गडाहुआ चबूतरा निकला है. लोग कहने लगे उसमें धन निकलैगा. सैकडों हजारों आदमी धनकी लालचसे वहां इकट्ठे होगये. सरकारी पहरा भी आगया बडी सँभालके साथ चबूतरा खोदागया तो उसमेंसे उस समाधिष्ठ भांडका गडा हुआ शरीर निकला. उसे देख लोग बडे आश्चर्यमें पडे. कोई कहताथा 'यह तो मुरदा है.' कोई कहताथा 'यह सतयुगी योगी है' कोई कहताथा 'यह तो महात्मा है. इनके निकलनेसे हमारे देशका भला होगा.' कोई कहताथा 'ऐसे महात्माको समाधिमें छेडनेसे हमपर आपत्ति आवैगी.' किसीने कहा 'यह तो साक्षात् शंकरका अवतार है.' सब लोग इस तरहपर अपने २ मनके विचार प्रगट कररहेथे. इतनेहीमें एक साधु आपहुँचा. साधुको समाधि चढाने उतारनेका कुछ अनुभव था. उसने कहा "यह तो कोई महात्मा योगी है, परंतु समाधि चढगयी है सो पीछी उतरी नहीं है. मुझे समाधि उतारनेकी क्रिया याद है."

इतना कहकर उस साधुने उस समाधिष्ठ भांडकी खास २ नसें द्बाईं और शिरपर घी मलना आरंभ किया थोडी देरमें उसकी आँखें खुलीं. योगीराज शरीर मरोडते और आलस्य खाते उठबैठे और भांडकी तरह अपने दोनों हाथोंसे मानपूर्वक सलाम करके बोले "खमा महाराज ! भूपसिंह बहादुरको खमा ! कृपानाथ ! आज तो भांडको ऐसा इनाम मिलना चाहिये जिसमें आपका संसारमें नाम होजाय !"

लोग यह सुनकर आश्चर्यमें पडगये. कहने लगे "यह क्या ? भांड

क्या ? इनाम क्या ? भूपसिंह कौन ? यह बात क्या है ? यह कोई भूत प्रेत तो नहीं हैं ? "

लोग इस तरहका विचार करते हैं इतनेंहीमें उस समाधि छुडानेवाले साधुने कहा " महात्माजी ! आप कौन हैं ? और आपकी इच्छा क्या है ? हमने आपकी अधूरी समाधि जगादी इसके लिये हम क्षमा चाहते हैं. "

उस योगीने उत्तर दिया " मेरा नाम है काळू भांड ! महाराजा भूपसिंह कहां हैं ? मुझे इनाम मिलेगा या नहीं ? "

थोडी देरमें कुछ होशमें आनेपर वह फिर बोला " यह क्या मैं कहां हूं ? यह मैं क्या देखरहाहूं ? "

थोडी देर पीछे जब वह बिलकुल होशमें आगया और बातें करने लगा तब मालूम हुआ कि ढाईसौ बरस पहले उसने समाधि लीथी. इतने समयमें तो वह नगरही बदलगया, और राज्य भी बदलगया परंतु ढाईसौ बरस समाधिमें रहने परभी वह भांड तो भांडही बनारहा और उसकी इच्छा इनाम पानेहीमें लगी रही.

ऐसा होनेका कारण यह है कि, ईश्वरने हमारे शरीरकी बनावट ऐसी रक्खी है कि, हम उसको जिस स्थितिमें रखना चाहें अभ्याससे उसी स्थितिमें वह रह सकता है. मट्टी खाकरभी रहा जा सकता है, गोबर खाकर भी रहा जा सकता है, घास खाकर भी रहा जा सकता है, विष खाकर भी रहा जा सकता है. उपवास करकेभी रहा जा सकता है और समाधिमेंभी रहा जा सकता है, परंतु इस तरह रहनेसे शुद्ध अंतःकरण विना और प्रभुप्रेम विना उद्धार थोडाही हो सकता है ? इस लिये भाइयो ! याद रक्खो कि, अपने मनकी मलिन भावनाओंको सुधारे विना और प्रभुपरके सच्चे प्रेम विना योग साधने और समाधि लेनेसेभी कुछ फल नहीं होनेका ! ईश्वरके सच्चे ज्ञान विना प्रभुपर प्रेम किये विना ढाईसौ बरसतक समाधिमें रहनेपर भी कुछ फल न हुआ और भांड भांडही बना रहा

तब ईश्वरके प्रेम और विश्वास विना भगवदावेश विना हमारे स्वार्थके कामोंसे मुक्ति कैसे मिलसकेगी सो तो विचारो! इस लिये भाइयो! बाहरी ढोंग धतूरेमें न पडे रहकर अपनी इच्छाओंको सुधारो! और अपने अंतःकरणका प्रभुप्रेम बढाओ! तो भली इच्छासे किये हुए कर्मों और प्रभुप्रेमसे किये हुए कर्मोंको भगवद्अर्पण करनेसे तुम थोडा करनेपरभी बहुत कुछ पासकोगे. इस लिये जैसे बनै वैसे शुभेच्छा रक्खो! जैसे बने वैसे शुभेच्छा रक्खो! और प्रभुप्रेमको पकडलो! प्रभुप्रेमको पकड लो!

३२२ सच्चे संतके लक्षण.

ता. २० जून सन् १९०२ के दिन सायंकालके ६ बजे बंबईमें भूलेश्वरके पास स्वामीजी महाराज परमहंस परमानंदजीने अपने दवा-खानेमें मेस्मेरिज्मका प्रयोग किया था. उस समय सबजेक्ट (विधेय) ने संतके लक्षणोंके संबंधमें अपनी खुशीसे जो बातें कही थीं वे जानने योग्य हैं. इस लिये उसका सार इस प्रकरणमें कहा गया है[1].

पहले उसने ईश्वरकी प्रार्थना करते २ कहा कि, " हे सच्चिदानंद! तेरी जय हो! तू सबको शांति दे! शरीरकी मनकी और अंतःकरणकी सबको शांति हो! जैसे समुद्र पानीसे भरा रहता है वैसे संसार शांतिसे भरा रहो! हे प्रभु! तेरे पास आनेका मार्ग थोडेही मनुष्योंको मिलता है! जिसको वह मार्ग मिलै वही संत और वही महात्मा है! ऐसे संतोंहीसे संसारमें शांति फैलती है. इस लिये हे दीन-दयालु परमेश्वर! इस दुःखित हिंदुस्थान देशमें सच्चे संत उत्पन्न कर और वैसे संतोंका वर्णन करनेकी मुझे शक्ति दे! "

---

१ इस प्रकारकी जानने योग्य बहुत बातें प्रतिदिन प्रयोगके समय होती है, पिछले तीन बरसके बारहसौ प्रयोगोंमेंसे जरूरी २ विषयोंको मैंने लिख रक्खा है. और मेस्मेरिज्म संबंधी मेरे खास अनुभव-कीभी बहुतसी बातें जानने योग्य हैं. परंतु इस प्रकारकी पुस्तक पढ-नेका अभी हम लोगोंमें अधिक शौक नहीं है इससे पूरी २ मदद मिले बिना उस पुस्तकका छपना कठिन है.

इस तरह प्रथम प्रार्थना करके तब उसने कहा " लोग पूँछते हैं कि सच्चे संत किस जगह मिलते हैं ? और उनकी पहँचान क्या है ? साधुजन इसका जवाब इस तरह देते हैं कि भाग्यसे और प्रयत्नसे अच्छे संत मिलते हैं और वे बुद्धिसे पहँचाने जाते हैं. प्रभुकी बिजलीका अर्थात् भगवत्कृपाका जो आकर्षण कर सके उसीको सच्चा संत समझना चाहिये, जो ऐसे संत होते हैं उनको तेरा मेरा नहीं होता, जिनके मनमें स्वार्थ और अंतःकरणमें क्रोध न हो उनको सच्चे संत समझना, गाय दूध देती है इससे उसको पानी घास देना और सिंह जीवोंको मारता है इससे उसको मारना है इससे उसको मारना ऐसा भेद जिनके हृदयमें न हो परंतु गाय और सिंह दोनोंपर जिनकी समान दृष्टि हो उनको संत समझना. जैसे समुद्रमें बरसातके दिनोंमें नदियोंका पानी जाता है सो न जाय तब भी समुद्र तो भराही रहता है और नदीकी पानीकी आशा नहीं रखता, वैसेही संतोंका मन भक्तिसे ठठाठट्ट भरा रहता है वे प्रभुके सिवाय और किसी भी वस्तुकी आकांक्षा नहीं रखते, वैसे समुद्रकी तरह प्रभुप्रेमसे भरेहुए निःस्पृही जनोंको संत समझना. जिनके हृदयमें चमार ब्राह्मण और क्षत्रिय शूद्रका भेद नहीं होता, वैसे अभेद वृत्तिवालोंको सच्चे संत समझना. जिनको स्तुति और निंदा समान हैं वे संत हैं. जैसे मनुष्य शोभाके लिये जेवर पहनते हैं वैसे जिनके मुखमें प्रभुनामका अलंकार है वे उत्तम संत हैं. पवन जैसे सारी दिशाओंसे आता है और उसके घरबार कुछभी नहीं है वैसेही जिनको सारा संसार समान है वे संत हैं. अभिमानके 'मैं' और 'हम' ये दो मुख्य शब्द हैं. जिनके भाषणमें 'मैं' शब्द न हो वे सच्चे संत हैं. अपने सब प्रकारके स्वार्थोंको जिन्होंने प्रभुके निमित्त त्यागदियाहो उनको सच्चे संत समझना. सूरजकी धूप और बरसात जैसे गरीब और अमीर सबपर बराबर पडता है वैसेही सबपर जिनकी समान दृष्टि हो वे सच्चे संत हैं वृक्ष जैसे उसमेंसे लकडी काट ले जानेवालेको, मुसाफिरको और वृक्षको सींचनेवालेको समान रूपपर छाया

देता है वैसेही जिनकी सब लोगोंपर समान दृष्टि हो वे संत हैं. ऐसे संतोंके बहुत चिह्न हैं. संतोंमें बुद्धिकी अपेक्षा समानभाव होनेकी अधिक आवश्यकता है. बुद्धि थोडी हो तो कुछ चिंता नहीं परंतु समानभाव होना चाहिये. बुद्धि तो वहुत हो परंतु जो अंतःकरणमें प्रभुप्रेम न हो तो वे सच्चे संत नहीं हैं. संक्षेपमें सच्चे संत तो वेही हैं जो प्रभुका आकर्षण करसकैं.

५८ पद ।

रामशरण विश्रामा साधो रामशरण विश्रामा हो । वेद पुराण पढेको यह गुण सुमिरे हरिको नामा हो ॥ टेक ॥ लोभ मोह माया ममता पुनि औ विषयनकी सेवा हो। हर्ष शोक परसै जिहिं नाहिन सो मूरति है देवा हो ॥ १ ॥ स्वर्ग नरक अमृत विष यह सब त्यों कंचन अरु पैसा हो । अस्तुति निंदा यह सम जाके लोभ मोह पुनि तैसा हो ॥ २ ॥ दुख सुख यह बांधैं जिहिं नाहिन तिहिं तुम जानो ज्ञानी हो । नानक मुक्त ताहि तुम मानो यहि विधिको जो प्रानी हो ॥ ३ ॥

३२३ जबतक ईश्वरको हम अपनी इच्छाएँ न सौंपदें तबतक कुछ भी सौंपा नहीं कहलासकता.

भाइयो ! हमारी इच्छामें सारे जगत्का समावेश होजाता है. केवल जगत्हीका क्यों ? त्रिलोकीका समावेश होजाता है. उन इच्छाओंको छोडकर उन हजारों इच्छाओंमेंसे भी थोडीसी लेकर,. उनमेंसे भी एक एकको हम प्रभुके अर्पण करैं तब वह कैसे राजी हो सो तो विचारो ! हम दान करते हैं परंतु मानकी इच्छा तो बाकीही रहजाती है. हम सेवा करते हैं परंतु कमानेकी इच्छा तो बनीही रहती है. हम ठाकुरजीको भोग लगाते हैं परंतु बालबच्चे होनेकी इच्छा तो मनमें

बनीही रहजाती है. हम गुरुका उपदेश सुनते हैं परंतु रबरटायरकी गाडीमें बैठकर सैर करनेकी इच्छा तो रहही जाती है. हम तीर्थ करते हैं परंतु आपसके झगडोंकी इच्छा तो बनीही रहती है. हम ग्यारस आदि व्रत करते हैं परंतु काम क्रोध तो बनेही रहते हैं. हम दर्शन करते हैं परंतु सरकारी खिताब पानेकी इच्छा तो छूटतीही नहीं. हम बैंगन, आलू, मेथी अथवा दाल भात आदि किसी पदार्थका खाना छोडसकते हैं परंतु नाटक तमाशे देखनेकी इच्छा तो छूटतीही नहीं. भली स्त्रियां मंदिरमें जाकर ठाकुरजीकी सेवा करती हैं परंतु कुटुंब-क्लेशके झगडोंकी इच्छा तब भी बनी रहती है. पंडित लोग गीताका पाठ करते हैं परंतु पाठ करनेकी मजदूरी लेनेकी इच्छा तो बनीही रहती है. वैष्णव मरजाद लेते हैं परंतु मरजादके अभिमानकी इच्छा तो छूट-तीही नहीं. ब्राह्मण शिवपूजन करते हैं परंतु पूजनका फल बेचदेनेकी इच्छा तो तब भी बनी रहती है. गुरु उपदेश देते हैं परंतु वैभव भोगनेकी इच्छासे वे कहां बचे हैं ? साधु घरबार और पुत्र परिवार छोडते हैं परंतु ऋद्धि सिद्धि और तुच्छ चमत्कारकी इच्छा-ओंको कहां छोडसकते हैं ? मनुष्यधर्मके कुछ २ काम करते हैं परंतु उनके बदलेमें लौकिक फल अथवा स्वर्ग मांगनेकी इच्छा तो उनमें बनीही रहती है.

इसीतरह हम सब लोग प्रभुके निमित्त कुछ २ करते हैं तब भी हमारी दूसरी कितनीही इच्छाएँ तो बाकीही रहती हैं. हम और चीजोंको अपनाही मानकर अपने पास रक्खें और फिर प्रभुको पाना चाहें तो बन नहीं सकता, क्योंकि प्रभुका ठहराव है कि, हम जब सर्वस्व प्रभुके अर्पण करदें तबहीं हम प्रभुके हो सकते हैं. इस लिये इस तरहपर सर्वस्व अर्पण करनेका सबसे सुगम उपाय यही है कि, हमारी इच्छाएँ प्रभुके अर्पण करदें और मनमें समझलें कि, हम तो चिट्ठीके चाकर हैं. इससे जैसे प्रभु रक्खें वैसेंही आनंदसे रहना चाहिये.

३२४ मनुष्यका मूल्य समझनेको तीन पुतलियोंकी बात.

उज्जैन नगरका राजा भोज बडा विद्वान् था. वह गुणियोंकी कदर करनेवाला और अतिदानी था. इससे उसके समयमें विद्याहुनर और कारीगरीके बडे २ चमत्कार बनतेथे, क्योंकि कहा है कि " यथा राजा तथा प्रजा " आजकलके बहुतसे राजा हाथके बडे संकीर्ण हैं, इससे प्रजाजन भी वैसेही होगये हैं.

भोजराजके दरबारमें एकबार तीन सोनेकी पुतलियाँ बिकनेको आयीं वे तीनों पुतलियां ऐसी कारीगरीसे बनाईगयीथीं कि, सारा दरबार उनको देखकर ज्योंका त्यों रहगया. पुतली बनानेवालेने तब प्रार्थना की " पृथ्वीनाथ ! आपके दरबारमें बडे २ पंडित और विद्वान् मौजूद हैं. इनसे मेरी इन पुतलियोंकी कीमत करादीजिये. मैं बहुत २ देशमें फिरा परंतु इनकी कोईभी कीमत कर न सका. अब सारी पृथ्वीमें प्रसिद्ध और प्रशंसित आपके दरबारमें जो इनकी कीमत न हुई तो दुनियां जानैगी कि राजा भोजके दरबारमें भी सच्चे परीक्षक नहीं हैं. "

इतना सुनतेही एक जौहरी बोल उठा " ला ! ला ! इधर ला तेरी पुतलियोंको ! ऐसा इनमें क्या है सो इनकी कीमत नहीं हो सकती. "

इतना कहकर उसने पुतलियोंको पास लेकर अच्छी तरह देखा और पासवाले एक आदमीसे कहा " छोकरे ! इनकी कीमत करदे !

वह छोकरा उस जौहरीका नौकर था और जवाहरातके काममें अच्छा समझताथा. उसकी की हुई कीमतमें कभी अंतर नहीं पडताथा. उसने उन पुतलियोंको देखकर पहले सोनेको कसोटीपर घिसा तो सोना पूरा १०० टंचका निकला. फिर उसने चारोंको अलग २ तोला तो चारों वजनमें बराबर निकलीं पाव रत्तीका भी अंतर न निकला तब उसने उस पुतलीवालेसे कहा भाई ! इन चारों पुतलियोंकी कीमत बराबर है. "

यह सुनकर पुतलीवाला हँसा तव राजा वोला " जौहरी ! इन पुतलियोंकी कीमत इस तरह नहीं होसकती ! तुम भूलतेहो ! जो इनकी कीमत तौल और सोनेके घटियावढिया होनेहीपर होती तो वह इनको यहाँतक न लाता इसमें तो कुछ भेद होना चाहिये. "

राजाका यह कहना सुनकर सारे सरदार सारे पंडित और सारेही जौहरी विचारमें पडे. इतनेहीमें एक पंडित वोल उठा " महाराज ! सोनेमें अंतर नहीं है तो वनावट और सूरतमें अंतर होगा."

पंडितकी इस वातपरसे सभाके सव लोग उन चारों पुतलियोंको उठा २ कर वारीकीसे देखने लगे परंतु किसीकोभी उनका वनावटमें अंतर न जानपडा तव सव लोग चुप होकर वैठ रहे. सारी सभाको चुप देख राजाको मालूम होगया कि, अव इनकी कीमत कोई वता नहीं सकता. तव वह वोला " सभामें वडे २ पंडित और वडे २ जौहरी मौजूद होनेपरभी पुतलियोंकी कीमत न होसकी यह तो वडी लज्जाकी वात है ! "

इतना सुनकर कालिदास पंडित उठे उन्होंने एक सलाई मँगवाई और एक पुतलीके कानमें डाली. सलाई एक कानमेंसे दूसरे कानमें जा निकली. तव कालिदासने कहा "इस पुतलीकी कीमत तीन कौडी."

फिर उन्होंने दूसरी पुतलीके कानमें सलाई डाली तो वह मुँहमें होकर निकलगयी तव उसकी कीमत उन्होंने एक रुपया वताया. इसी तरह तीसरी पुतलीके कानमें सलाई डालीगयी तो वह पेटमें जा पहुँची. तव कालिदासने उस पुतलीकी कीमत सवा लाख रुपया वताया.

राजाने पुतलीवालेसे पूँछा " वोल ! अव तेरी पुतलियोंकी ठीक कीमत हुई या नहीं ? "

पुतलीवालेने प्रसन्नतासे कहा " महाराज ! यह कीमत वरावर है!"

पुतलियोंकी वनावटमें यह भेद और कालिदासमें उस भेदको पहचानलेनेका गुण देखकर सारी सभा स्तब्ध होगयी और प्रशंसा करनेलगी. राजाने प्रसन्न होकर कहा " पंडितजी ! आपने बहुत वडा

काम किया ! मेरी सभाका नाम आपने रखलिया. अब यह बताओ कि, यह कीमत आपने किस तरह की ? "

कालिदासने कहा " महाराज ! जिस पुतलीके एक कानमें होकर दूसरे कानमें सलाई जानिकली उसकी कीमत तीन कौडी की है. इसी तरह जो मनुष्य अपने धर्मकी कल्याणकी और प्रभुकी बातें सुनकर एक कानसे दूसरेमें निकालदेता है अर्थात् उसका कुछ विचार नहीं करता और आचार विचार नहीं पालता उसकी कीमत तीन कौडीकी है. जिस पुतलीके कानमेंसे मुँहमें सलाई जानिकली उसकी कीमत एक रुपया है वैसेंही जो मनुष्य ज्ञान और भक्तिकी अच्छी २ बातें सुनकर सुनते समय राजी हो और मुँहसे दूसरोंको कह सुनावे परंतु आप उसमेंसे एक भी न करै उसकी कीमत एकही रुपया है. और जिस पुतलीके कानमें होकर सलाई पेटमें चली गयी उसकी कीमत सवालाख रुपये. वैसेंही जो मनुष्य धर्म भक्ति और प्रभुकी बातोंको कानसे सुनकर अपने हृदयमें धारण करता है और उसीके अनुसार आचार रखता है अर्थात् भक्त होता है उसकी कीमत सवालाख रुपया है.

पढनेवाले भाइयो और बहनो ! अब तुम्हारी इच्छामें आवै सो करो ! चाहे तो विना ध्यान दिये मनमाने विचार करते २ इन उदाहरणोंको पढकर एक कानसे दूसरे कानमें निकाल दो ! चाहे 'स्वर्गके विमान' के उदाहरण बहुत अच्छे हैं, कहकर चार दिनोंमें उनको भूलजाओ ! और चाहे तो उसका रहस्य हृदयमें धारण करके उसके अनुसार आचरण करके, संसारमें आनंदसे रहकर, मनको शांतिमें रखकर, और प्रभुकी शरणमें रहकर अंतमें स्वर्गका विमान पाओ ! जैसे तुम्हारी इच्छामें आवे वैसे करो, हमारी कीमत हमारेही हाथमें है. कालिदास पंडितके कहने अनुसार हम तीन कौडीके भी हो सकते हैं और सवालाख रुपयेके भी बन सकते हैं. इनमेंसे कैसा बनना सो हमारी मरजीपर है. इस लिये भाइयो ! हमारी मुख्य प्रार्थना यह है कि, एकही साथ सवा लाख रुपयेके बनजाना न भी बनसकै तो कुछ

चिंता नहीं परंतु तीन कौडीका न बनजानेकी तो अपने पवित्र आत्माके लिये और समर्थसे भी समर्थ परमेश्वरके लिये अवश्य संभाल रखना !

८९ पद ।

राम भजहु नरतनु धरि प्रानी जाकी जोति जगत यह जानी ॥ टेक ॥ जाके पद ब्रह्मादिक सेवत ध्यान धरत हैं मुनिजन ज्ञानी । जाकी चरणरेणु पर्शनते तरी अहल्या सब जग जानी ॥ १ ॥ सोई राम प्रह्लाद उबारे ध्रुवपद ध्रुव पायो सुज्ञानी । कंस मारि कुंतीसुत पाले जगकारन लीला बहु ठानी ॥ २ ॥ जाके हेतु राज तजि भूपति वनबधि जाय तपस्या ठानी । रामजीवन ताहीको विनवै निज मस्तक धरिके युगपानी ॥ ३ ॥

३२५ खाँचेमें गिराहुआ गाडीका पहिया बातें करनेसें नहीं निकलता परंतु टेका लगानेसे निकलता है.

बंबईकी हनुमानगलीमेंसे एक खटारा अर्थात् बोझा लादनेकी बैलगाडी जातीथी. सामनेसे एक विक्टोरिया (घोडागाडी) आगयी. बैलगाडीवालेने बैलोंको बहुतही रोका परंतु बैल थे कुछ जोरावर, रास्ता था तंग, गाडीवाला था कुछ बेखबर और सामनेसे आनेवाली घोडागाडीका हाँकनेवाला था जल्दबाज, इससे गाडी कुछ अधिक सडक छोडकर एक ओर चली गयी और उसका पहिया एक मोरीमें गिरगया. गाडीवालेने बहुतही जोर मारा परंतु पहिया निकला नहीं. इतनेहीमें एक बनिया आगया, वह गाडीवालेसे बोला " इस तरह क्यों बैलोंको मारता है ? बैलोंको छोडकर तो एक ओर करदे और पहिया खींच तो अभी निकल आवैगा ! "

गाडीवालेने वैसाही किया परंतु गाडी चली नहीं. इतनेहीमें एक पारसी आ निकला उसने लोगोंसे कहा " मकानवालेको नोटिस क्यों नहीं देते ? म्युनिसिपलटीवाले भी क्या अंधेही हैं ? इस आम सडकपर ऐसी मोरी क्यों रहने दी है ? "

इतना कहकर वह गाडीवालेसे बोला " तूभी मूर्खही है ! जो दो बैलोंसे नहीं खिंचती वह तुझसे कैसे खिंचैगी ? बैल जोतकर दहनी ओर हांक तो अभी पहिया निकल जायगा. "

गाडीवालेने वैसाही किया परंतु तब भी पहिया निकला नहीं इतनेहीमें सिपाही आपहुँचा और दो चार लात जमाकर कहने लगा " बे नालायक ! रास्ता क्यों बंद कर रक्खा है ? गाडीमें बैल जोडकर दो चार चाबुक जमा तो गाडी निकल आवैगी ! "

गाडीवालेने वैसाभी किया परंतु कुछ फल सिद्ध हुआ नहीं. इतनेहीमें एक भटजी आ पहुँचे वे कहने लगे " अरे भाई ! वृथा बैलोंको क्यों मारता है ? आगे जाकर दो दो पाँच २ पैसेमें दो चार मजदूर करला तो वे अभी पहिया निकाल देंगे. "

थोडी देरमें एक दाक्षिणी बुआ आगये. वे कहने लगे " बाजीरावकी तरह मनसूबाही मनसूबा क्या करता है ? जरा बैलोंको भडका दे ! बस बैल जोर मारेंगे और पहिया निकल आवैगी. "

गाडीवालेने उत्तर दिया " महाराज ! बैल तो भूखे मरते हैं फिर भडकें कैसे ? जो दाना पातेहों वे भडक सकते हैं. ये तो दिनभर मजदूरी करते हैं और बोझा खैंचते हैं तब घास खानेको पाते हैं. "

तब दाक्षिणी बुआ बोले " यह सब सरकारका दोष है ! "

यह सुनकर पासवाले दो चार आदमी बोल उठे, " राव साहब ! गाडीका पहिया मोरीमें गिरगया इसमें सरकारका क्या दोष ? "

राव साहबने जवाब दिया " सरकारका नहीं तो और किसका दोष ? ऐसी सकडी गली क्यों रखनी चाहिये ? ऐसी खराब नाली क्यों रखनी चाहिये ? ऐसे, अल्हड हांकनेवालेको गाडीका पास क्यों देना चाहिये ? बैलोंको घोडोंकी लीद खिला २ कर ये लोग ऐसे मुरदे

करडालते हैं. इस पर कोई निगाह नहीं रखता सो दोष सरकारका है या और किसीका ? "

इसी तरहकी बातें बडबडाता हुआ वह भी चल दिया परंतु इससेभी गाडी चली नहीं. इतनेहीमें एक अंग्रेज घोडे सवार होकर उधरसे निकला. लोगोंकी भीड भाड देखकर उसने पूँछा " यह क्या है ? "

गाडीवालेने कहा " साहब ! नालीके पत्थरमें गाडीका पहिया अटक गया सो निकलता नहीं है. "

घोडेपर चढे २ ही उसने कहा " पत्थरको तोड क्यों नहीं डालते हो ? " और घोडा हांक दिया. लोग उसकी बातपर हँसने लगे और आपसमें कहने लगे कि, " मारना ऊंदर (चूहा) और खोदना डूंगर (पहाड) वाली बात यह साहब करता है परंतु यह नहीं विचारता कि, ' यहां कहाँ टांकी है और कहां हथोडा है. इतनेहीमें एक भाटिया सेठकी गाडी आनिकली, परंतु मार्ग बंद होनेसे वह रुकगयी. तब तो सेठ साहबने भीतर बैठे २ ही गाडी पर हाथका फटका मारकर कहा " गाडी हांक ! गाडी हांक ! दर्शन हो जांयगे ! " परंतु जब उनको मालूम हुआ कि मार्गमें गाडी फँसी हुई है तब आप अपनी गाडीसे नीचे उतरे और उस बैलगाडीवालेको दोचार गालियां देकर बोले " बैल छोडकर गाडीको खडी करदे ! फिर जी चाहे तब पहिया निकालता रहना ! हमारी गाडीको तो निकलजाने दे !

गाडीवालेने कहा " साहब ! पीछेसे चबूतरेका कोना लगता है इससे गाडी खडी नहीं होसकती ! "

यह सुन सेठजी चिढगये और अपनी गाडी फिराकर दूसरे मार्गसे हँकवा लेगये.

एक तो गली सकडी और फिर बीचमें अटक गयी गाडी इससे दोनों ओरका मार्ग बंद होगया और दशही बारह मिनटमें सौ पचास आदमी इकट्ठे होगये वे सबही दूर खडे २ युक्तियां बतातेथे परंतु उनमेंसे एक भी बातसे गाडी चलती नहीं थी. इतनेहीमें दो मजदूर आन पहुँचे. उन्होंने समझ लिया कि केवल बात बनानेसे काम नहीं

होगा परंतु कुछ सहारा लगानेसे काम होगा. उन्होंने पास जाकर गाडीवालेसे कहा " मुँह क्या देखता है ? हांक गाडी ! हम पहियेको उठाते हैं. "

इतना कहकर वे दोनों पहियेको जा चिपटे. एकने पहिया आगेसे खींचा और दूसरेने पीछेसे ढकेला. बस देखतेही देखते पहिया निकल आया और गाडी चलदी.

भाइयो ! देखो ! अटकी हुई गाडी जरासा सहारा देनेसे इस तरह चल निकली परंतु दूर खडे होकर बातें करनेसे कुछभी लाभ नहीं हुआ. उस बनियेकी तरह झूंठी दया करनेसे गाडी चली नहीं. उस पारसीकी तरह कानूनकी मदद लेने दौडनेसे, सरकारी नौकरोंका दोष निकालनेसे अथवा दहनी वाईं ओर झुकनेसेभी अटकी हुई गाडी चली नहीं. रावसाहबकी रायके अनुसार सबही बैल भडकनेवाले नहीं होते और बात २ में सरकारका दोष निकालनेसेभी गाडी चलती नहीं. पुलिसकी मारसे अटकी हुई गाडी चल नहीं सकती, जेबमेंसे पैसे दिये बिना भटजीकी तरह केवल बातें करनेसे फँसी हुई गाडी चल नहीं सकती. सेठकी तरह गाली देनेसेभी फँसी हुई गाडी चल नहीं सकती, और उस अंग्रेजकी तरह घोडेपर चढे २ ही पत्थर फोडडालनेकी सलाह देनेसेभी विना औजार पत्थर फूट नहीं सकता और अटकी हुई गाडी चल नहीं सकती. ऐसी अटकी हुई गाडीको चलानेके लिये तो अपने कंधे और अपनी कमरका मजबूत सहारा देनेवाले सच्चे मजदूरोंकी परिश्रमियोंकी ही जरूरत है.

भाइयो ! ऐसी खाली बातें करनेवाले तो तुमको बहुतसे मिलेंगे परंतु उनसे कुछ फल सिद्ध होनेका नहीं, क्योंकि अनुभवियोंका कहना है, कि हमारे डूबते हुए देशको, हमारे दुःखित भाई बंधुओंको और अश्रद्धाके चक्करमें पडेहुए हमारे पवित्र धर्मको तो केवल बातें मारनेवाले नहीं किंतु सहारा देनेवाले मनुष्य चाहिये, सैकडों भूलें बतानेसे और हजारों बातें करनेसे जो काम नहीं होता वह काम थोडासा सहारा देनेसे

सहजमें होजाता है. भाइयो और वहनो ! हमारे गरीव देशके लिये, हमारे दुखिया भाईबन्धुओंके लिये, हमारे पवित्र सनातन धर्मके लिये, हमारे आत्माकी उन्नतिके लिये और समर्थ प्रभुके लिये आपसमें सहायता करो ! इसीमें कल्याण है ! यही सवसे सच्चा धर्म है और यही प्रभुके नामपर परस्पर सहायता करना प्रभुको सवसे अधिक प्रिय काम है ! इसलिये दयालु प्रभुके दिये हुए हमारे सनातन धर्मके लिये और महान् प्रभुके लिये जैसे बनै वैसे परस्पर सहायता करनेका ठहराव करो और उस ठहरावमें बल देनेके लिये बारबार सच्चिदानंदकी जय जय बोलो ! सच्चिदानंदकी जय जय बोलो ! ! सच्चिदानंदकी जय जय वोलो ! ! ! और जगत्का स्वामी जा हम सवका सरजनहार पिता है उसको दीनतापूर्वक हमारे खास तथा सबके कल्याणके लिये हाथ जोडकर बोलो.

६० पद ।

सब जग होहु दयाल प्रभु मोरे सब जग होहु दयाल ॥ टेक ॥ ईति भीति जग व्यापै नाहीं, होहि सुवृष्टि सुकाल ॥ १ ॥ आधि व्याधि खलजनकी पीडा, इनसों करो प्रतिपाल ॥ २ ॥ निज निज धर्म कर्म जग बरतै, देहु विघ्न सब टाल ॥ ३ ॥ रामसो राज्य करहु भूपति हू, मेटहु सकल जंजाल ॥ ४ ॥ रामजीवनको वेगि निहारो, नाहीं तौ कौन हवाल ॥ ५ ॥

स्वर्गका विमान समाप्त ।

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण–मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
खेतवाडी–मुंबई.